

॥ श्री ॥

विद्याभवन राष्ट्रभाषा ग्रन्थमाला

३२



॥ श्री ॥

प्राकृत-व्याकरण

लेखक -

आचार्य श्री मधुसूदनप्रसाद मिश्र

अध्यक्ष, अनुसन्धान विभाग, अरेराज

तथा

सदस्य, बिहार रिसर्च सोसाइटी, पटना ।



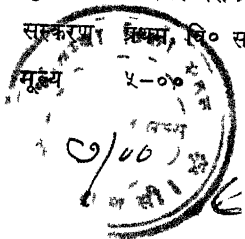
चौखम्बा विद्याभवन, चौक, वाराणसी

—o—o—o—

प्रकाशक चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

मुद्रक विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण प्रथम, वि० संवत् २०१७



(पुनर्मुद्रणादिका सर्वेधिकारा प्रकाशकाधीना )  
The Chowkhamba Vidya Bhawan,  
Chowk, Varanasi

( INDIA )

1960

Phone Branch 3076  
H Office 3140

# भूमिका

( श्री भ्रुवनारायण त्रिपाठी शास्त्री

सभापति, जिला कांग्रेस समिति, मोतिहारी

तथा श्री सोमेश्वरनाथसञ्जालक मण्डल, अरेराज )

संस्कृत भाषा की अपेक्षा प्राकृत भाषा अधिक कोमल तथा मधुर होती है। 'परुसा सङ्गञ्ज बधा पाउञ्ज बधो वि होइ सुउमारो । पुरिसमहिलान जेत्तिञ्ज मिहन्तर तेत्तिञ्जमिमाण' अथात् संस्कृत भाषा पुरुष ( कठोर ) तथा प्राकृत भाषा सुकुमार होती है। और इन दोनों भाषाओं में परस्पर उतना ही भेद है जितना एक पुरुष और स्त्री में ।

भाषा के अनुसार आज तक के समय को तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं—संस्कृत, प्राकृत और आजकल की भाषाएँ, यथा—हिन्दी, मराठी, गुजराती और बँगला आदि । संस्कृत भाषा में हिन्दुओं के प्राचीनतम ग्रन्थ वेदों से लेकर काव्यों तक के ग्रन्थ सम्मिलित हैं । प्राकृत भाषा में बौद्धों तथा जैनियों के धार्मिक ग्रन्थ एवं कुछ काव्य ग्रन्थ भी हैं । इस भाषा का विकास ईसा से ६०० वर्ष पहले हो चुका था ।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति के निर्णय के पूर्व यह विचारना आवश्यक है कि 'किसी भी नई भाषा के जन्म की क्यों आवश्यकता पड़ती है ?' यदि हम लोग इस प्रश्न पर गौर से विचार करें तो यह स्पष्ट मालूम हो जायगा कि मनुष्य कष्टसाध्य प्रयत्न करना नहीं चाहता । वह जिद्दा, कण्ठ, तालु आदि स्थानों से अधिक प्रयत्न द्वारा शब्दों का उच्चारण करना पसन्द नहीं करता । यही कारण है कि धीरे-धीरे भाषा में कुछ विकृतियाँ उत्पन्न होती जाती हैं । कुछ दिनों के बाद उसी का एक स्वरूप बन जाता है, वही प्रधान बोलचाल की भाषा बन बैठती है और उसी में काव्य आदि की रचना प्रारम्भ हो जाती है । वैदिक

काल से लेकर आज तक की परिवर्तित भाषाओं पर ध्यान देने से इस बात की पूर्ण पुष्टि हो जाती है। नीचे कुछ दृष्टान्त दिये जाते हैं—

संस्कृत के 'ग्राम तथा 'मध्य' दो शब्दों के मिलने से 'ग्राममध्य' एक शब्द बना। अब इसी शब्द का उच्चारण करते समय एक अशिक्षित आदमी, जिसे उच्चारण का ज्ञान नहीं है और जो स्वभाव से ही कष्टसाध्य उच्चारण करना नहीं चाहता, जीभ को कष्ट से बचाने के लिए एक प्रिलक्षण ही शब्द स्वरूप का जनक हो जायगा। वह उक्त शब्द के मध्य के स्थान में 'मज्झ', 'माझ', 'माध', 'माह', 'मह', 'मा' और 'मे' तथा ग्राम शब्द के स्थान में 'गाम' और 'गाव' कहेगा। इस प्रकार ग्राममध्य के स्थान में 'गाम मे' और 'गाव मे' बन गया। इसी प्रकार 'कुम्भकार' के स्थान में 'कुम्भार', 'कुहार' और 'कोंहार' शब्द बन गये। इनके अतिरिक्त मुख = मुह, अर्प = अप्प ( हि०—आप ), यष्टि = लट्टी, लाठी, द्वादश = बारह आदि अनेक शब्द हैं। कभी कभी तो शब्दों का परिवर्तन इतना हो जाता है कि उनका पता लगाने में बड़े बड़े शब्दशास्त्रियों को भी चक्कर खाना पड़ता है। जैसे अंग्रेजों के समय में राजकीय कोषागार के प्रहरी 'हू कम्स देअर' ( Who comes there ) के स्थान में 'हुकुमदर' कहते थे। तात्पर्य यह कि किसी किसी शब्द के शुद्ध रूप का पता लगाना असम्भव सा हो जाता है। अस्तु।

प्राकृत भाषा की उत्पत्ति के विषय में भारतीय वैयाकरणों तथा आलङ्कारिकों का कथन है कि इस भाषा की उत्पत्ति संस्कृत से हुई है। संस्कृत ही इसकी जननी है। प्राकृत शब्द की व्युत्पत्ति 'प्रकृति' से की जाती है। प्रकृति शब्द का अर्थ बीज अथवा मूल तत्त्व है। इस शब्द का निर्वचन है—'प्रक्रियते यया सा प्रकृति' अर्थात् जिससे दूसरे पदार्थों की उत्पत्ति हो। 'मूलप्रकृतिरविकृति' ( साङ्ख्य ) अर्थात् मूल प्रकृति अविकृत रहती है। सारांश यह हुआ कि 'प्रकृति' उसे कहते हैं जो दूसरे पदार्थों का उत्पादक तथा स्वयं अविकृत हो। यहाँ

आचार्यों के मत में सस्कृत ही प्रकृति है। प्राकृत के प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र अपने प्राकृत व्याकरण के आठवें अध्याय के प्रथम सूत्र में कहते हैं कि—‘प्रकृति सस्कृतम् । तत्र भव तत आगत वा प्राकृतम् ।’ अर्थात् मूल सस्कृत है और सस्कृत में जिसका उद्भव है अथवा जिसका प्रादुर्भाव सस्कृत से हुआ है उसे ‘प्राकृत’ कहते हैं। वररुचि ने प्राकृत का व्याकरण लिखते हुए प्राकृत प्रकाश में लिखा है कि ‘शेष सस्कृतात्’ (२०९१८) अर्थात् बताया है हुए नियमों के अतिरिक्त शेष सस्कृत से आये हुए हैं। इसी प्रकार मार्कण्डेय ‘प्राकृतसर्वस्व’ के प्रथम पाद के प्रथम सूत्र में लिखते हैं—‘प्रकृति सस्कृत, तत्र भव प्राकृतमुच्यते।’ अर्थात् सस्कृत मूल भाषा है और उससे जन्म लेनेवाली भाषा को प्राकृत कहते हैं। दशरूपक के टीकाकार धनिक परिच्छेद २, श्लोक ६० की व्याख्या करते हुए लिखते हैं—‘प्रकृते आगत प्राकृतम् । प्रकृति सस्कृतम् ।’ यही मत ‘कर्पूरमञ्जरी’ के टीकाकार वासुदेव, ‘प्राकृतप्रकाश’ के रचयिता चण्ड और ‘षड्भाषाचन्द्रिका’ के लेखक लक्ष्मीधर को भी अभिमत है। ‘प्रकृते सस्कृतायास्तु विकृति प्राकृती मता ।’ ( लक्ष्मीधर पृ० ४, श्लोक २५ ) अर्थात् मूल भाषा सस्कृत से प्राकृत की उत्पत्ति हुई है। इस प्रकार सब भारतीय विद्वानों ने भिन्न भिन्न शब्दों में इन्हीं मतों की पुष्टि की है। आधुनिक विद्वानों में डा० रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर तथा चिन्तामणि विनायक वैद्य जी को भी यह मत अभिप्रेत है।

परन्तु इसके विपरीत पश्चिमी विद्वान् पिशल आदि का विचार भी विचारणीय है। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान् पिशल का, जिन्होंने प्राकृत के क्षेत्र में बड़े ही परिश्रम और पाण्डित्य से काम करके हम लोगों का बड़ा ही उपकार किया है, कथन है कि—सस्कृत शिष्ट समाज की भाषा थी और प्राकृत अशिक्षित जनों की। प्राकृत भाषा वह थी जिसे साधारण जन बोला करते थे और उसी का सस्कार से सम्पन्न रूप ‘सस्कृत’ कहा गया। जैसे किसी लकड़ी का एक टुकड़ा पहले अपनी प्राकृतिक अवस्था

मे पडा हुआ रहता है, किन्तु जय उसे सस्कारो द्वारा काट, छॉट एव खराद कर मेज, कुर्सी आदि बनाते है तो वही अपना सस्कृत रूप धारण कर लेता है। इसी प्रकार जो अपरिष्कृत भाषा अपनी प्राकृतिक अवस्था मे पडी हुई जन साधारण द्वारा उच्चरित होती थी, वही प्राकृत थी और उसी की शुद्ध एव परि कृत आकृति सस्कृत भाषा कही जाने लगी। इसके प्रमाण मे इनका कहना है कि यदि प्राकृत सस्कृत से निकली हुई होती तो उसके कुल शब्द सस्कृत से सिद्ध हो जाते, किन्तु अनुसन्धान द्वारा विदित होता है कि सिद्ध होते नहीं है। इसलिए प्राकृत की उत्पत्ति केवल सस्कृत से मानना युक्तिसङ्गत नहीं। पिशल के इसी मत का समर्थन सभी पश्चिमी विद्वान् करते है।

पाली भी प्राकृत के अन्दर ही मानी जाती है। इसे 'प्राचीन प्राकृत' कहते है। भगवान् बुद्ध ने इसी भाषा मे अपने धर्म का प्रचार किया था। आजकल बौद्धों के धार्मिक ग्रन्थ तथा अनेक शिला लेख आदि भी इसी भाषा मे पाये जाते है। पाली और प्राकृत मे कुछ अन्तर पड गया है, इसलिए अब पाली को अन्य भाषा मानते हे और प्राकृत कहने से पाली को अलग समझते है। प्राकृत के वैयाकरणों तथा अलङ्कार शास्त्रियों ने पाली को पृथक् मान कर प्राकृत व्याकरण आदि लिखते समय इसका कुछ भी उल्लेख नहीं किया है।

प्राकृत के भेदों मे 'महाराष्ट्री' उत्तम तथा प्रधान प्राकृत के रूप मे समझी जाती है। दण्डी ने 'काव्यादर्श' के प्रथम परिच्छेद के चौतीसवे श्लोक मे लिखा है—'महाराष्ट्राश्रया भाषा प्रकृष्ट प्राकृत विदुः।' अर्थात् महाराष्ट्री भाषा श्रेष्ठ प्राकृत समझी जाती है। कतिपय भारतीय विद्वानों ने प्राकृत शब्द का प्रयोग केवल महाराष्ट्री ही के लिए किया है। जैसे हेमचन्द्र ने अपने प्राकृत के व्याकरण मे महाराष्ट्री के लिए प्राकृत शब्द का प्रयोग किया है। 'शेष प्राकृतवत्' (हिम० ४ २८६)। प्राकृत के व्याकरण ग्रन्थों मे महाराष्ट्री को ही प्रधानता दी गई है। वररुचि ने नव परिच्छेदों

मे चार सौ चौबीस सूत्रों द्वारा महाराष्ट्री का विचार किया है। अन्य तीन प्राकृतों का विचार एक एक परिच्छेद मे क्रम से १४, १७ और ३२ सूत्रों द्वारा किया है। इसी प्रकार सब वैयाकरणों ने पहले महाराष्ट्री का उल्लेख किया है। महाराष्ट्री मे प्रवरसेन विरचित सेतुबन्ध नामक ग्रन्थ प्रसिद्ध है। इस पुस्तक के सबन्ध मे बाण ने हर्षचरित मे लिखा है—

‘कीर्ति प्रवरसेनस्य प्रयाता कुमुदोज्ज्वला ।

सागरस्य पर पार कपिसेनेव सेतुना ॥’

अथात् कुमुद के समान उज्ज्वल प्रवरसेन का यश सेतुबन्ध के द्वारा समुद्र के पार तक विरयात हो गया जैसे वानरों की सेना सेतु (पुल) के द्वारा समुद्र पार कर विरयात हो गई थी। सेतुबन्ध संस्कृत नाम है। प्राकृत मे इसे रावणवहो या दहमुहवहो कहते है। इसके अतिरिक्त महाराष्ट्री मे हाल की सतसई तथा वजालता और गउडवहो आदि काव्य ग्रन्थ प्रसिद्ध है।

प्राकृत के कितने भेद और उपभेद है, इस सबन्ध मे भी एक मत नहीं है। वररुचि के अनुसार प्राकृत के चार भेद है। महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी और पैशाची। इन्ही चारों का उल्लेख प्राकृत प्रकाश मे हुआ है। हेमचन्द्र ने इन चारों के अतिरिक्त आर्ष, चूलिकापैशाची और अपभ्रश को भी प्राकृत ही के अन्तर्गत माना है। अर्थात् महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, आर्ष, चूलिकापैशाची और अपभ्रश ये सात भेद उन्हे अभिप्रेत है। त्रिविक्रम हेमचन्द्र की तरह उपर्युक्त भेदों मे से आर्ष के अतिरिक्त छ को मानते और उन्ही का उल्लेख करते है। इन वैयाकरणों के अतिरिक्त मार्कण्डेय, जो वररुचि के अनुयायी है, प्राकृत के प्रधानत चार विभाग करते है—भाषा, विभाषा, अपभ्रश और पैशाच। अब इनके उपभेदों के साथ प्राकृत को सोलह भागों में विभक्त करते है। वे सोलह भेद इस प्रकार हैं—भाषा के पाँच भेद—महाराष्ट्री, शौरसेनी, प्राच्या, आवन्ती और मागधी (मार्क० १-५), विभाषा के पाँच भेद—शाकारी, चाण्डाली, शावरी, आभीरिका और टक्की, अपभ्रश

के तीन भेद—नागर, ब्राह्मण और उपनागर, पैशाच के तीन भेद—  
कैशिक, शौरसेन और पाञ्चाल । इस तरह प्राकृत के सोलह भेद हुए ।

मार्कण्डेय ( १४ ) की वृत्ति लिखते हुए किसी ने भाषा के आठ, विभाषा के छ, अपभ्रंश के सत्ताईस और पैशाच के ग्यारह भेद माने हैं । इनके मत से प्राकृत के वाचन भेद हुए । परन्तु मार्कण्डेय स्वयं इतने भेदों को नहीं मानते । वे अर्द्धमागधी को मागधी के तथा बाह्लीकी को आवन्ती के अन्तर्गत मानते हैं । दक्षिणात्य का कोई लक्षण नहीं मिलने से उसे भाषा के भीतर नहीं मानते । इस प्रकार उक्त वृत्तिकार द्वारा बतलाये आठ प्रकारों वाली भाषा का खण्डन कर छ प्रकार की विभाषा में औढी को शावरी में अन्तर्भावित मानते तथा द्राविडी की जगह दक्षिण भाषा का प्रतिपादन करते हैं क्योंकि द्राविडी दक्षिण देश की भाषा के भीतर आ जाती है ।

‘दक्षदेशीयभाषाया दृश्यते द्राविडी तथा ।

अत्रैवाय विशेषोऽस्ति द्रविडेनाहता परम् ॥’ (मार्क० १ ६)

एव प्रकारेण मार्कण्डेय ने सत्ताईस प्रकार के अपभ्रंश तथा ग्यारह प्रकार के पैशाच का एक का दूसरे में अन्तर्भाव मानकर क्रम से तीन तीन भेद माने हैं । इस तरह वाचन प्रकार के बदले उसके केवल सोलह ही भेद स्थिर किये हैं । दण्डी ने ‘काव्यादर्श’ में चार प्रकार की भाषा बतलाई है—संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश और मिश्र ।

‘तदेतद् वाङ्मय भूय संस्कृत प्राकृत तथा ।

अपभ्रंशश्च मिश्रश्चेत्याहुरार्याश्चतुर्विधम् ॥’ (काव्या० १ ३६)

इनके अनुसार संस्कृत से देवताओं की भाषा, प्राकृत से तद्भव, तत्सम और देशी भाषा, अपभ्रंश से आभीर आदि जातिविशेष की भाषा और मिश्र से मिली हुई भाषाओं का बोध होता है । शास्त्र में संस्कृत से इतर सब भाषाएँ अपभ्रंश कहलाती हैं । इनके अनुसार प्राकृत के महाराष्ट्री, शौरसेनी, गौडी, लाटी और भूतभाषा ( पैशाची ) ये पाँच भेद हैं । प्राकृत के ये और भी अन्य भेद मानते हैं । दूसरे कई आचार्यों



ने प्राकृत के अन्य भी कई भेद बतलाये हैं, परन्तु सब ने महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी को बिना किसी दलील के स्वीकार किया है। वास्तव में ये ही तीनों प्रधान हैं और काव्य नाटकों में इन्हीं तीनों का समावेश है। अतः ये ही तीन प्रधान प्राकृत हैं।

संस्कृत साहित्य में ऐसा कोई भी नाटक नहीं है जो केवल संस्कृत ही में हो और उसमें प्राकृत न हो। नाटकों में कुलीन, श्रेष्ठ तथा शिक्षित पुरुष संस्कृत भाषा का व्यवहार करते हैं तथा कुलीन और शिक्षिता स्त्री शौरसेनी में गद्य तथा महाराष्ट्री में पद्य का व्यवहार करती हैं। मतलब यह कि साधारण बात चीत तो शौरसेनी में और कुछ गान आदि महाराष्ट्री में करती हैं। शौरसेनी गद्य की तथा महाराष्ट्री पद्य की भाषा है। किसी भी नाटक अथवा प्राकृत के काव्यग्रन्थ में गद्य महाराष्ट्री में और पद्य शौरसेनी में दृष्टिगोचर नहीं होते। नाटकों में निम्न लोगों की तथा नीच वर्णों की बोली मागधी भाषा में पाई जाती है। नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत के महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी ये तीन प्रकार ही प्रधान हैं और इन्हीं का व्यवहार अधिकता से पाया जाता है। इनके अतिरिक्त और भी आवन्ती, ढक्क, शाबरी, प्राच्या और चाण्डाली भाषाएँ देखने में आती हैं, परन्तु कई आचार्यों के मत से आवन्ती और प्राच्या शौरसेनी के तथा ढक्क, शाबरी और चाण्डाली मागधी के अन्तर्गत हैं। केवल विक्रमोर्वशीय में कुछ पद्य अपभ्रंश के भी आये हैं। इसके विषय में कुछ लोगों का कहना है कि अपभ्रंश के वे पद्य पीछे से जोड़े गये हैं।

महाराष्ट्री भाषा का नाम महाराष्ट्र के नाम पर पडा। महाराष्ट्र की भाषा महाराष्ट्री कहलाई। इसमें अक्षरों का लोप बहुत होता है, इसलिए इसका व्यवहार पद्य के लिए उत्तम माना गया। इसमें अक्षरों का इतना लोप होता है कि भाषा की जटिलता बढ जाती है इसलिए इसका गद्य समझना बडा कठिन होता है। इस भाषा के विषय में ऊपर लिखा जा चुका है।

शौरसेनी भाषा का नाटको मे प्रयुक्त गद्यभाषाओं मे प्रथम स्थान है। शूरसेनों की भाषा का नाम शौरसेनी पडा। शूरसेनों की राजधानी मथुरा थी और मथुरा के आस पास बोली जाने वाली भाषा शौरसेनी कहलाती थी।

मागधी से वररुचि के अनुसार मगध देश की भाषा समझी जाती है। 'मागधाना भाषा मागधी' (वर० ११ १ वृत्ति)। पटने के समीप-वर्ती स्थलों को मगध कहते थे। आज भी बिहार राज्य मे बोली जाने-वाली भोजपुरी आदि भाषाओं का मागधी से बहुत कुछ सामीप्य है। मार्कण्डेय का कथन है कि राक्षस, भिक्षु, क्षपणक और चेटी आदि की भाषा का नाम मागधी है—'राक्षसभिक्षुक्षपणकचेटाद्या मागधी प्राहु' (मा० १२ १ वृ०)। भरत के अनुसार अन्त पुर में रहने वालो की भाषा मागधी है। इनके अनुसार नपुसक, स्नातक और कञ्चुकी अन्त पुर मे नियुक्त होते थे। दशरूपरु के अनुसार पिशाच और अत्यन्त नीच लोग पैशाची और मागधी बोलते है—'पिशाचात्यन्तनीचादो पैशाच मागध तथा।'

अवन्ति देश की भाषा आवन्ती कहलाती है। अवन्ति देश मे चेदि, मालव, उज्जयिनी आदि देश सम्मिलित थे—'चेदिमालवो-ज्जयिन्यादिरवन्तीदेश' तद्गवा आवन्ती दाण्डिकादि भाषा' (मार्क० ११।१ की वृत्ति)। आवन्ती महाराष्ट्री और शौरसेनी के साकर्य से सिद्ध होती है। 'भरत' के अनुसार नाटकों मे यह सदा मध्यम पात्रों द्वारा प्रयुक्त होती है। मार्कण्डेय के अनुसार यह भाषा का एक भेद है।

प्राच्या मार्कण्डेय के अनुसार विदूषक और विट आदि हंसोड़ पात्रों की भाषा है। भरत नाट्यशास्त्र के अनुसार विदूषक आदि की भाषा प्राच्या है—'प्राच्या विदूषकादीनाम्।' पृथ्वीधर ने मृच्छकटिक की टीका मे इसी मत का समर्थन करते हुए लिखा है कि—'प्राच्यभाषापाठको निदूषक' अर्थात् विदूषक प्राच्य भाषा का पाठक होता है।

ढक्क भाषा पृथ्वीधर के अनुसार मृच्छकटिक मे माथुर और द्यूतकर की बोली है। ढक्क शब्द से जान पडता है कि यह ढाका के आस पास की भाषा थी।

चाण्डालों की भाषा चाण्डाली तथा शबरो की भाषा शाबरी कहलाती थी। अस्तु।

शूद्रक के मृच्छकटिक मे प्राकृत के नाना प्रकार देखने मे आते हे। अन्य नाटकों मे महाराष्ट्री, शौरसेनी और मागधी ये तीन ही भाषाय पाई जाती है। किसी किसी नाटक मे एरु पात्र चाण्डाल भी है जो चाण्डाली बोलता है। मृच्छकटिक मे अन्य प्राकृत के अतिरिक्त ढक्क और आवन्ती भी आती है। माथुर तथा द्यूतकर ढक्क और वीरक तथा चन्दनक आवन्ती भाषा बोलते है। विदूषक की भाषा किसी किसी के विचार से प्राच्या है। कर्णपूरक और वीरक के पद्य महाराष्ट्री मे हे। नटी, मैत्रेय, वसन्तसेना, चेटी, रदनिका, मदनिका, कर्णपूरक आदि के गद्य की भाषा शौरसेनी है। शकार, चेट, चारुदत्त का लडका और भिजु की बोली, मागधी मे है।

प्राकृत भाषा मे कर्पूरमञ्जरी नामक एक ही सट्टक है। इसमे महाराष्ट्री और शौरसेनी दो ही भाषाये है। जितने पद्य हे, वे सब महाराष्ट्री मे और जितने गद्य है सब शौरसेनी मे लिखे गये है। कहीं-कहीं इन दोनों की खिचडी भी दिखाई पडती है। जैसे—‘गंगिहअ के’ स्थान पर ‘वेत्तूण’ का प्रयोग किया गया हे। इस प्रकार अनेक स्थलो पर ऐसे उदाहरण मिलते है। मालूम नही, यह कवि का प्रमाद है या छापेखानों की भूल। कर्पूरमञ्जरी के अनेक सस्करण निकल चुके हे पर तु प्राकृत भाषा की दृष्टि से ‘हारवार्ड ओरिण्टल सीरीज’ द्वारा सपादित तथा चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी से प्रकाशित सस्करण सर्वोत्तम है।

सस्कृत नाटकों मे प्राकृत की दृष्टि से मृच्छकटिक के अतिरिक्त विक्रमोर्वशीय, अभिज्ञानशाकुन्तल, वेणीसहार, मुद्राराक्षस, उत्तरराम-चरित आदि प्रसिद्ध नाटक है।

नाटकों में सूत्रधार का पाठ सबसे पहले आता है। सूत्रधार की भाषा संस्कृत है, परन्तु महाकवि भास प्रणीत 'चारुदत्त' में यह शौरसेनी में बोलता है। 'मृच्छकटिक' में भी नटी के साथ बातचीत करते समय सूत्रधार ने शौरसेनी का ही व्यवहार किया है।

नटी की भाषा सब नाटकों में शौरसेनी ही है। पर यह स्मरण रहे कि शौरसेनी गद्य की भाषा है। इसलिए नटी को जहाँ गाने की आवश्यकता पड़ी है, वहाँ गान महाराष्ट्री भाषा में है। यथा शाकुन्तल में—'नटी गायति—

ईसीसि जुम्बिआइ भमरेहि सुउमारकेसरसिहाइ ।

ओदसअन्ति दअमाणा पमदाओ सिरीसकुसुमाणि ॥'

पारिपार्श्वक की भाषा संस्कृत में ही पाई जाती है। इसका पाठ विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र, वेणीसहार तथा माधवभट्ट रचित सुभद्राहरण आदि नाटकों में आया है।

विदूषक की बोली सब नाटकों में एऊ सी ही है। इसकी भाषा हेमचन्द्र और त्रिपिक्रम के अनुसार शौरसेनी तथा मार्कण्डेय के अनुसार प्राच्या है। इसका पाठ मृच्छकटिक, अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, मालविकाग्निमित्र आदि नाटकों में आया है। मालविकाग्निमित्र में इसका पाठ प्रधान रूप से आया है और प्रत्येक अङ्क में है।

सूत की बोली संस्कृत में पाई जाती है। जहाँ जहाँ सूत का पाठ है, वहाँ वह संस्कृत ही बोलता पाया जाता है। अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, प्रतिमा, वेणीसहार तथा कसवध आदि नाटकों में सूत का पाठ पाया जाता है।

राजा की भाषा अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, प्रतिमा, मुद्रा राक्षस, मालविकाग्निमित्र, वेणीसहार, कर्णसुन्दरी तथा कसवध आदि नाटकों में संस्कृत ही पाई जाती है। केवल विक्रमोर्वशीय के चौथे अङ्क में पुरुरवा नामक राजा ने उर्वशी के लिए विचित्र हो कर हस, भौंरे तथा

चक्रवाक आदि न्य बातचीत करते हुए महाराष्ट्री और अपभ्रंश का भी प्रयोग किया है। चौथे अङ्क के ६, ११, १४, १९, २०, २४, २८, २९, ३५, ३६, ४१, ५३, ५४, ५९, ६३, ६८, ७१ और ७५ सरयावाले श्लोकों को महाराष्ट्री तथा १२, ४३, ४५, ४८ और ५० सरयावाले श्लोकों को अपभ्रंश भाषा में कहते हैं। यथा—

राजा—‘मर्मररणिअमणोहण्ण, कुसुमिअतरुवरपल्लविण्ण ।

दइआविरहुम्माइअओ, काणण भमइ गइदओ ॥’

[ मर्मररणितमनोहरे कुसुमिततरुवरपल्लविते ।

दयिताविरहोन्मादित कानने अमति गजेन्द्र ॥ ]

( विक्र० ४।३५ )

‘हउ पइ पुळ्ळिमि अरन्वहि गअवरु, लल्लिअपहारे णाम्मिअतरुवर ।

दूरविणिज्जिअ ससहरुकन्ती, दिट्ठी पिअ पइ समुह-जन्ती ॥’

[ अह त्वा पृच्छामि आचक्ष्य गजवर, ललितप्रहारेण नाशिततरुवर ।

दूरविनिज्जित शशधर कान्तिर्दृष्टा प्रिया त्वया समुख यान्ती ॥ ]

पिछले पृष्ठ के वर्णित दोनों श्लोक क्रमश महाराष्ट्री और अपभ्रंश भाषा के हैं।

कञ्चुकी की बोली संस्कृत भाषा में पाई जाती है। इसका पाठ अभिज्ञानशाकुन्तल, विक्रमोर्वशीय, उत्तररामचरित, प्रतिमा, सुदाराक्षस, मालविकाग्निमित्र तथा वेणी सहार आदि नाटकों में आया है।

गतीहारी, चेटी, तापसी आदि की बोली शौरसेनी में है। ये पात्र प्राय सभी नाटकों में आये हैं। दौवारिक की भाषा भी शौरसेनी ही पाई जाती है। परन्तु कसवध में हेमाङ्गद नाम के एक दौवारिक ने एक स्थान पर एक श्लोक संस्कृत में भी कहा है। सुभद्राहरण, अभिज्ञानशाकुन्तल आदि अनेक नाटकों में दौवारिक का पाठ है।

अभिज्ञानशाकुन्तल में रक्षियों ( सिपाहियों ), धीवर और शकुन्तला के पुत्र की, चारुदत्त म शकार की, मृच्छकटिक में शकार, चेट, चारुदत्त के पुत्र, सवाहक और भिच्छु की, वेणीसहार में राक्षस

और राक्षसी की तथा कसवध मे कुब्जक और रजक की बोली मागधी भाषा मे है। मागधी गद्य और पद्य दोनों की ही भाषा है। यद्यपि उच्च कुल की एव शिञ्चित नारियाँ गद्य पद्य मे क्रमशः शौरसेनी, महाराष्ट्री का ही व्यवहार करती है, तो भी कई नाटको मे नारी का पाठ सस्कृत भाषा मे भी मिलता है। जैसे उत्तररामचरित में तापसी, आत्रेयी, वासन्ती, तमसा, मुरला, अरुन्धती, पृथिवी, भागीरथी और गङ्गा की, कर्णसुन्दरी मे सखी और नायिका के पद्य की, कसवध मे दूर्ता विलासवती, देवकी और केवल कुञ्ज स्थलों पर कुब्जा की बोली सस्कृत भाषा मे पाई जाती है। प्रतिमा मे भट एक स्थान पर शौरसेनी तथा दूसरे पर सस्कृत का प्रयोग करता है। किसी किसी नाटक मे ऐसा भी देखा जाता है कि जब कोई पात्र किसी दूसरे का अनुकरण करता है, तो वह अपनी भाषा छोडकर अनुकार्य व्यक्ति की ही भाषा बोलता है। जैसे मुद्राराक्षस मे सस्कृत का बोलने वाला विराध आहितुण्डिक का अनुकरण करने पर शौरसेनी भी बोलता है। बेणी सहार मे मुनिवेषधारी राक्षस सस्कृत भाषा का भी व्यवहार करता है।

मृच्छकटिक मे स्थावरक और रोहसेन नामक चाण्डालों तथा मुद्राराक्षस मे आये चाण्डालो की बोली चाण्डाली कहलाती है। इन सब के अतिरिक्त जिन पात्रों की चर्चा नहीं की गई है, उनके साथ वे ही साधारण नियम लागू है।

साहित्यदर्पण मे श्रेष्ठ चेट और राजपुत्रों की भाषा अर्द्धमागधी बतलाई गई है। परन्तु किसी नाटककार ने किसी भी पात्र के लिए इस भाषा का व्यवहार नहीं किया है। चेट का पाठ मृच्छकटिक मे आया है, जो मागधी मे है। इसी प्रकार राजपुत्रों की भाषा भी अर्द्धमागधी में नहीं है—‘चेटाना राजपुत्राणा श्रेष्ठानाञ्चार्द्धमागधी’ (साहि० ६, १६०)।

साहित्यदर्पण में विश्वनाथ ने भाषा विभाग का वर्णन करते हुए लिखा है कि शिञ्चित मध्यम तथा उच्च वर्ग के मनुष्यों की भाषा सस्कृत

तथा मध्यम और उत्तम वर्ग की स्त्रियों की भाषा शौरसेनी हे । योद्धा और नागरिकों की भाषा दाक्षिणात्या है । परन्तु यह भाषा भी प्रयुक्त हुई दृष्टिगोचर नहीं होती । विश्वनाथ ने बालकों की बोली का विधान करते हुए लिखा है कि बालक कभी कभी सस्कृत भी बोलते हैं । परन्तु किसी भी नाटक में कोई बालक सस्कृत बोलता नहीं पाया जाता । कवियों ने उपर्युक्त नियम का बिलकुल पालन नहीं किया है ।

ऐश्वर्य से पागल, दरिद्र, भिन्न एव वत्कल धारण करने वाले पुरुषों की भाषा प्राकृत बतलाई गई है । पर उत्तम सन्यासियों के लिए सस्कृत का विधान है । कभी कभी वेश्या के लिए भी सस्कृत भाषा के व्यवहार का विधान है ।

साहित्यदर्पण के अनुसार व्यापक नियम यह है कि जिस पात्र के देश की जो भाषा है, वह उसी को बोलता है और कार्यवश उत्तम आदि पात्र भाषा का परिवर्तन भी करते हैं—

‘यद्देश्य नीचपात्र तु तद्देश्य तस्य भाषितम् ।

कार्यतश्चोत्तमादीना कायो भाषा विपर्यय ॥’

भाषा का परिवर्तन करना मुद्राराक्षस जादि नाटकों में पाया जाता है ।

स्त्री, सखी, बालवेश्या, धूर्त तथा अप्सराये अपनी चतुरता प्रदर्शित करने के लिए बीच में सस्कृत बोल सकती है—

‘योषित् सखी बालवेश्यान्तितवाप्सरसा तथा ।

वैदग्ध्यार्थं प्रदातव्यं सस्कृतं चान्तराऽन्तरा ॥’

कर्णसुन्दरी में सखी और नायिका, कसवध में दौवारिक और कुब्जा तथा सुभद्राहरण में नटी भी विदग्धता दिखलाने के लिए सस्कृत भाषा बोलती है ।

मालविकाग्निमित्र में परिव्राजिका कार्यवश सस्कृत बोलती है ।

वाह्लीक भाषा जो उत्तर देशवासियों के लिए और द्राविडी जो द्रविड देशवासियों के लिए कही गई है, उनका नाटकों में कही भी अस्तित्व देखने में नहीं आता—‘वाह्लीकभाषोदीच्याना द्राविडी द्रविडादिषु’ ( साहि० ६, १६२ ) ।

एक बात और उल्लेखनीय है। प्रायः देखा जाता है कि एक ही घर में पुरुष सस्कृत, स्त्री शौरसेनी और लडका मागधी बोलता है। इसका क्या कारण है ? लडके तो ऐसे होते नहीं कि बचपन में ही कोई स्वतन्त्र भाषा सीख ले। जो भाषा उनकी माता तथा घरवाले बोलते हैं, वही भाषा वे सीखेंगे और बोलेंगे। माता की भाषा से भिन्न भाषा कभी भी उनसे उच्चारित नहीं हो सकती। फिर नाटकों में ऐसी विचित्रता क्यों देखने में आती है ? शकुन्तला में दुष्यन्त आदि सस्कृत में, शकुन्तला तथा उसकी सखियाँ शौरसेनी में बोलती हैं। तब दुष्यन्त का लडका मागधी कैसे सीख गया ? इसी प्रकार मृच्छकटिक में चारुदत्त का लडका भी मागधी बोलता है। इस प्रकार नाटकों के सहारे ठीक विचार नहीं किया जा सकता, क्योंकि बोली दूसरी होने पर भी विशेष स्थल के लिए अन्य बोली बोलनी पडती है। किन्तु यह भी देखने में आता है कि लडकों की बोली स्वभावतः ही मागधी होती है। आजकल के लडके भी प्रायः मागधी ही बोलते हैं। जैसे —‘ए ताता ताल लोपेया द !’ इसकी हिन्दी ‘ऐ चाचा, चार रुपया दो’ होगी। इस प्रकार सब लडके र के स्थान में ल का प्रयोग करते हैं। अतः इस सम्बन्ध में उक्त सन्देह अनावश्यक है।

पहले प्राकृत की उत्पत्ति के विषय में मैंने अपनी सम्मति न देकर केवल भारतीय तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का ही उल्लेख किया है। अब अपनी सम्मति देना आवश्यक समझ अपना निर्णय दे रहा हूँ।

मेरे विचार से प्राकृत की उत्पत्ति सस्कृत ही से जान पडती है क्योंकि भाषा विज्ञान की ओर दृष्टि डालने से मालूम होता है कि मनुष्य कष्टसाध्य प्रयत्न न कर सुखोच्चार्य शब्द की ओर ही ढुलक जाता है। अतः जो अशिष्ट जन सस्कृत बोलने की चेष्टा तो करते थे, किन्तु बोल नहीं पाते थे उन्हीं के उच्चारण दोष से बिगड बिगड कर एक अन्य भाषा बन गई। सारांश यह कि सस्कृत ही का अशुद्ध स्वरूप प्राकृत है। इसके विरोध में कुछ लोगों का यह कहना



क्रि प्राकृत के सब शब्द सस्कृत से ही सिद्ध नहीं होते इसलिये उसकी जननी सस्कृत नहीं है। यह कहना ठीक प्रतीत नहीं होता क्योंकि आज भी कुछ शब्द ऐसे देखने में आते हैं जिनका मूल मालूम है, पर उनमें इतना परिवर्तन हो गया है कि उनके मूल शब्द का अनुमान भी नहीं होता। जैसे—‘हू कम्स देअर’ के स्थान में ‘हुकुमदर’ या ‘हुकुम सदर’, ‘सिगनल’ के स्थान में ‘सिकदर’, ‘कृष्णाष्टमी’ के स्थान में ‘क्रिसुन आँठी’ ( यह बोली नेपाल की तराई के पास सुनने में आती है ) ‘इजलास’ के स्थान में ‘गिलाम’ और ‘सेवासमिति’ के स्थान में ‘सेवा सपाठी’ कहते हुए लोग देखने में आते हैं। इन उदाहरणों से यह अनुमान किया जाता है कि सस्कृत ही प्राकृत की जननी है। कुछ शब्द जो सिद्ध नहीं होते इसका कारण यह है कि उनमें बहुत परिवर्तन हो गया है। जब प्राकृत के प्रायः सभी शब्दों के मूल का पता सस्कृत से लग जाता है तब थोड़े शब्दों के न मिलने के कारण प्राकृत को स्वनन्त्र मानना ठीक नहीं है।

विक्रमोर्वशीय में अपभ्रंश के जो पद्य आये हैं, उनके विषय में कुछ लोगों का कथन है कि वास्तव में ये पद्य पहले के नहीं हैं, बाद में जोड़े गये हैं। इसके प्रमाण में वे कहते हैं कि राजा उत्तम पात्रों में गिना जाता है। उत्तम पात्रों की बोली सस्कृत है। इसके अतिरिक्त एक ही पद्य की कई बार आवृत्ति की गई है, जिससे ज्ञात होता है कि ये पीछे से जोड़े गये हैं। परन्तु यह बात नहीं है। यद्यपि राजा उत्तम पात्रों में है और इसकी बोली सस्कृत है तो भी कार्यवश वह अन्य भाषाओं को भी बोल सकता है। आज भी हम सभ्य समाज में यदि शिष्ट भाषा का प्रयोग करते हैं तो आवश्यकता पड़ने पर साधारण जनों से ग्राम्य बोलियों में भी बात करना नहीं छोड़ते। पुरुरवा ने अपनी प्रिया के लिए आकुल होकर हाथी, भौरे, चक्रवाक आदि से कहा था। उन्होंने समझा होगा कि बिना महाराष्ट्री तथा अपभ्रंश में बोले वे लोग समझेगे नहीं, और नहीं समझने के कारण कदाचित्

उत्तर नहीं दे सकेंगे। इसलिये लाचारीवश ही उन्होंने प्राकृत का आश्रय लिया होगा, इसमें सदेह नहीं। एक ही बात की आवृत्ति भी माधारण बात है। जब किसी को उत्तर नहीं मिलता तो वह पुन पुन उसी प्रश्न को दुहराता ही है। इसलिए मेरे विचार से ये पद्य पीछे के नहीं हैं।

प्राकृत के वैयाकरणों के दो वर्ग हैं—एक त्रिविक्रम का और दूसरा मार्कण्डेय का। त्रिविक्रम के अनुयायी हेमचन्द्र, लक्ष्मीधर और सिंह राज हैं। लक्ष्मीधर ने त्रिविक्रम के सूत्रों पर अपनी वृत्ति लिखी है जैसे पाणिनि के सूत्रों पर वामन, माधव आदि कितने ही वृत्तिकारों की वृत्तियाँ रची गई हैं। लक्ष्मीधर के ग्रन्थ का नाम षड्भाषा चन्द्रिका है। मार्कण्डेय के अनुयायी वररुचि हैं। पहले लिखा जा चुका है कि क्रिम ग्रन्थ में किन किन प्रकार की प्राकृतों का वर्णन मिलता है।

सप्त वैयाकरणों ने महाराष्ट्री को प्रधान मान कर सर्वप्रथम उसी का निरूपण किया है अतः यहाँ भी प्रस्तुत प्राकृत व्याकरण के विद्वान् लेखक ने पहले महाराष्ट्री के ही लक्षण दिये हैं। उसके बाद शौरसेनी, मागधी, पैंशाची और अपभ्रंश के भी विशेष विशेष नियम बतला दिये गये हैं, जिनसे शब्दों के निर्वचन के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेना अतिशय सरल हो गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थ मेरी ही प्रेरणा से श्रीसोमेश्वरनाथ सचालक मण्डल, अरैराज ( चम्पारन ) के अनुसन्धान विभाग की ओर से पूर्ण परिश्रम एवं खोज के साथ निर्मित हुआ है। इसके लेखक ने इस ग्रन्थ को अरैराज जैसे साधनहीन स्थान में, जहाँ न कोई अच्छा पुस्तकालय ही है और न सुयोग्य परामर्शदाता ही, अकेले जुटकर इस ग्रन्थ का इस रूप में निर्माण किया है। एतदर्थ विद्वान् लेखक को इस सम्बन्ध में जितनी भी बधाई दी जाय, थोड़ी होगी।

सभव है इस पुस्तक में कुछ लोगो को अपूर्णता दिखलाई दे, किन्तु जितना भर लिखा जा चुका है, उतने से ही हिन्दी द्वारा प्राकृत पढ़ने वाले छात्रों का अतिशय उपकार होगा, इसमें तनिक भी सदेह नहीं ।

मुझे अपने छात्र-जीवन में हिन्दी में एक प्राकृत व्याकरण की आवश्यकता प्रतीत हुई थी । आज उस इच्छा की पूर्ति से मुझे बड़ी प्रसन्नता है । इस ग्रन्थ के लिखने में लखक को उत्साहित करनेवालों में मेरे अतिरिक्त तिरहुत प्रमण्डल के आयुक्त श्री श्रीधर वासुदेव सोहोनी तथा चम्पारन के कर्मठ साहित्यिक श्री गणेश चौबे रहे हैं । अतः ये दोनों ही महानुभाव मेरे लिए धन्यवादाहर्ह हैं ।

ग्रन्थों के न मिलने से जो कठिनाइयों आईं, उन्हें गहुत कुछ प्रिहार रिसर्च सोसाइटी पटना, धर्मसमाज सस्कृत महाविद्यालय मुजफ्फरपुर एवं सोमेश्वरनाथ सस्कृत महाविद्यालय अरैराज के पुस्तकालयों ने दूर किया है, अतः इन मस्थाओं के अध्यक्ष भी धन्यवादाहर्ह हैं ।

ध्रुवनारायण त्रिपाठी

# विषय-प्रवेश

प्रथम अध्याय	पृ०
सज्ञा सन्धि विवेक	१
लिङ्गानुशासन	१७
द्वितीय अध्याय	
स्वर सन्धि विवेक	४२
तृतीय अध्याय	
व्यञ्जनसन्धि विवेक	१६
चतुर्थ अध्याय	
शब्दलिङ्ग विवेक	७२
पञ्चम अध्याय	
अव्यय प्रकरण	१०७
षष्ठ अध्याय	
तिङन्त विचार	११७
सप्तम अध्याय	
कुल्ल प्रिशिष्ट पद	१५०
अष्टम अध्याय	
शौरसेनी	११२
नवम अध्याय	
मागधी	१९५
दशम अध्याय	
पैशाची	२००
एकादश अध्याय	
अपभ्रंश	२०४
परिशिष्ट	
अक्षरानुक्रम शब्द सूची	२३१
सहायक ग्रन्थ सूची	२९८



प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र के अनुसार 'प्रकृति' (=संस्कृत) प्राकृत शब्द की निष्पत्ति मानी गई है। 'प्रकृति संस्कृतम् । भव तत आगत या प्राकृतम् ।' अर्थान् जिसकी उत्पत्ति संस्कृत से हुई हो अथवा संस्कृत से निकलकर जो अलग निमित्त या हो वही प्राकृत<sup>१</sup> है ।

कुछ भाषा शास्त्री 'प्रकृत्या ( स्वभावेन ) सिद्ध प्राकृतम्' इस निष्पत्ति के अनुसार स्वभावसिद्ध को ही 'प्राकृत' मानते हैं ।

\* देखिए—हेम० ८ १ १ अथ प्राकृतम् और उसी सूत्र पर हर पाण्डुरङ्ग पण्डित का अंग्रेजी नोट—Hemachandra's stem of grammar consists of eight chapters, the first seven deal with Sanskrit grammar and the last chapter with six dialects of Prakrit, viz, महाराष्ट्री, रसेनी, मागधी, पेशाची, चूलिकापेशाची and अपभ्रंश The word Prakrit is derived from प्रकृति which according to the author, means Sanskrit Hemachandra classifies Prakrit words into तद्भव, तत्सम, and देशी He does not treat of तत्सम here as he has already done in the preceding chapters He does not speak of देशी words here but discusses only तद्भव words of three types, सिद्ध and सा यमान ।

विवादग्रस्त\* इन दोनो व्युत्पत्तियो को लेकर विद्वानों मे काफी मतभेद रहा है। किन्तु हम यहाँ हेमचन्द्रवाली व्युत्पत्ति को ही मानकर चलेंगे।

अब आगे चलकर हम नियम, उदाहरण, विशेष तथा पादटिप्पणी के सम्मिलित क्रमो से प्राकृत शब्दो की निर्राक्त का प्रयास करेंगे।

( १ ) लोक मे प्रचलित वर्णसमाग्नाय ही प्राकृत मे भी गृहीत है, किन्तु नीचे लिखे ऋ, ॠ, लृ, ए, औ ये पाँच स्वर वर्ण और ड, ज, श, ष, न, य ये छ व्यञ्जन प्राकृत मे नही होते। हाँ, अपने वर्णवाले अक्षरो से सयुक्त ड और ज का व्यवहार देखने को मिलता है। जैसे—पडो ( पड् ), सडो ( शड् ), सड्वा ( शड्वा ), कञ्जुओ ( कञ्जु ), वञ्जन ( वञ्जनम् )।

\* इस सम्बन्ध मे श्रीहृषीकेश शास्त्री भट्टाचार्य के संस्कृत इङ्गलिम प्राकृत व्याकरण ( १८८३ ई० ) के प्रिफेस की नीचे उद्धृत पटित्क्यों प्रकाश डालती है—Modern philologist have not yet satisfactorily solved the question whether these dialects are derived directly from the Sanskrit or ( through ) some of its corruptions It is contended by some that Pali was the medium through which all the Prakrit dialects come into existence

† हेमचन्द्र के अनुसार ऋ, ॠ, लृ, लृ, ए औ ये छ स्वर और ड, ज, श, ष, विसर्जनीय और ग्लुत प्राकृत के वर्ण समाग्नाय मे नही होते। किन्ही किन्ही शब्दो मे हेमचन्द्र के अनुसार ए और औ भी देखे जाते है। जैसे—कैअव ( कैतवम् ), सौअरिअ ( सौन्दर्यम् ) कौरवा ( कौरवा )

( २ ) भिन्न वर्गवाले व्यञ्जन वर्णों का परस्पर सयोग नहीं होता अर्थात् त्+क, प्+क, क्+त, क्+य, क्+र, क्+ल, ल्+क और क्+व इनका परस्पर सयोग न होकर केवल 'क्क' रूप ही होता है। उसी तरह ङ्+ग, ङ्+ग, ग्+न, ग्+य, ग्+र, र्+ग और ल्+ग का परस्पर सयोग न होकर केवल ग्ग रूप ही रहता है। जैसे—उक्कठा ( उत्कण्ठा ), अक्कवल ( अक्कमलम् ), एक्कचरो ( नक्तञ्चर ), जण्णवक्केण ( याज्ञवल्क्येन ), सक्को ( शक्र ), विक्कवो ( विल्व ), उक्का ( उल्का ), पिक्क ( पक्कम् ), खग्गो ( खड्ग ), अग्गिणी ( अग्नीन् ), जोग्गो ( योग्य ), कञ्जग्गहो ( कञ्जग्रह ), मग्गो ( मार्ग ) बग्गा ( बल्गा ) ।

**विशेष**—इसी तरह दूसरे भिन्नवर्गीय वर्णों के बारे में भी जानना चाहिए। जैसे—सत्तावीसा ( सप्त-विंशति ), कण्णउर ( कर्णपुरम् )

( ३ ) वर्ग के पाँचवे अक्षरो का अपने वर्ग के अक्षरो के साथ भी कहीं-कहीं सयोग देखा जाता है, किन्तु सर्वत्र नहीं। यथा—अङ्को ( अङ्क ), इङ्गालो ( अङ्गार ), तालवेण्ट ( तालवृन्तम् ), वञ्जणीयम् ( वञ्जनीयम् ), फन्दन ( स्पन्दनम् ), उम्बर ( उडुम्बरम् )

( ४ ) प्राकृत में ऐसा व्यञ्जन नहीं मिलता जो ( सस्कृत के यावत्, तावत्, ईषत् के तकार के समान ) स्वर-रहित हो ।

( ५ ) प्राकृत में प्रकृति, प्रत्यय, लिङ्ग, कारक, समाससज्ञा आदि सस्कृत के समान ही होते हैं ।

( ६ ) प्राकृत में द्विवचन नहीं होता। इसी प्रकार सप्रदान कारक में आनेवाली चतुर्थी विभक्ति भी प्राकृत में नहीं होती है। हिन्दी और अंग्रेजी की तरह द्विवचन का काम बहुवचन

से और चतुर्थी का काम षष्ठी से पूरा कर लिया जाता है\* ।  
द्विवचन के बदले बहुवचन का उदाहरण जैसे—वच्छा चलन्ति  
( वत्सौ चलत ), चतुर्थी के बदले षष्ठी जैसे—विप्पस्स देहि  
( जिप्राय देहि )

( ७ ) समास में कभी कभी दीर्घ स्वर ह्रस्व स्वर के रूप में और ह्रस्व स्वर दीर्घ स्वर के रूप में बदलता हुआ देखा जाता है । दीर्घ का ह्रस्व जैसे—जहट्टिअ ( यथा स्थितम् ), अतावेइ ( अन्तर्वेदी ), ह्रस्व का दीर्घ जैसे—सत्तावीसा ( सप्त-विंशति ) ।

( ८ ) कभी कभी दीर्घ और ह्रस्व के क्रमशः ह्रस्व और दीर्घ रूप समास में विकल्प से होते देखे जाते हैं । जैसे—  
णइसोत्त, णईसोत्त ( नदीस्रोत\* ), बहुमुह बहूमुह ( बधूमुखम् ),  
पिआपिअ, पीआपीअ ( प्रियाप्रियम् )

**विशेष :—**कभी कभी स्वरों के उक्त परिवर्तन नहीं भी देखे जाते हैं । जैसे—जुवइ अणो ( युवतिजन )

( ९ ) दो पदों में सान्निध्य रहने पर संस्कृत के लिए विहित कुल सन्धि-कार्य प्राकृत में विकल्प से किये जाते हैं । जैसे—  
वास+इसी, वासेसी ( व्यासषि ), दहि+ईसरो, दहीसरो  
( दधीश्वर\* )

---

\* देखिए वररुचिसूत्र द्विवचनस्य बहुवचनम् ६३३ और चतुर्थ्या षष्ठी ६६४ अर्द्धमागधी में चतुर्थी देखी जाती है । जैसे—  
अधम्माय कुञ्जइ ( अधर्माय क्रु यति ), ससाराए सुख ( ससाराय सुखम् ), अट्टाए दण्डो ( अर्थाय दण्ड ) इत्यादि ।



**विशेषः**—(क) एरु पद मे सन्धि कार्य नही होता । जैसे—

पाओ (पाद् ), पई, वच्छाओ, मुद्दाए इत्यादि ।

(ख) कही कही एरु पद मे भी शब्दो के स्वभाव-  
वशा सन्धि होती देखा जाती है । जैसे—काहिइ,  
काही, विइओ, वीओ ।

( १० ) 'इ' और 'उ' का त्रिजातीय स्वर के साथ कभी  
सन्धि-कार्य नही होता । जैसे—विअ ( इव ), महुई ( मधुनि ),  
न वैरिवग्गे वि अबयासो ( न वैरिवर्गेऽप्यवकाश\* ), दगु  
इन्द्ररुहिरलित्तो † ( दनुजेन्द्ररुविरलित्त )

( ११ ) सजातीय स्वर के साथ सन्धि हो जाती हे । जैसे—  
पुहवी + ईसो = पुहवीसो ( पृथिवीश ), कुलूद + आहिपो = कुलू-  
दाहिपो ( कुलूताविप ) ।

( १२ ) 'ए' और 'ओ' के आगे यदि कोई स्वर वर्ण हो तो  
उनमे सन्धि नही होती है । जैसे—देवीए + एत्थ, एओ + एत्थ  
( देव्या अत्र, एकोऽत्र ), बहुआइ नहुल्लिहणे आबन्धन्तीए  
कञ्चुअ अङ्गे ( बध्ना नखोल्लेखने आबन्धन्त्या कञ्चुकमङ्गे ), त  
चेव मल्लिअ विसदण्ड विरसमालक्खिमो एण्हि ( तदेव मृदित-  
विसदण्डविरसमालक्षयामह इदानीम् )

\*, भीय परित्ताणमद पइएण मसिणो तुहाधिरूढस्स ।

( भीतपरित्राणमयी प्रतिज्ञामसेस्नवाधिरूढस्य । )

मन्ने सकाविहुरे न वैरिवग्गे वि अबयासो ।

( मन्ये शङ्काविधुरे न वैरिवर्गेऽप्यवकाश\* ॥ )

† दगु इन्द्र रुहिरलित्तो सहइ उइन्दो नहण्णहावलि अरुणो ।

( दनुजेन्द्ररुविरलित्त शीभते उपेन्द्रो नखप्रभावल्लयरण )

( १३ ) व्यञ्जनवदित स्वर से व्यञ्जन का लोप हो जाने पर जो स्वर बँचा रह जाता है उसे प्राकृत के वैयाकरण लोग 'उद्वृत्त' कहते हैं। कोई भी 'उद्वृत्त' स्वर किसी भी स्वर के साथ सन्धि कार्य को नहीं प्राप्त करता है। जैसे—गन्ध-उडि ( गन्धकुटीम् ), निशाञ्चरो ( निशाचर ), रयणीञ्चरो ( रजनीचर\* )

**विशेषः**—कही कही इस नियम के प्रतिकूल उद्वृत्त स्वर का दूसरे स्वर के साथ सन्धिकार्य विकल्प से होता है। और कही कही सन्धि अवश्य होती है। विकल्प से जैसे—सुउरिसो, सूरिसो ( सुपुरुष\* ), नित्य जैसे—चक्रकाञ्चो ( चक्रवाक ), सालाहणो ( सातवाहन )

( १४ ) 'तिप्' आदि प्रत्ययो के स्वर किसी भी स्वर के साथ सन्धि कार्य प्राप्त नहीं करते हैं। जैसे—होइ इह ( भवतीह )

( १५ ) किसी स्वर वर्ण के पर मे रहने पर उसके पूर्व के स्वर ( उद्वृत्त अथवा अनुद्वृत्त ) का वैकल्पिक लुक् होता है। जैसे—तिञ्चस ( त्रिदश ) के सकार के आगेवाले अकार ( अनुद्वृत्त ) का 'ईसो' ( ईश ) के ई के पर मे रहने पर लुक् हो गया। अब स् और ई के मिल जाने से 'तिञ्चसीसो' हुआ। वैकल्पिक होने के कारण 'तिञ्चस ईसो' भी होता है। इसी प्रकार 'राउल' ( उद्वृत्त अस्वर का लुक् ) और राञ्ज उल ( राजकुलम् ) भी जानना चाहिए ॥\*

\* तुलना कीजिए—अरणावञ्चणुक्कणठो ( आजावचनोत्कणठ ) अभि० शा०, २ अ ), सलिलसेञ्चसभमुग्गदो ( सलिलसेकसभमोद्गत ) अभि० शा०, २ अ ।

**विशेषः—**(क) शौरसेनी आदि प्राकृत के अन्य भेदों में उक्त नियम लागू नहीं होता ।  
 (ख) प्राकृत प्रकाश के अनुसार किसी भी सयुक्ताक्षर के पूर्व में वर्तमान स्वर से पूर्ववर्ती स्वर का म्ब जगह लोप होना माना जाता है ।  
 जैसे—एत्थि ( नास्ति )

( १६ ) शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का सर्वत्र लुक् होता है । जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
जाव	यावत्
तावक्	तावत्
जसो†	यश
एह‡	नभ
सिर	शिर*

**विशेषः—**समास में उक्त नियम विकल्प से होता है ।  
 मभिक्व् ( लुक् ) सज्जणो ( अलुक् )

( १७ ) 'श्रत्' और 'उत्' इन दोनों के अन्त्य व्यञ्जन का लुक् नहीं होता । जैसे—सद्धा ( श्रद्धा ), उरणय ( उन्नयम् )

( १८ ) 'निर्' और 'दुर्' के अन्तिम व्यञ्जन र् का लुक् विकल्प से होता है । जैसे—निस्सह ( लुगभाव ), नीसह ( लुक् ), दुस्सहो ( लुगभाव ), दूस्सहो ( लुक् ) । स निस्सहम्, दुस्सह ।

\* शौरसेनी में दाव होता है ।

† नसान्तप्रावृट्सरद् पुंसि । वरं सू ४१८ नान्त, सान्त प्रावृष् और सरद् शब्दों का प्रयोग पुल्लिङ्ग में होता है ।

‡ न सिरोनभसी । वर० सू० ४१९ शिरस् और नभस् शब्दों के पुल्लिङ्ग में प्रयोग का निषेध है ।

( १६ ) स्वर वर्ण के पर मे रहने पर 'अन्तर्' 'निर्' और 'दुर्' के अन्त्य व्यञ्जन ( रेफ ) का लुक् नहीं होता । जैसे— अन्तरप्पा ( अन्तरात्मा ), अन्तरिदा\* ( अन्तरिता ), नि ( गिण ) रुत्तर† ( निरुत्तरम् ) गिराबाध‡ ( निराबाधम् ), दुरुत्तर ( दुरुत्तरम् ) दुरागद§ ( दुरागतम् ) ।

**विशेष :—**कही कही 'निर्' के रेफ् का लुक् देखा भी जाता है । जैसे—मुद्राराक्षस के पाँचवे अङ्क मे क्षपणक कहता है 'ता जइ भाउराअणस्स मुद्दालाञ्छितोऽसि तवो गच्छ जीरात्थो, अण्णधा गिबत्तिअ गिउक्कण्ठ'‡ चिह्न । ( तद् यदि भागुरायणस्य मुद्रालाञ्छितोऽसि तदा गच्छ विश्वम् । अन्यथा निवृत्य निरुक्कण्ठ तिष्ठ । )

\* तेन हि लदापिडवन्तरिदा सुणिस्स ( तेन हि लताविट्पातरिता श्राग्ये । ) विक्र० अ० २ मे देवीवचन ।

† वअस्स, गिरुत्तरा एसा ( वयस्य, निरुत्तरा एषा ) विक्र० अ० ३ मे चित्रलेखावचन ।

‡ इमिणा दब्भोदएण गिराबाध एव्य दे सरीर भविस्सदि ( अनेन दर्भोदकेन निराबाधमेव ते शरीर भविष्यति । ) अभि० शा०, अ० ३ मे गौतमीवचन ।

§ दुरागद दाणिं सवुत्त ( दुरागतमिदानीं सवृत्तम् ) विक्र० अ० २ मे देवीवचन ।

‡ वररुचि के ( ३१ ) मत से क्, ग्, ङ्, त्, द्, प्, प्, स यदि सयोग के आदि मे हो तो उनका लोप हो जाता है । और

✓ (२०) निद्युत् शब्द को छोड़कर खीलिङ्ग में वर्तमान सभी व्यञ्जनान्त शब्दों के अन्त्य व्यञ्जन का आत्व होता है। जैसे— सरिञ्चा (सरित्), सपञ्चा (सपद्), वाञ्चाञ्ज (वाक्), अञ्छरा (अप्सर)

उन्हीं के अन्य सूत्र (३ ५०) के अनुसार आदि में नहीं रहनेवाले जो सयुक्त के शेष यथया आदेशभूत अक्षर हो उनका द्वित्व माना गया है। इस प्रकार उत्फण्टा में त् का लोप और क् का द्वित्व करके 'उक्कण्टा' बनता है। उत्पात का 'उपाग्रो' बनता है। यह प्रकार उत्तम है। प्राकृतप्रकाश में दूसरे भी लोपविधायक सूत्र देखे जाते हैं। जैसे— (१) उदुम्बरे दोर्लोपि । वर० ० ४ उदुम्बर शब्द में दु का लोप होता है। उमर (उदुम्बरम्) (२) कालायसे यस्य वा । वर० ३ ४ कालायस मं य का लाप विकल्प से हाता है। कालास काला अस (कालायस) (३) भाजने जस्य । वर० ४ ४ भाजन शब्द में ज का वैकल्पिक लोप होता है। भाण, भाञ्ण (भाजनम्) (४) यावदादिषु बस्य । वर० ५ ४ यावत् प्रभृति शब्दों में 'व' का वैकल्पिक लोप होता है। जा, जाव, ता, ताव, पाराञ्चो, पारावञ्चो अनुत्तेन्तो, अनुवत्तन्तो, जीञ्च, जीविञ्च, एञ्च एवञ्च, एञ्च एवञ्च, कुलञ्च, कुवलञ्च, (यावत्, तावत्, पारावत्, अनुवर्तमान, जीवितम् एव, एव, कुवलथम्)

\* एत्तिञ्च जेत्त अत्थि मे वाञ्चाञ्छल (एतापदेवास्ति मे वाक्छलम्) मुद्रा० अ० १ में चन्दनदासवचन। एत्थि मे वाञ्चाविह्वो (नास्ति मे वाग्विभव) विक्र० अ० २ में उर्वशीवचन।

† सहि, अञ्छरावावारपञ्जाएण तत्र भञ्चदो सुञ्चस्स उवढाणे वट्टती (सरि, अप्सरोव्यापारपर्यायेण तत्र भवत सूयस्पोपस्थाने वर्तमाना) विक्र० अ० ४ म चित्रलेसावचन।

**विशेष—**(क) यह नियम इसी अध्याय के नियम १६ का अपवाद है ।

(ख) विद्युत् शब्द का प्राकृत रूप विज्जू होता है ।

(ग) उक्त नियम से जो आ होता है, उसका उच्चारण कभी-कभी ईषत्स्पृष्टतर या के के समान भी होता है । सरिया, पाडिवया, सपया ।

(घ) अप्सरस् का एक रूप अच्छरसा भी होता है ।

( २१ ) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान रेफान्त शब्द के अन्तिम र् का आदेश होता है । जैसे—धुराः, गिराः, पुरा ( धू, गी, पू )

( २२ ) 'लुध्' शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का 'हा' आदेश होता है । जैसे—छुहा ( लुत् )

( २३ ) 'शरत्' प्रभृति शब्दों के अन्तिम व्यञ्जन के स्थान में 'अ' आदेश होता है । जैसे—सरअ, § भिसअ ( शरत्, भिषक् )

\* दुव्वोज्झा वि अवलम्पिआ कज्जधुआ । रा० ४ ४४

† पासम्मि ठिआ तस्स य महूअगोरीओ महूअमहुरगिरा । ( पार्श्वे स्थिता तस्य या मवूकगौर्यो मधूकमधुरगिर । ) कुमा० पा० १ ७५

‡ प्राकृत प्रकाश के 'शरदो द' वर० सू० ४ १० के अनुसार शरत् के अन्तिम व्यञ्जन का 'दू' आदेश होता है । इसके अनुसार शरत् के लिए 'सरअ' न होकर 'सरदो' रूप होता है ।

§ सीआ वाह विहाओ दहमुहवज्ज दिअहो उवगओ सरओ रा० १ १६

✓ ( २४ ) 'दिश्' और 'प्रावृष्' शब्दों के अन्तिम व्यञ्जनो के स्थान मे 'स' आदेश होता है । जैसे—दिसा,॥ पाउसो† ( दिक्, प्रावृट् )

( २५ ) 'आयुष्' और 'आप्सरस्' के अन्त्य व्यञ्जनो का 'स' आदेश विकल्प से होता है । जैसे—दीहाउसो,‡ दीहाऊ, अच्छरसा,§ अच्छरा() ( अप्सरा )

( २६ ) ककुम्भ् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन का ह् आदेश होता है । जैसे—कउहा ( ककुम्भ् )

✓ ( २७ ) वनुष् शब्द के अन्त्य व्यञ्जन के स्थान मे ह् आदेश विकल्प से होता है । जैसे—वणुह, वणू□ ( धनु )

✓ ( २८ ) अन्त्य 'म्' का अनुस्वार होता है । जैसे—जलं, फलं, वच्छं, गिरि पच्छं ( जलम्, फलम्, वत्सम्, गिरिम्, प्रेक्षस्व ) ।

फुरइ फुरिअट्टहास उद्धपडित्तिमिर मित्र दिसा-अक्क ।  
रावण० १ ५

† दिसाण पाउस-किलत्ताण । ( दिशा प्रावृट्कान्तानाम् । ) कुमा० पा० १ ६

I दीहाऊ । व अदीहाउसमाणी सद् विवेइ-जणो । ( दीर्घायुरपि अदीर्घायुर्मान्नी सदा विवेकिजन । ) कुमा० पा० १ १०

§ जीत्र-विढत्तच्छरस । रावण० १३ ४७

() गत्रण-णिरात्र-भियण-धण मेसि अच्छरेहि । रावण० ७ ४५

□ कुसुमधणू धणुहधरो कउहा-मुह-मण्डणम्मि चन्दमि ।  
( उसुमधनुर्धनुधर ककुम्भुपमण्डने चन्द्रे । ) कुमा० पा० १ ११

( २९ ) कही-कहीं अनन्त्य मकार का वैकल्पिक रूप से अनुस्वार होता है । जैसे—वणम्मि, वणमि ( वने )

( ३० ) स्वर के पर मे रहने पर अनन्त्य मकार का अनुस्वार विकल्प से होता है । जैसे—फटा अवहरइ, फलमवहरइ ( फल-मवहरति )

**विशेष**—अनुस्वार के अभाव पक्ष मे म् का म् ही रह गया । लुक् का अप्रगट होने से लुक ( ११६ ) नहीं हुआ ।

( ३१ ) कभी-कभी 'म्' के अतिरिक्त दूसरे व्यञ्जनो के स्थान मे भी पाक्षिक मकार होता देखा जाता है । जैसे—वीसु\*, पिह, सम्म, सकर, ज, त, ( विष्वक्, पृथक्, सम्यक्, साक्षात्, यत्, तत्, )

( ३२ ) व्यञ्जन वर्णों के पर मे रहने पर ड्, ज्, ण्, न् के स्थान मे अनुस्वार होता है । जैसे—पत्ती, परमुहो, कचुओ, वचण, समुहो, उक्कठा, कसो, असो ( पडिक्त\*, पराड्मुख, कञ्चुक, वञ्चनम्, षण्मुख, उत्कण्ठा, कस, अश\* )

( ३३ ) वक्रप्रभृति† शब्दो मे कही प्रथम, कही द्वितीय तथा कही तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

\* वीसु वासा नीसित्त महि अले ऊस मालि तेअस्स ( विष्वग्वर्षानि षिक्तमहीतले उखमालितेजस । कुमार पा० १ ३२

† वक्रत्र्यस्तवयस्याश्रु श्मश्रुपुच्छातिमुक्तकौ ,

गृष्टिर्मनस्विनी स्पर्शश्रुतप्रतिश्रुत तथा ।

निवसन दर्शनञ्चैव वक्रादिष्वेवमादय ॥

( प्राकृतरूपलतिका के अनुसार वक्रादि गण । यह गण आकृति गण माना जाता है । )



जैसे—वक ( वक्रम् ), तस ( त्र्यस्रम् ), असु ( अश्रु ), मसू ( श्मश्रु ) पुछ ( पुच्छम् ) गुछ ( गुच्छम् ), मुढा अथवा मुड ( मूर्द्धा ), फसो ( स्पर्श\* ), बुधो ( वृद्ध\* ), ककोडो ( कर्कोट\* ), कुपल ( कुट्मल अथवा कुड्मलम् ), दसण ( दर्शनम् ) विछिओ ( वृश्चिक ), गिठी अथवा गुठी ( गृष्टि ) मजारो ( मार्जार ) \* वयसो ( वयस्य\* ), मणसिणी ( मनस्विनी ), मणसिला ( मन-शिला ), पडिसुद ( प्रतिश्रुतम् ), पडिसुआ ( प्रतिश्रुत् )† उवरि ( उपरि ), अहिसुको ( अभिसुक्त ) अणिउंतय, अइमुतय ( अति-मुक्तकम् )‡

( ३४ ) क्त्वा एव स्वादि के ण और सु के आगे विकल्प से अनुस्वार आता है ।

क्त्वा के आगे जैसे—

### प्राकृत

### संस्कृत

काउण (अनुस्वार), काउण (अनुस्वार का अभाव) क्त्वा स्वादि के ण के आगे जैसे—

वच्छेण (अनुस्वार), वच्छेण (अनु० का अभाव) वृत्तेण स्वादि के सु के आगे जैसे—

वच्छेसु (अनुस्वार), वच्छेसु (अनु० का अभाव) वृत्तेषु

\* वक से मजारो तक प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का आगम हुआ है ।

† वयसो से पडिसुआ तक शब्दों में द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

‡ उवरि से अइमुतय तक शब्दों में तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का आगम होता है ।

( २५ ) विशति प्रभृति\* शब्दों के अनुस्वार का लुक् होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
वीसा	विशति*
तीसा	त्रिशत्
सक्कञ्च	संस्कृतम्
सक्कारो	संस्कार*
सत्तुञ्च	संस्तुतम्

( २६ ) मासादि गणां मे अनुस्वार का लुक् विकल्प से होता है। जैसे—

(क) प्रथम स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत	संस्कृत
मास, मस	मासम्
मासल, मसल	मासलम्
कि, कि,	किम्

\* विशत्यादि गण मे विशति, त्रिशत्, संस्कृत, संस्कार और संस्तुत शब्द गृहीत है।

† मासादि गण के विषय मे प्राकृतप्रकाश मे यो लिखा गया है—‘यत्र क्वचित् वृत्तभङ्गभयात् त्यज्यमान त्रियमाणश्च विन्दुर्भवति स मासादिषु द्रष्टव्य ।’ अर्थात् छन्दोभङ्ग के भय से जिस किसी शब्द मे अनुस्वार छोड़ा जाता या गृहीत होता है, वह शब्द मासादि गण मे माना जाता है।

प्राकृत सस्कृत

कास, कस	कासम्
सीहो, सिघो	सिह्*
पासू, पसू	पासु* (शु)

(ख) द्वितीय स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत सस्कृत

कह, कह	कथम्
एव, एव	एवम्
नूण, नूण	नूनम्

(ग) तृतीय स्वर के आगे अनुस्वार का लुक्—

प्राकृत सस्कृत

इआणि, इआणि	इदानीम्
समुह, समुह	सम्मुखम्
केसुअ, फिसुअ	फिशुकम्

(३७) वर्गों का यदि कोई अक्षर पर मे हो तो पूर्व के अनुस्वार के स्थान मे पर अक्षर के वर्ग का पञ्चम अक्षर विकल्प से होता है। क, ख, ग, घ के पर मे जैसे—

प्राकृत सस्कृत

पङ्को, पको	पङ्क
सङ्घो सखो	शङ्ख
अङ्गण, अगण	अङ्गनम्
लङ्गण, लघण	लङ्गनम्

च, छ, ज, झ के पर मे जैसे—

कञ्चुओ, कचुओ	कञ्चु
लञ्छण, लछण	लाञ्छनम्
व्यञ्जिअ, वजिअ	व्यञ्जितम्
सञ्भा, सभा	सन्ध्या

ट, ठ, ड, ढ के पर मे जैसे—

कण्टओ, कटओ	कण्ट
उक्कण्ठा, उक्कठा	उक्कण्ठा
कण्ड, कड	काण्डम्
सण्ढो, सढो	षण्ड

त, थ, द, ध के पर मे जैसे—

अन्तर, अतर	अन्तरम्
पन्थो, पथो	पन्था
चन्दो, चदो	चन्द्र
बन्धवो, बधवो	बान्धव

प, फ, ब, भ के पर मे रहने पर जैसे—

कम्पइ, कपइ	कम्पते
वम्फइ, वफइ	काङ्क्षति
क्लम्बो, कलाबो	क्लम्ब
आरम्भो, आरभो	आरम्भ

**विशेष :—**(क) पर मे वर्ग का अक्षर नहीं रहने से किसुओ और सहरइ मे उक्त नियम लागू नहीं हुआ।

(ख) प्राकृत के अन्य वैयाकरण उक्त नियम को वैकल्पिक न मान कर नित्य मानते हैं।

## लिङ्गानुशासन

✓ (३८) प्रावृष्, शरद् और तरणि शब्दों का पुल्लिङ्ग में प्रयोग किया जाना चाहिए। जैसे—पाउसो, \* सरओ, † तरणी‡

(३९) दामन्, शिरस् और नभस् से वजित सकारान्त तथा नकारान्त शब्द पुल्लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

सान्त जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
✓जसो□	यश
✓पओ()	पय
तमो§	तम
तेओ△	तेज
सरो×	सर

\* जइआ गिहो पयहओ तदअ चिअ किर आसि पाउसो ।

कुमा० पा० ४ ७८

† दहमुह वज्ज दिअहो उग्रओ सरओ । रावण० १ १६

‡ न जत्थ दीसइ फुडो तरणी । कुमार० पा० १ २१

□ पारोहो व्व खुडिओ महेन्दस्स जसो । रावण० १ ४

○ धीरअ सइ मुहल घण पअ-विज्जन्तअ । रावण० २ २४

§ राह सिह तमेण व चउदिस भाविअ । रावण० २ २३

△ देसिए १ ३१ की पादटिप्पणी ।

× अमुणा सरेण हसाण माणस त पि विम्हरिअ । कुमा० पा

नान्त जैसे—

जम्मोः	जन्म
नम्मोः	नम
कम्मोः	कर्म
वम्मोः	वर्म

( ४० ) दामन्, शिरस् और नभस् शब्द नपुसक लिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—दाम० ( दाम ), सिरः ( शिर ), नह × ( नभ )

**विशेषः—**(क) यह नियम पूर्व नियम ( १ ३६ ) में प्रतिषिद्ध दामन् आदि तीनों शब्दों के लिङ्ग का बोधन करता है।

(ख) नीचे लिखे उदाहरणों में भी उक्त १ ३६ नियम प्रवृत्त नहीं होता है। अर्थान् नपुसकत्व हो जाता है। जैसे—

\* सहलो जम्मो सभल च जीविअ ताण देव फणि चिन्ध ।  
कुमा० पा० २ ५६

† इअ नम्म-पड् जल पाण रई । कुमा० पा० ४ ३३

□ काही सउहे गमण सभा-कम्म च काहीअ । कुमा० पा० ५,  
८७

⌈ अग्घिअवम्मा ( राजितवर्माण ) छुज्जिअ सिरक्कया । कुमा०  
पा० ६ ६३

○ गलिअ घण लच्छि रअण रसणा दाम । रावण० १ १८

§ उण्णामिअ राणु सिर जाअ । रावण० ४ ५६

× थाण फिडिअ सिडिल पडन्त व णह । रावण० ४ ५४

वयः\* ( वय ), सुमणां ( सुमन ), सम्मां  
( शर्म ), चम्म□ ( चर्म )

( ४१ ) अक्षि ( अख ) के समानार्थक शब्द तथा निम्न निर्दिष्ट वचनादि( )गण के शब्द पुल्लिङ्ग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं । अक्षि शब्द का पाठ अञ्जल्यादि गण में भी किया गया है, इसलिए स्त्रीलिङ्ग में भी उसका प्रयोग होता है । जैसे—

प्राकृत		संस्कृत
अच्छी§	( पुल्लिङ्ग )	अक्षिणी
अच्छीइ][	( नपुसक )	अक्षिणी
एसा अच्छी	( स्त्रीलिङ्ग )	एतदक्षि
चक्खू ( पुल्लिङ्ग )	}	चक्षुषी
चक्खूइ ( नपुसक )		
णअणो ( पुल्लिङ्ग )	} △	नयनम्
णअण ( नपुसक )		

\* † सन्ववयाण मञ्जिमवय व सुमणाण जाइ सुमण वा ।

कुमा० पा० १ २३

‡ सम्माण मुत्ति सम्म न पुहइ नयराण ज सेय । कुमा० पा० १ २३

□ चम्म जाण न अच्छी ।

कुमा० पा० १ २४

( वचनादि गण में वचन, कुल, माहात्मा दु ख, छ दस्, विजु आदि शब्द गृहीत हैं ।

§ अज वि सा सवइ ते अच्छी । ( अद्यापि सा शपति तेऽक्षिणी )

][ नच्चावियाइ तेण्ह अच्छीइ ( नर्तितानि तेनास्माकमक्षिणि )

△ शाकल्य शरद स्त्रीत्वे क्लीबे नान्तञ्च कुण्डिन । पुक्लीबयोस्त-  
थारयात नयनादि तथा परै । कल्पलतिका ।

विअसन्ति जत्थ नयणाकिं पुण अन्नाण नयणाइ, कुमा० पा० १ २४

लोअणो (पुल्लिङ्ग) } *	लोचनम्
लोअण (नपुसक) }	
वअणो (पुल्लिङ्ग) } †	वचनम्
वअण (नपुसक) }	
कुलो (पुल्लिङ्ग) } ‡	कुलम्
कुल (नपुसक) }	
माहप्पो } ‡	माहात्म्यम्
माहप्प }	

( ४२ ) किसी किसी आचार्य के मत से पृष्ठ, अक्षि और प्रश्न शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं। जैसे—पुट्टी, पुट्ट (पृष्ठम्), अच्छी, अच्छ (अक्षि), पर्णाहा, पर्णाहो (प्रश्न\* )।

( ४३ ) गुणादि( ) शब्द नपुसक लिङ्ग में विकल्प से प्रयुक्त होते हैं। जैसे—गुण□ गुणो (गुण), देवाणि, देवा (देवा), खग्गा, खग्गो (खड्ग), मण्डलग्गा, मण्डलग्गो (मण्डलाग्र), कररुह, कररुहो (कररुह), रुक्खाइ, रुक्खा (वृक्षा)

( ४४ ) इमान्त (इमन् प्रत्यय जिसके अन्त में आया हो )

\* विहसतहिओ विहसेन्त लोअणो । कुमा० पा० ५ ८४

† गुरुणो वयणा वयणाइ । कुमा० पा० १ २५

‡ नेत्र और कमल शब्दों का वचनादि में ग्रहण नहीं है। क्योंकि वे संस्कृत के अनुसार ही हैं।

( ) गुणादि में गुण, देव, विन्दु, खड्ग, मण्डलाग्र, कररुह, और वृक्ष शब्द गृहीत हैं।

□ विहवेहि गुणाइ मगान्ति ( विभवैर्गुणा मृग्यन्ते ) हेम० १ ३४



और अञ्जल्यादि गण के शब्द विकल्प से स्त्रीलिङ्ग में प्रयुक्त होते हैं।

इमान्त में जैसे—

प्राकृत

एसा गरिमा, एसो गरिमा  
एसा महिमा, एसो महिमा†

संस्कृत

एष गरिमा।  
एष महिमा

अञ्जल्यादि में जैसे—

✓ एसा अजली, एसो अजली‡	एष अञ्जलि
चोरिआ (स्त्री०), चोरिआ (पु०)	चौर्यम्
निहो (स्त्री०), निहो (पु०)△	निधि
विही (स्त्री०), विही (पु०)	विधि
गठी (स्त्री०), गठी (पु०)	ग्रन्थि*

(४५) जब वाहु शब्द स्त्री लिङ्ग में प्रयुक्त होता है, तब उसके उकार के स्थान में आकार आदेश होता है। किन्तु जब

\* अञ्जल्यादि गण में अञ्जलि, पृष्ठ, अक्षि, प्रश्न, चौर्य, कुक्षि, बलि, निधि, विधि, रश्मि और ग्रन्थि शब्द ग्रहीत हैं। रश्मि स्त्रिया वेत्ति कल्पलतिका। कल्पलतिकाया काश्मीरोष्म सीम शब्दा पठिता।

† एयाए महिमाए हरिओ महिमा सुर पुरीए।

—कुमा० पा० १ २६

‡ जत्थञ्जलिणा कणय रयणाइ वि अञ्जलीइ देइ जणो।

—वही। १ २७

△ कणय-निहो अकखीणो रयण-निहो अकखया तह वि।

—वही। १ २७

पुल्लिङ्ग मे प्रयुक्त होता है तब आकार आदेश न होकर बाहु रूप ही रह जाता है। जैसे एसा बाहाः, एसो बाहू। (एष बाहु\*)

( ४६ ) संस्कृत व्याकरण के अनुसार जब किसी अकार के आगे विसर्ग आया हो, तो उस विसर्ग के स्थान मे ओ आदेश हो जाता है और ओ के पूर्व के व्यञ्जन सहित अ का लोप होता है। जैसे—सव्वओ (सर्वत), पुरओ (पुरत\*), अग्गओ (अग्रत\*), मग्गओ (मार्गत )

**विशेष :**—यह सार्वत्रिक नियम नहीं है कि शब्द अकारान्त ही हो। अत व्यञ्जनान्त शब्दो मे भी उक्त नियम लागू हो जाता है। जैसे—भवओ (भवत\*), भवन्तो (भवन्त\*), सन्तो (सन्त\*), कुदो (कुत )

( ४७ ) माल्य शब्द के पर मे रहने पर निर् और स्था धातु के पर मे रहने पर प्रति के स्थान मे क्रमशः ओत् और परि आदेश विकल्प से होते है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
ओमल्ल अथवा ओमाल (ओ)	} निर्माल्यम्
निम्मल (ओ का अभाव )	
परिद्धा (परि आदेश )	} प्रतिष्ठा
पइद्धा (परि का अभाव) }	

\* तत्थ सिरि कुमर बालो बाहाए सव्वओ वि धरिअ धरो ।

—कुमा० पा० १ २८.

† बाहुसु सिला अल डिएसु गिसणो । —रावण० ३ १

परिद्धिञ् (परि आदेश) }  
 पइद्धिञ् (परि का अभाव) } प्रतिष्ठितम्

(४८) त्यद् आदिः सर्वनामों से पर मे रहनेवाले अव्ययो तथा अव्ययो से पर मे रहनेवाले त्यदादि के आदि स्वर का लुक् विकल्प से होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
अम्हेव (त्यदादि से पर अव्यय के आदि स्वर का लुक्)	वयमेव
✓ अम्हे एव (लुक् का अभाव)	वयमेव
जइह (अव्यय से पर मे आने-वाले त्यदादि के आदि स्वर का लुक्)	यच्चहम्
✓ जइ अह (लुक् का अभाव)	

(४९) पद से पर मे रहनेवाले अपि अव्यय के आदि अ का लुक् विकल्प से होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
त पि, तमवि	तमपि
कि पि, किमवि	किमपि
केण वि, केणावि ✓	केनापि
कह पि, कहमवि ✓	कथमपि

(५०) पद से पर मे रहनेवाले इति अव्यय के आदि इकार

\* त्यद्, तद्, यद्, एतद्, इदम्, अदस्, एक, द्वि, युष्मद्, अस्मद्, भवतु किम् ये ही त्यदादि सर्वनाम माने गये हैं।

का लुक् विकल्प से होता है और स्वर से पर मे रहनेवाले तकार का द्वित्व है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
कि ति	किमिति
य ति	यदिति
दिद्ध ति	दृष्टमिति
न जुक्त ति	न युक्तमिति

स्वर से पर रहने पर जैसे—

तह त्ति	तथेति
पिञ्चो त्ति	प्रिय इति
पुरिसो त्ति	पुरुष इति

विशेष—पद से पर मे नहीं रहने के कारण नीचे लिखे उदाहरण मे न तो इति के आदि इ का लुक् हुञ्चा और न तकार का द्वित्व ही। इञ्च\* विञ्च गुहानिलथाए।

( ५१ )—जिन श्, ष्, स् से पूर्व अथवा पर मे रहनेवाले य्, र्, व्, श्, ष्, स् वर्णों का प्राकृत के नियमानुसार लोप हुञ्चा हो उन शकार, षकार और सकारो के आदि स्वर का दीर्घ हो जाता है†। जैसे—

\* देखिए—नियम १ ६६

† इस नियम को पूर्णत समझने के लिए हेमचन्द्र के अधोमनयाम् २ ७८ अनादौ शेषादेशयोद्वित्वम्। २ ८२ न दीर्घानुस्वारात्। २ ६२ आदि सूत्रों का मनन आवश्यक है।

प्राकृत

संस्कृत

पासइ (यलोप२ ७८, द्वि०२ ८६, = पस्सइ सलुकृ२ ७७, दीर्घ)	पश्यति
कासवो ( " " " " = कस्सयो " " " )	काश्यय
वीसमइ ( र लोप २ ७६, दीर्घ)	विश्राम्यति
वीसामो ( " " " )	विश्राम
सफासो ( " " द्वित्व२ ८६, सफस्सो सलुकृ२ ७७, दीर्घ)	सफासो
आसो ( व लोप २ ७६ " " अस्सो " " " )	अश्व
वीससइ ( " " " विस्ससइ " " " )	विश्वसिति
विसासो ( " " " " विस्सासो " " " )	विश्वास
दूसासणो ( श लोप २ ७७, दीर्घ)	दुश्शासन.
मणासित्ता ( श ल.प २ ७७, दीर्घ)	मन शिला
सीसो ( य लोप २ ७८ द्वित्व२ ८६ सिस्सो सलुकृ२ ७७, दीर्घ)	शिष्य
पूसो ( " " " " पुस्सो " " " )	पुष्य*
मनूसो ( " " " " मनुस्सो " " " )	मनुष्य
कासत्रो ( र लोप २ ७६ " " कस्सत्रो " " " )	कर्षक
वासा ( " " " " वस्सा " " " )	वर्षा
वीसु ( व लोप २ ७६ उत्त्व१ ५२ द्वि, विस्सु " " " )	विष्वक्
सास ( य लोप २ ७८ " " सस्स " " " )	सस्यम्
कासइ ( य लोप २ ७८, द्वित्व२ ८६, कस्सइ, सलुकृ२ ७७, दीर्घ)	कस्यचित्
ऊसो ( र लोप२ ७६, " " " उस्सो " " " )	उस*
विकासरो ( व लोप " " " विकस्सरो " " " )	विकस्वर
नीसो ( " " " " निस्सो " " " )	निस्व*
नीसहो ( स लोप २ ७७ दीर्घ)	निस्सह.

( ५२ )—समृद्धथादिऋगण के शब्दों में आदि अकार का दीर्घ विकल्प से होता है। जैसे—सामिद्धी, समिद्धी ( समृद्धि ), पाञ्चड, पञ्चड ( प्रकटम् ), पासिद्धी, पसिद्धी ( प्रसिद्धि ), पाडि-वञ्चा, पडिवञ्चा ( प्रतिपदा ), पासुत्त, पसुत्त ( प्रसुप्तम् ), पाडि-सिद्धी, पडिसिद्धी ( प्रतिसिद्धि ) सारिच्छो, सरिच्छो ( सदृच् ), माणसी, मणसी ( मनस्वी ), माणसिणी, मणसिणी ( मनस्विनी ), आहिआई,\* अहिआई† ( अभिजाति ), पारोहो, परोहो ( प्ररोह ), पावासू, पवासू ( प्रवासी ), पाडिप्फद्धी, पडिप्फद्धी ( प्रतिस्पद्धी ), आसो अस्सो ( अश्व ) ।

**विशेष**—प्राकृतप्रकाश ने इस गण को आकृति गण माना है। ऊपर उदाहरणों में इसीलिए मनस्वी, प्ररोह और अश्व\* की उक्त गण के भीतर सिद्धि मानी गई है।

( ५३ ) दक्षिण शब्द में आदि अकार का, ह के पर में रहने पर, दीर्घ होता है। जैसे—दाहिणो ( दक्षिण\* )

**विशेष**—ह नहीं रहने पर दक्षिण का दक्खिणो यही रूप रह जाता है।

( ५४ ) स्वप्न आदि शब्दों में आदि 'अ' का इकार होता है। जैसे—सिविणो ( स्वप्न ), इसि ( इषत् ), वेडिसो ( वेतस ),

\* समृद्धथादि गण के शब्दों का परिगणन यो है—

समृद्धि, प्रतिसिद्धिश्च, प्रसिद्धि प्रकट तथा,  
प्रसुप्तञ्च प्रतिस्पद्धीं प्रतिपच्च मनस्विनी ।

अभिजाति, सदृच्श्च समृद्धथादिरय गण ॥—कल्पलतिका ।

\* आहिजाई यह पाठान्तर है ।

† अहिजाई यह पाठान्तर है ।

विलिञ्च ( व्यलीकम् ), विञ्चण ( व्यजनम् ), मुङ्गो ( मृदङ्ग\* ),  
क्विणो ( कृपण\* ), उत्तिमो ( उत्तम ), मिरिञ्च ( मरियम् ),  
दिण्ण\* ( दत्तम् ) ।

**विशेष**—जहाँ दत्त के त्त के स्थान में एत्व नहीं हुआ हो,  
वहाँ उक्त नियम में बहुल ( प्राय\* ) का अधिकार  
होने से इत्व नहीं होता है । जैसे—दत्त, देवदत्तो ।

( ५५ ) मयट् प्रत्यय में आदि अ के स्थान में 'अइ' आदेश  
विकल्प से होता है । अइ होने पर जैसे—विसमइञ्चो, अइ के  
अभाव में जैसे—विसमञ्चो ( विषमय. )

( ५६ ) अभिज्ञां आदि शब्दों में एत्व करने पर ज्ञ के ही

\* प्राकृत प्रकाश में—'इदीषत्पक्वस्वप्नवेतसव्यजनमृदङ्गा-  
ङ्गारेषु' यह सूत्र है । इस सूत्र में 'वेति निवृत्तम्' ऐसा कहा गया है ।  
इसि ( ईषत् ), पिक्क ( पक्क ), सिमिणो ( स्वप्न ), वेडिसो ( वेतस ),  
विञ्चणो ( व्यजनम् ), मिङ्गो ( मृदङ्ग ), इङ्गालो ( अङ्गार ) ।  
किंतु प्राकृतमञ्जरी के अनुसार यह इत्व विकल्प से होता है । ईषत्  
पक्क तथा स्वप्ना वेतसो व्यजन पुन । मृदङ्गश्च तथाङ्गार एषु शब्देषु  
सतसु । अन इद्वा भवेदीषदीसि वा पुनरीस वा । पक्क पिक्कश्च पक्कश्च  
तथान्येष्वपि दृश्यताम् । इत्वमीषत्पदे कैश्चिदीकारस्यापि चेव्यते । 'इसि  
सुम्बिअमित्यादि रूप तेन हि सिद्धयति । शौर-सेनी में अङ्गार और  
वेतस के आदि अकार का इकार नहीं होता । आर्ष में स्वप्न शब्द के  
आदि अकार का उकार भी होता है । जैसे—सुमिणो । इसके लिए  
देखिए—हेम० १ ४६ ।

† जिनके ज्ञ का एत्व कर देने पर उत्व देखा जाता है, वे ही  
अभिज्ञादि हैं । देखिए हेम० १ ५६

अकार का उत्त्व होना है। जैसे—अहिण्ण (अभिज्ञ), सव्वण्ण\* (सर्वज्ञ), आगमण्ण (आगमज्ञ\*)

**विशेष**—एत्वाभाव में अहिज्जो (अभिज्ञ) और सव्वज्जो (सर्वज्ञ) रूप होते हैं। अभिज्ञादि से भिन्न स्थल में नियम नहीं लगता। पण्णो (प्राज्ञ)।

(५७) शय्यां आदि शब्दों में आदि अकार का एकार आदेश होता है। जैसे—सेज्जां (शय्या), सुदेर (सुन्दरम्), उक्करो (उत्कर), तेरहो (त्रयोदश), अच्छेर (आश्चर्यम्), पेरन्त (पर्यन्तम्), वेज्जी (वज्जि)

**विशेष**—कोई-कोई प्राकृत वैयाकरण शय्यादि गण में कन्दुक का भी पाठ मानते हैं। उनके मत से गेडुअ (कन्दुकम्) रूप होता है।

(५८) अपि वातु के आदि अ का ओ आदेश विकल्प से होता है। ओ जैसे—ओप्पेइ, ओ का अभाव जैसे—अप्पेइ

\* पैशाची में सव्वण्ण न होकर सव्वज्जो और शौरसेनी में सव्वण्णो होता है।

† शय्यादि गण में निम्नलिखित शब्द ही माने गये हैं—

शय्या त्रयोदशाश्चर्य पर्यन्तोत्करवज्जय,  
सौन्दर्य चाते शय्यादिगण शेषन्तु पूर्ववत् ॥

‡ प्रसिद्ध वैयाकरण हेमचन्द्र ने एच्छय्यादौ १ ५७ और वल्ल्युत्करपर्यन्ताश्चर्ये वा १ ५८ इन दो सूत्रों को बनाकर प्रथम सूत्र से नित्य एत्व करते हुए सेज्जा, सुन्देर, गेन्दुअ, एत्थ (अत्र) इन उदाहरणों की सिद्धि मानी है। दूसरे से वैकल्पिक एत्व करते हुए वेज्जी, वज्जी, उक्करो, उक्करो, पेरन्तो, पजन्तो, अच्छेर, अच्छरिअ, अच्छथर, अच्छरिज, अच्छरीअ उदाहरण दिये हैं।



(अर्पयति), एव ओ आदेश जैसे—ओपिअ, ओ का अभाव जैसे—अपिअ (अर्पितम्)

(५९) स्वप् धातु मे आदि अ के स्थान मे ओत् और उत् आदेश पर्याय (बारी बारी) से होते है। ओत् जैसे—सोवइ, उत् जैसे—सुवइ (स्वपिति)।

(६०) नञ् के बाद मे आनेवाले पुनर् शब्द के अ के स्थान मे आ और आइ आदेश विकल्प से होते है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
ण उणा (आ)	न पुन
ण उणाइ (आइ)	
ण उण (पञ्च मे)	

(६१) अन्वयो मे और उत्खात,\* चामर, कालक, स्थापित प्रतिस्थापित, सस्थापित, प्राकृत, तालवृन्त हालिक, नाराच, बलाका कुमार, खादित, ब्राह्मण एव पूर्वाह्ण शब्दो मे आदि

\* प्राकृत प्रकाश और कल्पलतिका मे उक्त उदाहरणो की सिद्धि के लिए 'अदातो यथादिषु वा' सूत्र मिलता है। कल्पलतिका मे यथादि गण मे शब्दो का परिगणना यो की गइ है—

यथातथातालवृन्त प्राकृतात्खातचामरम् ।  
 चाटुप्रहावप्रस्तारप्रवाहाहालिकस्तथा ॥  
 मार्जारश्च कुमारश्च मार्जारियुफलोमिनि ।  
 सस्थापित खादितञ्च मरालश्चैवमादय ॥

प्राकृतमञ्जरीकार यथादि गण की गणना इस प्रकार करते हैं—

यथा चामरदावाग्निप्रहारोत्खातहालिका  
 तालवृन्ततथाचाट यथादि स्यादय गण ।

आकार का अकार विकल्प से होता है। यथा—जह, जहा (यथा), तह, तहा (तथा), अहव, अहवा (अथवा), उक्खअ, उक्खाअ (उत्खातम्), चमर, चामर (चामरम्), कलअओ, कालअओ (कालक), ठविअ, ठाविअ (स्थापितम्), परिठविअ, परिष्ठापि (प्रतिष्ठापितम्), सठविअ, सठाविअ (सस्थापितम्) पउअ, पाउअ (प्राकृतम्), तलवेण्ट, तालवेण्ट (तालवृन्तम्), हलिअओ, हालिअओ (हालिक), णाराअओ, णाराअओ (नाराच), वलाअ, वलाअ (वलाका) कुमरो, कुमरो (कुमार\*), खइअ, खाइअ (खादितम्), बम्हणो, बाम्हणो (ब्राह्मण), पुव्वण्हो, पुव्वाण्हो (पूर्वाह्ण)

( ६२ ) घब् को निमित्त मानकर जहाँ आ रूप वृद्धि हुई हो, उस आदि आकार का अत्व विकल्प से होता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
पवहो } पवाहो }	प्रवाह

❧ प्राकृत प्रकाश और कल्पलतिका के अनुसार प्रस्तार प्रहार, दावाग्नि, चाडु, मार्जार, मराल, प्रवाह इन शब्दों के आदि आकार का भी अत्व विकल्प से होता है। कल्पलतिका के अनुसार स्थापित, पाशुर तथा माधुर्य के आदि आकार का नित्य ही अत्व होता है। शौरसेनी आदि प्राकृत के अङ्गों में कहीं अत्व का निषेध देखा जाता है। क्रमश यहाँ उदाहरण दिये जा रहे हैं।—पत्थरो, पत्थारो (प्रस्तार), पहरो, पहारो (प्रहार), दवग्गी, दावग्गी (दवाग्नि), चडु, चाडु (चाटु), मजारो, माजारो (मार्जार), मरलो, मरालो (मराल), पवहो, पवाहो (प्रवाह)।—ठविअ (स्थापितम्), पसुर (पाशुरम्), मधुरीअ (माधुर्यम्), जधा (यथा), तधा (तथा)।

पञ्चरो }  
पञ्चारो }

प्रकार

**विशेष**—कुछ घञन्त शब्दो मे यह नियम लागू नहीं होता। जैसे—रात्रो (राग) इत्यादि।

( ६३ ) मास जैसे शब्दो मे अनुस्वार रहने पर (देखिए नियम १ ३६) आदि आकार का अत्व होता है जैसे—मस (मांसम्) पसू (पाशु), पसनो (पासन), कस (कासम्), कसिञ्चो (कासिक), वसिञ्चो (वासिक), ससिद्धिञ्चो (सांसिद्धिक), सजत्तिञ्चो (सायात्रिक)

( ६४ ) सदा आदि शब्दो मे आकार का इकार आदेश विकल्प से होता है। इकार जैसे—सइ, तइ, जइ, गिसिञ्चरो। इकार का अभाव जैसे—सञ्चा, तञ्चा, जञ्चा, गिसाञ्चरो ( सदा, तदा, यदा, निशाचर )

( ६५ ) यच्चि आर्या शब्द अञ्चु (सास) के अर्थ मे प्रयुक्त हो तो 'र्य' के पूर्ववर्ती आकार के स्थान मे ऊ होता है। जैसे—ऊञ्जा (सास अर्थ), अञ्जा (श्रेष्ठ अर्थ), (आर्या)।

( ६६ ) मात्रट् प्रत्यय के आकार के स्थान मे एकार विकल्प से होता है। एकार आदेश जैसे—एतिअमेत्त। एकाराभाव जैसे—एतिअमत्त (एतावन्मात्रम्)।

**विशेष**—कही कही मात्र शब्द मे भी आकार का एकार होता देखा जाता है। जैसे—भोअणमेत्त (भोजन मात्रम्)

( ६७ ) सयोग से अन्यवहित पूर्ववर्ती दीर्घ का कभी कभी ह्रस्व रूप हो जाता है। जैसे—अब (आम्रम्), तब (ताम्रम्),

विरहग्गी (विरहाग्नि), अस्स (आस्यम्), मुनिदो (मुनीन्द्रो) तित्थ (तीर्थम्), गुरुल्लावा (गुरुल्लापा), चुण्णो (चूर्णा), नरिन्दो (नरेन्द्र), मिलिच्छो (म्लेच्छ), अहरुट्ट (अधरोष्ठम्), नीलुपल (नीलोत्पलम्)

**विशेष**—सयोग पर मे नहीं रहने से आयास ईसरो, ऊसरो आदि शब्दों में उक्त नियम लागू नहीं होता है।

( ६८ ) आदि इकार का सयोग के पर में रहने पर एकार विकल्प से होता है। एकार होने पर जैसे—पेण्ड, णेदा, सेदूर, धम्मेल्ल, वेण्हू, पेट्ट, चेण्ह, वेल्ल। एकाराभाव में जैसे—पिण्ड, णिदा, सिदूर, वम्मिल्ल, विण्हू, पिट्ट, चिण्ह, विल्ल (पिण्डम् निद्रा, सिन्दूरम्, धम्मिल्ल, विष्णु, पृष्ठम्, चिह्नम्, विल्लम्)

**विशेष**—इस नियम के अनुसार पिण्डादि में जो एत्त होता है, शौरसेनी आदि में नहीं होता। उसमें पिण्ड, णिदा और वम्मिल्ल ये ही रूप होते हैं।

( ६९ ) जब इति शब्द किसी वाक्य के आदि में प्रयुक्त होता है, तब तकारवाले इकार का अकार हो जाता है जैसे—

### प्राकृत

इअ ज पिअवसाणे

इअ उअह अरण्ह वअरा

### संस्कृत

इति यत् प्रियावसाने

इति पश्यतान्यथा वचनम्

**विशेष**—इति शब्द के वाक्यादि में प्रयुक्त नहीं रहने पर अत्व नहीं होता। जैसे—पिअोः॥ त्ति (प्रिय इति), पुरिसो त्ति (पुरुष इति)

( ७० ) जहाँ निर के रेफ का लोप होता है, वहाँ नि के इकार का ईकार हो जाता है। जैसे—णीसहो (निस्सह) णीसासो (निश्वास)।

**विशेष**—रेफ के लोप का अभाव रहने पर उक्त ईकार नहीं होता। जैसे—णिरओ (निरय), णिस्सहो (नि सह)।

(७१) द्वि शब्द और नि उपसर्ग के इकार का उ आदेश होता है। किन्तु कहीं कहीं यह नियम नहीं भी लागू होता है। द्वि शब्द के विषय में कहीं विकल्प से उत्त्व होता और कहीं ओत्व भी देखा जाता है। द्वि शब्द के विषय में नित्य उत्त्व जैसे—दुवाई, दुवे, दुवअण (द्वौ, द्विवचनम्), द्वि शब्द में विकल्प से उत्त्व जैसे—दुउणो, दिउणो, दुइओ, दिउओ (द्विगुण, द्वितीय) द्वि शब्द के विषय में नियम की अप्रवृत्ति—दिओ, द्विरओ (द्विज, द्विरद), द्वि शब्द के विषय में ओत्व—दोवअण (द्विवचनम्)। नि उपसर्ग के विषय में इकार का उत्त्व जैसे—गुमज्जइ, गुमण्णो (निमज्जति, निमग्न), नि उपसर्ग के विषय में नियम की अप्रवृत्ति जैसे—णिवडइ (निपतति)

( ७२ ) कृञ् धातु के प्रयोग में द्विधा शब्द के इकार का ओत्व और उत्त्व होता है। जैसे—

प्राकृत

संस्कृत

दोहा इअ (ओकार) }  
दुहा इअ (उकार) }

द्विधा कृतम्

दोहा किज्जदि (ओकार) }  
दुहा किज्जदि (उकार) } द्विधा क्रियते

**विशेष**—(क) कृञ् का प्रयोग नहीं रहने से दिहा-गय (द्विधागतम्) में उक्त नियम नहीं लगा।  
(ख) कही कही केवल (कृञ् रहित) द्विधा में भी उत्त्व देखा जाता है। दुहा वि सो सुर-वहू-सत्थो (द्विधापि स सुरवधूसार्थः)

(७३) पानीय\* गण के शब्दों में दीर्घ ईकार के स्थान में ह्रस्व इकार होता है। जैसे—पाणिञ्च (पानीयम्), अलिञ्च (अलीकम्), जिञ्चइ (जीवति), जिञ्चउ (जीवतु), विलिञ्च (व्रीडितम्), करिसो (करीष), सिरिसो (शिरीष), दुइञ्च (द्वितीयम्), तइञ्च (तृतीयम्), गहिर (गभीरम्), उवणिञ्च (उपनीतम्), आणिञ्च (आनीतम्), पलिविञ्च (प्रदीपितम्), ओसिञ्चन्तो (अवसीदन्), पसिञ्च (प्रसीद), गहिञ्च (गृहीतम्), वम्मिञ्चो (वल्मीक), तयाणि (तदानीम्)†

\* कल्पलतिका के अनुसार पानीय गण में निम्नलिखित शब्द सगृहीत हैं—

पानीयव्रीडितालीकद्वितीय च तृतीयकम्,  
यथागृहीतमानीत गभीरञ्च करीषवत्  
इदानीं च तदानीं च पानीयादिगणो यथा।

प्राकृतमञ्जरी में इनसे भां कम सगृहीत हुए हैं—

पानीयव्रीडितालीकद्वितृतीयकरीषका  
गभीरञ्च तदानीञ्च पानीयादिरय गण।

† प्राकृतप्रकाश पानीयादि गण में उपनीत, आनीत, जीवति,

**विशेष**—वहुल का अधिकार आने से अर्थात् इस नियम के प्रायिक होने से पाणीञ्च, अलीञ्च, जीञ्चइ, करीसो, उवणोञ्चो ये रूप भी सिद्ध होते हैं।

( ७४ ) तीर्थ शब्द के ईकार का ऊकार तब होता है, जब कि उसके आगे का 'र्थ' ह हो गया हो। ह होने पर ऊकार जैसे—तूइ। ह नहीं होने पर उत्वाभाव और ह्रस्व जैसे—तित्थ (तीथम्)

( ७५ ) मुकुलादि गण मे आदि उकार के स्थान मे अकार आदेश होता है।

[प्राकृतप्रकाश मे मुकुलादि गण न कहकर मुकुटादि\* गण कहा गया है। जैसे—अन्मुकुटादिषु]

**मुकुलादि अथवा मुकुटादि के उदाहरण**—मउल (मुकुलम्), गरुई (गुर्गी), मउडं (मुकुटम्), जहुड्डिलो, जहिड्डिलो (युधिष्ठिर), सोअमल्ल (सौकुमार्यम्), गलोई (गुड्डची)

**विशेष**—कही कही प्रथम उकार का आकार भी होता देखा जाता है। जैसे—विहाञ्चो (विद्रुत)

जीवतु, प्रदीपित प्रसीद, शिरीष, गृहीत, वल्मीक और अवसीदन् शब्दों का उल्लेख नहीं करता।

\* मुकुटादि गण मे प्राकृतमञ्जरी के अनुसार निम्नलिखित शब्द हैं।

मुकुट मुकुल गुर्वी सुकुमारो युधिष्ठिर

अगुरुपरि शब्दौ च मुकुटादिरय गण।

† तुलना कीजिए—भाजपुरी का 'मउर' शब्द और संस्कृत का 'मौलि' शब्द।

( ७६ ) यदि गुरु शब्द के आगे स्वार्थ मे क प्रत्यय किया गया हो, तो उस गुरु शब्द के आदि उकार का अ आदेश विकल्प से होता है। जैसे—गरुओ, गुरुओ (गुरुक गुरु) स्वाथिक क के अभाव मे गुरुओ (गुरुक । थोडा गुरु) होता है।

( ७७ ) उत्साह और उच्छन्न शब्दो को छोडकर वैसे हा अन्य शब्दो मे 'त्स' और 'च्छ' के पर मे रहने पर पूर्व के आदि उकार का दीर्घ उकार होता है जैसे—ऊसुओ (उत्सुक), ऊसओ (उत्सव), ऊसित्तो (उत्सिक्त), ऊच्छुओ (उच्छुक । उद्गता शुका यस्मात् स )

**विशेष**—उच्छाहो (उत्साह\*), उच्छरणो (उच्छन्न) मे उक्त नियमानुसार दीर्घ उकार नही होता।

( ७८ ) दुर् उपसर्ग के रेफ का लोप हो जाने पर ह्रस्व उ का दीर्घ ऊ विकल्प से होता है। उकार जैसे—दूसहो, दूहओ, ऊ का अभाव जैसे—दुसहो, दुहओ (दु सह, दुर्भग)

**विशेष**—दुस्सहो विरहो मे रेफ का लोप नही रहने से वैकल्पिक उकार नही हुआ।

( ७९ ) सयुक्त अक्षरो के पर मे रहने पर पूर्ववर्ती प्रथम उकार का ओकर होता है। जैसे—

तोण्ड\* (तुण्डम्), मोण्ड (मुण्डम्), पोक्खर (पुष्करम्), कोट्टिम (कुट्टिमम्), पोत्थअ (पुस्तकम्), लोद्धओ (लुब्धक), मोत्ता (मुक्ता) वोक्कन्त (व्युत्क्रान्तम्), कोन्तलो (कुन्तल)

---

\* प्राकृत प्रकाश मे 'उत् ओत्तुण्डरूपेषु' १० २० यह सूत्र है। कल्पलतिका के अनुसार तुण्डादिगण के शब्द यों परिगणित है— तुण्डकुट्टिमकुद्दालमुत्तामुद्गरलुब्धका । पुस्तकञ्चैवमन्येऽपि कुम्भीकु तल पुष्करा ।



**विशेष**—शौरसेनी मे यह ओत्व नित्य नहीं होता ।

(८०) शब्द के आदि ऋकार का अकार होता है। जैसे—  
घञ (घृतम्), तण (तृणम्), कञ (कृतम्) वसहो (वृषभ)  
मञो (मृग अथवा मृत) वड्ढी आदि ।

(८१) कृपादिगण के शब्दों मे आदि ऋकार का इत्व होता है। जैसे—किवा (कृपा), दिढ (दृष्टम्), सिड्डी (सृष्टि), भिऊ (भृगु), सिगारो (शृङ्गार), घुसिण (घुसृणम्), इड्ढी (ऋद्धि), किसारू (कृशानु) किई (कृति), किवणो (कृपण), भिगारो (भृङ्गार), किसो (कृश), विश्रुञ्चो (वृश्चिक), रिहिञ्चो (वृहित), तिप्प (तृप्तम्), किच्च (कृत्यम्), हिञ्च (हृतम्), विसी (वृषि), सड् (सकृत्), हिञ्चञ्च (हृदयम्), दिड्डी (दृष्टि), गिड्डी (गृष्टि), भिङ्गो (भृङ्ग), सियालो (शृगाल) रिड्ढी (वृद्धि), घिणा (घृणा), किच्छ (कृच्छम्), निचो (नृप), विहा (स्पृहा), गिड्ढी (गृद्धि), किसरो (कृशर), धिई (वृति), किनाण (कृपाणम्), किसिञ्चो (कृषित), विच्च (वृत्तम्), वाहित्त (व्याहृतम्), इसी (ऋषि), वितिण्हो (वितृष्ण), मिढ्ढ (मृष्टम्), सिड्ढ (सृष्टम्), पित्थी

† कृपादिगण के उदाहरणों की सिद्धि के लिए प्राकृतप्रकाश मे इदृष्यादिपु सूत्र आया है। ऋष्यादिगण के शब्दों की गणना कल्प लतिका मे इस प्रकार की गई है—ऋष्यादिषु कृति कृत्या घृष्टो वृषभ वृश्चिक । वृषश्च पृथुलो गृध्रा मृगाङ्गो मसृण कृषि । सृष्टिर्दो भृतो गृष्टिवितृष्णकृतकृत्य । सज्ञायाजकृष्णोऽयमृष्यादिगण ईदृश । प्राकृतमञ्जरीकार के मत से ऋष्यादिगण यो है—ऋषिर्दृष्टि कृशो घृष्टि कृपाशृङ्गारवृश्चिका, मृदङ्गो हृदय मृङ्ग शृगाल इति सृष्य । विमृष्टश्च मृगस्तद्वद् भृत्यश्च कृशरस्तथा । आकृति प्रकृतिश्चैव स्यादस्या दिरय गण ।

(पृथ्वी), समिद्धी (समृद्धि), किवो (कृप), वित्ती (वृत्ति), उक्किट्ट (उत्कृष्टम्)

**विशेष—**कल्पलतिका के अनुसार नीचे लिखे शब्दों में ऋकार का नित्य ही इत्व होता है शेष में विकल्प से—भृङ्गभृङ्गारभृङ्गारा कृपाण कृपाण कृपा । शृगालहृदये वृष्टिर्दष्टिवृहितमेव च । समृद्धि कृशारात्प्रिवृत्ति वृद्धिस्तु कृत्रिमम् । कृकराकुस्तथेत्यादौ नित्यमित्व ऋतो मतम् । विकल्प जैसे—विसो, वसो (वृष) किरहो, कण्हो (विष्णुवाची कृष्ण)

(८२) पृष्ठ शब्द जहाँ किसी समास आदि में उत्तर पद नहीं हो, वहाँ ऋ का इ विकल्प से होता है जैसे—पिट्ट, पट्ट (पृष्ठम्)

**विशेष—**महिविट्ट (महीपृष्ठम्) में उत्तरपद रहने से पृष्ठ शब्द का वैकल्पिक इत्व नहीं हुआ ।

(८३) ऋतु प्रभृति\* शब्दों में आदि ऋ का उकार होता है । जैसे—उदू (ऋतु), पउत्ती (प्रवृत्ति), परामुट्टो (परामृष्ट), पाउसो (प्रावृट्), परहुओ (परभृत्), णिव्वुअ, णिव्वुद (निर्वृतम्), उसहो (ऋषभ), भाउओ (भ्रातृक), पहुदि (प्रभृति), सवुद

\* कल्पलतिका में ऋत्वादि गणं यो माना गया है—

ऋतुर्मृदङ्गो निभृत वृत परभृतो मृत । प्रावृट् प्रवृत्तिर्वृत्तातोमातृका भ्रातृकस्तथा । मृणालपृथिवीवृन्दावनजामातृका आप । वृन्दारकश्च प्रभृति पृष्ठ वृद्धादय परे ॥ अत्र लक्ष्यानुसारतोऽन्येऽपि शब्दा ज्ञेया । (यहाँ लक्ष्यो के अनुसार ऐसे ही दूसरे शब्दों को भी जानना चाहिए ।)

(सवृत्तम्), बुड्ढो (वृद्ध) मुडाल (मृणालम्), पाहुद (प्राभृतम्), पुड्ड (पृष्ठम्), पुहइ, पुहवी (पृथिवी), पाउअ (प्रावृतम्) मुई (भृति), विउअ (विवृतम्), बुदावण (वृन्दावनम्), जामाउओ, जामाडुओ (जामातृक), पिउओ (पितृक), णिहुअ, णिहुद (निभृतम्), णिउवुई (निवृत्ति), बुड्ढी (वृद्धि), माउआ (मातृका), णिउअ (निवृतम्), वुत्तान्तो (वृत्तान्त), उजू (ऋजु), पुहुवी (पृथिवी), बुद (वृन्दम्), माऊ, माडु (माता)

**विशेष**—सगाङ्क शब्द मे मुअओ और मअओ दोनों रूप होंगे ।

(८४) समास आदि मे जो पद प्रधान न होकर गौण होता है, उसके अन्तिम ऋ के स्थान मे उकार होता है। जैसे—

प्राकृत

सस्कृत

माउ मण्डल }  
माडु-मण्डल }

मातृमण्डलम्

माउ-हर }  
माडु-हर }

मातृगृहम्

पिउ-वण

पितृवनम्

(८५) गौण (अप्रधान) मातृ शब्द के ऋकार का इकार विकल्प से होता है। जैसे—माइ-मण्डल, माइ-हर। पद मे—माउ (दु)-मण्डल, माउ (दु)-हर

**विशेष**—कभी-कभी प्रधान (अगौण) मातृ के ऋकार का भी इत्व हो जाता है। जैसे—माइणो (मातृ)

(८६) व्यञ्जन से सम्पर्करहित ऋ का रि आदेश कही विकल्प

से और कही नित्य होता है । जैसे—रिद्धी (ऋद्धि), रिण, ऋण (ऋणम्), रिञ्जू, उञ्जू (ऋजु), रिसहो, उसहो (ऋषभ), रिऊ, उदू (ऋतु), रिसो, इसी (ऋषि)

( ८७ ) जिस दृश धातु के आगे कृत् के क्किप्, टक् और सक् प्रत्यय आये हा, उसके ऋ का रि आदेश होता है । जैसे—एआरिसो, तारिसो, सरिसो, सरिच्छो, एरिसो, केरिसो अरणा-रिसो अम्हारिसो, तुम्हारिसो ।

विशेष—शौरसेनी, पैशाची और अपभ्रश मे इन शब्दों के रूप कुछ और ही होते है ।

शौर० जादिस	यान्दशम्
तादिस	तादृशम्
पै० जातिस	यान्दशम्
तातिस	तादृशम्
अप० जइश	यान्दशम्
तइश	तादृशम्

( ८८ ) किसी भी शब्द मे आदि ऐकार का एकार होता है । जैसे—सेलो (शल), सेत्त, सेच्च (शैत्यम्), एरावणो (ऐरावत), तेल्लुक (त्रेलोक्यम्), केलासो (कैलास), केढवो (कैतव), वेहव (वैधव्यम्)

( ८९ ) दैत्यादिः गण मे ऐ के स्थान मे ए का अपवाद

---

\* कल्पलतिका के अनुसार दैत्यादि गण के शब्द निम्नलिखित है—  
दैत्यादौ वैश्यवेशास्त्रवैशम्पायनकैतवा,  
स्वैरवैदेहवैदेशक्षेत्रवैषयिका अपि ।  
दैत्यादिष्वपि विज्ञेयास्तथा वैदेशिकादय ॥

अइ आदेश होता है। जैसे—\*दइच्च (दैत्यम्), दइरण (दैत्यम्), अइसरिअ (ऐश्वर्यम्), भइरवो (भैरव\*), ढइवअ (दैवतम्), चइआलीओ (वैतालिक), वइएसो (वैदेश), चइएहो (वैदेह), वइअओभो (वैदर्भ), वइस्साणरो (वेश्वानर), कैअव (कैतवम्), वइसाहो (वैशाख), वइसालो (वैशाल)

( ६० ) वैरादिङ्गण मे ऐत् के स्थान मे अइ आदेश विकल्प से होता है। जैसे—पइर, वेर (वेरम्), कइलासो, केलासो (कैलास) कइरव, केरव (कैरवम्), वइसवणो, वेसवणो (वेश्वरण), वइसपाअणो, वेसपाअणो (वेशम्पायन), वइआलिओ, वेआलिओ (वैतालिक), वइसिओ, वेसिओ (वैशिक), चइत्तो, चेत्तो (चैत्र)

( ६१ ) शब्द के आदि औकार का ओकार आदेश होता है। जैसे—कोमुई (कौमुदी), जोण (यौवनम्) कोथुहो (कौस्तुभ), सोहग्ग (सौभाग्यम्), दोहग्ग (दौर्भाग्यम्) गोदमो (गौतम), कोसवी (कौशाम्बी), कोचो (कौञ्च), कोसिओ (कौशिक)

( ६२ ) सौन्दर्यादिङ्गण के शब्दो मे औत् के स्थान मे उत्

\* प्राकृतमञ्जरी के अनुसार दैत्यादि गण मे निम्नलिखित शब्द परिगृहीत है—

दैत्य स्वैर चैत्य कैटभवेदेहकौ च वैशाख ,

वैशिकमैरववैशम्पायनवैदेशिकाश्च दैत्यादि ।

† वैरादिगण मे वैर, कैतव, चैत्र कैलास, दैव और भैरव गृहीत है। शौरसेनी मे दैव शब्द मे यह नियम लागू नहीं होता।

‡ कल्पलतिका के अनुसार सौन्दर्यादिगण के शब्द यो है—

सौन्दर्यं शौण्डिको दौवारिक शौण्डोपरिष्कम् ।

आदेश होता है। जैसे—सुन्देर, सुन्दरिअ (सौन्दर्यम्) सुडो (शौण्ड), दुवारिओ (दौवारिक), मुञ्जाय (अ)णो (मौञ्जायन), सुगन्धत्तरा (सौगन्ध्यम्), पुलोमी (पौलोमी), सुवणिणओ (सौवर्णिक)

( ६३ ) कौत्सेयक और पौरादिं गण के शब्दों में औत् के स्थान में अउ आदेश होता है। जैसे—कउक्खेअओ, कुक्खेअओ (कौत्सेयक), पउरो (पौर), कउरओ(वो) (कौरव), पउरिस (पौरुषम्), सउह (सौधम्), गउडो (गौड), मउली (मौलि), मउण (मौनम्), सउरा (सौरा), कउला (कौला) ।

**विशेष**—कौशल शब्द के विषय में दो रूप होते हैं—

कोसलो, कउसलो (कौशलम्)

( ६४ ) अव और अप उपसर्गों के आदि स्वर का आगेवाले सस्वर व्यञ्जन के साथ 'औत्' विकल्प से होता है। जैसे—ओआसो, अवआसो (अवकाश), ओसरइ, अवसरइ (अपसरति), ओहणं, अअहण (अपघनम्) ।

**विशेष**—उक्त नियम कहीं पर नहीं भी लागू होता है।

जैसे—अवगअ (अपगतम्), अवसदो (अपसद)

कौत्सेय पौरुष पौलोमिमौञ्जदौस्याधिकादय ॥

प्राकृतमञ्जरी के अनुसार—

सौन्दर्यशौण्डकौत्सेयास्तथा मौञ्जायनो ऽपि च ।

तथा दौवारिकश्चेति सौन्दर्यादिरय गण ॥

कल्पलतिका के अनुसार पौरादि निम्नलिखित हैं—

पौरपौरुषशैलानि गौडद्वौरितकौरवा ।

कोशलमौलिबौचित्य पौराकृतिगणा मत्ता ॥

( ६५ ) आगेवाले सस्वर व्यञ्जन के साथ उप के आदि स्वर के स्थान में ऊत् और ओत् आदेश विकल्प होते हैं । जैसे—  
ऊहसिञ्च ओहसिञ्च (उपहसितम्), ऊआसो, ओआसो (उपवास) ।

❀ प्रथम अध्याय समाप्त ❀



## द्वितीय अध्याय

( १ ) स्वर से पर मे रहनेवाले, अनादिभूत तथा दूसरे किसी व्यञ्जन से सयोगरहित क, ग, च, ज, त, द, प, य और व अक्षरो का प्राय लुक् होता है । कलोप जैसे—लोओ, सअढ, \* मउलो, णउलो, णोआ (लोक, शकटम्, मुकुलम्, नकुल, नौका), गलोप जैसे—णओ, † णअर‡, मअङ्को§, साअरो, भाइरही (नगो, नगरम्, मृगाङ्ग, सागर, भागीरथी), चलोप जैसे—सई, कअग्गहो, () वअण, सूई, रोअदि, उइद, सूअअ (शची, कचग्रह, वचनम्, सूची, रोचते, उचितम्, सूचकम्), जलोप जैसे—रअओ, पआवई, □ गओ, रअद (रजक, प्रजापति, गज, रजतम्), तलोप जैसे—विआण, किअ, रसाअल, )( रअण (वितानम्, कृतम्, रसातलम्, रत्नम्), दलोप जैसे—

\* सयढ पाठान्तर हेम० व्या० मे है ।

† हेम० व्या० मे 'नओ' पाठान्तर है ।

‡ हेम० व्या० मे 'नअर' पाठान्तर है ।

§ हेम० व्या० मे 'मअङ्को' पा० ।

() हेम० व्या० 'कअग्गहो' पा० ।

□ हेम० व्या० 'पआवई' पा० ।

)( हेम० व्या० 'रसाअल' पा० ।



जइ, नई, गञ्जाळ्, मञ्जणो†, वञ्जण, मञ्जो (यदि, नदी, गदा, मदन, वदनम् मद), पलोप जैसे—रिऊ, सुडरिसो, कई, विडलं (रिपु, सुपुरुष, कपि, विपुलम्), यलोप जैसे—दञ्जालू‡, णञ्जण△, विञ्जोञ्जो, ञ्जण (दयालु, नयनम्, वियोग वायुना), वलोप जैसे—जीञ्जो, दिञ्जहो, लाञ्जण,) (विञ्जोही, वडञ्जणलो§ (जीव, दिवस, लावण्यम्, विबोध, वडवानल\*)

**विशेष—**( क ) प्रायः कहने से कहीं-कहीं लोप नहीं होता है । जैसे—सुकुसुम, प्रयाग-जल, पियगमण, सुगदो, अगुरु,() सचाव, विजण, अतुल, सुतर,□ विदुरो, आदरो, अपारो, अजसो देवो, दाणवो सबहुमान इत्यादि ।

( ख ) स्वर से पर में नहीं रहने के कारण सकरो, सगमो, णक्कचरो,][ धणजञ्जो,

\* हेम० व्या० 'गया' पा० ।

† हेम० व्या० 'मयणो' पा० ।

‡ हेम० व्या० 'दयालू' पा० ।

△ 'नयण पा० हेम० व्या० ।

) ( 'लायण' पा० हेम० व्या० ।

§ 'वलयाणलो' पा० हेम० व्या० ।

○ 'अगरू' पा० हेम० व्या० ।

□ 'सुतार' पा० हेम० व्या० ।

][नक्कचरो पा० हेम० व्या० । नत्तचरो भी पाठ मिलता है ।

पुरदरो और सवरो इत्यादि में लोप नहीं होता ।

- ( ग ) अक्रो, वग्गो, अग्घो, मग्गो, आदि में सयुक्त होने के कारण लोप नहीं होता है ।
- ( घ ) कालो, गन्धो, चोरो, जारो, तरू, दवो पाव आदि में आद्यक्षर होने के कारण लोप नहीं होता है ।
- ( ङ ) समास में उत्तर पद के आदि का लोप होता और नहीं भी होता है । जैसे—सह अरो, सहचरो, जलअरो, जलचरो, सह आरो सहकारो आदि ।
- ( च ) कुछ लोग किन्हीं प्रयोगों में क का लोप नहीं कर के ग आदेश करते हैं जैसे—एगत्तण (एकत्वम्), एगो (एक), अमुगो (अमुक), आगारो (आकार) आगरिसो (आकर्ष)
- ( छ ) कही आदि के कादि वर्णों का भी लोप, कही च का ज और कही आषे में च का ट आदेशः भी होते देखे जाते हैं ।

---

\* शौरसेनी में पताका, व्यापृत, और गर्भित को छोड़ कर अन्य त के स्थान में द आदेश होता है । पताका का पडाआ, व्यापृत का व्वावडो और गर्भित का गम्भिण में रूप होते हैं । भरत के तकार का धकार होकर भरधो रूप होता है । इसी प्रकार द का प्राय लोप नहीं

आदि के कादि के लोप जैसे—स उण  
(स पुन), सो अ (स च,) इन्ध (चिह्नम्),  
च का ज जैसे—पिसाजी ( पिशाची ),  
आर्ष मे च का ट जैसे—आउण्टण  
(आकुञ्चनम्)

**विशेष**—जहाँ नियम २१ के अनुसार कादि वर्णों के लोप हो चुकने पर अ अथवा आ अवशिष्ट हों, वहाँ लघुप्रयत्नतर यकार का उच्चारण जानना चाहिए।

(२) अवर्ण से पर मे अनादि प का लुक् नही होता है।  
जैसे—सवहो (शपथ), सावो (शाप)  
✓ (३) स्वर से पर मे होनेवाले असयुक्त तथा अनादि ख,  
घ, थ, ध और भ अक्षरो के स्थान मे प्राय ह आदेश होता है।

होता। जैसे—वदण,सौदामिणी। प्राय कहने से हिअत्र मे लोप हो जाता है। मागधी मे छ के स्थान मे श्र आदेश होता है। ज घ के स्थान मे य होता है। य का लोप नहीं होता। पैशाची मे त और द के स्थान मे त होता है। हृदय का हितय रूप होता है। अपभ्र श मे स्वर से परे अनादि और असयुक्त क, ख, त, थ, प और फ के स्थान मे क्रमश ग, घ, द, ध, व और भ ये ही आदेश होते है। पैशाची मे वर्ग के तृतीय और चतुर्थ अक्षरों के स्थान मे क्रमश वर्ग के प्रथम और द्वितीय अक्षर होते है। जैसे नगर का नकर तथा भगवती का फरवती। प्रसङ्ग उपस्थित हो जाने के कारण यहाँ इतनी बाते लिखी गई।

ख का ह जैसे—महो, मुह, मेहला, लिहइ, पमुहेण, सही  
 आलिहिदा (मख, मुखम्, मेखला, लिखति, प्रमुखेण, सखी,  
 आलिखिता), घ का ह जैसे—मेहो जहण, माहो, लाइअं,  
 लहु (मेघ, जघनम्, माघ लाघनम्, लघु), थ का ह जैसे—  
 नाहोळ, गाहा, मिहुण, सप्रहो कहेहि, ऋह, मणोरहो (नाथ,  
 गाथा, मिथुनम्, शपथ, कथय, कथम्, मनोरथ), ध का ह  
 जैसे—साहू, राहा, वाहो, वहिरो, वाहइ, इदहणू, अहिअ,  
 माहवीलदा, महुअरो (साधु, राधा, बावा, वधिर, बाधते,  
 इन्द्रधनु, अविकम्, माधवीलता, मधुकर, भ का हाँ जैसे—  
 सहा, सहावो, णह, सोहइ, सोहण, आहरण, दुल्लहो (सभा,  
 स्पभाव, नभ, शोभते, शोभनम्, आभरणम्, दुर्लभ)

विशेष—(क) स्वर से पर मे नहीं रहने से—सखो  
 (शङ्ख) सघो (सङ्घ) और कथा (कन्था) मे ह  
 आदेश नहीं हुआ।

(ख) सयुक्त होने से—लुम्पइ (लुम्पति) और  
 अक्खइ (अक्षति) मे ह आदेश नहीं हुआ।

(ग) आदि में होने के कारण गज्जतो (गर्जयन्)  
 खे और गज्जइ घणो (गर्जयतिघण) मे आदेश  
 नहीं हुआ।

---

\* पृथिवी और प्रथम को छोड़कर शौरसेनी मे थ का प्राय  
 घ होता है। जैसे—जधा (यथा), तथा (तथा) और अरणधा  
 (अन्यथा)। पृथिवी के लिए पडुवी और प्रथम के लिए पडुम होते हैं।

† शौरसेनी मे ध क्ष द के समान और भ क्ष व के समान उच्चा-  
 रण भर होता है लेख मे तो ध और भ ही रहते हैं।

(घ) ग्रायः कथन के बल से पखलो (प्रखल), पलबधणो (प्रलम्बघ्न), अधीरो (अधीर), अधण्यो (अधन्य), जिणधम्मो (जिनधर्म) इत्यादि मे ह आदेश नहीं होता ।

( ४ ) स्वर से पर मे गहनेवाले असयुक्त और अनादि ट ठ और ड के स्थान मे क्रमशः ड ढ और ल आदेश होते है । ट का ड जैसे—ण्डोः, भडो, विडवो, घडो, घडइ ( नट , भट , विटप , घट , घटते ), ठ का ढ जैसे—मढो, सढो कमढो, कुढारो ( मठ , शठ , कमठ , कुठार ), ड का ल जैसे—वलवा-मुह, गरुलो, कीलइ, तलायो, बलही ( बढयामुखम्, गरुड क्रीडति, तडाग , बलही )

**विशेष**—(क) स्वर से पर मे ऐसा कहने से घटा ( घण्टा ) वैकुटो ( वैकुण्ठ ), मोंड ( मुण्डम् ) एव कोंड ( कुण्डम् ) मे ट, ठ और ड के स्थान मे क्रमश ड, ढ और ल नहीं हुए ।

(ख) सयुक्त रहने के कारण खट्टा, चिट्टइ ( तिष्ठति ) खड्गो के ट, ठ और ड के स्थान मे ड, ढ और ल नहीं हुए ।

(ग) अनादि नहीं होने से टक , ठाई ( स्थायी ) और डिंभो मे ट, ठ ड के ड, ढ, ल नहीं हुए ।

(घ) कही पर ट का ड नहीं होता और अयन्त पट धातु मे ट का ल आदेश विकल्प से होता है । अटइ ( अटति ) में डादेश का अभाव और फालेइ, फाडेइ ( पाटयति ) मे ट के स्थान मे ल और ड पर्याय से हुए ।

(ड) ड का ल आदेश प्रायिक है, अत आगेवाले शब्दों में विकल्प से ल होता है। वलिस, वडिस, दालिम, दाडिम, गुलो, गुडो, गाली, नाडी, गल, गड। प्राकृत-प्रकाशकार दाडिम, वडिस, निविड में ल आदेश नहीं मानते हैं। कल्प लतिका के मत से केवल पीडित और गुड में वैकल्पिक लत्व होता है। वस्तुतः निविड, पीडिअ और गीड में ल का अभाव ही उचित है।

(५) 'प्रति' उपसर्ग में तकार के स्थान में प्राय डकार आदेश होता है। जैसे —पडिवरण (प्रतिपन्नम्), पडिसरो (प्रतिसर), पडिमा (प्रतिमा)

**विशेष**—'प्राय' कहने से आगे के उदाहरणों में डकार विधान वाला नियम नहीं लागू हुआ। पइव (प्रतीपम्), सपई (सप्रति), पइट्टाण (प्रतिष्ठानम्), पइट्टा (प्रतिष्ठा), पइण्णा (प्रतिज्ञा)

(६) ऋत्वादि गण\* के शब्दों में तकार का दकार होता है। जैसे —उदू (ऋतु), रअद (रजतम्), आअदो (आगत), णिवुदी (निर्वृति), आउदी (आवृति), सवुदी (सवृति), सुइदी (सुकृति), आइदी (आकृति), हदो (हत), सजदो

\* ऋत्वादिगण के शब्द इस प्रकार उल्लिखित हैं —

ऋतु किरातो रजतञ्च तात सुसङ्गत सयतसाम्प्रतञ्च  
सुसङ्कृतिप्रीतिसमानशब्दास्तथाकृतिर्निर्वृतिरुल्यमेतत्।

उपसर्गसमायुक्ते कृतिवृत्ती वृतागतौ।

ऋत्वादिगणने नेया अन्ये शिष्टानुसारत ॥

( सयत ), विउद ( विवृतम् ), सजादो ( सयात ), सपदि ( सप्रति ), पडिवही ( प्रतिपत्ति ) ।

**विशेष**—उक्त नियम प्राकृतप्रकाश ( २ ७ ) के ऋत्वादिषु तो द सूत्र के अनुसार बनाया गया है। किन्तु साधारण प्राकृत के लिए इस नियम को नहीं मानते। वे कहते हैं कि—‘स तु शौरसेनी-मागधी-विषय एव दृश्यत इति नोच्यते।’ अर्थात् यत यह सूत्र शौरसेनी और मागधी भाषाओं में ही लागू होता है अतः हम इसका परित्याग करते हैं।

अतः साधारण प्राकृत में उक्त गण में तकार का दकार आदेश नहीं होता। रूप इस प्रकार के होंगे—उऊ ( ऋतु ), रअअ ( रजतम् ), एअ ( एतम् ), गअ ( गत ), सपअ ( साम्प्रतम् ), जअ ( यत ), तअ ( तन ), कअ ( कृतम् ), हअसो ( हताश ), ताअ ( तात )

( ७ ) दश और दह, प्रदोपि और दीप धातुओं के दकार के स्थान में क्रमशः ड, ल और वैकल्पिक ध आदेश होते हैं।  
जैसे —

प्राकृत	
डसइ	( द = ड )
डहइ	( द = ड )
पलीबेइ	( द = ल )
पलित्त	( द = ल )
धिप्पइ, दिप्पइ	( वैकल्पिक ध )

संस्कृत

दशति

दहति

प्रदीपयति

प्रदीपम्

दीपयति

( ८ ) स्वर से पर मे रहनेवाले असयुक्त और अनादि\* न का ण आदेश होता है । किन्तु आदि मे वर्तमान असयुक्त न का विकल्प से ण होता है । स्वर से पर अनादि और असयुक्त न का ण जैसे—सअण ( शयनम् ), कणअ ( कनकम् ), वअण ( वचनम् ), माणुसो ( मानुष ) । आदि मे असयुक्त न का वैकल्पिक ण जैसे—णरो, नरो ( नर ), णई, नई ( नदी )

**विशेष**—आदि मे वर्तमान सयुक्त न का वैकल्पिक णत्व नहीं होता । जैसे—न्याय

✓ ( ९ ) स्वर से पर मे रहनेवाले असयुक्त और अनादि† प के स्थान मे प्राय व आदेश हो जाता है । जैसे—सवहो ( शपथ ) सावो ( शाप ), उवसग्गो ( उपसर्ग\* ), पईवो ( प्रदीप ), कासवो ( काश्यप ), पाव ( पापम् ), उवमा ( उपमा ), महिवालो ( महीपाल ), गोवेइ ( गोपयति ), कलावो ( कलाप ), तवइ ( तपति ), कवोलो ( कपोल\* )

**विशेष**—( क ) स्वर से पर मे रहनेवाले कहने से कम्पइ ( कम्पते ) मे व आदेश नहीं हुआ ।

( ख ) असंयुक्त कहने से अप्पमत्तो ( अप्रमत्त ) मे व आदेश नहीं हुआ ।

\* प्राकृत प्रकाश २ ४ सर्वत्र ( आदि और अनादि मे ) न का ण मानता है । ऊपर का नियम ८ हेमचन्द्र के अनुसार है । पैशाची मे णकार का नकार हो जाता है ।

† शौरसेनी मे अपूर्व शब्द के स्थान मे 'अवरूव' और अउव्व ये दो रूप होते हैं ।



**विशेष**—उक्त नियम में विस के खीलिङ्ग रूप विसिनी का उल्लेख हुआ है। अतः विस ( विम्मम् ) में यह नियम लागू नहीं हुआ।

( १४ ) पद के आदि य का जञ् आदेश होता है। जैसे —  
जसो ( यश ), जमो ( यम ), जाइ ( याति )

**विशेष**—( क ) पद के आदि में न होने के कारण अव-  
अवो ( अवयव ) में नियम नहीं लगा।

( ख ) उपसर्गयुक्त हो जाने पर अनादि य का भी ज आदेश होता है। जैसे —सजमो ( सयम ), सजोओ ( सयोग ), अवजसो ( अपयश )।

( ग ) कल्पलतिका के मत से सामान्यतः उत्तर पदस्थ य का भी ज आदेश होता है। जैसे —  
गाढ-जोव्रणा ( गाढयौवना ), अजोगो ( अयोग्य )

( घ ) कभी-कभी आदि य का लोप भी हो जाता है। जैसे —अहाजाअ ( यथाजातम् )

( १५ ) तीय एव कृत् प्रत्ययो के यकार के स्थान में द्विरुक्त ज ( ज्ञ ) आदेश विकल्प से होता है। जैसे —

प्राकृत	संस्कृत
दीज्जी, दीओ	द्वितीय
करणिज्ज, करणीअ	करणीयम्
रमणिज्ज, रमणीअ	रमणीयम्
पेज्ज, पेअ	पेयम्

\* मागधी में य का ज आदेश नहीं होता है।

( १६ ) युष्मद् शब्द के य के स्थान मे त आदेश होता है ।  
जैसे —तुम्हारिसो ( युष्माद्दश )

( १७ ) छाया शब्द मे यकार के स्थान मे हकार आदेश होता है । जैसे —छाहा ( छाया )

( १८ ) हरिद्रादिऋ गण के शब्दों मे असयुक्त र के स्थान मे ल आदेश होता है । जैसे —हलद्वा ( हरिद्रा ), दलिदो ( दरिद्र )

✓ ( १९ ) सस्कृत वर्णमाला के श और ष के स्थान मे प्राकृत मे स आदेश होता है । जैसे —कुसो ( कुश ), सेसो ( शेष )

विशेष—वस्तुस्थिति तो यह है कि प्राकृत वर्णमाला मे श और ष वर्णों के लिए कोई स्थान ही नहीं है ।

✓ ( २० ) अनुस्वार से पर मे रहनेवाले ह के स्थान मे घ आदेश होता है । जैसे —सिघो, सीहो ( सिंह ), सघारो, सहारो ( सहार )

विशेष—कहीं कहीं अनुस्वार से पर मे नहीं रहने पर भी ह का घ होता देखा जाता है । जैसे —दाघो ( दाह )

### द्वितीय अध्याय समाप्त

\* कल्पलतिका के मत से हरिद्रादि गण यों है —

हरिद्रामुखराङ्गारसुकुमारयुधिष्ठिरा ।

करुणाचरणञ्चैव परिखापरिधावपि ॥

किरातश्चाङ्गुरी चैव दरिद्रश्चैवमादय ।

आदि शब्द से पारिभद्र, जठर, निष्ठुर और अपद्दार शब्दों का इस गण मे सग्रह किया जाता है । चरण शब्द शरीराङ्गवाची ग्रहीत है । इसलिए 'पइस्स चरण' मे नियम नहीं लगता । मागधी और पेशाची मे र के स्थान मे ल होता है ।

# प्राकृत व्याकरण

## तृतीय अध्याय

( १ ) क, ग, ट, ड, त, द, प, श, ष और स व्यञ्जन वर्ण जब किसी सयोग के प्रथम अक्षर हो तो उनका लुक् हो जाता है। और अनादि में वतमान शेष वर्णों का द्वित्व होता है। जैसे—

प्राकृत		संस्कृत
मुक्त	[ कलुक् , तद्वित्व ]	मुक्तम्
सिक्थ	[ कलुक् , थद्वित्व ]	सिक्थम्
भक्त	[ कलुक् , तद्वित्व ]	भक्तम्
मुत्त	[ कलुक् , तद्वित्व ]	मुत्तम्
दुद्ध	[ गलुक् , धद्वित्व ]	दुग्धम्
मुद्ध	[ गलुक् , धद्वित्व ]	मुग्धम्
सिण्णद्धो	[ गलुक् , धद्वित्व ]	सिण्णद्धम्
सप्पञ्चो	[ टलुक् , पद्वित्व ]	पट्पद्
खग्गो	[ डलुक् , गद्वित्व ]	खड्ग
सज्जो	[ डलुक् , जद्वित्व ]	षड्ज
उप्पल	[ तलुक् , पद्वित्व ]	उत्पलम्
उप्पाञ्चो	[ तलुक् , पद्वित्व ]	उत्पात
मुग्गो	[ दलुक् , गद्वित्व ]	मुद्ग
मुग्गरो	[ दलुक् , गद्वित्व ]	मुद्गर
मग्गू	[ दलुक् , गद्वित्व ]	मद्गु

सुत्त	[ पलुक् , तद्वित्व ]	सुप्तम्
पञ्जत्त	[ पलुक् , तद्वित्व ]	पर्याप्तम्
गुत्तो	[ पलुक् , तद्वित्व ]	गुप्त
निञ्चलो	[ शलुक् , चद्वित्व ]	निञ्चल*
चुअइ	[ शलुक् , द्वित्वाभावः†]	श्च्योतति
गोष्टी	[ षलुक् , ठद्वित्व ]	गोष्ठी
निष्ठुरो	[ षलुक् , ठद्वित्व ]	निष्ठुर
खलिअ	[ सलुक् , ख का द्वित्वाभावा‡]	स्खलितम्
रोहो	[ सलुक् , ण का द्वित्वाभावा‡]	स्नेह

(२) म, न और य ये व्यञ्जन यदि सयुक्त के अन्तिम अक्षर हो तो उनका लुक् होता है और अनादि मे वर्तमान शेष वर्णों का द्वित्व हो जाता है। जैसे—

प्राकृत	संस्कृत
जुग्ग	[ मलुक्, गद्वित्व ] युग्मम्
रस्सी	[ मलुक्, सद्वित्व ] रश्मि
सरो	[ मलुक्, द्वित्वाभावा‡] स्मर
नग्गो	[ नलुक्, गद्वित्व ] नग्न
भग्गो	[ नलुक्, गद्वित्व ] भग्न
लग्ग	[ नलुक्, गद्वित्व ] लग्नम्
सोम्मो	[ यलुक्, मद्वित्व ] सौम्य

(३) ल, व, र ये व्यञ्जन सयुक्त के आद्यक्षर हों अथवा अन्त्याक्षर चन्द्र शब्द को छोड़कर सर्वत्र (सयुक्त के आदि

\* † ‡ आदि मे होने से चुअइ, खलिअ और रोहो मे द्वित्व नहीं हुए।

† आदि मे होने से सरो के स का द्वित्व नहीं हुआ।

और अन्त मे ) उक्त व्यञ्जनो का लुक् होता है । और अनादि में स्थित शेष वर्णों का द्वित्व होता है । जैसे—

	प्राकृत	संस्कृत	
उक्का	[ सयुक्तादि ललुक् ,	कद्वित्व ]	उल्का
वक्कल	[ सयुक्तादि ललुक् ,	कद्वित्व ]	वल्कलम्
सण्ह	[ सयुक्तान्त्य ललुक् ,	द्वित्वाभाव ]	श्लक्ष्णम्
विक्कवो	[ सयुक्तान्त्य ललुक् ,	कद्वित्व ]	विल्लव
सहो	[ सयुक्तादि वलुक् ,	दद्वित्व ]	शब्द
अहो	[ सयुक्तादि वलुक् ,	दद्वित्व ]	अब्द
पिक्क	[ सयुक्तान्त्य वलुक् ,	कद्वित्व ]	पक्वम्
धत्थ	[ सयुक्तान्त्य वलुक् ,	द्वित्वाभाव*]]	ध्वस्तम्
अक्को	[ सयुक्तादि रलुक् ,	कद्वित्व ]	अर्क
वग्गो	[ सयुक्तादि रलुक् ,	गद्वित्व ]	वर्ग
चक्क	[ सयुक्तान्त्य रलुक् ,	कद्वित्व ]	चक्र
गहो	[ सयुक्तान्त्य रलुक ,	द्वित्वाभाव*]]	ग्रह
रत्ती	[ सयुक्तान्त्य रलुक् ,	ताद्वित्व ]	रात्रि

**विशेष—**(क) चन्द्र शब्द का चन्द्रो यही रूप होता है । किन्तु हृषीकेश भट्टाचार्य अपने व्याकरण के पृष्ठ ५६ की पादटिप्पणी में लिखते हैं कि We find the form चदो in many Manuscripts

( ख ) द्व इत्यादि में जहाँ दोनो व्यञ्जनों का लुक् प्राप्त हो, वहाँ प्राचीन प्राकृत आचार्यों के रूप दर्शन से कहीं सयुक्त के आदि वर्ण कहीं अन्त्य वर्ण और कहीं बारी-बारी से दोनों वर्णों के लुक्

होते हैं। सयुक्तादिवर्ण का लुक् जैसे —उन्विग्गो ( उद्विग्ग ) विउणो ( द्विगुण ), कम्मस ( कल्म-षम् ), सन्व ( सर्वम् ), सयुक्तान्त्य वर्ण का लुक् जैसे —कव्व ( काव्यम् ), कुल्ला ( कुल्या ) मल्ल ( माल्यम् ), दिअो ( द्विप ), दुआई ( द्विजाति )। बारी बारी से आद्यन्त वर्ण लुक् जैसे —वार, वार ( द्वारम् )

( ४ ) द्र के रेफ का लुक विकल्प से होता है। जैसे —दोहो, द्रोहो ( द्रोह ), रुहो, रुद्रो ( रुद्र ), भद्द भद्र ( भद्रम् ), समुदो, समुद्रो ( समुद्र ), द्रहो, दहो\* ( हृद )

( ५ ) 'ज्ञा' धातु सम्बन्धी च का लुक् विकल्प से होता है एव अनादि ज का द्वित्व होता है। जैसे —सव्वज्जो, सव्वण्णो ( सर्वज्ञ ), अप्पज्जो, अप्पण्णो ( अल्पज्ञ ), अहिज्जो, अहिण्णो ( अभिज्ञ ), जाणां, णाण ( ज्ञानम् ), दइवज्जो, दइवण्णो ( दैवज्ञ ), इड्ढिअज्जो, इड्ढिअण्णो ( इड्ढितज्ञ ), मणोज्ज, मणोण्णो ( मनोज्ञम् ), पज्जा, पण्णा ( प्रज्ञा ), अज्जा, आणा‡ ( आज्ञा ), सजा§, सण्णा ( सज्ञा )

\* हृद शब्द की स्थितिपरिवृत्ति ( इसके लिए देखिए हेम० २ १२० ) के बाद द्रह रूप होता है। यहाँ इसी द्रह में उक्त नियम ( ३ ४ ) लग जाने से दहो और द्रहो रूप हुए। कुछ लोग र का लोप करना नहीं चाहते और कुछ लोग द्रह को संस्कृत मानते हैं।

† आदि में होने से द्वित्व नहीं हुआ।

‡ किसी किसी पुस्तक में 'अण्णा' पाठ मिलता है।

§ स्वर से पर में नहीं होने से द्वित्व नहीं हुआ।

**विशेष**—कहीं-कहीं यह नियम नहीं लागू होता है। जैसे -  
विण्णाय ( विज्ञानम् )\*

( ६ ) अनादि एकाकी व्यञ्जन, जो कि पूर्वोक्त नियमों से सयुक्त व्यञ्जन के लुक् होने पर अवशिष्ट रहता है द्वित्वा को प्राप्त करता है। जैसे —

### प्राकृत                      सस्कृत

दिङ्गी [ षलुक्, ठद्वित्व ] दृष्टि

हृत्थो [ स लुक्, थ द्वित्व ] हस्त

( ७ ) वर्ग के द्वितीय और चतुर्थ वर्गों के द्वित्व का प्रसङ्ग हो तो द्वितीय वर्ग के ऊपर उसी वर्ग के प्रथम और चतुर्थ के ऊपर उसी वर्ग के तृतीय अक्षर होते हैं। जैसे —वक्खाण ( व्याख्यानम् ), अग्घो ( अर्घ )

( ८ ) दीर्घ स्वर एव अनुस्वार से पर मे रहनेवाले सयुक्तशेष व्यञ्जन ( ऊपर से नियमो से सयुक्ताक्षरो मे व्यञ्जन के लुक् हो जाने पर अवशिष्ट व्यञ्जन ) का द्वित्व नहीं होता है†। जैसे —

\* शौरसेनी मे ञ के स्थान मे ज होता है। मागधी और पैशाची मे ञ के स्थान मे ज्ज होता है। पैशाची मे राजन् शब्द सम्बन्धी ञ चिञ् विकल्प से होता है। शौरसेनी, मागधी और पैशाची मे न्य और एय के स्थान मे भी ज्ज होता है।

† हेमचन्द्र ने 'अनादौ शेषादेशयोद्वित्वम्' २ ८६ सूत्र बनाकर आदेश का भी द्वित्व माना है। जैसे —उक्को, जक्को, रग्गो, किच्ची, रुप्पी। कहीं पर यह नियम नहीं लगता है। जैसे—कसिणो। अनादि कहने से खलिअ, थेरो, सम्भो मे नियम नहीं लगा।

‡ यहाँ दीर्घ और अनुस्वार नियमवश सम्पन्न ( लाक्षणिक ) और स्वाभाविक ( अलाक्षणिक ) दोनों गृहीत हैं। लाक्षणिक दीर्घ —छूटो,

ईसरो ( ईश्वर ), लास ( लास्यम् ), सकतो ( सक्रान्त ), सक्ता ( सध्या )

( ९ ) रेफाँ और हकार का द्वित्व नहीं होता है । जैसे — सुदेर ( सौन्दर्यम् ), बम्हचेर ( ब्रह्मचर्यम् ), धीर ( धैर्यम् ), विहलो ( विह्वल ), कहाणो ( कार्षापण )

( १० ) वर्णों के द्वित्व करानेवाले पूर्वोक्त नियम समस्त ( समासवाले ) पदों में विकल्प से प्रवृत्त होते हैं । तात्पर्य यह है कि समास में शेष और आदेश व्यञ्जन का द्वित्व विकल्प से होता है । जैसे — नइग्गामो, नइग्गामो ( नदी ग्राम ), कुसुम-पयरो, कुसुम-पयरो ( कुसुम प्रकर ), देव थुई, देव-थुई ( देव-स्तुति ) इत्यादि ।

**विशेष**—कभी-कभी पूर्वोक्त द्वित्वविधायक नियमों की विषयता नहीं होने पर भी समास में वैकल्पिक द्वित्व होता देखा जाता है । जैसे — पम्मुक्क, पमुक्क ( प्रमुक्तम् ), तेल्लोक्क, तेलोक्क ( त्रैलोक्यम् ) इत्यादि ।

( ११ ) तैलादिः गण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों

नीसासो, फासो । अलाक्षणिक दीर्घ — पास, सीस । लाक्षणिक अनुस्वार — तस अलाक्षणिक अनुस्वार — सभ्ता, विभो । यह नियम आदेश में भी लगता है ।

† रेफ शेष नहीं मिलता है । आदेश ही मिलता है । देखो नियम ३ ३

\* प्राकृत प्रकाश में तैलादि गण के बदले नीडादि गण से काम लिया गया है । कल्पलतिका में नीडादि गण यों हैं —

नीड व्याहृतमण्डूकस्तासि प्रेमयौवने ।

ऋञ्जु स्थूल तथा तैल त्रैलोक्य च गणो यथा ॥



✓ के निर्णयानुसार कही अन्त्य और कही अनन्त्य व्यञ्जनों का द्वित्व होता है। जैसे—तेल्ल (तैलम्), मडुक्को (मण्डूक), उज्जू (ऋजु), सोत्त (स्रोत), पेम्म (प्रेम) विड्डा (वीडा), जोव्वणा (यौवनम्)

✱ (१२) सेवादिऋ गण के शब्दों में प्राचीन प्राकृत आचार्यों के निर्णयानुसार कही अन्त्य और कही अनन्त्य (किन्तु अनादि) व्यञ्जनो का विकल्प से द्वित्व होता है। जैसे—सेव्वा, सेवा (सेवा), विहित्तो, विहित्तो (विहित), कोउहल्ल, कोउहल (कौतूहलम्), वाउल्लो, वाउलो (व्याकुल), नेड्डु, नीड, नेड (नीडम्), नक्खा, नहा (नखा), निहित्तो, निहित्तो (निहित), वाहित्तो, वाहित्तो (व्याहृत), माउक्क माउअ (मृदुकम्), एक्को, एअो (एअ), थुल्लो, थोरो (स्थूल) हुत्त, हूअ (हुतम्), दइव्व, दइव (दैवम्), तुण्हक्को, तुण्हक्को (तूष्णीक), मुक्को, मूअो (मूक), ररणा, खारणा (स्थाणु), थिरणा, थीणा (स्त्यानम्), अम्हक्केर, अम्हक्केर (अस्मदीयम्) इत्यादि।

(१३) क्त के स्थान में ख आदेश होता है। किन्तु कुछ स्थलों में छ और ऋ आदेश भी होते हैं। ख आदेश जैसे—

\* कल्पलतिका में सेवादि गण यो है —

सेवा कौतूहल दैव विहित मखजानुनी ।

पिवादय सवा ( ? ) शब्दा एतदाद्या यथार्थका ॥

त्रैलोक्य कणिकारश्च वेश्या भूर्जश्च दु खितम् ।

रात्रिविश्वासनिश्वासा मनोऽल्लेश्वर रश्मय ॥

दीर्घैकशिवतूष्णीकमित्रपुष्पासि दुर्लभा ।

दुष्करो निष्कृप कर्मकरेष्वासपरस्परम् ॥

नायकाद्यास्तथा शब्दा सेवादिगणसम्भता ।

खञ्चो ( क्षय ), लखण ( लक्षणम् ), छ और ख आदेश जैसे —  
छीण, खीण ( क्षीणम् ), भ और ख आदेश जैसे —भिज्जइ,  
खिद्यति ( द्विद्यति )

( १४ ) अद्यादि\* गण के शब्दों में क्ष के स्थान में ख न  
होकर छ आदेश होता है । जैसे —अच्छी ( अक्षि ), उच्छू ( इक्षु )

**विशेष**—स्थगित शब्द के स्थ के स्थान में भी उक्त नियम  
से छ आदेश हो जाता है । जैसे —छइअ  
( स्थगितम् )

( १५ ) उत्सव अर्थ के वाचक क्षण शब्द में क्ष के स्थान  
में छ आदेश होता है । उत्सव अर्थ में जैसे —छणो, समय  
अर्थ में जैसे —खणो ( क्षण )

( १६ ) सयुक्त कम और डम् के स्थान में प आदेश होता  
है । कम में जैसे —रूप, रूपिणी ( रुक्मम्, रुक्मिणी ) ।  
डम् में जैसे —कुप्पल ( कुड्मलम् )

**विशेष**—कही-कही कम के लिए च्म आदेश भी देखा जाता  
है । जैसे —रुचमी ( रुक्मी )

✓ ( १७ ) ष्क और स्क के स्थान में ख आदेश होता है, यदि  
उन सयुक्ताक्षरो से घटित शब्द द्वारा किसी नाम ( सञ्ज्ञा ) की  
प्रतीति होती हो । ष्क का ख जैसे —पोक्खर ( पुष्करम् ), पोक्ख-

\* कल्पलतिका के अनुसार अद्यादि गण यों हैं —

अत्राक्षिचक्षुरक्षुणक्षार उत्क्षिप्तमक्षिकै ।

दक्षो वक्ष सङ्क्षोऽक्ष क्षेत्रक्षीरेक्षुकुक्षय ॥

लुधा चेत्यादय शब्दा अद्यादिगणसम्भता ।

रिणी ( पुष्करिणी ), निक्ख ( निष्कम् ) स्क का ख जैसे —  
खधो ( स्कन्ध ) खधावारो ( स्कन्धावार )

**विशेष**—संज्ञा नहीं होने से दुक्कर ( दुष्करम् ) निक्काम्भ  
( निष्काम्यम् ) और सक्कअ ( सस्कृतम् ) मे उक्त  
नियम लागू नहीं हुआ ।

( १८ ) उष्ट्र, इष्ट और सदष्ट शब्द के ष्ट को छोड़कर अन्य  
ष्ट के स्थान मे ठ आदेश होता है । जैसे —लट्टी ( यष्टि ) मुट्टी  
( मुष्टि ), दिट्टी ( दष्टि ), सिट्टी ( सष्टि ), पुट्टो ( पुष्ट ),  
कट्ट ( कष्टम् )

**विशेष**—उष्ट्र आदि मे ठ आदेश नहीं होने से उट्टो, इट्टा-  
चुण्ण वज और सदट्टो रूप होते है ।

( १९ ) चैत्य शब्द के त्य को छोड़कर अन्य त्य के स्थान मे  
च आदेश होता है । जैसे —सच्च ( सत्यम् ), पच्चओ ( प्रत्यय ),  
निच्च ( नित्यम् ), पच्चच्छ ( प्रत्यक्षम् )

**विशेष**—चैत्य शब्द का चइत्त रूप होता है ।

( २० ) कुल्ल स्थलो मे त्व, ध्व, द्व और ध्व के स्थान मे  
क्रमश च्च, च्छ, ज्ज और ज्ज् आदेश होते है । त्व का जैसे—  
भोच्चा, एच्चा, सोच्चा ( भुक्त्वा, ज्ञात्वा श्रुत्वा ), ध्व का जैसे—  
पिच्छी ( पृथ्वी ), द्व का जैसे—बिज्ज ( विद्वान् ), ध्व का  
जैसे—बुज्जा ( बुद्धवा )

( २१ ) धूर्तादि गण के शब्दो को छोड़कर अन्य र्त का ट  
आदेश विकल्प से होता है । जैसे —केवट्टो ( कैवर्त्त ), वट्टी  
( वर्त्ति ), णट्टओ ( नर्त्तक ), णट्टई ( नर्त्तकी ) सबट्टिअ ( सबर्त्तिकम् )

**विशेष**—धूर्तादि गण मे उक्त नियम लागू नहीं होता है । वुत्तो, किन्ती, वत्ता, आपत्तण, निवत्तण, पयत्तण, सयत्तण, आपत्तओ, निपत्तओ, पयत्तओ सयत्तओ, वत्तिआ, पत्तिओ, कत्तिओ, उक्कत्तिओ, कत्तरी, मुत्ती मुत्तो, मुहुत्तो ।

( २० ) ह्रस्व से पर मे वर्तमान व्य, श्र, त्स और प्स के स्थान मे छ आदेश होता है । किन्तु निश्चल शब्द के श्र का छ आदेश नहीं होता । व्य का छ जैसे—पच्छ ( पथ्यम् ), पच्छा ( पथ्या ), मिच्छा ( मिथ्या ), रच्छा ( रथ्या ) श्र का छ जैसे—पच्छिम ( पश्चिमम् ), अच्छेर ( आश्चर्यम् ), पच्छा ( पश्चात् ) त्स का छ जैसे—उच्छाहो ( उत्साह ), मच्छरो ( मत्सर ), पच्छो ( पत्स ) प्स का छ जैसे—लिच्छइ ( लिप्सति ), जुगुच्छइ ( जुगुप्सते ), अच्छरा ( अप्सरा )

**विशेष**—(क) ह्रस्व से पर मे नहीं रहने से ऊसारिओ ( उत्सारित ) मे उक्त नियम नहीं लगा ।

(ख) निश्चल शब्द का णिञ्जतो रूप होता है ।

(ग) तथ्य का आर्ष प्राकृत रूप तत्थ और तच्च होता है ।

( २३ ) सयुक्त घ, ग्य और ग्य के स्थान मे ज आदेश होता है । घ का ज जैसे—मज्ज, अवज्ज, वेज्ज, विज्जा ( मद्यम्, अवद्यम्, वेद्यम्, विद्या ) ग्य का ज

१ धूर्तादि गण मे धूर्त, कीर्ति, वार्ता, आवर्तन, निवर्तन, प्रवर्तन, सवर्तन, आवर्तक, निवर्तक, प्रवर्तक, सवर्तक, वर्तिका, वार्तिक, कार्तिक, उत्कर्तित, कर्तरी, मूर्ति, मूर्त और मुहूर्त शब्द परिगणित हैं ।

**जैसे :—**जज्जो, सेज्जा ( जय्य , शय्या ) **र्य का ज जैसे :—**  
 भज्जा, कज्ज, वज्ज, पज्जाओ, पज्जन्त ( भार्य्या, कार्य्यम् , पर्य्यम् ,  
 पर्य्याय , पर्य्यन्तम् )

**विशेष—**(क) शौरसेनी मे र्य के स्थान मे य भी होता हे ।

(ख) पैशाची मे र्य के स्थान मे कही रिय आदेश होता हे ।

( २४ ) ध्य के स्थान मे ऋ एज्ज और ज्ञ के स्थान मे ण आदेश होते हे । **ध्य का ज्ञ जैसे :—**भाण, उव-ज्माओ, सज्माओ, मज्ज, विज्जो, अज्माओ ( व्यानम् , उपा-ध्याय , साध्याय या स्वाध्याय , मध्यम् , विन्ध्य , अध्याय )  
**झ का ण जैसे :—**निण्ण, पज्जुण्णो, ( निज्जम् , प्रद्युज्ज )  
**ज्ञ का ण जैसे :—**णाण, सणा, पण्णा, विण्णाण ( ज्ञानम् , सज्जा, प्रज्ञा, विज्ञानम् )

( २५ ) समस्त और स्तम्ब के स्त को छेडकर अन्य स्त के स्थान मे थ आदेश होता है । जैसे —हत्थो, थोत्त, थोअ, पत्थरो, थुई (हस्त स्तोत्रम् , स्तोकम् , प्रतर , स्तुति )

**विशेष—**(क) मागधी मे स्त और र्थ के स्थान मे स्त ही होता है ।

(ख) समस्त शब्द का रूप समन्त और स्तम्ब शब्द का तबो होता है ।

( २६ ) सयुक्त न्म के स्थान मे म आदेश होता है ।  
 जैसे —जम्मो, मम्महो ( जन्म, मन्मथ )

( २७ ) एप और रप के स्थान में फ आदेश होता है । एप का फ जैसे :—पुफफ, सफफ, निफफेसो ( पुपम् , शाष्पम् , निष्पेप ) स्प का फ जैसे :—फवण, पडिफफही, फसो ( स्पन्दनम् , प्रतिस्पर्द्धी, स्पर्श ) ,

( २८ ) सयुक्त ऋ, एण, स्त्र, ह्र, ल और सूक्ष्म शब्द के द्ध के स्थान में ण्ह आदेश होता है । ऋ का ण्ह जैसे :—पण्हो ( प्रध्न ) , एण का ण्ह जैसे :—विण्ह, ऋण्हो उण्हिस ( विण्णु , कृज्ज , उण्णीपम् ) स्त्र का ण्ह जैसे :— नोणहा, णहाउ, णहाग, ण्ही, जण्हू ( ज्योत्स्ना, स्नायु, स्नानम् , गृहि, जहु ) ल का ण्ह जैसे :—पुवण्हो अवरण्हो ( प्रगृह, अपराह ) क्षण का ण्ह जैसे :—सण्ह, तिण्ह ( ऋक्ष्णम् , तीक्ष्णम् ) सूक्ष्म के क्ष्म का ण्ह जैसे :—सण्ह ( सूक्ष्मम् )

( २९ ) सयुक्त श्म, ष्म, रम और ह्य के स्थान में म्ह आदेश होता है । श्म का म्ह जैसे :—कम्हारो ( काश्मीर ) ष्म का म्ह जैसे :—गिम्हो, उम्ह ( ग्रीष्म , उष्मा ) , रम का म्ह जैसे :—अम्हारिसो, विम्हओ ( अरमान्द्रश , विस्मय ) ह्य का म्ह जैसे :—बम्हा, सम्हो, वम्हणो, बम्हचर ( ब्रह्मा, सुह्य , ब्राह्मण , ब्रह्मचर्यम् )

विशेष—(क) ब्रह्मचर्यम् के लिए कभी-कभी बम्हचर रूप भी देखा जाता है ।

(ख) रश्मि और स्मर में उक्त नियम लागू नहीं होता है । जैसे —रस्सी, सरो ।

( ३० ) सयुक्त ह्य के स्थान मे ऋ आदेश होता है ।  
जैसे —सभो, सभ्, गुञ्भ ( सद्य, मह्यम् , गुह्यम् )

( ३१ ) सयुक्त ह्र के स्थान मे ल्ह आदेश होता है ।  
जैसे —कल्हार, पल्हाओ ( कल्हारम् , प्रल्हाद )

( ३२ ) जिस सयुक्त अक्षर का अन्त लकार से होता हो उसका विप्रकर्ष होता है । और पूर्ण के अन्त को इत्य भी होता है । जैसे —किलिण्ण, किलिट्ट, सिलिट्ट, पिलिट्ट, सिलोओ, किलेसो, मिल्लाण, किलिरसइ ( क्लिन्नम् , क्लिष्टम् , ष्लिष्टम् , श्लोक , क्लेश , म्लानम् क्लिश्यति )

**विशेष**—रुमो ( क्लम ) , पवो ( प्लप ) और सुक्-  
पक्खो ( शुक्लपक्ष ) मे उक्त नियम लागू नहीं होता ।

( ३३ ) उकारान्त किन्तु डीप्रत्ययान्त तन्वी ( तनु+  
इ ) सट्श शब्दो मे वर्तमान सयुक्ताक्षरो का विप्रकर्ष होता है और पूर्ण के अक्षर का उकार रवर से योग होता है ।  
जैसे —तिगुवी, तगुई ( तन्वी ) , लहुवी, लहुई ( लघ्वी ) ,  
गुरुवी, गुर्नुई ( गुर्वी ) , पुहुवी ( पृथ्वी )

**विशेष**—उक्त नियम की विषयता नहीं रहने पर भी  
सुरुघो ( सुव्र ) मे नियम प्रवृत्त हो जाता है । प्राकृत के  
प्राचीन ऋषियो के अनुसार सूक्ष्म शब्द का सुहुम रूप  
हो जाता है ।

( ३४ ) जब च्स् और स् रान्ठ किसी समास के अङ्ग न होकर पृथक् ही एक पद हो तब इनका विप्रकर्ष हो जाता एव पूर्ण के व्यञ्जन में उ स्वर का योग भी हो जाता है । जैसे —

प्राकृत

सुवे ऋअ

सुवे जना

सस्कृत

श्च कृतम्

स्वे जना

**विशेष**—हेमचन्द्र ने २११४ में एकस्वरवाले पद में च्स् और स् रान्ठो का उक्त कार्य माना है । उसका भी तात्पर्य पृथक् ही एक पद होने में है । समास का अङ्ग हो जाने पर सयगो ( स्वरजन ) हो जाता है ।

( ३५ ) शील ( स्वरभाव, आदत् ), वर्म ( गुण ) अथवा सावु ( प्रवीण ) अर्थ में जो प्रत्यय आते हैं उनके स्थान में 'इर' आदेश होता है । जैसे —हसिरो, रोचिरो, लज्जिरो, भमिरो, जम्पिरो, वेविरो, उससिरो ( हसनशील इत्यादि )

**विशेष**—कोई-कोई तुम् के स्थान में ही 'इर' का आदेश मानते हैं । उनके मत से सस्कृत के नमी और गमी के लिए नमिर और गमिर रूप नहीं सिद्ध होते ।

( ३६ ) क्त्वा प्रत्यय के स्थान में तुम्, अत्, तूण और तुआण ये ४ आदेश होते हैं । जैसे —



प्राकृत		संस्कृत
दद्दु	[ त्त्वा = तुम् ]	दग्ध्वा
मोत्तु	[ " " ]	मुत्त्वा
भमिअ	[ त्त्वा = अत् ]	भ्रमित्त्वा
रमिअ	[ " " ]	रन्त्वा
घेत्तूण	[ त्त्वा = तूण ]	गृहीत्वा
काञ्ण	[ " " ]	कृत्वा
भोत्तुआण <sup>१</sup>	[ त्त्वा=तुआण ]	भुम्त्वा
सीउआण <sup>१</sup>	[ " " ]	सपित्वा

**विशेष—**(क) कहीं-कहीं तुम्पाले म के अनुराज का लोप हो जाता है। जैसे —वन्दित्तु। य का लोप करके वन्दित्त्वा संस्कृत का वन्दित्ता प्राकृत रूप बनता है।

✓ (ख) शौरसेनी में क्त्वा के स्थान में इय ओर दूण आदेश होते हैं। कृ और गम वातुआ से अदूय होता है। मागधी-आजन्ती में ऋत्वा के स्थान में तूण आदेश होता है। अपभ्रंश में ऋत्वा के स्थान में इइ, उइ, षिअवि आदेश होते हैं।

( ३७ ) इदमर्थ में प्रयुक्त प्रत्ययों के स्थान में 'केर' आदेश होता है। जैसे —तुम्हकेरो, अम्हकेरो ( युष्मदीय, अरमदीय )

१ २ हेमचन्द्र २ १४६ में भोत्तुआण और सेउआण रूप मिलते हैं।

३ किसी से सम्बन्ध रखनेवाला पुरोवर्ती पदार्थ। जैसे—तुम्हारा यह ग्रन्थ, इस अर्थ में संस्कृत में 'युष्मदीयो ग्रन्थ' ऐसा प्रयोग इदमर्थ में है।

**विशेष**—मईअ-पक्खे, पाणिणीआ ( मदीयपद्दे, पाणिनीया ) मे उक्त नियम नहीं लगता है । पर और राजन् शब्दों से पारम्क और राइक्क भी बनते हैं ।

( ३८ ) इदमर्थ मे युमद्-अस्मद् शब्दों से पर मे रहनेवाले अब् प्रत्यय के स्थान मे 'एच्चय' आदेश होता है । जैसे —तुम्हेच्चय, अम्हेच्चय ( यौष्माकम्, आस्माकम् )

**विशेष**—अपभ्रश मे इदमर्थ प्रत्ययों के स्थान मे केवल 'आर' आदेश होता है । यथा —अम्हारो ( अस्मदीय ) ।

( ३९ ) त्व प्रत्यय के स्थान मे 'डिमा' और 'न्तण' आदेश विकल्प से होते हैं । जैसे —पीणिमा, पीणन्तण ( पीनत्वम् )

**विशेष**—तल् ( ता ) प्रत्ययान्त पीनता आदि के स्थान मे पीणआ ( या ) इत्यादि रूप होते हैं । पीणदा रूप विशेष प्राकृत मे भले ही होता हो, किन्तु सामान्य प्राकृत मे नहीं होता । हाँ प्राकृतप्रकाशकार कुल प्राकृतों मे तल् प्रत्यय के स्थान मे 'त्ता' आदेश करते हैं ।

( ४० ) अकोठवजित शब्द से पर मे आनेवाले तैल' प्रत्यय के स्थान मे 'डेल्ल' आदेश होता है । जैसे —इड्ढुदी-एल्ल ( इड्ढुदीतैलम् )

**विशेष**—अकोठ शब्द से अकोल्लतेल्ल रूप होता है ।

( ४१ ) यद्, तद् आर एतद् शब्दों से पर मे आने-  
गले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान मे 'इत्तिअ' आदेश होता  
है और एतद् शब्द का लुक् भी होता है । जैसे —जित्तिअ,  
तित्तिअ, इत्तिअ ( यायत्, तायत्, एतावत् )

( ४२ ) इदम्, किम्, यद्, तद् ओर एतद् शब्दों से  
पर मे आनेगले परिमाणार्थक प्रत्यय के स्थान मे 'डेत्तिअ'  
'डेत्तिल' और 'डेदह' आदेश होते हे । इन प्रत्ययों के आने  
पर एतद् शब्द का लुक् हो जाता है । इदम् शब्द से जैसे —  
एत्तिअ, एत्तिल, एदह ( इयत् ), केत्तिअ, केत्तिल, केदह  
( कियत् ), जेत्तिअ, जेत्तिल, जेदह ( यावत् ), तेत्तिअ, तेत्तिल,  
तेदह, ( तायत् ), एत्तिअ, एत्तिल, एदह ( एतायत् )

( ४३ ) कृत्वस् प्रत्यय ( क्रिया की अभ्यावृत्ति की गणना  
अर्थ मे होनेगले ) के स्थान मे 'हुत्त' आदेश होता  
है । जैसे —बहुहुत्त ( बहुकृत्व )

( ४४ ) मतुप् प्रत्यय के स्थान मे आलु, इल्ल, उल्ल,  
आल, वन्त और इन्त आदेश होते हे । आलु जैसे —  
ईसालु, णिदालु ( ईर्गवान्, निद्रायान् ) इल्ल जैसे:—विआ-  
रिल्लो, सोहिल्लो ( विकारवान्, शोभायान् ) उल्ल जैसे :—  
विआरुल्लो, मसुल्लो ( विकारयान्, मासवान् ) आल जैसे.—  
रसालो, जगलो, जोणहालो ( रसवान्, जडवान्, ज्योत्सा-

१ प्रत्ययों के आदि ड् के इत् अर्थात् लुप्त होने से यद् और तद् के  
ति अर्थात् अद्भाग का भी लोप हो जाता है ।

२ दे० 'सख्याया क्रियाभ्यावृत्तिगणने कृत्वसुन् ।' पा० सू० ५।४।२७

वान्) वन्त जैसे :—वणवन्तो, भक्तिवन्तो ( वनवान् , भक्तिमान् )

**विशेष**—(क) हेमचन्द्र के मन से मन्त ओर इर आदेश भी होते हैं। जैसे —सिरिमतो, पुष्पमतो, वणिरो ( श्रीमान् , पुष्पवान् वनवान् )

(ख) कुछ लोग का कान्ना है कि इल्ल और उल्ल सार्वत्रिक न होकर पाणिनीय व्याकरण के शैषिक प्रकरण में ही आते हैं। जैसे —पुरिल्ल ( पौरस्त्यम् ), अधुल्ल ( आत्मीयम् )

( ४५ ) वृत्ति प्रत्यय के स्थान में 'व्य' यह आदेश होता है। जैसे —मद्व्य ( मधुवन् )

स्वार्थिक प्रत्यय ।

प्राकृत	प्रत्यय	मस्कृत	प्राकृत	प्रत्यय	संस्कृत
नवल्लो	ल्ल	नव	मिसालिअ	डालिअ	मिश्र
एकल्लो, एकल्लो	”	एक	नीहर	र	नीर्घ
अवरिल्लो	”	उपरि	पिज्जला	ल	पिच्चुन्
भुमया	मया	ध्रू	पत्तल	”	पत्रम्
भमया	डमया		पीवल	’	पीतम्
सणिअ	डिअ	शनै	पीअल	’	अन्त्र
मणिअ	”	मनाक्	अवल्लो		
क्षणअ	डअ		जमल	’	यम

**विशेष**—स्वार्थ में सभी शब्दों से क प्रत्यय होता है ।

तृतीय अध्याय समाप्त



## चतुर्थ अध्याय

### [ शब्दसाधन प्रकरण ]

( १ ) प्राकृत में सस्कृत के समान ही पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसक लिङ्ग होते हैं ।

**विशेष**—सस्कृत के जिन शब्दों का प्राकृत में लिङ्ग बदल जाता है, उनके त्रिपय में इस ग्रन्थ के १-३८-४५ तक में विचार किया गया है ।

( २ ) प्राकृत में सस्कृत के समान तीनों वचन न होकर एकवचन और बहुवचन ही होते हैं ।

( ३ ) कर्ता आदि छः कारकों की चतुर्थीरहित विभक्तियाँ प्राकृत शब्दों के आगे प्रयुक्त होती हैं । चतुर्थी के स्थान की पूर्ति पठ्ठी विभक्ति से होती है । विभक्तियाँ के नाम पाणिनि के नामकरण के अनुसार ही हैं ।

( ४ ) प्राकृत में अर्णान्त ( अ और आ से अन्त होनेवाले ), इर्णान्त ( इ और ई से अन्त होनेवाले ), उवर्णान्त ( उ और ऊ से अन्त होनेवाले ), ऋवर्णान्त ( ऋ से अन्त होनेवाले ) तथा हलन्त ( जिनके अन्त में व्यञ्जन अक्षर आये हों ) ये पाँच प्रकार के शब्द पाये जाते हैं ।

**विशेष**—वस्तुतः प्रयोग में ऋकारान्त तथा हलन्त शब्दों की उपलब्धि नहीं होने से तीन ही प्रकार के शब्द रह जाते हैं ।

( ५ ) पुँल्लिङ्ग मे वर्तमान ह्रस्व अकारान्त शब्द के आगे आनेवाली प्रथमा के एकप्रचन की 'सु' विभक्ति के स्थान मे 'ओ' आदेश होता है । जैसे — देओ, हरिओ, हदो ( देव , हरिश्चन्द्र , हृत् )

**विशेष—**(क) मागधी मे सु के पर मे रहने पर अन्त के अ का ए हो जाता है और सु का लोप हो जाता है । जैसे — स्क्खे, एणे, मेशे ( वृक्ष , एप , मेप )

(ख) अपभ्रश मे सु और अम् के पर मे रहने पर अन्त के अ के स्थान मे उ आदेश माना जाता है ।

( ६ ) जस् , शस् , डसि और आम इन विभक्तिया के पर मे रहने पर पुँल्लिङ्ग शब्द के अन्त्य अ के स्थान मे आ आदेश होता है तथा जस् और शस् विभक्तियों का लोप होता है । जैसे — देया, णउला ( देवा , देवान् , नकुल नकुलान् )

( ७ ) अन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्द से पर मे आनेवाले अम् के अकार का लुक् हो जाता है । जैसे — देप्, णउल ( देप्, नकुलम् )

( ८ ) ह्रस्व अकारान्त शब्द से पर मे आनेवाले टा ( तृतीया के एकप्रचन ) और आम् ( षष्ठी के बहुवचन ) के स्थान मे ण आदेश होता है । जैसे — देवेण, देयाण, अथवा देवाण ( देवेन, देवानाम् )

**विशेष—**अपभ्रश मे टा के स्थान मे ण्ण और अनु-स्वार होते हैं । तथा टा के पर मे रहने पर अ का नित्य

एत्य होता है एय भिस् के पर मे रहने पर विकल्प से ।  
से अ पर मे आप् का ह आदेश होता है ।

( ६ ) अदन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्दों के अन्तिम अ के स्थान में ए होता है, यदि उनसे आगे ङि ( सप्तमी एकवचन ) और ङस् ( पष्ठी-एकवचन ) से भिन्न प्रिभक्तियाँ आती हों । जैसे — देवेहि, देवेसु, णउलेहि, णउलेसु ( देयै देयेषु, नकुलै, नकुलेषु )

( १० ) अदन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्द से पर में आनेवाले भिस् के स्थान में केवल ( अनुनासिक एय अनुस्वार से रहित ), सानुनासिक और सानुरूपार 'हि' आदेश होता है । जैसे—देवेहि, देवेहिँ, देवेहिँ, णउलेहि, णउलेहिँ, णउलेहिँ ( देयै, नकुलै )

**विशेष—**'प्राकृतप्रकाश' और 'कल्पलतिका' के अनुसार भिस् के स्थान में केवल हिम् आदेश किया जाता है ।

( ११ ) अदन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्द से पर में आनेवाले डसि के स्थान में त्तो, दो, दु, हि और हित्तो आदेश होते हैं । दो और दु के दकार का लुक् भी होता है । जैसे —देयत्तो, देयाओ, देयाउ, देयाहि और देयाहित्तो ( देयात् )

**विशेष—**(क) प्राकृतप्रकाश और कल्पलतिका के अनुसार डसि के स्थान में आदो, दु तथा हि आदेश किये जाते हैं ।

---

१ हेमचन्द्र ( ३ ८ ) के अनुसार डसि का लुक् होकर एक रूप 'देवा' भी होता है ।

(र) शौरसेनी मे डसि के स्थान मे आदो', और 'आदु' आदेश होते ह, किन्तु कल्पलतिका के अनुसार केवल 'दो' आदेश होता है ।

(ग) पैंशाची मे डसि के स्थान मे 'आतो' और 'जात्तो' आदेश होते हे ।

(घ) अपभ्रश मे डसि के स्थान मे 'ह' और 'हू' आदेश होते है ।

( १२ ) अदन्त ( अ से अन्त होनेवाले ) शब्द से पर मे आनेवाले भ्यस् के स्थान मे चो, वो, दु हि, हितो ओर सुतो आदेश होते ह । जैसे — देवचो, देवाओ, देवाड, देवाहि, देवेहि, देवाहितो, देवेसुतो ( देवेभ्य )

विशेष—अपभ्रश मे अदन्त शब्दो से पर मे आनेवाले भ्यस् के स्थान मे 'हू' आदेश होता है ।

( १३ ) अदन्त शब्द से पर मे आनेवाले डस ( पष्ठी-एकवचन ) के स्थान मे 'स्स' आदेश होता है । जैसे — देप्रस्स, णउलस्स ( देप्रय, नकुलस्य )

विशेष—(क) मागधी मे डस् के स्थान मे विकल्प से 'आह' आदेश होता है ।

(ख) अपभ्रश मे डस् के स्थान मे सु, हो, स्सो ये आदेश होते है ।

( १४ ) अदन्त शब्द से पर मे आनेवाले डि ( सप्तमी-एकवचन ) के स्थान मे 'ए' और 'म्मि' आदेश होते है । जैसे — देवे, देवेम्मि, णउले, णउलेम्मि ( देवे, नकुले )



उपर्युक्त नियमों के अनुसार अकारान्त पुल्लिङ्ग

देव शब्द के रूप—

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा देवो	देवा
द्वितीया देव	देवे, देवा
तृतीया देवेण, देवेण	देवहि-हिँ-हि
पञ्चमी ( देवत्तो, देवाओ, देवाउ, देवाहि   देवाहित्तो इत्यादि	देवाहित्तो, देवासत्तो देवेहित्तो इत्यादि
षष्ठी देवरस	देवाण, देवाण
सप्तमी देवे, देवेम्मि	देवेसु, देवेसु
सबोधन देव, देवो	देवा

कुल जन्म शब्दों के रूप उक्त देव शब्द के समान ही प्राय चलते हैं ।

( १५ ) इदन्त ( इ से अन्त होनेवाले ) और उदन्त ( उ से अन्त होनेवाले ) पुल्लिङ्ग शब्दों का सु, जस्, भिस्, भ्यस् और सुप् प्रिभक्तियों के पर में रहने पर अन्त ( इ और उ ) का दीर्घ होता है ।

**विशेष—**हेमचन्द्र के मत से शस् ( द्वितीया-बहुवचन ) के लुक् हो जाने पर भी इदन्त-उदन्त का दीर्घ होता है ।

( १६ ) इदन्त और उदन्त पुल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले जस् के स्थान में ओ और णो आदेश होते हैं । कहीं-कहीं जस् का लुक् भी हो जाता है ।

**विशेष**—हेम० ३, २०, २१, २२ के अनुसार इदन्त-उदन्त से पुँल्लिङ्ग में जस् के स्थान में डित् अउ-अओ आदेश और उदन्त से केवल डित् अओ आदेश विकल्प में होते हैं । णो आदेश भी विकल्प से होता है । डित् होने से पूर्व के 'टि' का लोप जानना चाहिए ।

( १७ ) इदन्त और उदन्त पुँल्लिङ्ग शब्दों से पर में आनेवाले शस् के स्थान में नित्य और डस् के स्थान में विकल्प से णो आदेश होता है ।

**विशेष**—अपभ्रंश में इदन्त-उदन्त से पर में आनेवाले 'डसि' के स्थान में 'हे', 'भ्यस्' के स्थान में 'हु' और डि के स्थान में हि आदेश होते हैं ।

( १८ ) इदन्त और उदन्त शब्दों से पर में आनेवाले 'टा' ( तृतीया-एकवचन ) के स्थान में 'णा' आदेश होता है ।

**विशेष**—अपभ्रंश में टा के स्थान में सानुस्वार ए ओर ण आदेश होते हैं ।

( १९ ) शेष रूपों की सिद्धि अदन्त शब्दों के समान ही जाननी चाहिए ।

उपर्युक्त नियमों के अनुसार इदन्त-पुँल्लिङ्ग

**गिरि** शब्द के रूप—

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गिरी	गिरीओ, गिरिणो
द्वितीया	गिरि	गिरिणो
तृतीया	गिरिणा	गिरीहि-हिँ-हि

पञ्चमी	गिरिक्तो इत्यादि	गिरिहितो गिरिमुतो इत्यादि
षष्ठी	गिरिणो, गिरिस्स	गिरिण, गिरिण
सप्तमी	गिरिम्मि	गिरीसु, गिरीसु
सबोधन	गिरि	गिरीओ

हेमचन्द्र ( ३, १६ २४ ) के अनुसार गिरि शब्द के रूप—

एकवचन	वहुवचन	
प्रथमा	गिरी	गिरी, गिरवो, गिरउ, गिरिणो
द्वितीया	गिरि	गिरी, गिरिणो
तृतीया	गिरिणा	गिरीहि-हिँ-हि
पञ्चमा	गिरिणो, गिरिक्तो गिरीओ, गिरीउ गिरीहितो	गिरिक्तो, गिरीओ, गिरीउ, गिरीहितो, गिरीसुतो
षष्ठी	गिरिणो, गिरिस्स	गिरीण, गिरीण
सप्तमी	गिरिम्मि	गिरीसु, गिरीसु
सबोधन	गिरि, गिरी	गिरिणो, गिरओ, गिरउ, गिरी

उदन्त पुँल्लिङ्ग गुरु शब्द के रूप —

प्रथमा	गुरू	गुरूओ, गुरूणो
द्वितीया	गुरु	गुरूणो
तृतीया	गुरूणा	गुरूहि-हिँ-हि
पञ्चमी	गुरूक्तो इत्यादि	गुरूहितो इत्यादि
षष्ठी	गुरूणो, गुरूस्स	गुरूण, गुरूण
सप्तमी	गुरूम्मि	गुरूसु, गुरूसु
सबोधन	गुरु	गुरूओ

पुंलिङ्ग में कुल उकारान्त, उकारान्त शब्दों के रूप गिगि और गुरु गन्दों के समान ही होते हैं ।

हेमचन्द्र के अनुसार गुरु शब्द के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथमा गुरु	( गुरु, गुरवो, गुरओ
द्वितीया गुरु	( गुरुउ, गुरुणो
तृतीया गुरुणा	गुरु, गुरुणो
पञ्चमी (गुरुणो, गुरुतो, गुरुओ	गुरुहि-हिँ-हि
(गुरुउ, गुरुहितो	गुरुत्तो, गुरुओ, गुरुउ
षष्ठी गुरुणो, गुरुस्स	गुरुहितो, गुरुसुतो
सप्तमी गुरुम्मि	गुरुण, गुरुण
सबोधन गुरु, गुरु	गुरुसु, गुरुसु
	गुरु, गुरुणो, गुरवो
	गुरुउ, गुरओ

( २० ) ऋकारान्त शब्दों के आगे किसी भी विभक्ति के आने पर अन्त्य ऋ के स्थान में 'आर' आदेश जाना है और उसका रूप अदन्त शब्दों जैसा पाया जाता है ।

( २१ ) सु और अम् को छोड़ कर शेष सभी विभक्तियों के पर में होने पर ऋकारान्त शब्द के अन्त्य ऋ के स्थान में विकल्प से उकार होता है । उक्त पक्ष में उकारान्त शब्दों के जैसे रूप होते हैं ।

( २२ ) सबोधनवाले सु के पर में रहने पर ऋदन्त शब्द-के अन्तिम ऋ के स्थान में 'अ' आदेश विकल्प से होता है ।

किन्तु जो ऋकारान्त शब्द विशेषण के रूप में प्रयुक्त हुआ हो उसमें उक्त नियम लागू नहीं होता है। जैसे — हे पिअ, हे पिअर ( हे पित )

**विशेष**—कर्तृशब्द विशेषणवाची ऋकारान्त है, अत उक्त नियम लागू नहीं हुआ। इससे 'हे कत्तार' रूप होगा।

( २३ ) पितृ, भ्रातृ और जामातृ शब्दों से पर में किसी भी विभक्ति के आने पर ऋकार के स्थान में 'आर' का अपदान्त 'अर' आदेश होता है।

**विशेष**—( क ) अर' आदेश होने पर उसके रूप भी अदन्त शब्दों के समान ही चलते हैं।

(ख) सु के पर में रहने पर ऋदन्त शब्दों के ऋ के स्थान में 'आ' आदेश विकल्प से होता है।

उपर्युक्त नियमों के अनुसार भर्तृ शब्द के रूप —

### एकवचन

प्रथमा	भत्तारो
द्वितीया	भत्तार
तृतीया	भत्तुणा, भत्तारेण
पञ्चमी	भत्तारादो, भत्तुणो, इत्यादि
षष्ठी	भत्तुणो, भत्तारस्स
सप्तमी	भत्तारे, भत्तारम्मि, भत्तुम्मि
सबोधन	हे भत्तार

### बहुवचन

भत्तुणो	भत्तारा
भत्तुणो,	भत्तारे
भत्तारेहि	भत्तुहि
भत्तारहितो,	भत्तुहितो,
इत्यादि	इत्यादि
भत्तुण,	भत्ताराण
भत्तुसु,	भत्तारेसु
हे भत्तारा	

हेमचन्द्र ( ३, ३६, ४०, ४४, ४८ ) के अनुसार भर्तृ  
शब्द के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथमा	भत्तारो	भत्तारा, भत्तू, भत्तुणो भत्तउ, भत्तओ
द्वितीया	भत्तार	भत्तारे, भत्तू, भत्तुणो
तृतीया	भत्तुणा, भत्तारेण	भत्तूहि, भत्तारेहि
पञ्चमी	भत्तुणो भत्तूओ, भत्तूउ, भत्तूहि, भत्तूहितो, भत्ता राओ, भत्ताराउ, भत्ताराहि, भत्ता राहितो, भत्तारा	भत्तू, भत्तूओ, भत्तूहितो, भत्तूसुतो, भत्ताराओ, भत्ताराउ, भत्ताराहि, भत्तारेहि, भत्ता राहितो, भत्तारेहितो, भत्तारा- सुतो, भत्तारेसुती
		भत्तूण, भत्तूण, भत्ताराण, भत्ताराण
		भत्तुणो, भत्तुस्स, भत्तारस्स
		भत्तुम्मि, भत्तारे, भत्तारम्मि
सप्तमी	भत्तुम्मि, भत्तारे, भत्तारम्मि	भत्तूसु, भत्तारेसु
सबोधन	हे भत्तार	हे भत्तारा

कुल ऋकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप भर्तृ शब्द के समान  
ही चलते हैं ।

ऋकारान्त पितृ शब्द के रूप —

प्रथमा	पिआ, पिअरो	पिअरा
द्वितीया	पिअर	पिअरे, पिदुणो
तृतीया	पिअरेण, पिदुणा	पिअरेहि
पञ्चमी	पिअरादो, पिदुणो, इ०	पिअरहितो, पिदुहितो, इत्यादि
षष्ठी	पिअरस्स, पिदुणो	पिअराण, पिदुण

## एकवचन

## बहुवचन

सप्तमा	पिअरे, पिअरम्मि, पिदुम्मि	पिअरेसु, पिदुसु
सबोधन	हे पिअ, हे पिअर	हे पिअरा

पितृ शब्द के समान ही भ्रातृ और जामातृ शब्दों के रूप चलने हैं ।

हेमचन्द्र ( ३ ३६-४०, ४४-४८ ) के अनुसार पितृ शब्द के रूप —

प्रथमा	पिआ', पिअरो	{ पिअरा, पिउणो, पिअरो, पिअओ, पिअउ पिऊ
द्वितीया	पिअर	पिअरे, पिअरा, पिउणो, पिऊ
तृतीया	पिअरेण, पिअरेण, पिउणा इत्यादि	पिअरेहि हि हिँ, पिऊहि हिँ-हि इत्यादि
सबोधन	पिअ, पिअर	पिअरा, पिउणो, पिअवोइ यादि

शेष विभक्तियों के रूपों का ऊह कर लेना चाहिए ।

( २४ ) प्राकृतप्रकाश और प्राकृतकल्पलतिका में ईकारान्त उकारान्त शब्दों के साधन के लिए अलग सूत्र नहीं देखे जाते । इससे सिद्ध होता है कि उनके ( ईकारान्त उकारान्त के ) कार्य भी क्रमशः इकारान्त उकारान्त शब्दों के समान ही होते हैं ।

( २५ ) हेमचन्द्र ने सभी विभक्तियों में क्विबन्त ईकारान्त उकारान्त शब्दों के दीर्घ ईऊ के लिए ह्रस्व का विधान किया है । और केवल सबोधन के एकवचन में अपने निप्रस को वैकल्पिक माना है ।

१ शौरसेनी में प्रथमा के एकवचन में पिदा रूप होता है । देखिए 'तादृणो वि एदाए पिदा'-अभिज्ञान शाकुन्तल

( २६ ) पुँल्लिङ्ग मे गो शब्द का गाव यह रूप होता है । इस लिए इसके रूप अदन्त शब्दों के समान ही चलते हैं ।

स्त्री प्रत्यय

( २७ ) प्राकृत मे कुछ ही ऐसे शब्द हैं, जिनमे विशेष नियमों के अनुसार विशेष स्त्री प्रत्यय आते हैं । शेष शब्दों के आगे सस्कृत के ही अनुसार स्त्री प्रत्यय आते हैं ।

( २८ ) पाणिनि ( ४११५ ) के अनुसार अण् आदि प्रत्यय निमित्क जो ङीप् होता है, वह प्राकृत मे विकल्प से होता है । जैसे — साहणी, साहणा, कुरुचरी, कुरुचरा ।

( २९ ) अजातिवाची पुँल्लिङ्ग नाम ( प्रातिपदिक ) से स्त्री लिङ्ग को बतलाने मे विकल्प से ङी प्रत्यय होता है । जैसे — नीली, नीला, काली, काला, हसमाणी, हसमाणा, सुप्पणही, सुप्पणहा, इमीए, इमाए, इमीण, इमाण, एईए, एआए, एईण, एआण ।

प्रिशेष—(क) कुमार्यादि मे सस्कृत के समान नित्य ही ङी होता है । कुमारी, गौरी इत्यादि ।

(ख) जातिवाची मे उक्त नियम के नही लगने से करिणी, अया, एलया इत्यादि रूप होते हैं ।

( ३० ) छाया और हरिद्रा शब्दों मे 'आप्' का प्रसङ्ग (प्राप्ति) होने पर विकल्प से 'ङी' प्रत्यय होता है । जैसे — छाही, छाहा,<sup>१</sup> हलदी, हलदा ।

( ३१ ) स्त्रीलिङ्ग मे स्वस्त्रादि<sup>२</sup> शब्दों से पर मे ङा प्रत्यय

१ हेमचन्द्र के अनुसार 'छाया' पाठ है । देखें हेम० ३ ३४

२ स्वसा तिष्ठश्चतस्त्रश्च ननान्दा दुहिता तथा ।

याता मातेति सप्तैते स्वस्त्रादय उदाहृता ॥ सिद्धा कौ अजन्तस्त्री



होकर ससा आदि रूप हो जाते हैं और उनके रूप आदन्त शब्दों जैसे चलते हैं। जैसे —ससा, नणन्दा, दुहिआ।

( ३२ ) सु, अम् और आम्वजित<sup>१</sup> सुप् ( सभी विभक्तियों ) के पर मे रहने पर किम्, यद् और तद् शब्दों से स्त्रीलिङ्ग में 'ङी' प्रत्यय विकल्प से होता है। जैसे —कीओ, काओ, कीए, काए, कीसु, कासु, जीओ, जाओ, तीओ, ताओ।

( ३३ ) स्त्रीलिङ्ग शब्द से पर मे आनेवाले जस् और शस् के स्थान में विकल्प से 'उत्' और 'ओत्' आदेश होते हैं। और उनसे पूर्व के ह्रस्व स्वर का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे —मालाउ, मालाओ, पक्ष मे-माला। बुद्धीउ, बुद्धीओ, पक्ष मे बुद्धी। सहीउ, सहीओ, पक्ष मे सही। घेरूउ, वेरूओ, पक्ष मे घेरू। वहूउ वहूओ, पक्ष मे वहू।

विशेष—शौरसेनी में स्त्रीलिङ्ग शब्द से जस् का उत् नहीं होता है।

( ३४ ) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान नाम ( प्रातिपदिक ) से पर मे आनेवाले टा, ङस् और ङी के स्थान में 'अत्' 'आत्' 'इत्' और 'एत्' आदेश होते हैं। पूर्व के ह्रस्व स्वर का दीर्घ भी होता है। आदन्त शब्द से टादि के स्थान में केवल आत् आदेश नहीं होता। उक्त चारों आदेश जब ङसि के स्थान में होते हैं, तब उनके पूर्व के ह्रस्व स्वर का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे —मुद्धाअ, मुद्धाइ, मुद्धाए, बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ, बुद्धीए।

विशेष—(क) अपभ्रंश में टा के स्थान में एत् होता है।

१ उक्त नियम हेमचन्द्र के अनुसार है। किन्तु एच भट्टाचार्य अपने प्राकृत व्याकरण में 'अनामि सुपि' लिखते हैं। पृ १०७, प १०

(२) अपभ्रंश मे डसि और डस् के स्थान मे हे, भ्यस् ओर आम् के स्थान मे हु और डि के स्थान मे हि होते है ।

( ३५ ) अम् विभक्ति के पर मे रहने पर स्त्रीलिङ्ग शब्द के अन्तिम दीघ को ह्रस्व विकल्प से होता है ।

( ३६ ) स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान दीर्घ ईकारान्त शब्द से पर मे आनेवाले सु जस् और शस् के स्थान मे 'आ' आदेश विकल्प से होता है ।

( ३७ ) संबोधनवाली विभक्ति के पर मे रहने पर आबन्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के अन्तिम आ को 'ए' आदेश होता है ।

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग लता शब्द के रूप —

### एकवचन

प्रथमा	लदा
द्वितीया	लद
तृतीया	लदाए, लदाइ, लदाअ
पञ्चमी	लदादो, लदाए, इत्यादि
षष्ठी	लदाए, लदाइ, लदाअ
सप्तमी	लदाए, लदाइ, लदाअ
संबोधन	हे लद

### बहुवचन

लदा, लदाओ, लदाउ
लदा, लदाओ, लदाउ
लदाहि हि हि
लदाहितो, इत्यादि
लदाण, लदाण
लदासु, लदासु
हे लदाओ

हेमचन्द्र के अनुसार लता शब्द के रूप —

प्रथमा	लदा	लदा, लदाओ, लदाउ
द्वितीया	लद	लदा, लदाओ, लदाउ

## एकवचन

तृतीया	लदाए, लदाइ, लदाअ
पञ्चमी	लदाए, लदाइ, लदाअ
	लदत्तो, लदाओ, लदाउ
	लदाहितो, इत्यादि
षष्ठी	लदाए, लदाइ, लदाअ
सप्तमी	लदाए, लदाइ, लदाअ
सबोधन	हे लदे, लदा

## बहुवचन

लदाहि-हिँ -हिँ
लदत्तो, लदाओ, लदाउ
लनाहितो, लदासुतो
लदाण, लदाण
लदासु, लदासु
हे लदा, लदाओ, लदाउ

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग बुद्धि शब्द के रूप —

प्रथमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
द्वितीया	बुद्धि	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
तृतीया	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धिअ	बुद्धीहि-हिँ -हिँ
पञ्चमी	बुद्धीए, बुद्धीइ,	बुद्धीहितो, बुद्धीसुन्तो
	इत्यादि	इत्यादि
षष्ठी	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीअ	बुद्धीण, बुद्धीण
सप्तमी	बुद्धीए, बुद्धीइ, बुद्धीआ, बुद्धीअ	बुद्धीसु, बुद्धीसु
सबोधन	हे बुद्धी	हे बुद्धी, बुद्धीओ, इत्यादि

हेमचन्द्र के अनुसार बुद्धि शब्द के रूप —

प्रथमा	बुद्धी	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
द्वितीया	बुद्धि	बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ
तृतीया	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धीइ,	बुद्धीहि-हिँ -हिँ
	बुद्धीए	
पञ्चमी	बुद्धीअ, बुद्धीआ, बुद्धित्तो	बुद्धित्तो, बुद्धीओ-उ-
	बुद्धीइ, बुद्धीए, बुद्धीओ	हितो-सुतो
	बुद्धीउ, बुद्धीहितो	

एकवचन

षष्ठी बुद्धीअ आ-इ-ए  
सप्तमी " " "  
सबोधन हे बुद्धि, बुद्धी

बहुवचन

बुद्धीण-ण  
बुद्धीसु-सु  
हे बुद्धी, बुद्धीओ, बुद्धीउ

कुल उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप उक्त बुद्धि शब्द के समान ही चलते हैं। ऐसे ही हेमचन्द्र के अनुसार धेणु, सही, वहु शब्दों के रूप भी चलते हैं।

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग धेणु शब्द के रूप —

प्रथमा	धेणू	धेणू, धेणूओ, धेणूउ
द्वितीया	धेणु	" " "
तृतीया	धेणूए-इ-आ-अ	धेणूहि-हिँ-हि
पञ्चमी	धेणूओ धेणूइ, इत्यादि	धेणूहितो-सुतो
षष्ठी	धेणूए-इ-आ-अ	धेणूण, धेणूण
सप्तमी	" " " "	धेणूसु-सु
सबोधन	हे धेणु धेणू	हे धेणू, धेणूओ, इत्यादि

सभी उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप धेणु शब्द के समान ही चलते हैं।

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग नदी शब्द के रूप —

प्रथमा	नई नईआ	नईओ, नईआ
द्वितीया	नइ	नई, नईओ, नईआ
तृतीया	नईए-इ-आ-अ	नईहि-हिँ-हि
पञ्चमी	नईए, नईअ, नइदो, इत्यादि	नई, नईहितो, नईसुतो

एकवचन	बहुवचन
षष्ठी नईए, -इ, -आ-अ	नईण, नईण
सप्तमी " " " "	नईसु नईसु
सबोवन हे नइ, नई	हे नई, नईओ, इत्यादि

कुल ईकारान्त खील्लिङ्ग शब्दों के रूप नदी शब्द के समान ही चलते हैं ।

उकारान्त खील्लिङ्ग वहू ( उधू ) शब्द के रूप —

प्रथमा वहू	वहू, वहूओ, इत्यादि
द्वितीया बहु	वहू, वहूओ, इत्यादि
तृतीया वहूए-इ-आ-अ	वहूहि-हि-हि
पञ्चमी वहूदो, वहूए, इत्यादि	वहूहितो-सुतो
षष्ठी वहूए-इ-आ-अ	वहूण, वहूण
सप्तमी " " " "	वहूसु-सु
सबोवन हे वहू, वहू	हे वहू, वहूओ, इत्यादि

कुल उकारान्त खील्लिङ्ग शब्दों के रूप वहू शब्द के समान ही चलते हैं ।

ऋकारान्त खील्लिङ्ग मातृ शब्द के रूप —

१ हेमचन्द्र ( ३ ४६ ) के अनुसार मातृ शब्द के दो प्राकृत रूप मिलते हैं—मात्रा ( माता ) और मात्ररा ( देवी Goddess ) । हमें इस शब्द से ३ ४४ के अनुसार 'माउ' और १ १३५ के अनुसार 'माइ' रूप भी मिलते हैं । इनमें 'मात्रा' और 'मात्ररा' के रूप माला एव लता शब्दों के अनुसार, माउ के रूप धेणु के अनुसार और माइ के रूप बुद्धि शब्द के अनुसार चलते हैं ।

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा माआ	माआ
द्वितीया माअ <sup>१</sup>	माए
तृतीया माआइ, माआअ, इत्यादि	माएहि-हिँ -हि
पञ्चमी माआदो, माआए, इत्यादि	माआहितो, माआसुतो
षष्ठी माआइ, माआअ, इत्यादि	माआण, माआण
सप्तमी " " "	माआसु-सु
सबोधन हे माअ, इत्यादि	हे मात्रा, इत्यादि

स्त्रीलिङ्ग में गो शब्द के गावी और गाई ये दो रूप होते हैं। इन दोनों के रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अनुसार चलते हैं।

अजन्त नपुसक लिङ्ग के शब्दों के सम्बन्ध में नियम —

( ३८ ) नपुसक लिङ्ग में वर्तमान स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले सु ( प्रथमा के एकवचन ) के स्थान में 'म्' होता है। जैसे — वण ( वनम् )

( ३९ ) नपुसक लिङ्ग में वर्तमान स्वरान्त शब्दों से पर में आनेवाले जस् और शस् ( प्रथमा और द्वितीया के बहुवचन ) के स्थान में इ, इ और णि आदेश होते हैं। जैसे — कुलाई, कुलाइ और कुलाणि।

विशेष—(४) शौरसेनी में नपुसक लिङ्ग में जस्-शस् के स्थान में केवल 'णि' आदेश होता है।

(ख) अपभ्रंश में जस्-शस् के स्थान में 'इ' आदेश होता है।

---

१ शौरसेनी में द्वितीया के एकवचन में 'मादर' यह रूप होता है।

( ४० ) नपुसक लिङ्ग मे वर्तमान शब्दो से पर मे आनेवाले सबोधन के 'सु' का लोप होता है ।

( ४१ ) सु ( प्रथमा के एकवचन ) के पर मे रहने पर इदन्त-उदन्त नपुसक शब्दो के अन्तिम इ और उ को दीर्घ नहीं होता है ।

अकारान्त नपुसकलिङ्ग कुल शब्द के रूप —

एकवचन		बहुवचन		
प्रथमा	कुल	कुलाई,	कुलाइ,	कुलाणि
द्वितीया	”	”	”	”
सबोधन	हे कुल			

शेष रूप पुल्लिङ्ग के समान चलते है ।

इकारान्त नपुसक दधि शब्द के रूप —

प्रथमा	दहि, दहि	दहीई,	दहीइ,	दहीणि
द्वितीया	” ”	”	”	”
सबोधन	हे दहि			

उकारान्त नपुसक मधु शब्द के रूप —

प्रथमा	महु, महु	महूई,	महूइ,	महूणि
द्वितीया	” ”	”	”	”
सबोधन	हे महु			

शेष रूपो का ऊह पुँल्लिङ्ग आदि से कर लेना चाहिए ।

हलन्त शब्दो के साधनसबन्धी नियम एव उनके रूप —

प्राकृत मे हलन्त शब्द नहीं होते है । कुछ हलन्त शब्दो के

अन्त्य व्यञ्जनो का लोप होता है और कुछ हलन्त शब्द अजन्त के रूप में परिणत हो जाते हैं। अतः हलन्त शब्दों के साधनार्थ विशेष नियम नहीं है।

ऋषल आत्मन् और राजन् शब्दों के साधनार्थ प्राकृत के कुछ प्राचीन आचार्यों ने नियम बनाये हैं। वे ही नियम प्रयोग के अनुसार अन्य नान्त शब्दों के लिए भी उपयुक्त माने गये हैं।

### राजन् शब्द के रूप —

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा राआ	राआणो, राआ
द्वितीया राअ	राए, राआणो
तृतीया रण्णा, राइणा	राएहि
पञ्चमी राआदो, रण्णो, राआदु, राइणो	राआहितो, राइहितो
षष्ठी रण्णो, राइणो, राअस्स	राआण, राइण, राआण्ण
सप्तमी राअस्मि, राए, राइस्मि	राएसु, राएसु
संबोधन हे राआ, राअ	

हेमचन्द्र ( ३, ४६-५५, ) के अनुसार राजन् शब्द के रूप —

प्रथमा राया	राया, रायाणो, राइणो
द्वितीया राय, राइण	राये, राया, रायाणो, राइणो
तृतीया राइणा, रण्णा, राएण, राएण	राएहि हिं हि, राईहि हिं हि
पञ्चमी रण्णो, राइणो, रायत्तो, इ०	रायत्तो, राइत्तो, इत्यादि
षष्ठी रण्णो, राइणो, रायस्स	राईण, राईण, रायाण, रायाण



	एकवचन	बहुवचन
सप्तमी	राये, रायम्मि, राइम्मि	राईसु, राईसु, राएसु, राएसु
सबोधन	हे राया, राय	राया, रायाणो, राइणो

### आत्मन् शब्द के रूप —

प्रथमा	अप्पा, अप्पाणो	अप्पाणा, अप्पाणो, अप्पा
द्वितीया	अप्पाण, अप्प	अप्पाणे, अप्पणो
तृतीया	अप्पाणेण, अप्पणा	अप्पाणेहि, अप्पेहि
पञ्चमी	अप्पाणाओ, अप्पणो अप्पाओ, अप्पादो, इ०	अप्पाणाहितो, अप्पाहितो, इत्यादि
षष्ठी	अप्पाणस्स, अप्पणो	अप्पाणाण, अप्पाण
सप्तमी	अप्पाणम्मि, अप्पे	अप्पाणोसु, अप्पेसु
सबोधन	हे अप्प, इत्यादि	

विशेष—हेमचन्द्र ( ३ ५६-५७ ) के अनुसार आत्मन् शब्द के दो प्राकृत रूप अप्प और अप्पाण होते हैं। इनमें अप्प के रूप राजन् शब्द जैसे चलते हैं। और 'अप्पाण' के वच्छ्र अथवा देव शब्द के अनुसार। तृतीया के एकवचन में उसके दो और अधिक रूप होते हैं—'अप्पणिआ' और 'अप्पणइआ'

( ४२ ) प्राकृत कल्पलतिका के अनुसार 'भवत्' और 'भगवत्' के अन्तिम तकार के स्थान में सु विभक्ति के पर में रहने पर अनुस्वार किया जाता है। यह नियम यहाँ भी गृहीत है। जैसे —भव ( भवान् ), हे भव ( हे भवन् ), भअव ( भगवान् ), हे भअव ( हे भगवन् )

( ४३ ) प्राच्या में भवत् शब्द के खीलिङ्ग में भोदी यह रूप होता है।

सर्वनाम शब्दों के साधन के नियम और रूप —

प्राकृत में सर्वनाम के सबध में सामान्य नियम देखने में नहीं आते हैं। जो भी नियम देखने में आते हैं, विशेष स्थलों के लिए विशेष नियम हैं। केवल अदन्त सर्वनाम शब्दों की सिद्धि के लिए कुछ साधारण नियम हैं, जिनका नीचे उल्लेख हुआ है। अन्य विशेष नियमों का परिज्ञान उदाहरणों द्वारा ही सम्भव है। अदन्त सर्वनाम शब्दों के विषय में नियम ये हैं —

( ४४ ) सर्वादिगण पठित शब्दों के अन्तिम अ से पर में आनेवाले जस् के स्थान में 'ए' आदेश होता है।

विशेष—कहीं कहीं सर्वादि के प्रथम अ का प्रैकल्पिक एत्व होकर सेव्वे और सर्वे रूप होते हैं।

( ४५ ) अदन्त सर्वादि से पर में आनेवाले 'आम्' के स्थान में 'एसि' आदेश विकल्प से होता है। तथा 'डि' के स्थान में 'स्सि', 'म्मि' और 'त्थ' ये आदेश होते हैं और इद्म् तथा एतद् शब्दों को छोड़कर अन्य सर्वादि शब्दों से आनेवाले डि के स्थान में 'हि' आदेश भी होता है।

पुंलिङ्ग में सर्व शब्द के रूप —

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा सव्वो	सव्वे
द्वितीया सव्व	सव्वे
तृतीया सव्वेण	सव्वेहि
पञ्चमी सव्वदो, सव्वन्तो, इत्यादि	सव्वेहितो, इत्यादि
षष्ठी सव्वस्स	सव्वेसि, सव्वाण

	<b>एकवचन</b>	<b>बहुवचन</b>
सप्तमी	{ सव्वस्सि, सव्वम्मि, सव्वत्थ, सव्वहि	सव्वेसु, सव्वेसु
सबोधन		हे सव्व, सव्वो
		सव्वे

स्त्रीलिङ्ग में सर्ग शब्द के रूप आदन्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के समान तथा नपुंसक में सर्ग शब्द के रूप अदन्त नपुंसक लिङ्गवाले शब्दों के समान चलते हैं।

विश्व आदि सर्वादिगण के शब्दों के रूप इसी सर्ग शब्द के रूपों के समान चलते हैं।

**विशेष—**अपभ्रंश में सर्ग के स्थान में साह आदेश होता है। अदन्त सर्वादि से पर में आनेवाले ङसि का 'हा' आदेश होता है। ङि के स्थान में केवल हि आदेश ही होता है।

पुंलिङ्ग में यद् शब्द के रूप —

प्रथमा	जो	जे
द्वितीया	ज	जे
तृतीया	जेण, जिण	जेहि
पञ्चमी	जत्तो, जदो, जम्हा, जाओ	जाहितो, जासुतो, इत्यादि
षष्ठी	जस्स, जासँ	जाण, जेहि <sup>२</sup>
सप्तमी	जस्सि, जम्मि, जहि <sup>३</sup> , जत्थ	जेसु

१ अपभ्रंश में पुंलिङ्ग में 'जासु' और स्त्रीलिङ्ग में 'जहे' होता है।

२ शौरसेनी में केवल जाण और टक्कभाषा में 'जाह' 'जाण' ये दो रूप होते हैं।

३ जब सप्तमी के एकवचन से समय का बोध कराना हो तब यद् शब्द का 'जाहे' और 'जाला' ये रूप हो जाते हैं।

( ४६ ) यद् शब्द से खीलिङ्ग म आम्वन्तित विभक्तिया के पर मे रहने पर डा विकल्प से होता है। जैसे — जी, जीया इत्यादि।

पुलिङ्ग मे तद् शब्द के रूप —

एकवचन	बहुवचन
प्रथमा सो	ते दे
द्वितीया त, ण	ते, दे
तृतीया तेण, तिणा, शेण	तेहि, शेहि
पञ्चमा तत्तो, तदो, ता तम्हा, ताओ	ताहिता इत्यादि
षष्ठी तास, से, तस्स	ताण, तेसि मि, दाण
सप्तमा तस्सि, तम्मि, तत्थ, तहि	तेसु इत्यादि

( ४७ ) तद् शब्द का खीलिङ्ग मे प्रथमा ये एकवचन मे 'सा' यह रूप होता है और नपुंसक लिङ्ग मे 'न'। आम्वन्तित

१ हेमचन्द्र के अनुसार तद् शब्द के रूप निम्नलिखित हैं —  
 प्रथमा-एक० स, सो, बहु० ते, शे, द्वितीया एक० त ण, बहु० ते, ता  
 शे णा, तृतीया एक० तण, शेण तिण, बहु० तेहि इत्यादि,  
 पञ्चमी-एक० तम्हा, बहु० तेहि इत्यादि, षष्ठी एक० तस्स,  
 ताम्, बहु० तास, तेसि, सप्तमी एक० तस्सि, ताहे, ताला, तइआ,  
 बहु० तेसु, शेसु, तेसु, शेसु।

२ पेशाची मे पुल्लिङ्ग में 'नेन' और खीलिङ्ग में 'नाए' रूप होते हैं।  
 ३ शौरसेनी मे बस् मे तस्स, से और आम्व सं ताण होते हैं।  
 अपभ्रंश मे बस् के पर में रहने पर पुल्लिङ्ग म तह और खीलिङ्ग में  
 तासु होते हैं। टक्क भाषा मे आम्व के पर मे रहने पर 'ताह' और  
 'ताण' होते हैं।

विभक्तियों में तद्शब्द से स्त्रीलिङ्ग में ली का भी प्रयोग किया जाता है। जैसे —ती, तीआ इत्यादि।

पुलिङ्ग में एतद् शब्द के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एस, एसो	एते, एदे
द्वितीया	एत	एते, एदे
तृतीया	एदिणा, एदेण, एण	एतेहि, एदेहि, एएहि
पञ्चमी	एत्तो, एत्ताहो, एआओ, इ०	एतेहितो इत्यादि
षष्ठी	एअस्स, एदस्स, से	सि, एएसि, एदाण
सप्तमी	{ अयम्मि, एत्थ, इअम्मि, एअम्मि, एअस्सि	एएसु, एदेसु इत्यादि

विशेष—( क ) हेमचन्द्र ( ३, ८२ ) के अनुसार पञ्चमी के एकवचन में 'एत्तो' और 'एत्ताहे' रूप होते हैं और पक्ष में 'एआओ' 'एआउ' 'एआहि' 'एआहितो' और 'एआ' रूप होते हैं।

( ख ) हेमचन्द्र ( ३. ८४ ) के अनुसार एतद् शब्द से सप्तमी के एकवचन में 'म्मि' के पर में रहने पर 'अयम्मि' ईयम्मि और पक्ष में एअम्मि रूप होते हैं।

( ग ) अन्य रूपों के लिए देखिए हेमचन्द्र के ३ ६६, ८१, ८५

पुलिङ्ग में अदस् शब्द के रूप —

प्रथमा	अमू	अमूणो
द्वितीया	अमु	अमूणो
तृतीया	अमुणा	अमूहि

एकवचन

पञ्चमी	अमूओ, अमूउ इत्यादि
षष्ठी	अमुणो, अमुस्स
सप्तमी	अमुम्मि, अयम्मि, इअम्मि

बहुवचन

अमूहितो इत्यादि
अमूण
अमूसु इत्यादि

विशेष—( क ) हमचन्द्र ( ३ ८७ ) के अनुसार तीनों लिङ्गों में अदस् शब्द के प्रथमा एकवचन में 'अह' रूप भी होता है ।

( ख ) शौरसेनी में 'अह' रूप नहीं होता । साधारणतः स्त्रीलिङ्ग में अमू और नपुंसक में अमु रूप प्रयुक्त होते हैं ।

पुलिङ्ग में इदम् शब्द के रूप —

प्रथमा	इमो, अअ	इमे
द्वितीया	इम, ण	इमे
तृतीया	इमिणा, इमेण, शेण	एहि, इमेहि, शेहि
पञ्चमी	इदो, इमादो, इत्तो इत्यादि	इमेहितो इत्यादि
षष्ठी	अस्स, इमस्स, से	इमाण, सि
सप्तमा	अस्सि, इमस्सि, इह, शे	एसु

विशेष—( क ) इदम् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में 'सु' विभक्ति के पर में रहने पर 'इअ', 'इमिआ' और नपुंसक में सु और अम् के पर में रहने पर 'इदं' और 'इणं' रूप होते हैं ।

( ख ) शौरसेनी में स्त्रीलिङ्ग इदम् शब्द के प्रथमा एकवचन में 'इअं' और नपुंसक में 'इदम्' 'इमम्' रूप

होते हैं। पुल्लिङ्ग-नपुंसक लिङ्ग में षष्ठी के बहुवचन में फेरल 'इमाणं' यह रूप होता है।

पुल्लिङ्ग में किम् शब्द के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	को	के
द्वितीया	क	के
तृतीया	किणा, केण	केहि
पञ्चमी	कीणो, कीस, कम्हा, कत्तो, कदो	केहितो इत्यादि
षष्ठी	कास, कस्स	कास, केसि, काण
सप्तमी	{ कहि, कस्सि, कम्मि, कत्थ,   काहे, काला, कइआ	केसु इत्यादि

प्रिशेष—( क ) अपभ्रंश में किम् के स्थान में 'काइ' और 'कवण' आदेश विकल्प से होते हैं।

( ख ) स्त्रीलिङ्ग में 'का' और नपुंसक में 'किं' रूप होते हैं।

( ग ) शौरसेनी में डसि में 'कदो' और उसी विभक्ति में अपभ्रंश में 'कहाँ' रूप होते हैं।

( घ ) स्त्रीलिङ्ग में डस् के पर में रहने पर 'कस्सा' कीसे, किअ, कीआ, कीई, 'कीए' होते हैं। शौरसेनी में पुल्लिङ्ग में 'कास' नहीं होता है। अपभ्रंश में पुल्लिङ्ग किम् शब्द का डस् में 'कासु' रूप होता है और स्त्रीलिङ्ग में 'कहं'।

गुष्मद् शब्द के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुम, त, तु, तुम, तुह	{ झे, तुज्भ, तुज्भो, तुम्ह, तुम्हे उम्हे, तुझे <sup>१</sup>
द्वितीया	{ त, तु, तुव, तुम्, तुह तुमे, तुमे	वो तुज्झे, तुज्भ, तुम्हे, तुझे
तृतीया	{ दे, त, तइ तुए, तुम तुमइ, तुमर तुमे, तुमाइ	तुम्हेहि, तुझेहि, उम्हेहि उज्झेहि, तुज्झेहि <sup>२</sup> इत्यादि
पञ्चमी	{ तत्तो, तटत्तो तुयत्तो, तुमत्तो, तुज्भत्तो, तुम्हत्तो, तुहत्तो, तुह्यत्तो, तटो, तुव, दुहितो <sup>३</sup> इत्यादि	तुम्हाहितो तुज्भ्हाहितो, तुज्भत्तो, तुम्हत्तो, तेहितो दुहितो <sup>३</sup> इत्यादि

१ हेमचन्द्र ३ ९१ के अनुसार भे, तुम्भे, तुज्भ, तुम्ह, तुम्हे, उम्हे रूप होते हैं ।

२ हेमचन्द्र ३ ९२ में तुए रूप बतलाया गया है ।

३ हेमचन्द्र ३ ९३ में वो, तुज्भ, तुम्भे, तुम्हे, उम्हे, भे, रूप वर्णित हैं ।

४ हेमचन्द्र ३ ९४ के अनुसार—भे, दि, दे, ते, तइ, तए तुम, तुमइ, तुमए, तुमे और तुमाइ रूप होते हैं ।

५ हेमचन्द्र ३ ९५ के अनुसार—भे, तुम्भेहि, तुज्झेहि, उज्झेहि, उम्हेहि, तुम्हेहि, उम्हेहि ये रूप होते हैं ।

६ हेमचन्द्र ३ ९६ और ९७ के अनुसार—तटत्तो, तुवत्तो, तुमत्तो, तुहत्तो, तुज्भत्तो तुम्हत्तो, तुज्भत्तो, तत्तो, तुम्ह तुज्भनहि तो, तुम्ह, तुज्भ इत्यादि रूप होते हैं ।

७ हेमचन्द्र ३ ९८ के अनुसार—तुज्भत्तो, तुम्हत्तो, उम्हत्तो, उम्हत्तो, तुज्भत्तो तथा दोडुहिहिनी सुतो ये रूप होते हैं ।



	एकवचन	बहुवचन
षष्ठी	तुह, तुज्झ, तुम्म, तुइ, तु, तुम्ह, तुह, तुह, तुव, तुम, तमे, तुमाइ, दे, तुह्य <sup>१</sup>	वो, भे, तुज्झ, तुह्याण तुम्हाण, तुमाण, तुहाण उम्हाण, तुवाण <sup>२</sup> इत्यादि
	सप्तमी	तइ, तए, तुमए, तुमे, तुमाई, तइ, तुम्मि, तुमम्मि, तुवम्मि, तुहम्मि, तुज्झम्मि <sup>३</sup> इत्यादि

### शौरसेनी मे युष्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	तुम	तुम्हे
द्वितीया	तुम	तुम्हे

१ हेमचन्द्र ३ ९९ के अनुसार—तइ, तु, ते, तुम्ह, तुह, तुह, तुव, तुम, तुमे, तुमो, तुमाइ, दि, दे, इ, ए, तुब्भ, उब्भ, उय्ह, तुम्ह, तुज्झ, उम्ह, उज्झ रूप होते हैं ।

२ हेमचन्द्र ३ १०० के अनुसार—तु, वो, भे, तुब्भ तुब्भ, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, तुब्भाण, तुवाण, तुमाण, तुहाण, उम्हाण, तुम्ह, तुज्झ, तुम्ह, तुज्झ, तुम्हाण तुम्हाण, तुज्झाण, तुज्झाण रूप होते हैं ।

३ हेमचन्द्र ३ १०१ के अनुसार—तुमे, तुमए, तुमाइ, तइ, तए, तुम्मि, तुवम्मि, तुमम्मि, तुहम्मि, तुब्भम्मि, तुम्हम्मि, तुज्झम्मि रूप होते हैं ।

४ हेमचन्द्र ३ १०२ के अनुसार—तुसु, तुवेसु, तुमेसु, तुहेसु, तुभेसु, तुम्हेसु, तुज्झेसु, तुवसु, तुमसु, तुहसु, तुब्भसु, तुम्हसु, तुज्झसु, तुब्भासु, तुम्हासु, तुज्झासु रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
तृतीया	तए	तुम्हेहि
पञ्चमी	तुम्हादो	तुम्हाहितो
षष्ठी	ते, दे, तह, तुम्ह	तुम्हाण
सप्तमी	तइ	तुम्हेसु

अपभ्रंश मे युष्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	तुह	तुम्हे, तुम्हाइ
द्वितीया	तइ, पइ	तुम्हेहि
तृतीया	”	”
पञ्चमी	तउहोंत, तधुहोंत, तुह्युहोंत	तुम्ह
षष्ठी	”	तुम्हह
सप्तमी	”	तुम्हासु

अस्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	{ अह, अहम्मि, अम्मि अम्हि, ह, अहअ, म्मि	भे, वअ, अम्ह, अम्हे अम्हो, मो <sup>२</sup>
द्वितीया	{ शौण, मि, अम्मि, अम्ह म, मम, मिम, अह <sup>३</sup>	अम्हे, अम्हा, णो, शौ, अम्ह <sup>४</sup>

१ हेमचन्द्र ३ १०५ के अनुसार—म्मि, अम्मि, अम्हि, ह, अह, अहय रूप होते हैं ।

२ हेमचन्द्र ३ १०६ के अनुसार—अम्ह, अम्हे, अम्हो, मो, वय और भे रूप होते हैं ।

३ हेमचन्द्र ३ १०७ के अनुसार—शौ, ण मि, अम्मि, अम्ह मम्ह, म, मम, मिम और अह रूप होते हैं ।

४ हेमचन्द्र ३ १०८ के अनुसार—अम्हे, अम्हो, अम्ह और शौ रूप होते हैं ।

	एकवचन	उहुवचन
तृत्.गण	{ मिमे, मम, ममए, मए ममाइ, मइ, इणो, मओ	अम्हेहि, अम्हाहि अम्ह, अम्हो, षो <sup>१</sup>
पञ्चम <sup>२</sup>	{ मइत्तो, ममत्तो मत्तो महत्तो, मह्यत्तो, मइदो ममदुहि <sup>३</sup> इत्यादि ।	ममत्तो, अम्हत्तो, ममाहितो ममासुतो, ममेसुतो, अम्हे हितो <sup>४</sup> इत्यादि ।
षष्ठा	{ भै मम, मइ, मह मह, मह्य, नह्य, अम्ह <sup>५</sup>	षो, णो, मह्य, अम्ह, अम्ह, अम्हे, अम्हो, मम, अम्हाण महाण, मह्याण । <sup>६</sup>

१ हेमचन्द्र ३ १०९ के अनुसार—मि, मे, मम, ममए, ममाइ मइ मए रूप होते हैं ।

२ हेमचन्द्र ३ ११० के अनुसार—अम्हेहि, अम्हाहि, अम्ह, अम्हे, षो रूप होते हैं ।

३ हेमचन्द्र ३ १११ के अनुसार—मइत्तो, ममत्तो, महत्तो मज्जन्तो मत्तो रूप होते हैं । इसी प्रकार मइदो, मइदु, इत्यादि रूप बनते हैं । षो, दु, हि, हितो और लुक् पक्ष में भी रूपों का ऊह कर लेना चाहिए ।

४ हेमचन्द्र ३ ११२ के अनुसार—ममत्तो, अम्हत्तो, ममाहितो, अम्हाहितो ममासुतो अम्हासुतो, ममेसुतो, अम्हेसुतो रूप होते हैं ।

५ हेमचन्द्र ३ ११३ के अनुसार मे, मइ, मम, मह, मह, मज्जन्, मज्जन्, अम्ह, अम्ह रूप होते हैं ।

हेमचन्द्र ३ ११४ के अनुसार षो, णो, मज्जन्, अम्ह, अम्ह, अम्हे अम्हो, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्जाण, अम्हाण, ममाण, महाण, मज्जाण रूप होते हैं ।

	एकवचन	बहुवचन
सप्तमी	मी, मइ, ममाइ, मए	अम्हेसु, ममेसु, महेसु
	मे, अम्हम्मि, ममम्मि	मएसु अम्हसु, ममसु
	महम्मि	महसु <sup>१</sup> इत्यादि

शौरसेनी मे अस्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	ही, अह	अम्हे, यय
द्वितीया	म	अम्हे
तृतीय।	मए	अम्हेहि
पञ्चमी	मत्तो, ममाओ	अम्हेहितो इत्यादि
षष्ठी	मे, मम, मह	अम्ह, अम्हाण
सप्तमी	मइ, मए	अम्हेसु

( ४८ ) मागधी मे सस्कृत के अह और वय के स्थान मे क्रमशः हगे और हके आदेश होते है ।

अपभ्रंश मे अस्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	हउ	अम्हे, अम्हइ
द्वितीया	मइ	अम्हे, अम्हइ
तृतीया	मइ	अम्हेहि
पञ्चमा	महु, मह्य	अम्हेहितो
षष्ठी	महु, मह्यु	अम्हे
सप्तमी	मयि इत्यादि	अम्हासु

१ हेमचन्द्र ३ ११५ के अनुसार—मि, मइ, ममाइ, मए मे, अम्हम्मि, ममम्मि, महम्मि, मज्जम्मि रूप होते हे ।

२ हेमचन्द्र ३ ११७ के अनुसार—अम्मेसु, महेसु, महेसु, मज्जेसु, अम्हसु, ममसु, महसु, मज्जसु अम्हासु, रूप होते है ।

द्वि, त्रि और चतुर् शब्दों के रूप —

	द्विशब्द	त्रिशब्द	चतुर्शब्द
प्रथमा	{ दो, दुवे, दोणि, वेणि, दुणि, विणि	तिण्णि	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
द्वितीया	”	”	”
तृतीया	दोहिं, दोहि, विहि	तीहि	चऊहि
पञ्चमी	दोहितो, वेहितो इ०	तीहितो	चऊहितो
षष्ठी	दोण्ह, दोण्ण, वेण्ण	तिण्ण	चउण्ह
सप्तमी	दोसु, वेसु	तीसु	चउसु

( ४६ ) अन्य सख्यावाचक शब्दों के रूप अदन्त शब्दों के समान चलते हैं ।

( ५० ) स्त्रीलिङ्ग में पञ्चन् शब्द से आप् प्रत्यय होता है । जैसे —पञ्चा, पञ्चाहि इत्यादि ।

( ५१ ) तादर्थ्य ( उसके लिए ) अर्थ में षष्ठी विभक्ति विकल्प से आती है ।

( ५२ ) प्राकृत में विभक्तियों के व्यवहार का कोई विशेष नियम नहीं है । कहीं द्वितीया और तृतीया के स्थान में सप्तमी कहीं पञ्चमी के स्थान में तृतीया तथा सप्तमी और प्रथमा के बदले द्वितीया विभक्तियाँ व्यवहृत होती हैं ।

## पञ्चम अध्याय

### [ अव्यय प्रकरण ]

( १ ) वाक्योपन्यास अर्थ मे 'त' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे —त निव पुच्छिअ-दोआरिण ( राजा से पूछे गये दौवारिक ने इस प्रकार वाक्य का उपन्यास किया । ) कुमापा ४ १

( २ ) अभ्युपगम ( स्वीकार ) अर्थ मे आम अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे —आम गिम्ह सिरी ( हाँ, यह सही है कि इस उद्यान मे इन दिनो ग्रीष्म ऋतु की शोभा फैली है । ) कुमा पा ४ १

( ३ ) विपरीतता अर्थ मे 'णवि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे —उण्हेह सीअला णवि ( गरम के विपरीत ठडी अथवा गरम होती हुई भी ठडी ) कुमा पा ४ १

( ४ ) कृतकरण अर्थात् फिर से उसी क्रिया को करने अर्थ मे 'पुणरुत्त' अव्यय का प्रयोग होता है। जैसे —पेच्छ पुणरुत्तम् ( एक बार देख चुकने पर भी फिर से देखो । ) कुमा पा ४ १

( ५ ) विषाद, विकल्प, पश्चात्ताप, निश्चय और सत्य अर्थों मे हन्दि' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। विषाद अर्थ में जैसे :—हन्दि विदेसो ( दुःख है कि हमारे लिए यह विदेश है ? ), विकल्प अर्थ मे जैसे :—जीवइ हन्दि पिआ ( पता नहीं मेरी प्रियतमा जीती है अथवा नहीं ), पश्चात्ताप अर्थ मे जैसे :—हन्दि कि पिआ मुक्का ? ( क्या हमने विरह

दु ख का बिना विचार किये ही प्रियतमा को छोड़ दिया ? ), निश्चय अर्थ में जैसे :—हन्दि मरण ( मरना निश्चित है ), सन्य अर्थ में जैसे :—हन्दि जपो गिम्हो ( ग्रीष्म यमराज है, यह बात सच है । ) कुमा, पा ४ २

( ६ ) 'ग्रहण करो', 'लो' इस अर्थ में 'हन्द' और हन्दि अव्यय का भी प्रयोग होता है । जैसे —हन्द महु हन्दि परिमल मिम ( पुष्परस लो, यह गन्ध ग्रहण करो । ) कुमा पा ४ ३

( ७ ) इव के अर्थ में मिव, पिव, विव, व्व व, विअ, इम अव्ययो का प्रयोग प्राकृत में विकल्प से होता है ।

मिव—नणणि मित्र ( माता के समान )

पिव—रूअ पिव ( पुत्री के समान )

विव—सोअर विव ( सोदर बहन के समान )

व्व—साअरो व्व ( सागर के समान )

व—सहि व ( सरणी के समान )

विअ—नत्ति विअ ( पौत्री के समान )

पक्ष में इव जैसे —

इव—मउडो इव

( ८ ) लक्षण ( लक्ष्य करना ) अर्थ में जेण और तेण अव्ययों का प्रयोग होता है । जैसे —जेण अहुल्ला लउली ( बिना खिली लवली को लक्ष्य करके ), फुल्ल च धूलिकम्ब तेण फुडा चेअ गिम्हसिरी ( खिले हुए धूलि कम्ब को लक्ष्य करके ग्रीष्म की शोभा स्फुट ही मालूम पडती है । ) कुमा० पा० ४ ५

( ९ ) अवधारण ( अन्ययोग व्यवच्छेद ) अर्थ में णइ, चेअ, चिअ और च अव्ययो का प्रयोग होता है । जैसे —

णइ—गोलीणा णइ असन्त-उउ-लच्छी ( उमन्त ऋतु की शोभा बीत ही गइ । )

चेअ—स्फुटा चेअ गिम्ह-सिरी ( ग्रीष्म की शोभा स्फुट ही मालूम पडती है । )

च्चिअ—त च्चिअ वन्ना ( ये ही धन्य ह । )

च्च—स च्च सीलेण ( रवभात्र से अच्छा-सत्-ही )

( १० ) दो में एक के निर्द्धारण तथा निश्चय अर्थों में 'बले' अव्यय का प्रयोग होता है । निर्द्धारण में जैसे —नया नोमालिआ बले रम्मा ( सभी लताओं में नयमल्लिमा अथवा नयमालिका मन को आनन्द देनेवाली है । ), निश्चय में जैसे :—बले ते मयणवाणा ( निश्चय ही वे मदन ( कामदेव ) के बाण ह । )

( ११ ) 'किल' के अर्थ में किर, इर, हिर अव्ययों का विकल्प से प्रयोग होता है । पक्ष में किल ही प्रयुक्त होता है । जैसे —

किर—जा किर मल्ली ( सभावना करता हूँ कि जो मल्ली है )

इर—जा इर जवा ( सभावना करता हूँ कि जो जपा है )

हिर—सुत्ते जणम्मि जो हिर सहो चीरीण ( लोगों के सो जाने पर जो भीगुरों का शब्द )

पक्ष में किल—एव किल तेन सिविणए भणिआ ।

विशेष—किल शब्द के अर्थ प्रसिद्ध, सभावना आदि हैं ।



( १२ ) केवल अर्थ में 'णवर' अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । जैसे —सहो चीरीण सुव्वण णवर ( केवल कीगुरो का शब्द सुनाई पडता है ।

( १३ ) आनन्तर्य अर्थ में 'णवरि' अव्यय का प्रयोग होता है । जैसे —गाअइ किल तस्स मिसा णवरि वसन्तम्स गिम्हसिरी । ( मीगुरो की ध्वनि के बहाने वसन्त के बाद आनेवाली ग्रीष्म शोभा हर्ष से मानो गान कर रही है ) कुमा० पा० ४ ७

( १४ ) निवारण अर्थ में 'अलाहि' अव्यय का प्रयोग करना उत्तम है । जैसे —पहिआ, अलाहि गन्तु ( पथिको, जाना व्यर्थ है अर्थात् मत जाओ । )

( १५ ) नव् के अर्थ में 'अण' और 'णाइ' अव्ययो का प्रयोग किया जाता है । जैसे —अण दइआण ( कान्तारहित जनों का ) । कुसलाई इह णाई ( यहाँ कुशल नहीं है ) ।

( १६ ) मा के अर्थ में 'माइ' इस अव्यय का प्रयोग होता है । जैसे —माई इह एध ( यहाँ मत आओ । )

( १७ ) 'हद्धी' यह अव्यय निर्वेद अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है । जैसे —हद्धी, इअ व्व चीरीहि उल्लविअ

( १८ ) भय, वारण और विषाद अर्थों में वेव्वे का प्रयोग करना चाहिए । जैसे —समुहोट्टिअम्मि ममरे वेव्वे त्ति भरोइ मल्लिउच्चिणिरी । वारणखेअभएहि भणिल वेव्वे वयसे त्ति ( सम्मुखोत्थिते भ्रमरे वेव्वे इति भणति मल्लिकामुच्चेत्री । वारण खेदभयै भणित्वा वेव्वे 'वयस्ये' इति । )

( १६ ) वेव्व और वेव्वे का भी आमन्त्रण अर्थ में प्रयोग किया जाता है। जैसे —वेव्व सहि चिट्ठसु ( हमारा आमन्त्रण है ! सखि, रुको )

विशेष—आमन्त्रण अर्थ में वेव्वे' का प्रयोग नियम १८ के मण्ड वेव्वे वयसेत्ति में देखा जाता है।

( २० ) सखी द्वारा आमन्त्रण अर्थ में 'हला', मामि', और 'हले' अव्ययों का प्रयोग विकल्प से होता है। पक्ष में 'सहि' यह प्रयुक्त होता है। जैसे —वेव्व सहि चिट्ठसु हला निसीद मामि रम जासि कत्थ हले ? ( हमारा आमन्त्रण है, मरि, रुको ! सखि बैठो ! सखि, क्रीडा करो ! जाती कहाँ हो सखि ? )  
कुमा पा ४ १०

( २१ ) मम्मुखीकरण अर्थ में और सखी के आमन्त्रण अर्थ में 'दे' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए। सामान्य संबोधन में जैसे :—दे पसिअ ताव सुदरि, सख्यामन्त्रण में जैसे :—दे पसिअ किमसि रुट्ठा ? ( हे सखि, प्रसन्न होओ, रुठी किस लिए हो ? )

( २२ ) दान, प्रश्न और निवारण अर्थों में 'हुं' अव्यय का प्रयोग किया जाता है। दान में जैसे :—हुं, गिण्हसु कणय भायणय ( मैंने दे डाला, अब तुम यह कनक पात्र ले लो ? ), प्रश्न में जैसे :—हु, तुह पिओ न आओ ? ( मैं पूछती हूँ अभी तक तेरा प्रियतम नहीं आया ? ), निवारण में जैसे :—हुं, कि तेणज्ज ( अरे हटाओ भी, उससे अब हमारा क्या मतलब ? )

( २३ ) निश्चय, वितर्क, सभावना और विस्मय अर्थों में हु और खु का प्रयोग किया जाता है । निश्चय में जैसे :—**नो** हु अन्नरओ ( यह निश्चित है कि वह दूसरी स्त्री में रम गया है । ), तुमय खु माणइत्ता ( यह निश्चित है कि तुम मानवनी हो । ), वितर्क और सभावना अर्थों में जैसे :—**तस्त हु जुग्गा मि सा खु न त** ( मैं ऐसा अदाज करना हूँ और यही सभव भी है कि यह वमरी स्त्री उसके योग्य है और तुम उसके—प्रियतम के योग्य नहीं हो । ) **पिस्मय अर्थ में जैसे :—**एसो खु तुष्क रमणो ( आश्चर्य है कि यह तुम्हारा रमण है । ) कुमा पा ४ १०

( २४ ) गर्हा, आक्षेप, विस्मय और सूचन अर्थों में ऊ का प्रयोग किया जाता है । गर्हा में जैसे :—**तुष्क ऊ रमणो** ( तुम्हारा निन्दिन रमण ), आक्षेप में जैसे :—**ऊ कि मए भणिअ** ( अरे मैंने क्या कह डाला ? ), **पिस्मय अर्थ में जैसे :—ऊ अच्छरा मह सही** ( अहो, मेरी सखी आसरा है ), **सूचन अर्थ में जैसे :—ऊ इअ हसेइ लोओ** ( तुम्हारे प्रियतम को दोष दे देकर सखियाँ हँसती हैं । ) कुमा पा ४ १३

( २५ ) कुत्सा अर्थ में 'थू' अव्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे —**थू र निकिड कलहसील** ( अरे अधम, भगडाडू, तुझे थू है ! )

( २६ ) 'रे' आर 'अरे' क्रमशः संभाषण और रतिकलह अर्थों में प्रयुक्त होते हैं । संभाषण अर्थ में जैसे :—**रे हिअय**

मडह-सरिआ, रतिकलह मे अरे जैसे — अरे मए सम मा करेसु उवहास ।

२७) क्षेप, सभाषण और रतिकलह अर्थों मे 'हरे' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । क्षेप मे जैसे — हरे णिलज्ज, संभाषण में जैसे — हरे पुरिसा, रतिकलह मे जैसे — हरे वहुवल्लह ।

(२८) सूचना और पश्चात्ताप अर्थों मे 'ओ' अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । सूचना अर्थ मे जैसे — ओ सटो सि ( मैं यह सूचित कर देना चाहता हूँ कि तुम शठ हो । ) पश्चात्ताप मे जैसे — ओ किमसि दिट्ठो ? ( क्या तुम देख लिए गये ? ) कुमा पा ४ १३

(२९) सूचना, दुःख, सभाषण, अपराध, विस्मय, आनन्द, आदर, भय, खेद, विषाद, और पश्चात्ताप अर्थों मे 'अव्वो' इस अव्यय का प्रयोग करना चाहिए ।

सूचना में जैसे — अव्वो नओ तुह पियो ( यह सूचित करता हूँ कि तुम्हारा प्रियतम नत हो गया । ), दुःख मे जैसे — अव्वो तम्मसि ( खेद है कि तुम उदास हो । ), सभाषण मे जैसे — कि एसो अव्वो अन्नासत्तो ( क्या यह दूसरी मे आसक्त है ? ), अपराध एवं विस्मय में जैसे — अव्वो तुज्जेरिसो माणो ( प्रणययुक्त प्रणयी मे तुम्हारा ऐसा मान ? ) इससे अपराध और आश्चर्य दोनों प्रकट होते है । आनन्द मे जैसे — अव्वो पिअस्स समओ ( यह आनन्द की बात है कि प्रियतम के आने का यह समय है । ),

आदर मे जैसे —अव्वो सो एइ ( मेरा प्रियतम यह आ रहा है ? ), भय मे जैसे —रूसणो अव्वो ( भय है कि वह थोडे अपराध पर भी रुठ जानेवाला है । ), खेद और विषाद मे जैसे —अव्वो कट्ट ( मैं खिन्न और विषण्ण हूँ । ), पाश्चात्ताप मे जैसे —अव्वो कि एसो सहि मए वरिओ ( सखि, मैं तो पछता रही हूँ कि मैंने इसे बरा क्यों ? )

( ३० सभावन अर्थ मे 'अइ' अव्यय का प्रयोग करना चाहिये । जैसे —अइ एसि रइ-घराओ ( मेरी ऐसी सभावना है कि तुम रतिगृह से आ रही हो । )

( ३१ ) निश्चय, विकल्प, अनुकम्प्य और सभावन अर्थों मे 'उणे' अव्यय का प्रयोग करना चाहिये । निश्चय मे जैसे —वणे डेमि ( निश्चय ही देता हूँ ), विकल्प मे जैसे —होइ वणे न होइ ( हो या न हो ), अनुकम्प्य मे जैसे —दासो वणे न मुच्चइ ( अनुकम्पा योग्य दास छोडा नहीं जाता ), संभावन मे जैसे —नत्थि वणे ज न देइ विहिपरिणामो ।

( ३२ ) विमर्श अर्थ मे ( कुछ के मत से सस्कृत मान्ये अर्थ मे ) मणे अव्यय का प्रयोग किया जाता है । जैसे —मणे सूरु ( मेरी ऐसी मान्यता है कि यह सूर्य है । )

( ३३ ) आश्चर्य अर्थ मे अम्मो अव्यय का प्रयोग करना चाहिए । जैसे —स अम्मो पत्तो खु अप्पणो ( वह प्रियतम अपने आप प्राप्त हो गया । आश्चर्य है ? )

( ३४ ) स्वयम् के अर्थ मे अप्पणो का प्रयोग विकल्प से

करना चाहिए। देखिए ऊपर के ३३ वें नियम का उदाहरण। पक्ष में 'सय' होता है।

( ३५ ) प्रत्येकम् के अर्थ में पाडिक्क, पाडिएक्क और पक्ष में पत्तेअ का प्रयोग करना चाहिए। जैसे—पाडिक्क ऱ्हआओ, वाण ऱयसीओ पाडिएक्क च। पत्तेअ भित्ताइ ( प्रत्येक नयिताए, उनकी प्रत्येक सखियाँ और प्रत्येक मित्र )

( ३६ ) पश्य के अर्थ में 'उअ' का प्रयोग विकल्प से किया जाता है। जैसे —उअ एसो एइ ( देखो, यइ आ रहा है। )

( ३७ ) इतरथा के अर्थ में इहरा का प्रयोग विकल्प से किया जाता है। जैसे —कहमिहरा पुलइआ सि वट्टुम्मि ( अन्यथा इसे देखकर तुम पुलकित क्यों हो ? )

( ३८ ) भगिति और साम्प्रतम् के अर्थ में एकसरिअ का प्रयोग होता है। जैसे —एकसरिअ भगिति साम्प्रतम् वा।

( ३९ ) मुधा के अर्थ में मोरउल्ला का प्रयोग किया जाता है। जैसे —मा तम्म मोरउल्ला ? ( व्यर्थ उदास मत होओ ? )

( ४० ) अर्द्ध और ईषन् में 'दर' इस अव्यय का प्रयोग किया जाता है। जैसे —दरविअसिअ ( अर्ध विकसित अथवा ईषद्विकसित )

( ४१ ) प्रश्न अर्थ में किणो अव्यय का प्रयोग करना चाहिए। जैसे —किणो धुवसि ? ( काँपते हो क्या ? )

( ४२ ) पादपूति के लिए इ, जे, र का प्रयोग करना चाहिए। जैसे —वारविलया इ एआ, गिम्ह सुह माणिउ पयट्टा जे, पिअन्ति पिक्क दक्ख रस।

**विशेष**—अहो, हहो, हेहो, हा, नाम, अहह, ही, सि, अयि, अहाह, अरि, रि, हो, इत्यादि अव्ययो का प्रयोग प्राकृत मे सस्कृत के समान करना चाहिए ।

( ४३ ) अपि के अर्थ मे पि और वि का प्रयोग करना चाहिए जैसे —इअ जपि त्त पि लविराओ ।



## षष्ठ अध्याय

### [ तिङन्त विचार ]

( १ ) प्राकृत मे क्यङ्, क्यष् आदि प्रत्ययों के विधान के कोई विशेष नियम नहीं है। केवल हेमचन्द्र के व्याकरण मे एक सूत्र ( ३१३८ ) है, जिससे य के लुक् के विषय मे ज्ञात होता है। जैसे — गरुआइ, गरुआअइ, दमदमाइ, दमदमाअइ, लोहिआइ, लोहिआअइ।

( २ ) प्राकृत मे गणभेद ( धातुओ के वर्गीकरण ) की व्यवस्था नहीं की जाती है।

( ३ ) प्राकृत मे तिप् आदि तिङ् कहलानेवाले प्रत्ययो के वर्तमान काल मे वक्ष्यमाण रूप होते हैं। तथा अदन्त धातुओं को छोडकर शेष धातुओं में 'आत्मनेपदी' और 'परस्मैपदी' का भेद नहीं माना जाता<sup>२</sup>।

### वर्तमान काल के प्रत्यय

एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु० इ	न्ति, न्ते, इरे
मध्यम पु० सि	इत्था, ह
उत्तम पु० मि	मो, मु, मा

१ पाणिनि ( ३४३८ ) के अनुसार तिप्, तस्, फि, सिप्, थस्, थ, मिप्, वस्, मस्, त, आताम्, फ, थास्, आथाम्, ध्वम्, इ, वहिङ्, महिङ्, इनमें ति स ङ् तक तिङ् कहे जाते हैं।

२ शौरसेनी में सभी धातु परस्मैपदी होते है।



( ४ ) अकारान्त आत्मनेपदी धातुओं के प्रथम मध्यम पुरुषों के एकवचन के स्थान में क्रमशः 'ए' और 'से' आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे —तुवरए ( त्वरते ), तुवरसे ( त्वरसे )

( ५ ) अदन्त धातु से 'मि' के पर में रहने पर पूर्व के 'अ' का आत्व विकल्प से होता है। जैसे —हसामि, हसमि इत्यादि।

( ६ ) अकारान्त धातु से 'मो' 'मु' और 'म' पर में रहे तो पूर्व के अकार के स्थान में 'इ' और 'आ' होते हैं। कहीं कहीं ए भी होता है। जैसे —हसिमो, हसामो, हसेमो, हसिमु, हसेमु इत्यादि।

वर्तमान में अकारान्त भण धातु के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	भणइ, भणए	भणन्ति, भणन्ते भणिरे
मध्यम पु०	भणसि, भणसे	भणह, भणित्था
उत्तम पु०	भणामि, भणमि	भणामो, भणिमो, भणेमो इत्यादि

**विशेष**—यो ही हस और पठ आदि सभी अकारान्त धातुओं के रूपों को जानना चाहिए। केवल अस धातु के रूप विशेष नियमानुसार सिद्ध होते हैं।

वर्तमान में अस धातु के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	अच्छइ, अत्थि	अच्छति, अत्थि
मध्यम पु०	सि, अच्छसि, अत्थि	अत्थि, अच्छित्था, अच्छह
उत्तम पु०	म्हि, अत्थि, अच्छामि	म्हो, म्हा, इत्यादि

( ७ ) स्वरान्त धातु से भूत काल में सभी पुरुषों और वचनों में विहित प्रत्यय के स्थान में 'ही' 'सि' और 'हीअ' आदेश होते हैं। जैसे —कासी, काही, काहीअ, ठासी, ठाही, ठाहीअ ( अकार्षीत्, अकरोत्, चकार, तथा अस्थात्, अतिष्ठत्, तस्थौ )

**विशेष**—प्राकृतप्रकाश में ही और सी का विधान नहीं देखा जाता। उसके अनुसार एकाच धातु से केवल 'हीअ' आदेश होता है। देखिए—वर० ७ २४

( ८ ) व्यञ्जनान्त धातु से भूतकाल में विहित सभी प्रत्ययों के स्थान में 'इअ' आदेश होता है। जैसे —गणहीअ ( अग्रहीत्, अगृह्णात्, जग्राह )

**विशेष**—( क ) केवल अस धातु के साथ भूतार्थक कुल पुरुष और वचन के प्रत्ययों के स्थान में 'आसि' और 'अहेसि' आदेश होते हैं। जैसे —सो, तुमे अह वा आसि। एव अहेसि। देखिए—तेनास्तेरास्यहासी। हेम० ३ ६४

( ख ) प्राकृतप्रकाश के अनुसार, अस धातु का, केवल भूतार्थक एकवचन के साथ एकमात्र 'आसि' आदेश होता है। देखिए वर ७ २५

भविष्यत् काल में तिवादि तिङ् प्रत्ययों के स्वरूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	हिइ	हिन्ति, इहन्ते, हिरे
मध्यम पु०	हिसि	हित्थ, हिरु
उत्तम पु०	{ हिमि, हामि, स्सामि, स्सम्	हिस्सा, हिहा

१ देखिए—सी-ही-हीअ भूतार्थस्य। हेम० ३ १६२

भविष्यन् काल मे भू धातु के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पु०	होहिइ <sup>१</sup>	होहिन्ति, होहिन्ते, होहिरे
मध्यम पु०	होहिसि <sup>२</sup>	होहित्थ, होहिह
उत्तम पु०	होस्सामि, होहामि	होहामो, होस्सामो
	होस्सामो, होहामो हो	इत्यादि
	स्सामु, होहामु, होस्साम, होहाम, होहिमु, होहिम <sup>३</sup>	

भविष्यन् काल मे कृ धातु के रूप —

प्रथम पु०	काहिइ	काहिति
मध्यम पु०	काहिसि	काहित्था
उत्तम पु०	काह, काहिमि	काइमो

भविष्यन् काल मे हस धातु के रूप —

प्रथम पु०	हसिहि	हसिहिनति
मध्यम पु०	हसिहिसि	हसिहित्था
उत्तम पु०	हसिस्स	हसिस्सामो, हसिहामो

१ प्राकृतप्रकाश के अनुसार प्रथम पुरुष के एकवचन में होहिइ, हवहिइ, होञ्ज, होञ्जा होञ्जहिइ, होञ्जाहिइ, होसइ होही और प्रथम पुरुष के बहुवचन में होहिन्ति, हुविहिनति रूप होते हैं ।

२ प्राकृतप्रकाश के अनुसार मध्यम पुरुष के एकवचन में— होहिहिसि, हुविहिहि, हुविहिसि, होहिहि तथा बहुवचन में होहित्था, होहिहु, हुवित्था, हुविहिह रूप होते हैं ।

३ प्राकृतप्रकाश के अनुसार उत्तम पुरुष के एकवचन में होस्सामि, होस्सामो, होहामि, होहिमि, होस्स, होहिमो और बहुवचन में होहिस्सा, होहित्था, होहिओ, होहिमु, होहामो, होहिम, होस्सामो, होस्सामु, होस्साम रूप होते हैं ।

इसी प्रकार से भण, पठ आदि के रूप भी चलते हैं—

( ६ ) कृ, दा, स + गम, रुद, विद, दृश, वच, भिद बुध, श्रु, गम, मुच और छिद धातु भविष्यत् काल में, उत्तम पुरुष के एकवचन में, नीचे लिखे विशिष्ट रूपों को प्राप्त करते हैं। इतर ( प्रथम और मध्यम ) पुरुषों में श्रु वातु के रूपों के समान रूप प्राप्त करते हैं।

धातुओं के नाम

उत्तम पुरुष के एकवचन के रूप

कृ	काह, काहिमि
दा	दाह, दाहिमि
स + गम	सगच्छ
रुद	रोच्छ
विद	वेच्छ
दृश	देच्छ
वच	वेच्छ
भिद	भेच्छ
बुध	भोच्छ
श्रु	सोच्छ, सोच्छिस्स, सोच्छिमि इत्यादि
गम	गच्छ
मुच	मोच्छ
छिद	छेच्छ

भविष्यत् काल के प्रथम और मध्यम पुरुषों में श्रु वातु के रूप —

एकवचन

बहुवचन

प्रथम पु०

सोच्छिइ, सोच्छिहिइ

सोच्छन्ति, सोच्छहिन्ति

	एकवचन	बहुवचन
मध्यम पु०	सोच्छिसि, सोच्छिहिसि	सोच्छित्था इत्यादि
उत्तम पु०	सोच्छ	सोच्छिमो, सोच्छिहिमो इत्यादि

## विध्याद्यर्थक तिङ् —

प्रथम पु०	ञ	न्तु
मध्यम पु०	सु, हि	ह
उत्तम पु०	सु	मो

## हस धातु के विध्याद्यर्थ में रूप —

प्रथम पु०	हसउ	हसन्तु, हसेन्तु
मध्यम पु०	{ हससु हसहि, हस, हसेज्जसु, हसेज्जहि, हसेज्जे	हसह
उत्तम पु०	हसमु	हसामो

इसी प्रकार पठ आदि धातुओं के रूप जाने जा सकते हैं। किन्हीं आचार्यों के मत से विध्यादि में वर्तमान के तुल्य ही रूप होते हैं। जैसे —जअइ' इत्यादि।

( १० ) वर्तमान, भविष्यत् और विध्यादि में उत्पन्न प्रत्यय के स्थान में ङ्ज और ज्जा ये दोनो आदेश विकल्प से होते हैं। पक्ष में यथाप्राप्त होते हैं। जैसे —हसेज्ज, हसेज्जा ( हसति, हसिष्यति, हसतु, हसेत् इत्यादि )

विशेष—( क ) हेमचन्द्र के मत से स्वरान्त धातुओं के विषय में ही उक्त नियम लागू होता है।

( ख ) शौरसेनी में उक्त नियम लागू नहीं होता।

१ शौरसेनी में जि धातु के विध्यादि में 'जेदु' इत्यादि रूप होते हैं।

( ११ ) धातु से वर्तमान, भविष्यत् और विध्यादि अर्थवाले तिङ् यदि पर हो तो धातु और प्रत्यय के मध्य में भी उज और उजा विकल्प से होते हैं। होज्जइ, होज्जाइ ( भवति भविष्यति, भवतु, भूयात् इत्यादि )

( १२ ) शतृ और शानच् इन दोनों में एक-एक के स्थान में न्त और माण ये दो आदेश होते हैं। जैसे — पढन्तो, पढमाणो, हसन्तो, हसमाणो ( पठन् , हसन् )

( १३ ) स्त्रीलिङ्ग में वर्तमान शतृ और शानच् के स्थान में ई, न्ती और माणा आदेश होते हैं। जैसे — उपहसमाणि सरोरुह विहसन्ति हसई व कुमुइणि ( उपहसन्ती, विहसन्तीम्, हसन्तीमिव ) कुमा पा ५ १०६

( १४ ) वर्तमान, विध्यादि और शतृ प्रत्ययों के पर में रहने पर अकार के स्थान में एकार विकल्प से होता है। जैसे — हसेइ, हसइ, हसेउ, हसउ, हसेतो, हसतो ( हसति, हसेत्, हसन् ) कहीं पर नहीं भी होता है। जैसे — जअइ। कहीं आत्व भी होता है। जैसे — सुणाउ।

**विशेष**—शौरसेनी में धातु और तिङ् के मध्य में अधिकतर ए और आ होते हैं।

( १५ ) भाव और कर्म में विहित यक् के स्थान में 'इअ' और 'इज्ज' आदेश होते हैं। जैसे — हसिअइ, हसिज्जइ ( हस्यते )

**विशेष**—दृश और वच के भाव और कर्म में क्रमशः दीश और वुच्च रूप होते हैं। दीसइ ( दृश्यते ), वुच्चइ ( उच्यते )

( १६ ) क्त्वा, तुम, तव्य और भविष्यत् काल में विहित प्रत्यय के पर में रहने पर धातु के अन्त्य अ के स्थान में 'ए'

और 'इ' होते हैं। जैसे —हसेऊण, हसीऊण (हसित्वा), हसेउ, हसिउ (हसितुम्), हसेअव्व, हसिअव्व (हसितव्वम्), हसेहिइ, हसिहिइ (हसिष्यति)

**विशेष**—उक्त नियम अदन्त वातुओ को छोड़ अन्य वातुओ में लागू नहीं होता। जैसे —काऊण (कृत्वा)

(१७) क्त प्रत्यय के पर में रहने पर वातु के अन्त्य 'अ' का 'इ' होता है। जैसे —हसिअ, पठिअ (हसितम्, पठितम्)

(१८) ण्यन्त वातु के णि के स्थान में अत्, एत्, आव् और आवे ये चार आदेश होते हैं।

(१९) भाव और कर्म अर्थ में विहित क्त प्रत्यय के पर रहने पर णि का लुक और (पर्यायेण लुगभाव होने पर) 'अवि' आदेश होते हैं। णिच् के पर में रहने पर भ्रम वातु के स्थान में विकल्प से 'भमाड' आदेश होता है। जैसे —कारिअ, कराविअ (कारितम्), सोसिअ, सोसविअ (शोषितम्), तोसिअ, तोसविअ (तोषितम्), कारीअइ, कराविअइ, कारिज्जइ, कराविज्जइ (कार्यते), भमाडइ, भमाडेइ, भामेइ, भमावइ (भ्रामयति)

### धात्वादेशसंबंधी नियम—

(२०) व्यञ्जनान्त वातु के अन्त्य व्यञ्जन के आगे अ आकार मिलता है। जैसे —हसइ (हसति) इत्यादि।

(२१) अकारान्त वातुओ को छोड़कर अन्य स्वरान्त वातु के अन्त में अकार का आगम विकल्प से होता है। जैसे —पाइ, पाअइ इत्यादि।

(२२) चि, जि, हु, श्रु, सु, लू, पू और धू वातुओं के

अन्त मे णकार ना आगम होता है और इनके दीर्घ स्वर का ह्रस्व होता है। जैसे —चिणइ, जिणइ, हुणइ, लुणइ इत्यादि।

( २३ ) भाव और कर्म अर्थ मे वर्तमान च्यादि धातुओ के अन्त मे द्विरुक्त व ( व्व ) का आगम विकल्प से होता है। जैसे —चिव्वइ, चिणिज्जइ ( चीयते ) इत्यादि।

( २४ ) भाव और कर्म अर्थ मे वर्तमान चित्र, हन और रान धातुओ के अन्त मे द्विरुक्त म ( म्म ) का आगम विकल्प से होता है एव यक का लोप होता है। हन वातु के विषय मे कर्ता अर्थ मे भी द्विरुक्त म ( म्म ) होता है। जैसे —चिम्मइ हम्मइ ( चीयते, हन्यते )

विशेष—शौरसेनी मे यह नियम प्रवृत्त नहीं होता है।

( २५ ) भाव और कर्म अर्थ मे वर्तमान दुह, लिह, वह और रुध धातुओ के अन्त्य मे द्विरुक्त म ( म्म अथवा किसी किसी के मत से व्भ ) विकल्प से होते हैं, यक का लोप भी होता है। जैसे —दुव्वइ, दुहिज्जइ ( दुह्यते ) इत्यादि।

( २६ ) भाव और कर्म मे वर्तमान गमादि धातुओ के अन्त्य वर्ण का द्वित्व विकल्प से होता और यक का लोप भी होता है। जैसे —गम्मइ, गमिज्जइ, हस्सइ, हसिज्जइ ( गम्यते, हस्यते )

विशेष—नीचे लिखे धातु नीचे लिखे अनुसार विशेष नियमों का अनुसरण करते हैं —

सं० धातु	भावकर्म मे प्रा०	भावकर्ममें सं०
दह	डह्यइ, डहिज्जइ	दह्यते
वध	वह्यइ, वधिज्जइ	वध्यते
स + रुध	सरुब्भइ, सरुधिज्जइ	सरुध्यते
अनु + रुध	अण्णरुब्भइ, अण्णरुधिज्जइ	अनुरुध्यते



उ + रुध	उवरुह्यइ, उवरुधिज्जइ	उपरुध्यते
हृ	हीरइ, हरिज्जइ	ह्रियते
कृ	कीरइ, करिज्जइ	क्रियते
तृ	तीरइ, तरिज्जइ	तीर्यते
ज	जीरइ, जरिज्जइ	जीर्यते
अर्ज	विढप्पइ, विढविज्जइ, अजिज्जइ	अर्ज्यते
ज्ञा	णच्चड, णज्जइ, जाणिज्जइ, णाइज्जइ	ज्ञायते
वि+आ+हृ	वाहिप्पइ, वाहरिज्जइ	व्याह्रियते
आ + रभ	आढप्पइ, आढवीअइ	आरभ्यते
स्निह	सिप्पइ	स्निह्यते
सिच	सिप्पइ	सिच्यते
ग्रह	घेप्पइ, गण्हिज्जइ	ग्रह्यते
स्पृश	स्त्रिप्पइ	स्पृश्यते

( २७ ) धातु के अन्त्य उवर्ण के स्थान मे अव आदेश होता है । जैसे —हुँ वातु का 'एहव' इत्यादि ।

( २८ ) धातु के अन्त्य ऋवर्ण के स्थान मे 'अर' आदेश होता है । जैसे —कृ का कर इत्यादि ।

विशेष—वृषादि के ऋकार का 'अरि' आदेश होता है । जैसे —वृष का वरिस कृष का करिस इत्यादि ।

( २९ ) धातु के इवर्ण और उवर्ण का गुण होता है । जैसे —नेइ ( नयति ), मोत्तुण ( मुक्त्वा )

( ३० ) रुष आदि धातुओं के स्वर का दीर्घ होता है । जैसे —रूसइ, पूसइ, सीसइ, तूसइ, दूसइ, ( रुष्यति, पुष्णाति शिनिष्टि, तुष्यति, दुष्यति )

( ३१ ) धातुओ मे स्वरो के स्थान मे अन्य स्वर बाहुल्येन होते है । जैसे — ह्वइ,<sup>१</sup> हिवइ ( भवति ), चिणइ,<sup>२</sup> चुणइ ( चिनोति ), सहहण, सहहाण ( श्रद्धधानम् ), धावइ, धुवइ ( धावति ), रुवइ, रोवइ ( रोदिति )

विशेष—बाहुल्येन कहने से—देइ, लेइ, विहेइ नासइ आदि प्रयोगो मे नित्य ही धातु के एकस्वर के स्थान मे दूसरा स्वर हुआ ।

( ३२ ) कुछ सस्कृत धातुओं के प्राकृत रूपान्तर नीचे लिखे अनुसार होते हैं —

सस्कृत धातु	प्राकृत रूपान्तर
कथ	वज्जर, पज्जर, उप्पाल, पिसुण, सघ, बोल्ल, चव, जम्प, सीस, साह तथा दु ख अर्थ मे णिच्चर ।
जुगुप्स	जुण, दुगुच्छ, दुगुच्छ
बुभुक्ष	णीख पत्त मे बुहुक्ख
ध्या	भा
गै	गा
ज्ञा	जाण, मुण
उद् + ध्मा	धुमा
श्रद् + धा	दह ( सहहइ )
पा ( पीने मे )	पिज्ज, डल्ल, पट्ट, घोट्ट
उद् + वा	ओरुम्वा, वसुआ
नि + द्रा	ओहीर, उल्ल

१ देखिए—भुवेहोहुवहवा । हेम ४ ६०

२ देखिए—इसी पुस्तक का ६ २२

स + भावि	आसघ
उद् + नाभि	उत्थघ ( उत्थघ ), उल्लाल, गुलुगुच्छ, उपेल (किसी किसी के मत से उस्याव भी)
प्र + स्थापि	पट्टव, पेण्डव, पट्टाव
वि + ज्ञपि	बोक्क, आवुक्क ( हेमचन्द्र के अनुसार अनुक्क ), विण्णव
अपि	अल्लिव, चच्चुप्प, पणाम, अप्प,
यापि	जव, जाव
प्लावि	उम्बाल, पव्वाल, पाव
विकोशि(नामधातुण्यन्त)	पक्करोड ( कसी ० के मत से परकोड )
रोमन्थि	उग्गाल ( हेम० ओग्गाल ) वग्गोल, रोमथ
कामि	णिट्टव, काम
प्र + काशि	पुव्व, पआ ( या ) स
कम्पि	विच्छोल, कम्प
आ + रोहि ( पि )	वल, रोव
दोलि	रड्ढोल, दोल ( मतान्तर से ढोल भी )
रञ्जि	राव, रञ्ज
घट + णिच्	परिवाड, घड
वेष्टि	परिआल, वेढ
क्री	किण
वि + क्री	क्के, क्किण, ( विक्केइ, विक्कणइ )
भी	भा, बीह
आ + ली	अल्ली ( अल्लियइ, अल्लीणो )
नि + ली	णिलीअ, णिलुक्क, णिरिग्घ, लुक्क, लिक्क, लिहक्क, निलिज्ज
वि + ली	विरा, विलिज्ज

रु	रुञ्ज, रुण्ट, रव
श्रु	हण, सुण
धु	धूव, धुण
भू	हो, हुव, हव, हु, <sup>१</sup> णिव्वड, <sup>२</sup> हू, <sup>३</sup> हुप्प <sup>४</sup>
कृ	कुण, कर णिआर, <sup>५</sup> णिट्ठुह <sup>६</sup> सदाण, <sup>७</sup> वावम्फ, <sup>८</sup> णिच्चोल या णिव्वोल, <sup>९</sup> पयल्ल, <sup>१०</sup> पइल्ल, णीलुच्छ <sup>११</sup> कम्म, <sup>१२</sup> गुलल

१ विद्वर्जित प्रत्यय के आने पर भू के स्थान में हु आदेश विकल्प से होता है। हेम ४ ६१

२ पृथक् होना और स्पष्ट होना अर्थ में णिव्वड आदेश होता है। हेम ४ ६२

३ क्त प्रत्यय के पर में रहने पर हू आदेश होता है। हेम ४ ६४

४ प्रभु होना अर्थ में प्र उपसर्ग पूर्व में रहने पर भू के स्थान में हुप्प विकल्प से होता है। हेम ४ ६३

५ कारोक्षित अर्थ में। देखो—‘कारोक्षिते णिआर ।’ हेम ४ ६६

६ निष्टम्भ और अवष्टम्भ अर्थों में क्रमश णिट्ठुह और सदाण आदेश होते हैं। देखो—‘निष्टम्भावष्टम्भे’ हेम ४ ६७

७ श्रम अर्थ में। देखो—‘श्रमे वावम्फ ।’ हेम ४ ६८

८ क्रोध से ओठ मलिन करने अर्थ में। देखो—‘म-युनौष्ठमालिन्ये’ हेम ४ ६९

९ शिथिल होना या लम्बा पडना अर्थ में। देखो—‘शैथिल्यलम्बने’ हेम ४ ७०

१० निष्पात और आच्छोटन में। हेम ४ ७१

११ क्षौरकर्म में। हेम ४ ७२

१२ चाटुकरण में। हेम ४ ७३

स्मृ	कर, कूर ( हेमचन्द्र के मत से क्रर और शूर ), भर, भल, लढ, विम्हर, सुमर, पयर, पम्हुह, सर
वि + स्मृ	पम्हुस, विम्हर, वीसर
वि + आ + हृ	कोक्क, पोक्क, वाहर
सुच	छड्डु, अवहेड, मेल्ल, ( हेमचन्द्र के मत से उमिक्क भी ) रे अव, णिल्लुक्क, धसाड, णिन्वल <sup>१</sup>
चञ्च	वेह्व, वेलव, जूख, उमच्छ
रच	रणह ( हेम० के मत से उगह ) अवह, विडविडु, उवहत्य <sup>२</sup> सारव, समार और केलाय
मिच	सिञ्च सिम्प । पत्त मे सेअ
प्रच्छ	पुच्छ
गर्ज	बुक्क, ढिक्क <sup>३</sup>
राज	रगघ, छह्य, सह, रीर, रेह, राय
प्र + स्मृ	पयल्ल, उवेल्ल महमह <sup>४</sup>
नि + स्मृ	नीहर ( हेम० के अनुसार णीहर ), नील, धाड, वरहाड । पक्ष मे नीसर
जागृ	जगग । पक्ष मे जागर
वि + आ + पृ	आजड्डु । पक्ष मे वावर

१ दु खमोचन अर्थ में । देखो—‘दु खे णिन्वल ।’ हेम० ४ ९२

२ उवहत्य से केलाय तक जितने आदेश हैं सम् और आह् पूर्वक रच के स्थान में विकल्प से होते हैं । देखो हेम० ४ ९५

३ वृषभ के गर्जन अर्थ में । देखो—‘वृषे ढिक्क ।’ हेम० ४ ९९

४ गन्ध प्रसार में ।

स + वृ०	साहर, साहट्ट । पक्ष मे सवर
आ + ह	सन्नाम । पक्ष मे आदर
प्र + ह	सार । पक्ष मे पहर
अव + तृ	ओह, ओरस । पक्ष मे ओअर
शक	चय, तर, तीर, पार । पक्ष मे सक
त्यज	चय
वृ	तर
पारि ( पृ + णिच् )	पार
फक्क	थक्क । किसी के मत से छक्क
शलाघ	सलह
खच	वेअड । पक्ष मे खच
पच	सोल्ल, पडल अथवा पडल्ल । पक्ष मे पअ
मरुज	आउड्ड, णिउड्ड, वुड्ड, खुण्ण
पुञ्ज	आरोल, वमाल । पक्ष मे पुज
लज्ज	जीह । पक्ष मे लज्ज
उद् + विज	उठिवव
तिज	ओसुक्क
मृज	उगुस, लुळ्ळ, पुळ्ळ, पुस, फुस, पुस,
	लुह, हुल, रोसाण
भञ्ज	वेमय, मुसमूर, मूर, सूर, सूड, विर, पवि-
	रञ्ज, करञ्ज नीरञ्ज
व्रज	वच्च
अनु + व्रज	पडिअग्ग, अग्गुवच्च
अर्ज	विठव, अज्ज
युज	जुञ्ज, जुज्ज, जुण्ण
मुज	भुञ्ज, जिम, जेम कम्म, अण्ह, समाण, चड्ड
उप + भुज	कम्मव

घट	गट । पक्ष मे घट
स + घट	मगल । पक्ष मे सघट
स्फुट	फुट, फुड, मुर <sup>१</sup>
मण्ड	चिञ्च, चिञ्चिअ, चिञ्चिल्ल, रीड, टिविडिक्क
तुड	तोड, तुट, खुट, खुड, उखुड उल्लुक, णिलुक, लुक, उल्लूर
घूर्ण	घुल, घोल, घुल्ल, पहल्ल
नृत	नच्च
क्वथ	अट्ट, कट
ग्रन्थ	गण्ठ
मन्थ	विरोल, घुमल
ह्लाद और ह्लाद	अवअन्छ
नि + सद	गुमज्ज
छिद	दुहाव, णिन्छल्ल, णिञ्भोड, णिञ्वर, णिञ्छर, छर छिन्द
आ + छिद	ओअन्, उहाल
विद	विज्ज
मृद	मल, मड, परिहट्ट, खड्ड, चड्ड, मड्ड, पन्नाड अथवा परणाड
स्पन्द	चुनुचुलु, फन्द
निर् + पद	निञ्चल, निप्पज्ज
वि, स + वद	विअट्ट, विलोट्ट, फस और पक्ष मे विसवय
शद	भड, पक्खोड
आ + ऋन्द	णीहर । पक्ष मे अक्कन्द
खिद	जूर, विसूर । पक्ष मे खिज्ज

रुध	उत्थङ्ग या उत्तङ्ग । पक्ष मे रुन्ध
नि + सिध	हक्क । पक्ष मे निसेह
ऋध	जूर । पक्ष मे कुञ्भ
जन	जा, जम्म
तन	तड, तडु, तडुव, विरल्ल और तण
तृप्त	थिप्प
उप + स्पृ	अल्लिअ । पक्ष मे उवसप्प
स + तप	भक्ख । पक्ष मे सतप्प
वि + आप	ओअग्ग । पक्ष मे वाव
स + आप	समाण । पक्ष मे समाव
क्षिप	गलत्थ, अडुक्क, सोल्ल पेल्ल, णोल्ल, छुह, हुल, परी, धत्त । पक्ष मे सिव
उद् + क्षिप	गुल्लगुळ्ळ, उत्थघ, अल्लत्थ, उब्भुत्त, उस्सिक्क, हक्खुव । पक्ष मे उक्खिव
आ + क्षिप	णीरव । पक्ष मे अक्खिव
स्वप	कमवस, लिस, लोट्ट । पक्ष मे सुञ्ज
वेप	आयम्ब, आयम्भ । पक्ष मे वेव
वि + लप	भक्ख, वडवड । पक्ष मे विलव
लिप	लिम्प
गुप	विर, णड । पक्ष मे गुप्प
कृप	अवहाव <sup>१</sup>
प्र + दीप	तेअव, सन्दुम, सन्धुक्क, अब्भुत्त और पक्ष मे पलीव
लुभ	सभाव । पक्ष मे लुब्भ
क्षुभ	खडर, पड्डुह । पक्ष मे खुब्भ



आ + रभ	आरभ, आढव । पक्ष में आरभ
उप, आ + लभ	भख, पचार, वेत्तव । पक्ष मे उवात्तम्भ
जृम्भ	जम्भा <sup>१</sup>
नम	णिसुढ <sup>१</sup> । पक्ष मे णव
वि + श्रम	णिव्वा । पक्ष मे वीसम
आ + क्रम	ओहाव, उत्थार, छुन्द । पक्ष मे अक्कम
भ्रम	तिरिटिल्ल, दुण्डुल्ल, ढण्डल्ल, चक्कम्म, भम्मड, भमड, भमाड, तलअण्ट, भण्ट, भम्प, भुम, गुम, फुम, फुस, दुम, दुस, परी, पर, भम अई, अइच्छ, अणुवज्ज, अवज्जस, उक्कुस, अक्कुस, पच्चडु, पच्छन्द, णिम्मह, णी, णीण, णीलुक्क, पदअ रभ, परिअल्ल, वोत्त, परिअत्त, णिरिणास, णिवह, अवसेह, अवहर, गच्छ, अहिपच्चुअ, <sup>३</sup> अब्भिड, <sup>५</sup> सगच्छ, उम्मत्थ, <sup>४</sup> अब्भागच्छ, पलोट्ट, <sup>६</sup> पच्चागच्छ
गम	
शम	पडिसा, परिसाम । पक्ष मे सम
रम	सखुडु, खेडु, उब्भाव, किलिकिञ्च, कोट्टुम, मोट्टाय, णीसर, वेल्ल और पक्ष मे रम

१ वि पूर्व में रहने पर उक्त आदेश नहीं होते हैं । देखो—‘अवेर्जृम्भो जम्भा ।’ हेम० ४ १५७ में अवेरिणि किम्<sup>२</sup> केलिपसरो विअम्भइ ।

२ भाराक्रान्त कर्ता में ।

३ आब् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

४ सम् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

५ अभि और आब् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

६ प्रति और आब् पूर्वक गम का उक्त आदेश होता है ।

पूर	अग्घाड, अग्घव, उद्दुम, अङ्गुम, अहिरेम पक्ष मे पूर
त्वर	तुअर, जअड, तूर, <sup>१</sup> तुर <sup>२</sup>
क्षर	खिर, ऋर, पग्भर पच्चड, णिच्चल, णिटटुअ
चल	चल्ल, चल
उच्छल	उत्थल
वि + गल •	थिप्प, णिटटुह
दल	विसट्ट, दल
वल	वम्फ, वल
मील	मिल्ल, मील
भ्रश	फिड, फिट्ट, फुड फुट्ट, चुक्क, भुल्ल पक्ष मे भस
नश	णिरणास, णिवह, अवसेह, पडिसा, सेह, अवहर । पच्च मे नस्स
अव + काश	ओआस
स + दिश	अप्पाह
दृश	निअच्छ, पेच्छ, अवयच्छ, अवयज्झ, वज्ज, सव्वव, देक्ख, ओअक्ख, अवअक्ख, पुलोअ, निअ, अवआस
स्पृश	फास, फस, फरिस, छिव, छिह, आलुद्ध, आलिह
प्र + विश	रिअ । पक्ष मे पविस
प्र + मृष	पम्हुस

१ त्यादि और शतृप्रत्ययों के पर में रहने पर तूर होता है ।  
जैसे —तूरई, तूरन्तो ।

२ त्यादि से भिन्न में तुर होता है । जैसे तुरिओ, तुरन्तो ।

प्र + मुष	पम्हुस
पिष	णिवह, णिरिणास, णिरिणज्ज, रोञ्च, चड्ड, पीस
भष	मुक्क, भस
कृष	कड्ड, साअड्ड, अञ्च, अणच्छ, आयञ्छ, आइञ्छ, करिस, अक्खोड <sup>१</sup>
गवेष	दुण्डुल्ल, ढण्ढोल, गमेस, घत्त, गवेस
श्रिष	सामग्ग, अबयास, परिअत। पक्ष मे सिलेस
स्रक्ष	चोण्पड, मक्ख
काङ्क्ष	आह, अहिलङ्ख, अहिलङ्ख, वच्च, वम्फ, मह, सिंह, विलुम्प
प्रति + ईक्ष	मामय, विहीर, विरमाल। पत्त मे पडिक्ख
तक्ष	तच्छ, चच्छ, रम्प, रम्फ, तक्ख
वि + कस	कोआस, वोसट्ट, विअस
हस	गुञ्ज, हस
स्रस	लहस, डिम्भ, सस
त्रस	डर, बोज्ज, वज्ज
नि + अस	णिम, गुम
परि + अस	पलोट्ट, पल्लट्ट, पल्हत्थ
विर् + श्वस	भूख, नीसस
उद् + लस	ऊसल, ऊसुम्म, णिल्लस, पुल्लआअ, गुञ्जोल्ल, आरोअ, डल्लस
भास	भिस, भास
ग्रस	घिस, गस
अव + गाह	ओवाह ( उगाह ), ओगाह ( उगाह )

१ म्यान से तलवार खींचने अर्थ में ।

आ + रह	चड, बलगग, आरुह
मुह	गुम्म, गुम्मड, मुळ्म
दह	अहिऊल, आलुङ्ग, डह
ग्रह	बिण्ह, हर, पङ्ग, निरुवार, अहिपञ्चुअ, घेत् <sup>१</sup>
पच	वोत् <sup>२</sup>

( ३३ ) ऋवा, तुम और तव्य के पर मे रहने पर रुद, भुज और मुच धातुओ के अन्त्य वर्ण का त होता है। जैसे —रोत्तूण, रोत्तु, रोत्तव्व, भोत्तूण, भोत्तु, भोत्तव्व, मोत्तूण, मोत्तु, मोत्तव्व ।

( ३४ ) भूत और भविष्यत काल के प्रत्ययो एव त्त्वा, तुम और तव्य के पर मे रहने पर कृ धातु का 'का' आदेश होता है ।

( ३५ ) कुछ संस्कृत धातुओ के निम्नलिखित प्राकृत आदेश होते हैं —

संस्कृत	प्राकृत	संस्कृत	प्राकृत
इष	इच्छ	यम	जच्छ
अस	अच्छ	छिद्	छिद
भिद्	भिद्	युव	जुव
बुध	बुह्य	गृध	गिह्य
क्रुध	कुह्य	सिध	सिह्य
सद्	सड	पत्	पड
वृध	वढ	वेष्ट	वेड
सवेष्ट	सवेल्ल	उद् + वेष्ट	उव्वेल्ल, उव्वेढ

( ३६ ) खाद् और धाव धातुओ के अन्त्य वर्ण का लुक् होता है। जैसे —खाइ, खाअइ, धाइ, धाअइ ( खादति, धावति )

१ २ केवल क्त्वा, तुम और तव्य के पर में रहने पर उक्त आदेश होता है ।

( ३७ ) मृज धातु के अन्त्य वर्ण का 'र' आदेश होता है ।  
जैसे —सिरइ ( सृजति )

( ३८ ) शक आदि धातुओ के अन्त्य अक्षर का द्वित्व होता है । जैसे —सक्, लग्, कुप्, नस्स इत्यादि ।

( ३९ ) क्त प्रत्यय के सहित तत्तद् सोपसर्ग अथवा निरुपसर्ग धातुओ के स्थान मे नीचे लिखे अफुण्ण आदि आदेश होते हैं —

संस्कृत	प्राकृत
आक्रान्त	अफुण्णो
उत्कृष्टम्	उक्कोम
स्पष्टम्	फुड <sup>१</sup>
अतिक्रान्त	बोलीणो
विक्रमित	वीसहो ( बोसट्टो )
रुग्ण	लुग्गो
नष्ट	विल्हक्को
प्रमृष्ट	पम्हट्टो
अर्जितम्	विडत्त
स्पृष्टम्	छित्त
त्यक्तम्	जढ
क्षिप्तम्	ह्वासिअ
आस्वादितम्	चक्खिअ
स्थापितम्	निमिअ इत्यादि



१ तुलना कीजिए—अवधी के 'फुरे कहत हई' से ।

## सप्तम अध्याय

### [ कुछ विशिष्ट पद ]

प्राकृत के विशेष विशेष पदों की सिद्धि के लिए विभिन्न प्राकृत व्याकरणों में विशेष विशेष नियम दिये गये हैं। हम यहाँ उनके विशेष रूप बतला रहे हैं। पादटिप्पणी में विशेष सूत्रों का भी यथासम्भव उल्लेख किया जा रहा है।

प्राकृत	संस्कृत
अगणी, अग्नी <sup>१</sup>	अग्नि
अक्कोल्लो <sup>२</sup>	अक्कोल्ल
अङ्गारो <sup>३</sup>	अङ्गार
अच्छेर, अच्छरिअ	आश्चर्यम्
अच्छरिअ, अच्छअर	
अच्छरिज्ज, अच्छरीअ	
अचलपुर <sup>४</sup>	अचलपुरम्
अतसी <sup>५</sup>	अतसी

१ स्नेहाग्न्योर्वा । हेम० २ १०२

२ अक्कोल्ले ल् । हेम० १ २००

३ पक्काङ्गारललाटे वा । हेम० १ ४७ से इ के अभाव पक्ष में ।

४ चल्ल्युत्करपर्यन्ताश्चर्ये वा । हेम० १ १८ आश्चर्ये । हेम० २ ६६

अतो रिआइ-रिज्ज रीअ । हेम० २ ९७

५ अचलपुरे चलो । हेम० २ ११८

६ अतसी-सातवाहने ल । हेम० १ २११

अणिउत्तय, अणिउतय <sup>१</sup>	अतिमुक्तकम्
अन्तेउर <sup>२</sup>	अन्त पुरम्
अन्तेआरी <sup>३</sup>	अ तश्चारी
अन्नन्न, अन्नुन्न <sup>४</sup>	अन्योन्यम्
अप्पा, अत्ता <sup>५</sup>	आत्मा
अम्ब <sup>६</sup>	आम्रम्
अज्जो <sup>७</sup>	आर्य
अहिमज्जू, अहिमज्जू, अहिमज्जू <sup>८</sup>	अभिमन्यु
अट्ट, अट्ट <sup>९</sup>	अर्द्धम्
अण <sup>१०</sup>	ऋणम्
अरुहो, अरहो, अरिहो <sup>११</sup>	अर्ह
अरुहतो, अरहतो, अरिहतो <sup>१२</sup>	
अलाऊ, अलाउ <sup>१३</sup>	अलावु

- 
- १ 'यसुनाचामुण्डा' हेम० १ १७८ क्वचिन्न भवति ।  
 अइसुतय, अइसुतय ।
- २ ३ तोऽन्तरि । हेम० १ ६०
- ४ 'ओतोऽद्वान्योन्य' हेम० १ १५६
- ५ आत्मनि प । वर० ३ ४८
- ६ ताम्राप्ते म्ब । हेम० २ ५६ । ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८८
- ७ वा-य्य-यौ ज । हेम० २ २४ । ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८४
- ८ अभिमन्यौ जज्जौ वा । हेम० २ २५
- ९ अर्द्धमिर्द्धोर्ध्वेन्ते वा । हेम० २ ४१
- १० ऋतोऽत् । हेम० १ १२६      ११ उच्चारति । हेम० २ १११
- १२ उच्चारति । हेम० २ १११
- १३ वालाव्वरप्ये लुक् । हेम० १ ६६

अडो, अवडो <sup>१</sup>	अवट
अवहड <sup>२</sup>	अवहृतम्
अट्टरह <sup>३</sup>	अष्टादश
अट्टी <sup>४</sup>	अस्थि
अल्ल, अह <sup>५</sup>	आर्द्रम्
आफसो <sup>६</sup>	अस्पर्श
आओ, आअओ <sup>७</sup>	आगत
आइरिओ, आअरिओ <sup>८</sup>	आचार्य
आओज्ज <sup>९</sup>	आतोद्यम्
आढिओ <sup>१०</sup>	आहत
आमेलो <sup>११</sup>	आपीड
आढत्तो, आरद्धो <sup>१२</sup>	आरब्ध
आणाल <sup>१३</sup>	आलानम्

- १ यावत्तावज्जीवितावर्तमानावटप्रावारकदेवकुलैवमेवेव । हेम० १ २२१  
 २ आर्ष प्रयोग है ।  
 ३ छस्यानुष्टेष्टासदष्टे । हेम० २ ३४ । सत्यागद्दे र । हे० १ २१९  
 ४ ठोऽस्थिविसस्थुले । हे० २ ३२ ५ उदोद्वाद्दे । हेम० १ ८२  
 ६ 'स्पृश फासफस ' हे० ४ १८०  
 ७ व्याकरणप्राकारागते कगो । हेम० १ २०८  
 ८ आचार्ये चोऽच्च । हेम० १ ७३  
 ९ व थ्य-याँज । हेम० २ २४ १० आहतते ढि । हेम० १ १४३  
 ११ एऽपीयूषापीडविभीतककीदृशो दृशो । हेम० १ १०५ आपेलो,  
 आवेडो ये दो रूप भी देखे जाते हैं । देखो—नीपापीडे मो वा । हेम०  
 १ २३४ आमेलो, आमैडो ।  
 १२ 'मलिनोभयशुक्तिछुमारब्ध ' हेम० १ १३८,  
 १३ आलाने लनो । हेम० २ ११७



आली <sup>१</sup>	आली
आत्तमाणो, आवत्तमाणो <sup>२</sup>	आवर्तमान
आसीसय ( आसीसा ) <sup>३</sup>	आशी
आलिट्ठ, आलिद्ध <sup>४</sup>	आशिलष्टम्
इङ्गालो <sup>५</sup>	अङ्गार
इङ्कुअ <sup>६</sup>	इङ्कुदम्
ईसि <sup>७</sup>	ईषत्
इआणीं	इदानीम् <sup>८</sup>
इत्तिअ	एतावत्
इड्ढी <sup>९</sup>	ऋद्धि
इक्खू <sup>१०</sup>	इक्षु
उच्चय <sup>११</sup>	उच्चैस्
उक्करो, उक्करो <sup>१२</sup>	उत्कर

१ ओदाल्या पङ्क्तौ । हेम० १ ८३ के अभाव में ।

२ 'तस्य वृत्तादौ' । हेम० २ ३० । 'यावत्तावज्जीवितावर्तमान  
हेम० १ २७१

३ गोणादय । हेम० २ १७४

४ आशिलष्टे लघौ । हेम० २ ४९

५ पक्काङ्गारललाटे वा । हेम० १ ४७

६ शिथिलेऽङ्कुदे वा । हेम० १ ८९

७ गौणस्य 'हेम० २ १२९ के अभाव पक्ष में ईसि होता है ।

८ यत्तदेतदोतोरित्तिअ एतल्लुक् च । हेम० २ १५६

९ इत्कपादौ । हे० १ १२८

१० प्रवासीक्षौ । हे० १ ९५ के अभाव में ।

११ उच्चैर्नोच्चैस्यैश्च । हेम० १ १५४

१२ 'वल्ल्युत्कर' हेम० १ ५८

उच्छवो <sup>१</sup>	उत्सव
उत्थारो, उच्छाहो <sup>२</sup>	उत्साह
ऊसुओ, उच्छुओ <sup>३</sup>	उत्सुक
उम्बरो, उडम्बरो <sup>४</sup>	उदुम्बर
उल्लूपल, ओक्खल <sup>५</sup>	उल्लखलम्
उव्वीढ, उव्वूढ <sup>६</sup>	उद्व्यूढम्
उवरि <sup>७</sup>	उपरि
उढभ, उद्धि <sup>८</sup>	ऊर्ध्वम्
उसहो <sup>९</sup>	ऋषभ, वृषभ
उज्जू <sup>१०</sup>	ऋजु
उऊ, उदू <sup>११</sup>	ऋतु
उल्ल <sup>१२</sup>	आर्द्रम्
उल्लेइ <sup>१३</sup>	आर्द्रयति
ऊसारो <sup>१४</sup>	आसार

- 
- १ सामर्थ्यात्सुकोत्सवे वा । हेम० २ २२  
 २ वोत्साहे थो हश्च र । हेम० २ ४८  
 ३ सामर्थ्यात्सुकोत्सवे वा । हेम० २ २२  
 ४ 'दुर्गादिव्युदुम्बर ' हेम० १ २७०  
 ५ 'न वा मयूख ' हेम० १ १७१ ६ ईवोद्व्यूढे । हेम० १ १२०  
 ७ वोपरौ । हेम० १ १०८ अवरि भी होता है । पकाव ।  
 ८ वोर्द्धे । हेम० २ ५९  
 ९ उदत्त्वादौ । हेम० १ १३१ । वृषभे वा । हेम० १ १३३  
 १० ११ उदत्त्वादौ । हेम० १ १३१ । रि का अभाव । देखो  
 हेम० १ १४१  
 १२-१३ उदोद्घात्रे । हेम १ ८२  
 १४, ऊद्घासारे । हेम० १ ७६

उच्छ्र <sup>१</sup>	इक्षु
ऊसवो <sup>२</sup>	उत्सव
एकारो <sup>३</sup>	अयस्कार
एङ्गि, एत्ताहे <sup>४</sup>	इदानीम्
एरिसो <sup>५</sup>	ईदृश
एआरह	एकादश
एकसि, एकसिअ, एकईआ, एगआ <sup>६</sup>	एकदा
एरावणो <sup>७</sup>	ऐरावत
ऐ <sup>८</sup>	आयि
ओल्लेइ <sup>९</sup>	आर्द्रयति
ओसढ, ओसह, <sup>१०</sup>	औषधम्
ओली <sup>११</sup>	आली ( लि )
कउह, ककुध <sup>१२</sup>	ककुदम्
ककुहा <sup>१३</sup>	ककुप्
कण्डुअण <sup>१४</sup>	कण्डूयनम्

१ प्रवामीक्षौ । हेम० १ ९५

२ छ का अभाव । देखो-सामर्थ्योत्सुकोत्सवे वा । हेम० २ २२

३ 'स्थबिरविविक्रियायस्कार ' हेम० १ ०

४ एङ्गि एताहे इदानीम् । हेम० २ १३४

५ एत्पीयूष ' १ १०२

६ वलाद् सि मित्र इत्या । हेम० २ १ २

७ ऐत एत् । हेम० १ १४८ ८ अयौ वत् । हेम० १ १२९

९ उदोद्वाद् । हेम० १ ८२ १० वौषधे । हेम० १ २२७

११ ओतात्या पत्तौ । हेम० १ ८३ १२ ककुदे ह । हे० १ २२२

१३ ककुभो ह । हेम० १ २१ । 'कउहा' भा देखा जाता है ।

१४ उर्त्रहनुमत्फण्डूयवातूले । हेम० १ १२१

कइमे <sup>१</sup>	कतम
कइवाह, कइअव <sup>२</sup>	कतिपयम्
कडण, कअण <sup>३</sup>	कदनम्
कलम्बो, कअम्बो <sup>४</sup>	कदम्ब
कणट्टिअ <sup>५</sup>	कदर्थितम्
कअल, केल, केली, करली <sup>६</sup>	कदलम्, कदली
कणडलिआ <sup>७</sup>	कन्दरिका
कमधो, कअवो <sup>८</sup>	कबन्ध
कणवीरो <sup>९</sup>	करवीर
करोरू <sup>१०</sup>	करेरू
कणोरो, कणिणारो <sup>११</sup>	कणिकार
काउओ <sup>१२</sup>	कामुक
काहावणो, कहावणो <sup>१३</sup>	कार्षापण

१ मध्यमकतमे द्वितीयस्य । हेम० १ ४८

२ डाहवौ कतिपये । हेम० १ २५०

३ दशन दष्ट दग्ध दोला दण्ड दर दाह दम्भ दर्भ-कदन दोहदे दो वा ड । हेम० १ २१७

४ कदम्बे वा । हेम० १ २२२      ५ कदर्थिते व । हेम० २२४

६ कदल्पामहुमे । हेम० १ २२० । वा कदले । हेम० १ १०७

७ कन्दरिकाभिन्दिपान्ते ण्ड । हेम० २ ३८

८ कबन्धे मयो । हेम० १ २३९ ९ करवीरे ण । हेम० १ २५३

१० करेरूवाराणस्यो । हेम० २ ११९

११ वेत कणिकार । हेम० १ १ ८ कर्णिकारे वा । हेम० २ ९५

१२ 'यमुनाचासुगडा' हेम० १ १७८

१३ कार्षापणे । हेम० २ ७१ हव सयोगे । हेम० १ ८४

कालास, कालाअस <sup>१</sup>	कालायसम्
कम्हारो <sup>२</sup>	काश्मीर
कसुअ, केसुअ, किसुअ, किसुअ <sup>३</sup>	किशुकम्
करिआ <sup>४</sup>	क्रिया
किसल, किसलअ <sup>५</sup>	किसलयम्
किलिण्ण <sup>६</sup>	क्लिन्नम्
केरिसो <sup>७</sup>	कीदृश
कोहल, कोऊहल, कोउहल्ल, कुऊहल <sup>८</sup>	कुतूहलम्
कुब्ज <sup>९</sup> ( पुष्प अर्थ मे )	कुब्जम्
कोहण्डी, कोहली, कोहडी <sup>१०</sup>	कुष्माण्डी
कोप्पर <sup>११</sup>	कूर्परम्
किची <sup>१२</sup>	कृत्ति

- १ 'किसलयकालायस ' हेम० १ २६९
- २ आत्काश्मीरे । हेम० १ १००
- ३ किशुके वा । हेम० १ ८६ । मासादेवा । हेम० १ २९
- ४ 'हृश्रीहाकृत्स्न ' हेम० २ १०४
- ५ 'किमलयकालायस ' हे० १ २६९ । ८ लात् । हेम० २ १०६
- ७ दृश क्लिप्तकसक । हेम० १ १४२ । 'एत् पीयूषपीड ' हे० १ १०५
- ८ कुतूहले वा ह्रस्वश्च । हेम० १ ११७ । 'न वा मयूख ' हेम० १ १७१ । हेम० २ ९९
- ९ कुब्जकूर्परकाले क खोऽपुष्पे । हे० १ १८१ अपुष्पे पर्युदास से ख का अभाव ।
- १० 'ओत्कुष्माण्डी ' हेम० १ १२४ । 'कुष्माण्ड्या ' हेम० २ ७०
- ११ ओत्कुष्माण्डीतूणीरकूर्पर ' हेम० १ १२४
- १२ कृत्तिचत्वरे च । हे० २ १२

किस, कस <sup>१</sup>	} २	कृशम्
कसिणो, कसणो ( रग मे )		कृष्ण
कण्हो ( वासुदेव मे )		
कसिण ( णो ) <sup>३</sup>		कृत्स्नम्
किसर, केसर <sup>४</sup>		केसरम्
केढवो <sup>५</sup>		कैटभ
कुन्छेअ, कौच्छेअअ <sup>६</sup>		कौक्षेयकम्
कन्दो <sup>७</sup>		स्कन्द
रन्दो <sup>८</sup>		स्कन्द
खणो ( समय मे ) <sup>९</sup>		क्षण
खण्पर <sup>१०</sup>		कर्परम्
खमा <sup>११</sup>		क्षमा, क्षमा
खभो <sup>१२</sup>		स्तम्भ
खित्त <sup>१३</sup>		क्षित्तम्

- १ इत्कृपादौ । हेम० १२८ तथा ऋतोऽत् । हेम० १ १२  
 २ कृ णो वर्णे वा । हेम० २ ११० ३ 'हृश्रीही' हेम० २ १०४  
 ४ 'एत इद्रा वेदना' हेम० १ १४६  
 ५ क्रेटभे भो व । हेम० १ २४० एत एत् । हेम० १ १४८  
 'सटाशकटकैटभे' १ १९५  
 ६ कौक्षेयके वा । हेम० १६१ ७ शुष्कस्कन्दे वा । हेम० २ ५  
 ८ घृस्कयोर्नाम्नि । हेम० २ ४ पक्ष में 'कन्दो' होगा ।  
 ९ क्ष ख 'हेम० २ ३ १० 'कुञ्जकर्पर' हेम० १ १६१  
 ११ क्षमाया कौ । हेम० २ १८  
 १२ स्तम्भे स्तो वा । हेम० २ ८ पक्ष में यम्भो होगा ।  
 १३ क्ष=ख । नेखो—हेम० २ ३

खारा <sup>१</sup>	स्थागु
खासिओ, खइओ <sup>२</sup>	खचित
खुडिओ, खण्डिओ <sup>३</sup>	खण्डितम्
खल्लीडो <sup>४</sup>	खल्वाट
खासिअ <sup>५</sup>	कासितम्
खीलओ <sup>६</sup>	कीलक
खुजो <sup>७</sup>	कुब्ज
खेडओ <sup>८</sup>	क्ष्वेटक
खेडिओ <sup>९</sup>	स्फेटिक
गेदुअ <sup>१०</sup>	कन्दुक
गग्गर <sup>११</sup>	गद्गदम्
गड्डो <sup>१२</sup>	गर्त
गड्डहो, गदहो <sup>१३</sup>	गर्दभ
गब्भिभण <sup>१४</sup>	गभितम्

१ स्थाणावहरे । हेम० २ ७ २ 'खचित' हेम० १ १९३

३ 'वन्द्रखण्डिते' हेम० १ २३

४ ई स्त्यानखल्वाटे । हेम० १ १७४

५ कुब्जकर्परकीले ' हेम० १ १८१ मे देखो—आर्षेऽन्यत्रापि  
खासिअ ।

६, ७ 'कुब्जकर्परकीले' हेम० १ १८१

८, ९ क्ष्वेटकादौ । हेम० २ ६

१० एच्छय्यादौ । हेम० १ ५७ तथा 'मरकतमदकले' हेम०  
१ १८२

११ सख्यागद्गदे र । हेम० १ २१६

१२ गते ड । हेम० २ ३५ १३ गर्दभे वा । हेम० २ ३७

१४ गर्भितोतिमुक्ते ण । हेम० १ २०८

गडओ <sup>१</sup>	गवय
गभिरीअ	गाम्भीर्यम्
गोह्य <sup>२</sup>	ग्राह्यम्
गलोई <sup>३</sup>	गुडूची
गह्वई <sup>४</sup>	गृहपति
गोला, गोआवरी <sup>५</sup>	गोदा, गोदावरी
गोणो, गडओ, गावो,	गौ
गडआ, गावीओ, गावी	
गारव, गडरव <sup>७</sup>	(पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग मे)
घर <sup>८</sup>	गौरवम्
चविलो, चविडो <sup>९</sup>	गृहम्
चविडा, चवेडा <sup>१०</sup>	चपेट
चदिमा <sup>११</sup>	चपेटा
चाउडा <sup>१२</sup>	चन्द्रिका
	चामुण्डा

- १ गवये व । हेम० १ ५४  
 २ एद् ग्राह्ये । हेम० १ ७८ ३ 'ओत्कुष्माण्डी ' हेम० १ १२४  
 ४ गृहस्य घरोऽपतौ । हेम० २ १४४ में देखो—अपतौ पर्युदास ।  
 ५ गोला, गोआवरी इति तु गोदागोदावरीभ्या सिद्धम् । देखो—  
 गोणादय । हेम० २ १७४  
 ६ गव्युड आत्र । हेम० १ १५८ तथा गोणादय । हेम० २ १७४  
 ७ आच्च गौरवे । हेम० १ १९३  
 ८ गृहस्य घरोऽपतौ । हेम० २ १४४ पा० घरो ।  
 ९, १० चपेटापाटौ वा । हेम० १ १९८ तथा 'एत इद्वा वेदना  
 चपेटा ' हेम० १ १४६  
 ११ चन्द्रिकाया म । हेम० १ १८५  
 १२ 'यमुनाचामुण्डा ' हेम० १ १७८



चइत्त <sup>१</sup>	चै यम्
चोरिञ् <sup>२</sup>	चौर्यम्
चोग्गुणो चउग्गुणो <sup>३</sup>	चतुर्गुण
चोढो ( त्थो ), चउढो ( त्थो ) <sup>४</sup>	चतुर्थ
चोढी ( त्थी ), चउढी ( त्थी ) <sup>५</sup>	चतुर्थी
चोदह, चउदह <sup>६</sup>	चतुर्दश
चोदसी चउदसी <sup>७</sup>	चतुर्दशी
चोव्वार, चउव्वार <sup>८</sup>	चतुर्वारम्
चच्चर <sup>९</sup>	चत्वरम्
चिहुर <sup>१०</sup>	चिकुर
चुच्छ <sup>११</sup>	तुच्छम्
चिन्धाओ <sup>१२</sup>	किरात
चिन्ध, चिह्ल <sup>१३</sup>	चिह्नम्
छणो ( उत्सव मे ) <sup>१४</sup>	क्षण

१ त्योऽचैत्ये । हेम० २ १३ के अभाव में ।

२ 'म्याद्धव्य ' हेम० २, १०७

३ न वा मयूख ' हेम० १ १७१

४, ५ 'न वा मयूख ' हेम० १ १७१ तथा स्त्यानचतुर्थार्थे वा ।  
हेम० २ ३३

६, ७, ८ 'न वा मयूख ' हेम० १ १७१

९ कृत्तिचवरे च । हेम० २ १२

१० निकषम्फटिकचिकुरे ह । हेम० १ १८

११ तुच्छे तश्चछौ । हेम० १ २०४

१२ किराते च । हेम० १ १८३ तथा हरिद्रादौ ल । हेम० १ २१४.

१३ चिह्ने न्वो वा । हेम० २ ५० १४ क्षण उत्सवे । हेम० २ २०

छमा ( पृथिवी मे ) <sup>१</sup>	क्षमा, दमा
छूढ <sup>२</sup>	क्षितम्
छीअ <sup>३</sup>	क्षुतम्
छुहा <sup>४</sup>	क्षुवा
छुत्त, छिक् <sup>५</sup>	क्षुतम्
छालो ( ली ) <sup>६</sup>	छाग ( गी )
छाहा ( अनातप मे ) } <sup>७</sup>	छाया
छाआ ( कान्ति मे ) }	
छउम, छम्म <sup>८</sup>	छद्म
छड्ढिओ <sup>९</sup>	छदिकः
छुच्छ <sup>१०</sup>	तुच्छम्
छमी <sup>११</sup>	शमी
छमुहो <sup>१२</sup>	षण्मुख
छट्टो <sup>१३</sup>	षष्ठ
छट्टी <sup>१४</sup>	षष्ठी

- 
- १ क्षमाया कौ । हेम० २ १८ २ 'वृक्षक्षिप्तयो ' हेम० २ १२७  
 ३ ई क्षुते । हेम० १ ११२  
 ४, ५ छोऽद्यादौ । हेम० २ १७ तथा क्षुधो हा । हेम० १ १७  
 ६ छागे ल । हेम० १ १९१  
 ७ छायाया होऽमन्तौ वा । हेम० १ २४९  
 ८ पञ्चछद्ममूर्खद्वारे वा । हेम० २ ११२  
 ९ 'समर्द्ध ' हेम० २ ३६ १० तुच्छे तश्चछौ । हेम० १ २०४  
 ११ 'षट्शमी ' हेम० १ २६५  
 १२ 'बलणनो ' हेम० १ २५ तथा हेम० १ २६५  
 १३, १४ 'षट्शमीशाव ' हेम० १ २६५

द्वत्तिवण्णो, द्वत्तवण्णो <sup>१</sup>	सप्तपर्ण
छिरा <sup>२</sup>	शिरा
छुहा <sup>३</sup>	सुधा
छिहा <sup>४</sup>	स्पृहा
जडित्तो <sup>५</sup>	जटिल
जम्मण, जम्मो <sup>६</sup>	जन्म
जिम्भा, जीहा <sup>७</sup>	जिह्वा
जुण्ण, जिण्ण <sup>८</sup>	जीर्णम्
जीअ <sup>९</sup>	जीवितम्
जीविअ <sup>१०</sup>	जीवितम्
जीआ <sup>११</sup>	ज्या
जह, जहा <sup>१२</sup>	यथा
जउणा <sup>१३</sup>	यमुना

- १ सप्तवर्णे वा । हेम० १ ४९ तथा हेम० १ २६५  
 २, शिराया वा । हेम० १ २६६ पक्ष में 'सिरा' ।  
 ३ षट्शमीशावसुधासप्तपर्णेष्वादेश्छ । हेम० १ २६५  
 ४ स्पृहायाम् । हेम० २ २३  
 ५ जटिले जो म्मो वा । हेम० १ १९४  
 ६ न्मो म । हेम० २ ६१ तथा 'अन्त्य ' हेम० १ ११  
 ७ ईजिह्वा ' हेम० १ ९२ तथा ह्यो भो वा । हेम० २ ५७  
 ८ उज्जर्णे । हेम० १ १०२ जुण्णसुरा । जिण्णे भोज्जण मत्ते  
 ९, १० 'यावत्तावज्जीविता ' हेम० १ २७१  
 ११ ज्यायामीत् । हेम० २ ११५  
 १२ 'वाव्ययोत्खाता ' हेम० १ ६७  
 १३ 'यमुनावासुडा ' हेम० १ १७८

जा, जाव, जित्तिअ <sup>१</sup>	यावत्
जहुड्डिलो, जहिड्डिलो <sup>२</sup>	युधिष्ठिर
झडिलो <sup>३</sup>	जटिल
झओ <sup>४</sup>	ध्वज
झुणि <sup>५</sup>	ध्वनि
टगर <sup>६</sup>	तगरम्
टसरो <sup>७</sup>	त्रसर
ठभो <sup>८</sup>	स्तम्भ
ठीण <sup>९</sup>	स्त्यानम्
ठहो <sup>१०</sup>	स्तब्ध
डोलो <sup>११</sup>	दोल
डोहलो <sup>१२</sup>	दोहद
डाहो <sup>१३</sup>	दाह

- १ 'यावत्तावज्जीवितावर्तमाना' हेम० १ २७१ तथा हेम० १ ११
- २ युधिष्ठिरे वा । हेम० १ ९९ तथा उतो मुकुलादिष्वत् । हेम० १ १०७
- ३ जटिले जो झो वा । हेम० १ १९४
- ४ त्वध्वद्रध्वा चछजझा क्वित् । हेम० २ १५
- ५ 'त्वध्वद्रध्वा' हेम० २ १५ तथा ध्वनिविष्वचो ऋ । हेम० १ ५२
- ६, ७ तगरत्रसरतूवरे ट । हेम० १ २०५
- ८ थठावस्पन्दे । हेम० २ ९
- ९ ई स्त्यानखल्वाटे । हेम० १ ७४
- १०, ११ स्तब्धे ठडौ । हेम० २ ३९
- १२, १३ दशन दष्ट दग्ध दोला दण्ड दर दाह दम्भ दर्भ कदन दोहदे दो वा ड । हेम० १ २१७

डट्टो <sup>१</sup>	दष्ट
डसन <sup>२</sup>	दशनम्
डरो ( भय मे ) <sup>३</sup>	दर
डभो <sup>४</sup>	दम्भ
डडो <sup>५</sup>	दण्ड
डडू ( डडो ) <sup>६</sup>	दग्धम्
णिवुत्त, णिउत्त, णिअत्त <sup>७</sup>	निवृत्तम्
णिसीढो, णिसीहो <sup>८</sup>	निशीथ
णिच्चलो <sup>९</sup>	निश्चल
गुमण्णो, णिसण्णो <sup>१</sup>	निषण्ण
णडाल, णिडाल, णलाड <sup>११</sup>	ललाटम्
तविअ, तत्त <sup>१२</sup>	तप्तम्
तम्ब <sup>१३</sup>	ताम्रम्
तम्बोल <sup>१४</sup>	ताम्बूलम्
ता, ताव, तित्तिअ <sup>१५</sup>	तावत्

- १ ० ३ ४ ५ ६ वही ७ निवृत्तगुन्दारके वा । हेम० १ १३२  
 ८ निशीथपृथिव्योर्वा । हेम० १ २१६  
 ९ दु खे णिच्चल । हेम० ४ ९२ क्री पादटिप्पणी ५ देखो  
 १० उमो निषण्णो । हेम० १ १७४  
 ११ ललाट लडो । हेम० २ १२३ तथा पक्काङ्गारललाटे वा । हेम०  
 १ ४७  
 १२ शर्षतप्तत्रजे वा । हेम० २ १०५  
 १३ ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८४ तथा ताम्राम्ने म्ब । हेम० २ ५६  
 १४ 'श्रोत्कुम्भाण्डी ' हेम० १ १२४  
 १५ 'यावत्तावज्जीविता ' हे० १ २७१ तथा 'यत्तदेतदो ' हेम०  
 २ १५६ एव १ ११

तित्तिरो <sup>१</sup>	तित्तिरि
तिरिच्छी <sup>२</sup>	तिर्यक्
तिक्ख, तिह् <sup>३</sup>	तीक्ष्णम्
तेह, तूह, तित्थ <sup>४</sup>	तीर्थम्
तोण, तूण <sup>५</sup>	तूणम्
तोणीर <sup>६</sup>	तूणीरम्
तूर <sup>७</sup>	तूर्यम्
तेरह <sup>८</sup>	त्रयोदश
तेवीसा <sup>९</sup>	त्रयोविंशति
तेत्तीसा <sup>१०</sup>	त्रयस्त्रिंशत्
तीसा <sup>११</sup>	त्रिंशत्
तेवण्णा <sup>१२</sup>	त्रिपञ्चाशत्
तबो <sup>१३</sup>	स्तम्ब

- १ तित्तिरौ र । हेम० १ ९० २ तिर्यक्स्तिरिच्छ । हे० २ १४३  
 ३ 'सूक्ष्मश्न' हेम० २ ७५ तथा तीक्ष्णे ण । हेम० २ ८२  
 ४ तीर्थे हे । हे० १ १०४ ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८४ तथा तु ख-  
 दक्षिणतीर्थे वा । हेम० २ ७२  
 ५ स्थूणातूरौ वा । हेम० १ १२५  
 ६ 'ओत्कुष्माण्डी' हेम० १ १२४  
 ७ 'ब्रह्मचर्यतूर्य' हेम० २ ६३  
 ८ एत्रयोदशादौ ' हेम० १ १६५ सरयागद्गदे र । हेम०  
 १ २१९ तथा हेम० १ २६२  
 ९, १० वही ।  
 ११ विशत्यादैर्लुक् । हेम० १ २८ १२ गोणादय । हेम० २ १७४  
 १३ 'स्तस्य यो' हेम० २ ४५ के असमस्तस्तम्बे इत्त पर्युदास  
 से तबो होता है ।

तवो <sup>१</sup>	स्तव
थेणो, यूणो <sup>२</sup>	स्तेन
थभो <sup>३</sup>	स्तम्भ
थवो <sup>४</sup>	स्तव
थी <sup>५</sup>	स्त्री
थेरो <sup>६</sup>	स्थविर
थीण <sup>७</sup>	स्त्यानम्
थाणू <sup>८</sup>	स्थाणु
थोणा, थूणा <sup>९</sup>	स्थूणा
थोर, थूल ( थुल्लो ) <sup>१०</sup>	स्थूलम्
थेरिञ्च <sup>११</sup>	स्थैर्यम्
डुवरो <sup>१२</sup>	तूवर
दाढा <sup>१३</sup>	दष्ट्रा

- १ स्तवे वा । हेम० २ ४६ से थ के अभाव में ।  
 २ उ स्तेने वा । हेम० १४७ ३ 'स्तस्य थो ' हेम० २ ४५  
 ४ स्तवे वा । हेम० २ ४६  
 ५ स्त्रिया इत्थी । हेम० २ १३० से 'इत्थी' के अभाव में ।  
 ६ स्थविरविचकित्वायस्कारे । हेम० १ १६६  
 ७ स्त्यानचतुर्थी वा । हेम० २ ३३ से ठ के अभाव में थीण होता है । तथा स्त्यान खल्वाटे । हेम० १ ७४  
 ८ स्थाणावहेर । हेम० २ ७ से हर अर्थ में ख के अभाव में थाणु होता है । ९ स्थूणातूणो वा । हेम० १ १२५  
 १० ल्लो, थोरो ( थेरो A ) सेवादौ वा । हेम० २ ९९  
 ११ स्याद्भन्वचैत्यचौर्यममेषु यात् । हेम० २ १०७  
 १२ ढंमचन्द्र के अनुमार डुवरो रूप नहीं होता है ।  
 १३ दष्ट्राया दाढा । हेम० २ १३९

दडढ <sup>१</sup>	दग्धम्
दडो <sup>२</sup>	दण्ड
दिण्ण <sup>३</sup>	दत्तम्
दगुवहो, दगुअ वहो <sup>४</sup>	दनुजवध
दभो <sup>५</sup>	दम्भ
दरो (अल्प मे) <sup>६</sup>	दर
दस, दह <sup>७</sup>	दश
दसण <sup>८</sup>	दशनम्
दहमुहो, दसमुहो <sup>९</sup>	दशमुख
दडो <sup>१०</sup>	दष्ट
दाहिणो, दक्खिणो <sup>११</sup>	दक्षिण
दाहो, दाघो <sup>१२</sup>	दाह
दिवहो, दिवसो <sup>१३</sup>	दिवस

- १ 'दशनदष्टदग्ध' हेम० १ २१७ से ड के अभाव में । २ वही ।  
 ३ इ स्वप्नादौ । हेम० १ ४६ तथा पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते ।  
 हेम० २ ४३ ४ लुगभाजनदनुज 'हेम० १ २९७  
 ५ दशनदष्टदग्ध' हेम० १ २१७, से ड के अभाव में ।  
 ६ वही । ७ दशपाषाणो ह । हेम० १ २६२  
 ८ दशनदष्टदग्ध 'हेम० १ २१७ से ड के अभाव में ।  
 ९ श का वैकल्पिक ह । देखो—दशपाषाणो ह । हेम० १ २६२  
 १० हेम० १ २१७ के अभाव में ।  
 ११ वैकल्पिक ह । दु खदक्षिणतीर्थे वा । हेम० २ ७२ तथा दीर्घ—  
 दक्षिणो हे । हेम० १ ४५  
 १२ हो धोऽनुस्वारात् । कचिदननुस्वारादपि-दाघो । पक्षे दाहो ।  
 हेम० १ २९४ ।  
 १३ स का वैकल्पिक ह । दिवसे स । हेम० १ १६३



दिग्धो, दीहो <sup>१</sup>	दीर्घ
दुह, दुक्ख <sup>२</sup>	दु खम्
दुअल्ल, दुऊल, दुगुल्ल <sup>३</sup>	दुकूलम्
दुग्गावी, दुग्गा एवी <sup>४</sup>	दुर्गादेवी
दूहवो, दुहओ <sup>५</sup>	दुर्भग
दुकड <sup>६</sup>	दुष्कृतम्
दुहिआ <sup>७</sup>	दुहिता
दरिओ <sup>८</sup>	दृप्त
दिअरो, देअरो <sup>९</sup>	देवर
देउल, देवउल <sup>१०</sup>	देवकुलम्
देव्व, दइव्व, दइव्व <sup>११</sup>	दैवम्
दोहलो <sup>१२</sup>	दोहद

- 
- १ हेम० २ ७९ तथा दीर्घे वा । हेम० २९१
- २ वैकल्पिक ह । दु खदक्षिणतीय वा । हेम० २ ७०
- ३ ऊकार का वैकल्पिक अन्व और लकार ऋ द्वि व । देखो-दुकूले वा लश्च द्वि । हेम० १ ११९ । आर्ष प्राकृत में दुगुल्ल होता है ।
- ४ दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतनपादपीठेऽत्तर्द । हेम० १ २७०
- ५ लुकि दुरो वा । हेम० १ ११५ और ऊत्वे दुर्भगसुभगे व । हेम० १ १९२
- ६ प्रत्यादौ ड । आर्षे दुड्डड । हेम० १ २००
- ७ 'दुहितृभगिन्यो ' हेम० २ १२६ इससे 'दूआ' आदेश के अभाव में ।
- ८ अरिर्हते । हेम० १ १४४
- ९ एत इद्वा वेदनाचपेठादेवरकेमरे । हेम० १ १४०
- १० यावत्तावत् ' हेम० १ २७१ ११ एच्च देवे । हेम० १ १५३
- १२ प्रदीपिदोहदे ल । हेम० १ २२१

दोला <sup>१</sup>	दोला
देर, दुआर, दार, दुवार <sup>२</sup>	द्वारम्
दिही <sup>३</sup>	धृति
धूआ <sup>४</sup>	दुहिता
धगुह, धगू <sup>५</sup>	धनु
धत्ती, धाई, धारी <sup>६</sup>	धात्री
धिइ -	धिक्
धिरथु <sup>७</sup>	धिगस्तु
धिई <sup>८</sup>	धृति
धिट्टो, धट्टो <sup>९</sup>	धृष्ट
धट्टज्जणो <sup>१०</sup>	धृष्टद्युम्न
धीर, धिज्ज <sup>११</sup>	धैर्यम्
नत्तिओ, नत्तुओ <sup>१२</sup>	

- १ 'दशनदष्टदग्धदोला' हेम० १ २१७ से ड के अभाव में ।  
 २ द्वारे वा । हेम० १ ७९ पद्मच्छत्रमूर्खद्वारे वा । हेम० २ ११२.  
 ३ धृतेर्दिहि । हेम० २ १३१  
 ४ धूआ दुहिआ । 'दुहितृभगिन्यो' हेम० २ १०  
 ५, धनुषो वा । हेम० १ २०  
 ६ धान्याम । हे० २ ८१ ह्रस्व से पहले ही रलोप होने पर धाई और पक्ष में वारी ये रूप होते हैं ।  
 ७ गोणादय । हेम० २ १७४  
 ८ त्रतेर्दिहि । हेम० २ १३१ इससे 'दिहि' के अभाव में ।  
 ९ मसृणमृगाङ्कमृत्युशृङ्गवृष्टे वा । हेम० १ १३० तथा हेम० २ ३८.  
 १० धृष्टद्युम्ने ण । हेम० २ ९४  
 ११ ईवैर्ये । हेम० १ १५५ तथा धैर्ये वा । हेम० २ ८४  
 १२ 'इदुतौपृष्ठवृष्टि' हेम० १ १३७

नोहलिआ <sup>१</sup>	नवफलिका
निहसो <sup>२</sup>	निकष
निम्बो <sup>३</sup>	निम्ब
निसढो <sup>४</sup>	निषध
नेड्ड, नीड <sup>५</sup>	नीडम्
नीमो, नीवो <sup>६</sup>	नीप
नीमी, नीवी <sup>७</sup>	नीवि
नेरइओ <sup>८</sup>	नैरयिक
नारइओ <sup>९</sup>	नारकिक
नेउर, निउर, नूउर <sup>१०</sup>	नूपुरम्
नापिओ <sup>११</sup>	नापित
निम्भरो <sup>१२</sup>	निर्भर

- 
- १ ओत्पूतर ' हेम० १ १७०
- २ निकषस्फटिकचिकुरे ह । हेम० १ १८६
- ३ निम्बनापिते लण्ह वा । हेम० १ २३० इसके अभाव में ।
- ४ निषधे धो ढ । हेम० १ २२६
- ५ नीडपीठे वा । हेम० १ १०६
- ६ नीपापीडे मो वा । हेम० १ २३८
- ७ स्वप्ननीव्योर्वा । हेम० १ २५९,
- ८ ९ कथ नेरइओ, नारइओ ? नैरयिक-नारकिकशब्दयोर्भविष्यति ।  
देखो—द्वारे वा । हेम० १ ७९
- १० इदेतौ नूपुरे वा । हेम० १ १०३
- ११ निम्बनापिते लण्ह वा । हेम० १ २३० से ण्ह के अभाव में ।  
तथा हेम० १ १७७
- १२ द्वितीयतुर्ययोरुपरि पूर्व । हेम० २ ९०

नमोक्कारो <sup>१</sup>	नमस्कार
नीचञ्च <sup>२</sup>	नीचै
नावा <sup>३</sup>	नौ
पक्क, पिक्क <sup>४</sup>	पक्कम्
पम्ह <sup>५</sup>	पद्म
पण्णरह <sup>६</sup>	पञ्चदश
पञ्चावण्णा, पण्णण्णा <sup>७</sup>	पञ्चपञ्चाशत्
पण्णासा <sup>८</sup>	पञ्चाशत्
पडाया <sup>९</sup>	पताका
पट्टण <sup>१०</sup>	पत्तनम्
पाइक्को, पाथाई <sup>११</sup>	पदाति
पोम्म, पउम, पम्म <sup>१२</sup>	पद्मम्
पहो <sup>१३</sup>	पन्था

- 
- १ 'नमस्कार' हेम० १ ६२  
 २ उच्चैर्नीचैस्यै अ । हेम० १ १५४  
 ३ नाव्याव । हेम० १ १६४  
 ४ पक्काङ्गारल्लटे वा । हेम० १ ४७  
 ५ पद्म श्म ष्म स्म ह्या म्ह । हेम० २ ७४  
 ६ पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते । हेम० २ ४३  
 ७ गोणादय । हेम० २ १७८ ८ पञ्चाशत्पञ्चदशदत्ते । २ ४३  
 ९ प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६  
 १० 'वृत्तप्रवृत्त' हेम० २ २९  
 ११ 'मलिनोभय शुक्ति' हेम० २ १३८  
 १२ श्रोत्पद्मे । हेम० १ ६१ 'पद्म छद्म' हेम० २ ११०  
 १३ 'पथि पृथिवी' हेम० १ ८८

परोऽपर <sup>१</sup>	परस्परम्
पारक्क, पारिक्क, पारकेर, पाराकेर <sup>२</sup>	परकीयम्
पेरन्तो, पज्जन्तो <sup>३</sup>	पर्यन्त
पल्लट्ट, पल्लत्थ <sup>४</sup>	पर्यस्तम्
पल्लाण, पडायाण <sup>५</sup>	पर्याणम्
पलिअ, पलिल <sup>६</sup>	पलित्तम्
पल्लङ्को, पलिअको <sup>७</sup>	पल्यङ्क
पाअवडण, पावडण <sup>८</sup>	पादपतनम्
पावीड, पाअवीड <sup>९</sup>	पादपीठम्
पहिहो <sup>१०</sup>	पान्थ ( पथिक )
पारद्धी <sup>११</sup>	पापद्धि

१ 'नमस्कारपरस्परे ' हेम० १ ६२

२ 'परराजभ्यां ' हेम० २ १४८

३ एत पर्यन्ते । हेम० २ ६५

४ पर्यस्ते यठौ । हेम० २ ४७ तथा 'पर्यस्तपर्याण ' हेम० २ ६८

५ पर्याणो ङा वा । हेम० १ २५२ 'पर्यस्तपर्याण ' हेम० २ ६८

६ पलित्ते वा । हेम० १ २१२

७ पल्लङ्को इति च पल्यङ्कशब्दस्य यलोपे द्वित्वे च । पलिअको इत्यपि चौर्यसमत्वात् । देखो—पर्यस्तपर्याणसौकुमार्ये स्तु । हेम० २ ६८

८ 'दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतन ' हेम० १ २७०

९, 'दुर्गादेव्युदुम्बरपादपतन ' हेम० १ २७०

१० पयोणस्येकट्-पहिओ । हेम० २ १५२

११ पापद्धौ र । हेम० १ २३५

पारेवओ, पारावओ <sup>१</sup>	पारावत
पाहाणो, पासाणो <sup>२</sup>	पाषाण
पिहढो, पिढरो <sup>३</sup>	पिठर
पिडसिआ, पिडच्छा <sup>४</sup>	मितृष्वसा
पिसल्लो, पिसाओ <sup>५</sup>	पिशाच
पेढ, पीढ <sup>६</sup>	पीठम्
पीअ <sup>७</sup>	पीतम्
पीवल, पीअल <sup>८</sup>	पीतलम्
पेडस <sup>९</sup>	पीयूषम्
पुण्णामो <sup>१०</sup>	पुन्नाग
पुरिसो <sup>११</sup>	पुरुष
पोप्पल <sup>१२</sup>	पूगफलम्
पोप्पली <sup>१३</sup>	पूगफली

- 
- १ पारावते रो वा । हेम० १ ८०
- २ दशपाषाणो ह । हेम० १ २६०
- ३ पिठरे हो वा रश्च ङ । हेम० १ २०१
- ४ मातृपितु स्वसु सिआछौ । हेम० २ १४२
- ५ 'खचितपिशाचयो ' हेम १ १९३
- ६ नीडपीठे वा । हेम० १ १०६
- ७ ल इति किम् ? पीअ । देखो—पीते वो ले वा । हेम० १ २१३
- ८ पीते वो ले वा । हेम० १ २१३ तथा वियुत्पत्रपीतान्धाङ्ग ।  
हेम० २ १७३
- ९ 'एत्पीयूष ' हेम० १ १०५
- १० पुन्नागभागिन्योर्गो म । हेम० १ १९०
- ११ पुरुषे रो । हेम० १ १११
- १२ 'ओत्पूतरवदर ' हेम० १ १७० १३ वही ।

पोरो <sup>१</sup>	पूतर
पुरिम, पुव्व	पूर्वम्
पिध, पिह, पुव, पुह <sup>३</sup>	पृथक्
पुहई, पुढवी, पुहवी <sup>४</sup>	पृथिवी
पजरिस <sup>५</sup>	पौरुषम्
पवट्टो, पडट्टो <sup>६</sup>	प्रकोष्ठ
पइण्णा <sup>७</sup>	प्रतिज्ञा
पइट्ठा <sup>८</sup>	प्रतिष्ठा
पडसुआ <sup>९</sup>	प्रतिश्रुत्
पईव <sup>१०</sup>	प्रतीपम्
पच्चुहो, पच्चुसो <sup>११</sup>	प्रत्यूष
पडुम, पडुम, पढम, पढम <sup>१२</sup>	प्रथमम्

- १ वही । २ पूर्वस्य पुरिम । हेम० २ १३५  
 ३ 'इदुतौष्ठवृष्टि' हेम० १ १३७ तथा पृथकि धो वा । हेम० १ १८८  
 ४ पथिपृथिवी 'हेम० १ ८८ तथा उदत्त्वादौ । हेम० १ १३१ एव निशीथपृथिव्योर्वा । हेम० १ २१८  
 ५ अउ पौरादौ वा । हेम० १ १६२  
 ६ ओतोऽद्वान्यो-यप्रकोष्ठ ' १ १२६  
 ७ ८ प्राय कथन से डनहीं हुआ । देखो-प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०८  
 ९ प्रत्ययादौ ड । हेम० १ २०६ 'पथिपृथिवी' हेम० १ ८८ तथा वक्रादावन्त । हेम० १ २६  
 १० प्राय कथन से डनहीं हुआ । देखो-प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६  
 ११ प्रत्यूषे षश्च हो वा । हेम० २ १४  
 १२ प्रथमे पयोर्वा । हेम० १ ४५ तथा मेथिशिथिर ' हेम० १ २१५

पावासू <sup>१</sup>	प्रवासी
पअट्ट पउत्त <sup>२</sup>	प्रवृत्तम्
पसडिल, पसिडिल <sup>३</sup>	प्रशिथिलम्
पारो, पाआरो <sup>४</sup>	प्राकार
पाहुड <sup>५</sup>	प्राभृतम्
पागुरण, पाउरण, पावरण <sup>६</sup>	प्रावरणम्
पावारओ, पारओ <sup>७</sup>	प्रावारक
पलक्खो <sup>८</sup>	प्लक्ष
फणसो <sup>९</sup>	पनस
फलिहा <sup>१०</sup>	परिखा
फलिहो <sup>११</sup>	परिघ
फरुसो <sup>१२</sup>	परुष
फालिहदो <sup>१३</sup>	पारिभद्र

- १ प्रवासीक्षौ । हेम० १ ९५ अत समृद्धयादौ वा । हेम० १ ४४  
 २ उदृत्वादौ । हेम० १ १३१ तथा 'वृत्तप्रवृत्त ' हेम० २ २९  
 ३ शिथिलेड्डुद वा । हेम० १ ८९  
 ४ 'व्याकरणप्राकारागते ' हेम० १ २६८  
 ५ उदृत्वादौ । हेम० १ १३१ तथा प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०९  
 ६ प्रावरणौ अङ्गवाळ । हेम० १ १७५  
 ७ 'यावत्तावन्नीविता ' हेम० १ २७१  
 ८ प्लक्षे लात् । हेम० २ १०३ ९ 'पाटिपरुष ' हेम० १ २३२  
 १० वही तथा हरिद्रादौ ल । हेम० १ २५४ ११ वही ।  
 १२ 'पाटिपरुष ' हेम० १ २३२  
 १३ वही तथा हरिद्रादौ ल । हेम० १ २५४



फलिह <sup>१</sup>	स्फटिकम्
भङ्गी <sup>२</sup>	भगिनी
भरहो <sup>३</sup>	भरत
भविअ <sup>४</sup>	भव्यम्
भवन्तो <sup>५</sup>	भवान्
भस्स, भप्प <sup>६</sup>	भस्म
भामिणी <sup>७</sup>	भागिनी
भाअण, भाण <sup>८</sup>	भाजनम्
भारिआ <sup>९</sup> ( पैशाची मे )	भार्या
भिण्डिवालो <sup>१०</sup>	भिन्दिपाल
भिण्फो <sup>११</sup>	भीष्म
भेडो <sup>१२</sup>	भेर
भसरो, भसलो <sup>१३</sup>	भ्रमर
भिड्डी <sup>१४</sup>	भ्रुकुटि

- १ स्फटिके क हेम० १ १९७ तथा 'निकषस्फटिक ' हेम०  
१ १८६ फलिहो भी देखा जाता है ।
- २ 'दुहितृभगिन्यो ' हेम० २ १२६ बहिणी के अभाव में
- ३ 'वितस्तिवसतिभरत ' हेन० १ २१४
- ४ 'स्याद्भव्य ' हेम० २ १०७ ५ गोणादय । हेम० २ १७४
- ६ भस्मात्मनो पो वा । हेम० २ ५१
- ७ पुत्रागभागिन्योर्गो म । हेम० १ १६०
- ८ लुगभाजनदनुज ' हेम० १ २६७
- ९ र्यस्नष्टा ' हेम० ४ ३१४
- १० कन्दरिकाभिन्दीपाले ण्ड । हेम० २ ३८
- ११ भीष्मे ष्म । हेम० २ ५४ १२ किरिभेरे रो ड । हेम० १ २२१
- १३ भ्रमरे सो वा । हेम० १ २४४ १४ इर्धुकुटौ । हेम० १ ११०

भुलया <sup>१</sup>	भ्रलता
भिम्भलो <sup>२</sup>	विह्लल
भयण्फइ, भयस्सई <sup>३</sup>	बृहस्पति
मघोणो <sup>४</sup>	मघवान्
मअगलो <sup>५</sup>	मदकल
मज्झिमो <sup>६</sup>	मध्यम
मज्झो, मय्झो <sup>७</sup>	मध्याह्न
महुअ, महूअ <sup>८</sup>	मधूकम्
मणोहर, मणहर <sup>९</sup>	मनोहरम्
मल्ल ( न्तू ), मण्णू ( न्तू ) <sup>१०</sup>	मन्यु
मोहो, मऊहो <sup>११</sup>	मयूख
मोरो, मऊरो, मयुरो <sup>१२</sup>	मयूर

- 
- १ उर्ध्वह्रन्मत्कण्ड्वयवातूले । हेम० १ १२१
- २ वा विह्लले वौ वक्ष । हेम० २ ५८ पक्ष में विम्भलो, विह्लो ।
- ३ बृहस्पतौ बहो भय । हेम० २ १३७ तथा बृहस्पतिवन्स्पत्यो  
सो वा २ ६९ ष्पस्पयो फ । हेम० २ ५३
- ४ गोणादय । हेम० २ १७४
- ५ मरकतमदकले ग । हेम १ १८२
- ६ मध्यमकतमे द्वितीयस्य । हेम० १ ४८
- ७ मध्याह्ने ह । हेम० २ ८४ तथा ह्रस्व सयोगे । हेम० १ ८४
- ८ मधूके वा । हेम० १ १२२
- ९ 'श्रोतोद्वान्योन्य ' हेम० १ १५६
- १० मन्यौ न्तो वा । हेम० २ ४४
- ११ 'न वा मयूख ' हेम० १ १७१
- १२ मोरो मउरो इति तु मोरमयूरशब्दाभ्या सिद्धम् । देखो—  
हेम० १ १७१

मरगञ्च <sup>१</sup>	भरकतम्
मड्डिञ्च <sup>२</sup>	मर्हितम्
मइल, मलिण <sup>३</sup>	मलिनम्
मसिण, मसण <sup>४</sup>	मसृणम्
महन्तो <sup>५</sup>	महान्
मरहट्ट <sup>६</sup>	महाराष्ट्रम्
मथन्दो <sup>७</sup>	माकन्द
माउसिआ, माउच्छा <sup>८</sup>	मातृष्वसां
मट्टुरिअ <sup>९</sup>	माधुर्यम्
मञ्जरो, मज्जारो <sup>१०</sup>	मार्जार
मेरा <sup>११</sup>	मिरा (मर्यादा अर्थ मे)
मुक्क, मुत्त <sup>१२</sup>	मुक्तम्
मूसल, मुसल <sup>१३</sup>	मुसलम्

- 
- १ 'भरकतमदकले ' हेम० १ १८२  
 २ 'समर्दवितदि ' हेम० २ ३६  
 ३ 'मलिनोभयशुक्ति ' हेम० २ १३८  
 ४ 'मसृणमृगाङ्क ' हेम० १ ३०  
 ५ गोणादय । हेम० १ १७४ ( मत्तूण महन्ता त्त्तस्सन्ति । कुमा०  
 पा० ७ ५१ )  
 ६ महाराष्ट्रे । हेम० १ ६९      ७ गोणादय । हेम० २ १७४  
 ८ मातृषितु स्वसु सिआ छौ । सेम० २ १४२  
 ९ खद्यधभाम् । हेम० १ १८७  
 १० मार्जारस्य मञ्जरवज्जरौ । हेम० २ १३८  
 ११ मिरायाम् । हेम० १ ८७  
 १२ 'शक्तमुक्तदष्ट ' हेम० २ २  
 १३ उत्सुभगमुसले वा । हेम० १ ११३

मुरुखो, मुकखो <sup>१</sup>	मूर्ख
मुड्ढा, मुद्धा <sup>२</sup>	मूर्धा
मोल्ल <sup>३</sup>	मूल्यम्
मूसओ <sup>४</sup>	मूसिक
मिअको, मअको <sup>५</sup>	मयङ्क
मडअ <sup>६</sup>	मृतकम्
मट्टिआ <sup>७</sup>	मृत्तिका
मिष्, मङ्	मृत्यु
मिअगो, मुड्गो <sup>८</sup>	मृदङ्ग
माडअ, मउअ, माउक्क <sup>९</sup>	मृदुकम्
माउत्तण, मउत्तण, माउक्क <sup>१०</sup>	मृदुत्वम्
मुसा, मूसा, मोसा <sup>११</sup>	मृषा

- 
- १ पद्मङ्कदममूर्खद्वारे वा । हेम० १ ११२
- २ श्रद्धद्धिमूर्धोऽर्धेन्ते वा । हेम० २ ४१
- ३ 'ओत्कुष्माण्डी ' हेम० १ १२४
- ४ 'पथिपृथिवी ' हेम० १ ८८
- ५ 'मसृणमृगाङ्क ' हेम० १ १३०
- ६ प्रत्यादौ ङ । हेम० १ २०६ । मडअ
- ७ 'वत्तप्रवृत्तमृत्तिका ' हेम० २ २९
- ८ 'मसृणमृगाङ्कमृत्यु ' हेम० १ १३०
- ९ इ स्वप्नादौ । हेम० १ ४६ तथा 'इदुतौ वृष्टवृष्टि  
हेम० १ १२७
- १० आ कृशामृदुकमृदुत्वे वा । हेम० १ १२७ तथा 'शक्तमुक्तदष्ट  
हेम० २ २
- ११ वही । १२ उदूदोन्मृषि । हेम० १ १३६

मुसावाआ <sup>१</sup>	मृषावाक्
मेढी <sup>२</sup>	मेथि
मस्सू <sup>३</sup>	श्मश्रु
मसाण <sup>४</sup>	श्मशानम्
रण, रत्त <sup>५</sup>	रक्तम्
रअण <sup>६</sup>	रत्नम्
राइक्क, राअकेर, रायक्क <sup>७</sup>	राजकीयम्
राडल, राअउल <sup>८</sup>	राजकुलम्
राई, रत्ती <sup>९</sup>	रात्रि
रुयण <sup>१०</sup>	रुदितम्
रुक्खो <sup>११</sup>	वृक्ष
रण्ण <sup>१२</sup>	अरण्यम्
रिच्छो, रिक्खो <sup>१३</sup>	ऋक्ष

- १ वही । २ 'मेथिशिथिर ' हेम० १ २१५  
 ३ वक्रादावन्त । हेम० १ २६ तथा 'आदे श्मश्रु ' हेम० २ ८६  
 ४ वर० ३ ६ तथा आदे श्मश्रुश्मशाने । हेम० २ ८६  
 ५ केन दिण्णादय । वर० ८ ६२  
 ६ रुयण । 'रुमाश्लाघा ' हेम० २ १०१ तथा रअण । 'क्लिष्ट-  
 शिष्ट ' वर० ३ ६०  
 ७ परराजभ्या कडिक्कौ च । हेम० २ १४८  
 ८ 'लुगभाअनदनुजराजकुले ' हेम० १ २६७  
 ९ रात्रौ वा । हेम० २ ८८ तथा हेम० २ ८९  
 १० केन दिण्णादय वर० ८ ६२  
 ११ वर० १ ३२, ३ ३१, हेम० २ १२७  
 १२ बालाव्वरण्ये लुक् । हेम० १ ६६  
 १३ रि केवलस्य । हेम० १ १४० तथा ऋक्षे वा । हेम० २ १९-

रिञ् <sup>१</sup>	ऋजु
रिऊ <sup>२</sup>	ऋतु
रिड्ढी, रिद्धी <sup>३</sup>	ऋद्धि
रिण <sup>४</sup>	ऋणम्
रिसहो <sup>५</sup>	ऋषभ
रिसी <sup>६</sup>	ऋषि
लहुअ <sup>७</sup>	लघुकम्
लुक्को, लुगो <sup>८</sup>	रुगण
लोण, लअण <sup>९</sup>	लवणम्
लाहलो <sup>१०</sup>	लाहल
लागलो <sup>११</sup>	लाङ्गल
लट्टी <sup>१२</sup>	यष्टि
लिम्बो <sup>१३</sup>	निम्ब

- 
- १ 'ऋणज्वृषभ' हेम० १ १४१ २ वही ।  
 ३ रि केवलस्य । हेम० १४०  
 ४ 'ऋणज्वृषभ' हेम० १ १४१ ५ वही ।  
 ५ 'ऋणज्वृषभ' हेम० १ १४१  
 ७ लघुके लहो । हेम० २ १२२  
 ८ 'शक्तमुक्तदष्टरुगण' हेम० २ २  
 ९ न वा मयूख 'हेम० १ १७१  
 १ लाहललाङ्गललाङ्गले वार्देण । हेम० १ २५६ इससेण के अभाव में  
 ११ वही ।  
 १२ ष्ट्यानुष्ट्रेष्टासदष्टे । हेम० २ ३४ तथा यष्टया ल । हेम०  
 १ २४७  
 १३ निम्बनापिते लणह वा । हेम १ २३०

लाऊ<sup>१</sup>  
लाङ्गूलो<sup>२</sup>

अलाबु  
लाङ्गूल

ब एवं व

वार<sup>३</sup>  
वारह<sup>४</sup>  
बइल्लो<sup>५</sup>  
वम्हचेर, वम्भचेर, वम्हचरिअ<sup>६</sup>  
बहिणी<sup>७</sup>  
वम्महो<sup>८</sup>  
वडर, वज्ज<sup>९</sup>  
वुद्र, वद्र<sup>१०</sup>  
वोर<sup>११</sup>  
वोरी<sup>१२</sup>

द्वारम्  
द्वादश  
बलीवर्द  
ब्रह्मचर्यम्  
भगिनी  
मन्मथ  
वज्रम्  
वन्द्रम्  
वदरम्  
वदरी

१ वालाब्बरण्ये लुक् । हेम० १ ६६

२ लाहललाङ्गललाङ्गुले वादेर्ण । हेम० १ २५६ इससेण के अभाव में ।

३ उत्वाभाव । देखो—हेम० २ ११२ उत्त्वपक्ष में दुवार होता है

४ पशपाषाणो ह । हेम० १ २६२ तथा हेम० १ २१९

५ गोणादय । हेम० २ १७४

६ 'स्याङ्गव्य' हेम० २ १०७ हेम० २ ९३ हेम० २ ७४  
हेम० २ ६३

७ दुहितृभगिन्योर्धृआ—बहिण्यौ । हेम० २ १२६

८ मन्मथे व । हेम० १ २४२

९ शर्षतप्तवज्रे वा । हेम० २ १०५

१० वन्द्रखण्डिते णा वा । हेम० १ ५३

११ 'श्रीत्पूतरवदर' हेम० १ १७६

१२ वही

वणस्सई, वणप्फई <sup>१</sup>	वनस्पति
विलया, वणिदा <sup>२</sup>	वनिता
वरिअ <sup>३</sup>	वर्यम्
वेल्ली, वल्ली <sup>४</sup>	वल्ली
वसही <sup>५</sup>	वसति
वाहि, वाहिर <sup>६</sup>	वहिष्
वाउलो <sup>७</sup>	वातूल
वाणारसी <sup>८</sup>	वाराणसी
वाहो ( नेत्र जल मे ) } <sup>९</sup>	
वाप्पो ( धूम मे ) }	वाष्प
वीसा <sup>१०</sup>	विशति
वेइल्ल, विअइल्ल <sup>११</sup>	विचकिल्ल
विच्छड्डो <sup>१२</sup>	विच्छर्द

१ वृहस्पतिवनस्पत्यो सो वा । हेम २ ६९ तथा ष्पस्पयो फ ।

हे० २ ५३

२ वनिताया विलया । हेम २ १२८

३ 'स्याद्भव्यचैत्य हेम० २ १०७

४ 'वल्ल्युत्कर ' हेम० १ ५८

५ वितस्तिवसति ' हेम० १ २१४

६ वहिषो वाहि-वाहिरौ । हेम० २ १४०

७ उर्भू हनूमत्कण्डूयवातूले । हेम० १ १२६

८ 'करेणुवाराणस्यो ' हेम० २ ११६

९ वाष्पे द्वौऽश्रुणि । हेम० २ ७०

१० 'ईजिह्वा ' हेम० १ ९२ तथा हेम० १ २८

११ 'स्थविरविचकिला ' हेम० १ १६६

१२ 'समर्दवितर्दिविच्छर्द ' हेम० २ ३६



विअङ्गी <sup>१</sup>	वितद्धि
विअडढो <sup>२</sup>	विदग्ध
वहेडअडो <sup>३</sup>	विभीतक
वीसभो <sup>४</sup>	विश्रम्भ
वीसु <sup>५</sup>	विष्वक्
वीसत्थो <sup>६</sup>	विश्वस्त
विसढो, विसमो <sup>७</sup>	विषम
विसटडुल <sup>८</sup>	विसण्डुल
विहूणो, विहीणो <sup>९</sup>	विहीन
विडभलो, विहलो <sup>१०</sup>	विह्वल
वीरिअ <sup>११</sup>	वीर्यम्
वच्छो <sup>१२</sup>	वृक्ष
वट्ट ( ट्टो ) <sup>१३</sup>	वृत्तम्

- १ वही । २ 'दग्धविदग्ध' हेम० २ ४०  
 ३ 'एत्पीयूषापीडविभीतक' हेम० १ १०५, १ ८८, १ २०६  
 ४ सर्वत्र लक्षरामवन्दे । हेम० २ ७९ तथा हेम० १ ४३  
 ५ 'लुप्तयरव' हेम० १ ४३ वा स्वरे मध्व । हेम० १ २० तथा  
 'ध्वनि' हेम० १ ५२  
 ६ 'लुप्तयरव' हेम० १ ४३  
 ७ विषमे मो ढो वा । हेम० १ २४१  
 ८ ठोऽस्थिविसस्थुले । हेम० २ ३२  
 ९ ऊर्हीनविहीने वा । हेम० १ १०३  
 १० वा विह्वले वौ वध्व । हेम० २ ५८  
 ११ 'स्याद्भव्य' हेम० २ १०७  
 १२ रुक्ल आदेश का अभाव । देखो—हेम० २ १२७  
 १३ 'वृत्तप्रवृत्त' हेम० २ २९

वुडढो <sup>१</sup>	वृद्ध
वुड्ढी <sup>२</sup>	वृद्धि
वेण्ट, वोण्ट, विण्ट <sup>३</sup>	वृत्तम्
वुन्दारओ <sup>४</sup>	वृन्दारक
विञ्छुओ, विच्छुओ, विचुओ, } विञ्छिओ <sup>५</sup>	वृश्चिक
वसहो <sup>६</sup>	वृषभ
विट्ट, वुट्टे <sup>७</sup>	वृष्टम्
विट्टी, वुट्टी <sup>८</sup>	वृष्टि
वड्डुयर <sup>९</sup>	बृहत्तरम्
विह्फई, उह्फई, वह्फई } वहस्सई, उहस्सई } <sup>१०</sup>	बृहस्पति
वेल्ह <sup>११</sup>	वेणु
वेडिसो <sup>१२</sup>	वेतस
विअणा, वेअणा <sup>१३</sup>	वेदना

१ उट्ट्वादौ । हेम० १ १३१ तथा हेम २ ४०

२ वही । ३ इदेदोद्वन्ते । हेम० १ १३९

४ विञ्चत्तवृन्दारके वा । वुन्दारया, वन्दारया । हेम० १ १३२

५ वृश्चिके श्चेर्बुर्वा । हेम० २ १६ तथा हेम० १ १२८

६ वृषभे वा वा । हेम० १ १३३ तथा हेम० १ १२६

७ 'इदुतौ वृष्टवृष्टि' हेम० १ १३७ ८ वही ।

९ गोणादय । हेम० २ १७४

१० वा बृहस्पतौ । हेम० १ १३८, २ १३७, २ ६९ २ ५३

११ वेणौ णो वा । हेम० १ २०३

१२ इ स्वप्नादौ । हेम० १ ४६ इत्वे वेतसे । हेम० १ २०७

१३ 'एत इद्वा वेदना' हेम० १ १६६

वेरुलिञ्च <sup>१</sup>	वैदूर्यम् ( वैदूर्यम् )
वारण, वाञ्छरण <sup>२</sup>	व्याकरणम्
वावडो <sup>३</sup>	व्यापृत
विउरुसगो <sup>४</sup>	व्युत्सर्ग
वोसिरण <sup>५</sup>	व्युत्सर्जनम्
सअड <sup>६</sup>	शकटम्
सक्को, सत्तो <sup>७</sup>	शक्त
सणिअरो <sup>८</sup>	शनैश्चर
समरो <sup>९</sup>	शवर
सुवओ	शावक
सारग <sup>१</sup>	शाङ्गम्
सिडिल, सडिल <sup>११</sup>	शिथिलम्
सिरोवेअणा, सिरविअणा <sup>१२</sup>	शिरोवेदना
सीभरो, सीहरो, सीअरो <sup>१३</sup>	शीकर

१ वैदूर्यस्य वेरुलिञ्च । हेम० २ १३३

२ व्याकरणप्राकारागते कगो । हेम० १ २०८

३ प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६

४ गोणादय । हेम० २ १७४      ५ वही ।

६ कगचजतदप ' हेम० १ १७७ सयड । 'सटाशकट  
हेम० १ १९६

७ 'शक्तमुक्त ' हेम २ २

८ इत्सैनवशनेश्चरे । हेम० १ १४९ सणिच्छरोभी देखा जाता है ।

९ शवरे वो म हेम० १ २५८ १० शाङ्ग 'हेम० २ १००

११ शिथिलेङ्कुदे वा । हेम० १ ८९ तथा हेम० १ २१५

१२ ओतोद्वा योन्य ' हेम० १ १५६

१३ शीकरेभहौ वा । हेम० १ १८४

सिष्पी <sup>१</sup>	शुक्ति
सुन्न, सुक्क <sup>२</sup>	शुक्त, शुल्कम्
सिग, सग <sup>३</sup>	शृङ्गम्
सकल <sup>४</sup>	शृङ्खलम्
सोडीर <sup>५</sup>	शौण्डीर्यम्
सोरिच्च <sup>६</sup>	शौर्यम्
सा, साणो <sup>७</sup>	श्वा
सीआण, सुंसाण <sup>८</sup>	श्मशानम्
सामओ <sup>९</sup>	श्यामाक
सलाहा <sup>१०</sup>	श्लाघा
सेलिफो, सेलिम्हो <sup>११</sup>	श्लेषमा
सटा <sup>१२</sup>	सटा

१ मलिनोभयशुक्ति 'हेम० २ १३८

२ शुक्के ङो वा । हेम० २ ११

३ 'मसृणमृगाङ्कमृत्युशृङ्ग ' हेम० १ १३०

४ शृङ्खले ख क । हेम० १ १८९

५ 'ब्रह्मचर्यतूर्यसौन्दर्यशौण्डीर्य ' हेम० २ ६३

६ स्याद् भव्यचैत्यचौर्यसमेषु यात् । हेम० २ १०७

७ श्वन्शब्दस्य तु सा साणो इति प्रयोगौ भवत । देखो—ध्वनि  
विष्वचो रु । हेम० १ ५०

८ आर्षे श्मशानशब्दस्य सीआण सुसाण इत्यपि भवति । देखो—  
हेम० २ ८६

९ श्यामाके म । हेम० १ ७१

१० 'क्ष्माश्लाघा ' हेम० २ १०१,

११ लात् । हेम० २ १०६, सेफो, सिलिम्हो ० ५।

१२ सटाशकटकैटभे ड । हेम० १९६

सत्तरी <sup>१</sup>	सप्तति
सत्तरह <sup>२</sup>	सप्तदश
समत्थो <sup>३</sup>	समर्थ
समड्डो <sup>४</sup>	समर्द्ध
समत्त <sup>५</sup>	समस्तम्
सररूह, सरोरूह <sup>६</sup>	सरोरूहम्
सङ्गिओ <sup>७</sup>	सर्वाङ्गीण
सक्खिणो <sup>८</sup>	साक्षी <sup>९</sup>
सालवाहनो <sup>१०</sup>	मातवाहन
सङ्गस <sup>११</sup>	साध्वसम्
सामच्छ, सामत्थ <sup>१२</sup>	सामर्थ्यम्
सुण्हा <sup>१३</sup>	सास्ना
सीहो, सिघो <sup>१४</sup>	सिंह

- 
- १ सप्ततौ र । हेम० १ २१०  
 २ सख्यागद्गदे र । हेम० १ २१९      ३ हेम० २ ७९  
 ४ 'समर्द्धीवर्दि' हेम० २ ३६  
 ५ असमस्तस्तम्ब इति किम् ? समत्तो, तबो । देखो—हेम० २ ४५  
 ६ 'श्रोतोद्वान्योन्य' हेम० १ १५६  
 ७ सर्वाङ्गादौनस्येक । हेम० २ १५१  
 ८ गोणादय । हेम० २ १७४  
 ९ अतसीसातवाहने ल । हेम० १ २११  
 १० साध्वसध्यह्या भ । हेम० २ २६  
 ११ सामर्थ्यात्सुकोत्सवे वा । हेम० २ २२  
 १२ उ सास्नास्तावके । हेम० १ ७५  
 १३ मासादेर्वा । हेम० १ २९, १ ९०, तथा १ २६४

सिहदत्तो <sup>१</sup>	सिंहदत्त
सिहराओ <sup>२</sup>	सिहराज
सोमालो, सुडमालो, सुकुमालो <sup>३</sup>	सुकुमार
सुकड ( आर्ष मे ) <sup>४</sup>	सुकृतम
सूहवो, सुहवो <sup>५</sup>	सुभग
सण्ह, सण्ह, सुहम ( आर्ष मे ) <sup>६</sup>	सूक्ष्म
सूरिओ <sup>७</sup>	सूर्य
सूआलो <sup>८</sup>	सोच्छ्रास
सिधव <sup>९</sup>	सैन्धवम्
सिण्ण, सेण्ण <sup>१०</sup>	सैन्यम्
सणिद्ध, सिणिद्ध <sup>११</sup>	स्निग्धम्
सुणहा सुसा <sup>१२</sup>	स्नुषा
सिआ <sup>१३</sup>	स्यात्

१ बहुलाधिकारात्कचिन्न भवति । देखो—हेम० १ ९२

२ वही । ३ 'न वा मयूख ' हेम १ १७१

४ प्रत्यादौ ड । हेम० १ २०६

५ 'ऊत्वे दुर्भगसुभगे ' हेम० १ १९२ तथा हेम० १ ११३

६ अदूत सूक्ष्मे वा । हेम० १ ११८ तथा २ ७५

७ 'स्याद्भव्यचैत्य ' हेम० २ १०७

८ ऊत्सोच्छ्रासे । हेम० १ १५७

९ इत्सैन्धवशनैश्चरे । हेम० १ १४९

१० सैन्ये वा । हेम० १ १५० तथा अइदँत्यादौ च । हेम० १ १२१

साइच्च भी होता है ।

११ स्निग्धे वादितौ । हेम० २ १०९

१२ स्नुषाया ण्हो न वा । हेम० १ २६१

१३ स्याद् भव्य ' हेम० २ १०७

सिविणो, सिमिणो <sup>१</sup>	स्वप्न
हगुमन्तो <sup>२</sup>	हनूमान्
हीरो, हरो <sup>३</sup>	हर
हडडई, इरडई <sup>४</sup>	हरीतकी
हलिआरो, हरिआलो <sup>५</sup>	हरिताल
हलदी, हलिदी, हलहा <sup>६</sup>	हरिद्रा
हरिअदो <sup>७</sup>	हरिश्चन्द्र
हूणो, हीणो <sup>८</sup>	हीन
हिअ, हिअअ <sup>९</sup>	हृदयम्

—

- 
- १ इ स्वप्नादौ । हेम० १ ४८, हेम० १ २५९ तथा स्वप्ने नात्  
हेम० २ १०
- २ उभ्रूहनूमत्कण्डूयवात्त्वे । हेम० १२१ तथा हेम० २ १५९
- ३ ईरे वा । हेम० १ ५१
- ४ हरीतक्यामीतोऽत् । हेम० १ ९९
- ५ 'हरिताले ' हेम० २ १२१
- ६ हरिद्राया विकल्प इत्यन्ये । देखो 'पथिपृथिवी ' हेम० १ ८८
- ७ श्रो हरिश्चन्द्रे हेम० २ ८७
- ८ ऊर्हीनविहीने वा । हेम० १ १०३
- ९ इकृपादौ । हेम० १ १२८ तथा किसलयकालायसहृदये य ।  
हेम० १ २९९

## अष्टम अध्याय

### [ शौरसेनी ]

( १ ) 'प्रकृति सस्कृतम्'<sup>१</sup> इस उक्ति के अनुसार शौरसेनी में जितने भी शब्द आते हैं, उनकी प्रकृति सस्कृत है ।

( २ ) शौरसेनी में अनादि में वर्तमान असयुक्त त का द आदेश होता है । जैसे — मारुदिणा मन्तिदो ( त का द ), एदाहि, एदाओ ( एतस्मात् )

विशेष—( क ) संयुक्त होने के कारण अज्जउत्त और सउन्तले में त का द नहीं हुआ ।

( ख ) आदि में होने के कारण 'तवा करेध जधा तस्स राइणो अणुकम्पणीआ भोमि' में तथा और तस्स के तकारों का द नहीं हुआ ।

( ३ ) लक्ष्य के अनुरोध से शौरसेनी में वर्णान्तर के अघ ( बाद में ) वर्तमान त का द होता है । जैसे — महन्दो, निच्चिन्दो, अन्दे उर ( महान्त , निच्चिन्त , अन्त पुरम् ) ।

विशेष—उक्त नियम सयुक्त त के विषय में काचित्क है ।

( ४ ) शौरसेनी में तावत् शब्द के आदि तकार का दकार विकल्प से होता है । जैसे — दाव, ताव ( तावत् ) ।

( ५ ) शौरसेनी में इन्नन्त शब्द से आमन्त्रण ( सम्बोधन की प्रथमा विभक्ति ) के सु के पर में रहने पर पूर्व के 'इब्' के



न का आकार विकल्प से होता है। जैसे —भो कञ्चुइआ ( भो कञ्चुकिन् ), सुहिआ ( सुखिन् ) अन्यत्र भो तवस्सि ( भो तपस्विन् ), भो मणस्सि ( भो मनस्विन् ) ।

( ६ ) शौरसेनी में आमन्त्रणवाले सु के पर में रहने पर पूर्ववाले नकारान्त शब्द के न के स्थान में विकल्प से म होता है। जैसे —भो राय ( भो राजन् ), भो विअयवम्म ( भो विजयवर्मन् ) अन्यत्र भयव हुदवह ( भगवन् हुतवृह ) होता है ।

✓ ( ७ ) शौरसेनी में भवत् और भगवत् शब्दों से सु विभक्ति के पर में रहने पर पूर्व के नकार का मकार होता है। जैसे — एदु भव, समणो भगव महावीरे । पज्जलितो भयव हुदासणो ।

✓ ( ८ ) शौरसेनी में र्य के स्थान में य्य आदेश विकल्प से होता है। जैसे —अय्यउत्त पय्याकुली कदम्हि ( आर्यपुत्र पर्याकुलीकृतास्मि ), सुय्यो ( सूर्य ) पन्न में अज्जो ( आर्य ), पजाउत्तो ( पर्याकुल ), कज्जपरवसो ( कार्यपरवश ) ।

\* ( ९ ) शौरसेनी में थ के स्थान में ध विकल्प से होता है। जैसे —णाधो, णाहो, कध, कह, राजपधो, राजपहो ( नाथ, कथ, राजपथ ) ।

✓ ( १० ) शौरसेनी में 'इह' और 'हच्' आदेश के हकार के स्थान में ध विकल्प से होता है। जैसे —इध ( इह ), होध ( होह = भवथ ), परित्तायध ( परित्तायह = परित्रायध्वे ) ।

✓ ( ११ ) शौरसेनी में भ् धातु के हकार का भ आदेश विकल्प से होता है। जैसे —भोदि, होदि ( भवति ) ।

---

१ मध्यम पुरुष के बहुवचन में इत्या और ह अथवा ह्य होते हैं ।  
दे इम पुस्तक के छठे अध्याय के वर्तमानकाल के प्रत्ययों में मध्यम पुरुष तथा हेम० ३ १४३

✓ ( १२ ) शौरसेनी में पूर्व शब्द का 'पुरव' यह आदेश विकल्प से होता है। जैसे —अपुरव नाड्य, अपुरवागद (अपूर्व नाट्यम् अपूर्वागतम्), पक्ष में अपुव्व पद, अपुव्वागद (अपूर्व पदम्, अपूर्वागतम्)।

✓ ( १३ ) शौरसेनी में त्त्वा प्रत्यय के स्थान में इप्प और दूण ये आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे —भविय, भोदूण, हविय, होदूण, पढिय, प्ढिदूण, रमिय, रन्दूण। पक्ष में—भोत्ता, होत्ता, पढित्ता, रन्ता।

विशेष—वररुचि ( १२ ६ ) के अनुसार केवल इय होता है।

( १४ ) शौरसेनी में कृ और गम वातुओ से पर में आनेवाले त्त्वा प्रत्यय के स्थान में अडुअ ( किसी किसी पुस्तक के अनुसार अदुअ ) आदेश विकल्प से होता है। और धातु के टि का लोप हो जाता है। जैसे —कडुअ, गडुअ। पक्ष में—करिय, करिदूण, गच्छिय, गच्छिदूण।

विशेष—वररुचि ( १२. १० ) के अनुसार दुअ होता है।

✓ ( १५ ) शौरसेनी में त्यादि के आदेश<sup>१</sup> इ और ए के स्थान में दि आदेश होता है। जैसे —नेदि, देदि, भोदि, होदि।

✓ ( १६ ) अकार से पर में यदि नियम १५ वाले इ और ए हो तो उनके स्थान में दे और दि ये दोनो आदेश होते हैं। जैसे —अच्छदे, अन्छदि, गच्छदे, गच्छदि, रमदे, रमदि, किज्जदे, किज्जदि।

१ देखो—इसी पुस्तक के छोटे अध्याय के वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के एकवचन तथा इसी अध्याय का नियम ४।

( १७ ) शौरसेनी मे भविष्यत् अर्थ मे विहित प्रत्यय के पर मे रहने पर स्सि होता है । जैसे —भविस्सिदि करिस्सिदि, गच्छिस्सिदि ।

विशेष—वातु और प्रत्ययो के बीच मे आने के कारण 'स्सि' विकरण है ।

( १८ ) शौरसेनी मे अत् से पर मे आनेवाले डसि के स्थान मे आदो और आदु ये आदेश होते ह और शब्द ड्रे टि ( अ ) का लोप होता है । जैसे —दूराडो, दूरादु ( दूरात् ) ।

( १९ ) शौरसेनी मे इदानीम् के स्थान मे दाणि यह आदेश होता है । जैसे —अनन्तर करणीय दाणि आणोवदु अय्यो ।

विशेष—उक्त नियम साधारण प्राकृत मे भी लागू होता देखा जाता है ।

( २० ) शौरसेनी मे तस्मात् के स्थान मे ता आदेश होता है । जैसे —ता जाव पविसामि । ता अल एदिणा माणेण ।

( २१ ) शौरसेनी मे इत् और एत् के पर मे रहने पर अन्त्य मकार के आगे णकार का आगम विकल्प से हाता है । इकार के पर मे जैसे —जुत्तणिम, जुत्तमिम, सरिसणिम, सरिसमिम, एकार के पर मे जैसे —किणोद, किमेद, एण-णोद, एवमेद ।

( २२ ) शौरसेनी मे एव के अर्थ मे य्येव यह निपात प्रयुक्त होता है । जैसे —मम य्येव बम्भणस्स, सो य्येव एसो ।

( २३ ) चेटी के आह्वान अर्थ मे शौरसेनी मे हञ्जे इस निपात का प्रयोग किया जाता है । जैसे —हञ्जे चदुरिके ।

( २४ ) विस्मय और निर्वेद अर्थो मे शौरसेनी मे हीमाणहे इस निपात का प्रयोग किया जाता है । विस्मय में जैसे :—

हीमाणहे जीवन्तवच्छा मे जणणी । निर्वेद मे जैसे — हीमा-  
णहे पलिस्सन्ता हरो एदेण निपविधिणो दुव्ववसिदेण ।

✓ ( २५ ) शौरसेनी मे ननु के अर्थ मे ण यह निपात प्रयुक्त होता है । जैसे — ण अफलोदया, ण अय्यमिस्सेहि पुढम ग्येव आणत्त, ण भव मे अगगदो चलदि ।

विशेष—आर्ष मे ण का वाक्यालङ्कार मे भी प्रयोग होता है । जैसे — नमोत्थु ण जयाण ।

( २६ ) शौरसेनी मे हर्ष प्रकट करने के लिए अम्महे इस निपात का प्रयोग किया जाता है । जैसे — अम्महे एआए सुम्मिलाए सुपलिगद्धिदो भव ।

( २७ ) शौरसेनी मे विदूषक के हर्ष द्योतन मे 'हीही' इस निपात का प्रयोग किया जाता है । जैसे — हीही भो, सपन्ना मणोरधा पियवयस्सस्स ।

✓ ( २८ ) शौरसेनी मे व्यापृत शब्द के त का तथा कही कही पुत्र शब्द के त का भी ड होता है । जैसे — वावडो, पुडो पुत्तो ( व्यापृत, पुत्र ) ।

✓ ( २९ ) शौरसेनी मे गृद्ध जैसे शब्दों के ऋकार का इकार होता है । जैसे — गिद्धो ( गृध्र ) ।

✓ ( ३० ) ब्रह्मण्य, विज्ञ, यज्ञ, और कन्या शब्दों के ण्य, ज्ञ और न्य के स्थान मे झ आदेश विकल्प से होता है । कि तु पैशाची मे यही कार्य नित्य ही होता है । जैसे — ब्रह्मञ्जो, विञ्जो, जञ्जो और कञ्जा । पक्ष मे बह्मण्णो, विण्णो, कण्णा ( ब्रह्मण्य, विज्ञ, कन्या ) ।

✓ ( ३१ ) शौरसेनी मे सर्वज्ञ और इङ्गितज्ञ शब्दों के अन्त्य ज्ञ के स्थान मे ण होता है । जैसे — सब्वण्णो, इङ्गिअण्णो ( सर्वज्ञ, इङ्गितज्ञ ) ।

( ३२ ) शौरसेनी मे नपुसक लिङ्ग मे वर्तमान शब्दो से पर मे आनेवाले जस् और शस् के स्थान मे णि आदेश और पूर्व स्वर का दीर्घ भी होता है । जैसे —वणाणि, घणाणि ( वनानि, घनानि ) ।

( ३३ ) शौरसेनी मे तिङ् प्रत्ययों के पर मे रहने पर भूधातु के स्थान मे भो आदेश होता है । जैसे —भोमि ।

**विशेष—**लृट् ( अर्थात् भविष्यत् काल के तिङ् ) के पर मे रहने पर उक्त नियम लागू नही होता । जैसे —भविस्सिदि ।

( ३४ ) शौरसेनी मे तिङ् के पर मे रहने पर दा धातु के स्थान मे दे आदेश होता है और केवल लृट् के पर मे रहने पर दइस्स आदेश । सामान्यत तिङ् मे जैसे —देमि । लृट् के पर मे रहने पर जैसे —दइस्स ।

( ३५ ) शौरसेनी मे कृञ् धातु के स्थान मे कर आदेश होता है । जैसे —करेमि ।

( ३६ ) शौरसेनी मे तिङ् के पर मे रहने पर स्था धातु के स्थान मे चिट् आदेश होता है । जैसे —चिट्दि ।

( ३७ ) शौरसेनी मे तिङ् के पर मे रहने पर स्मृ, दृश और अस धातुओ के स्थान मे क्रमश सुमर, पेक्ख और अच्छ् आदेश होते है । जैसे —सुमरदि, पेक्खदि, अच्छन्ति ( स्मरति, पश्यति, सन्ति ) ।

**विशेष—**( क ) तिप् के साथ अस धातु के सकार के स्थान मे त्थि आदेश होता है । अत्थि । जैसे —पससिद् पात्थि मे वाआ-विहवो ।

( ख ) भविष्यत् काल मे मिप्-सहित अस के स्थान मे विकल्प से स्स आदेश होता है । पक्ष मे धातु के स्वर का दीर्घत्व भी होता है । स्स, आस्स ।

( ३८ ) शौरसेनी मे स्त्री शब्द के स्थान मे 'इत्थी' आदेश होता है। जैसे —इत्थी ( स्त्री )।

( ३९ ) शौरसेनी मे इत् के स्थान मे विअ आदेश होता है। जैसे —विअ।

( ४० ) जस् सहित अस्मद् के स्थान मे वअ और अम्हे ये दोनो रूप शौरसेनी मे होते है। जैसे —वअ और अम्हे ( वयम् )।

( ४१ ) शौरसेनी मे सर्वनाम शब्दो से पर मे आनेवाली ( सप्तमी एकवचन की ) छि विभक्ति के स्थान मे सित्वा आदेश होता है। जैसे —सव्वसित्वा, इदरसित्वा (सर्वस्मिन्, इतरस्मिन्)।

( ४२ ) शौरसेनी से भावकर्म और कर्ता अर्थो मे धातु से परस्मैपद के ही प्रत्यय होते है। भाव मे जैसे —कि दाणि दासीएपुत्ता ? दुभित्त्वरुढरङ्क विअ उद्धक सासाअसि एसा सा सेत्ति। कर्ता मे जैसे —अज्ज वन्दामि। कर्म मे जैसे —अदो जेव कामीअदि।

( ४३ ) आश्चर्य शब्द का अच्चरिअ रूप शौरसेनी मे होता है। जैसे —अहह, अच्चरिअ अच्चरिअ।

( ४४ ) शेष शब्दो के साधन प्राकृत अथवा महाराष्ट्री के अनुसार किये जाते है।

प्राकृतसर्वस्व के अनुसार शौरसेनी के शब्द —

शौरसेनी	संस्कृत	विशेष निर्देश्य
अउञ्ज	अपूर्वम्	
अगिम्मि	अग्रौ	
अङ्गारो	अङ्गार	इत् का अभाव
अहिमण्णू	अभिमन्यु	ञ्ज का अभाव
अव्वह्णण	अब्रह्मण्यम्	
अव्वह्णज्ज ( झ )		

अअ रुक्खो	अय वृक्ष	
अमु जणो	असौ जन	
अमु वहू	असौ वधू	
अमु वण	अदो वनम्	
अदो कारणादो	एतस्मात् ( अमुष्मात् )	
	कारणात्	
अह	अहम्	
अम्हे	वय, अस्	
अम्ह, अम्हाण	अस्माकम्	
इदो	इत	
इअ बाला	इय बाला	
इण धण	इद् धनम्	
इढ वण	इद् वनम्	
इङ्गिअज्जो ( ज्जो )	इङ्गितञ्ज	
ईदिस	ईदृशम्	एत् का अभाव
उल्लहलो	उल्लखल	ओत् का अभाव
उवरि	उपरि	अत् का अभाव
उत्थिदो	उत्थित	ठ का अभाव
एसो जणो	एष जन	
कध	कथम्	
कत्थ, कस्सि, कहि	कस्मिन्	म्मि नहीं हुआ
कण्णआ	कन्यका	
कज्ज (ज्ज) आ		
कबन्धो	कबन्ध	
किंसुओ	किशुक	ओत्व का अभाव
किरातो	किरात	च का अभाव

क्रीदिस	क्रीदशम्	एत् का अभाव
कुमारी	कुमारी	ह्रस्व का अभाव
कुदो	कुत	
कुम्हण्डो	कुम्माण्ड	ह का अभाव
केसुओ	किशुक	ओत्व का अभाव
कोदूहल	कौतूहलम्	द्वित्व का अभाव
रणो	क्षण	छ का अभाव
खीर	क्षीरम्	छ का अभाव
गद्दहो	गर्दभ	उ का अभाव
चउट्टी	चतुर्थी	ओत् का अभाव
चउद्दही	चतुर्दशी	ओत् का अभाव
चिण्ह	चिह्नम्	न्ध का अभाव
जधा	यथा	ह्रस्व का अभाव
जण्णसेणो	यज्ञसेन	
जादिस	यादशम्	
जुहुट्टिरो	युधिष्ठिर	अत् का अभाव
दुष्कमाणो	दह्यमान	
णईओ	नद्य	
राण	नूनम्	
तथ, तहि, तस्सि	तस्मिन्	म्भि का अभाव
तए	त्वया, त्वयि	
तधा	तथा	ह्रस्व का अभाव
तादिस	तादशम्	
तुण्ड	तुण्डम्	ओत्व का अभाव
तुम	त्वं अथवा त्वाम्	
तुम्हे	यूयम्, युष्मान्	
तुम्हेहि	युष्माभि	



तुम्हेहिन्तो	युष्मभ्यम्	
<u>तुम्हाण</u>	युष्माकम्	
तुम्हेसु	युष्मासु	
तुमोदा	त्वत्	
तुम्ह, ते	तव	
थूल	स्थूलम्	द्वित्व का अभाव
दस, दह	दश	
दसरहो	दशरथ	
दे	तव	
देअरो	देवर	इत् का अभाव
देठ्व	दैवम्	अइ का अभाव
नइए	{ नद्या, नद्या , नद्या , नद्याम्	
पओट्टो	प्रकोष्ठ	षत्व का अभाव
पासाणो	पाषाण	ष, ह का अभाव
पावो	पाप	
पिण्ड	पिण्डम्	एत्व का अभाव
पिदणा	पृतना	
पुरुसो	पुरुष	इत्व का अभाव
पोक्खर	पुष्करम्	
पोक्खरणी	पुष्करिणी	
फोडओ	स्फोटक	ख्र का अभाव
भिन्दिवालो	} भिन्दिपाल	
भिण्डिवालो		
भागुओ, भाणओ	भानव	
मए	मया	
मस	मासम्	

मइ	मयि	
मऊरो	मयूर	ओत् का अभाव
मत्	मत्	
मह, मम	मम	
महूसो	मधूक	ओत् का अभाव
मत्तो, ममादो	मत्	
मादर	मातरम्	
मालाओ	माला	
मिओ	मृत	
मे	माम्	
मे	मम	
मोत्ती	मुक्ता	
रुक्खो	वृत्त	ओत् का अभाव
लवण	लवणम्	ओत् का अभाव
लावण्य	लावण्यम्	ओत् का अभाव
रअर	वदरम्	ओत् का अभाव
रुक्फो	वाष्प	
वअ	वयम्	
वहुए	{ वध्वा, वध्वा , वध्वा , वध्वाम्	
वहूओ	वध्व	
वालाए	{ वालया, बालाया , बालया , बालायाम्	
वाउम्मि	वायौ	
विहण्फदी	बृहस्पति	भ आदिका अभाव
वेअणा	वेदना	इत् का अभाव
वेदसो	वेतस	इत् का अभाव

वो	व ( युष्मान् , युष्माकम् )	
महल	सफलम्	
मरिक्ख	सदृक्षम्	छ का अभाव
सम्महो	सम्मर्द	उ का अभाव

### प्राकृत सर्वस्व के अनुसार शौरसेनी में तिङन्त रूपों के नियम

- (४५) ( क ) धातुओं से परस्मैपद ही होते हैं ।  
 ( र ) तीनों कालों में प्रायः लट् लकार ही होता है ।  
 ( ग ) ल्यादि के तकार का ढकार होता है ।  
 ( घ ) बहुवचन में तकार का घकार होता है ।  
 ( ङ ) उत्तम पुरुष में म्ह होता है ।  
 ( च ) उत्तम पुरुष में मिप् के साथ स्सम् ही होता है ।  
 ( छ ) च, ज्ञ, हा, सोच्छ वोच्छ ये सब नहीं होते हैं ।

### प्राकृतमर्वस्व के अनुसार शौरसेनी धातु

संस्कृत	शौरसेनी	सिद्ध क्रियापद
भू	भो और हो	भोदि, होदि, क्त में भूद
दृश	पेच्छ <sup>१</sup>	पेच्छदि
ब्रू	बुच्च	बुच्चदि
कथ	कध	कधेदि
घ्रा	जिग्घ	जिग्घदि
भा	भाअ	भाअदि
मृज	फुस	फुसदि
घूर्ण	घुम्म	घुम्मदि

१ हेमचन्द्र के अनुसार पेक्ख आदेश होता है । देखो अष्टम अध्याय का नियम ३७ ।

ष्टु	थुण	थुणदि
भी	भा	भादि
मृज	पस	पसदि
चर्च	चव्व	चव्वदि
प्रह	गेण्ड	गेण्डदि
गृह्य	गेड्भ, घेप्प	गेड्भदि, घेप्पदि
शक	सक्कुण, सक्क	सक्कुणादि, सक्कादि
म्लै	मिआअ	मिआअदि
उद् + स्था	उत्थ	उत्थेदि
स्वप	सुअ	सुअदि
शीळ	सुआ	सुआदि
ऋध	राव	रोवदि
रुत्	रोद	रोददि
मस्ज	वुड्ढु	वुड्ढुदि
दुह्य	दुहीअ	दुहीअदि
उह्य	वहीअ	वहीअदि
लिह्य	लिहीअ	लिहीअदि

प्रकृतसर्वस्व के अनुसार नीचे लिखे शब्दों को भा शौरसेनी में जानना चाहिये ।

भिफफो ( भीम ), सत्तुग्घो ( शत्रुघ्न ), जेत्तिक ( यावत् , तेत्तिक ( तावत् ), एत्तिक ( एतावत् ), भट्टा भर्ता ) धूदा, दुाहदिआ ( दुहिता ), इत्थी ( स्त्री ), भादा, भदुओ ( भ्राता, भ्रातर ), जामादा, जामादुओ ( जामाता, जामातर ) ।

द्राक् अथ मे दउत्ति, निश्चय अर्थ ग क्खु और खु, इव के अर्थ मे व्व, एव के अर्थ मे ज्जव और जेव तथा ननु के अर्थ मे ण प्रयुक्त होते हैं ।

## नवम अध्याय

### [ मागधी ]

( १ ) प्रकृति शौरसेनी ( वर० ११ २ ) इस वररुचि सूत्र के अनुसार मागधी की प्रकृति शौरसेनी मानी गई है। साथ ही पाधारण प्राकृत के शब्द भी मागधी के मूल माने जाते हैं।

( २ ) मागधी में अइन्द पुल्लिङ्ग शब्दों का प्रथमा के एक पचन में ओकारान्त रूप न होकर एकारान्त रूप होता है। जैसे — एशे मेजे, एशे पुल्लिशे ( एष मेप, एष पुरुष ), करोमि भन्ते ( करोमि भडन्त )।

( ३ ) मागधी में रफ के स्थान में लकार और वन्त्य सकार के स्थान में तालव्य शकार होते हैं। रफ का जैसे :— नने, कने ( नर कर ), म का श जैसे :— हशे ( ह्स ), दोनो का जैसे :— शाजने, पुल्लिशे ( सारन, पुरुष )।

( ४ ) मागधी में यन् सकार और षकार ( अलग-अलग ) संयुक्त हो तो उनके स्थान में स होता है। ग्रीष्म शब्द में उक्त आदेश नहीं होता। संयुक्त सकार में जैसे :— प्रस्वलति हस्ती ( प्रस्वलति हस्ती ) बुहस्पदी ( बृहस्पति ) मस्कली ( मस्करी ), प्रिरपये ( प्रिस्मय ), संयुक्त षकार में जैसे :— शुक् बालु ( शुक्कारु ), कस्ट कष्टम्, विस्नु ( विष्णुम् ), उस्मा ( उस्मा ), निस्फल ( निष्फलम् ) धनुस्सपड ( धनुस्सपडम् )

**विशेष—**( क ) उक्त नियम जहाँ लगता है, वहाँ सयोग के आगे-पीछे के वर्णों का लोप नहीं होता ।

( २ ) ग्रीष्म शब्द में उक्त नियम के लागू नहीं होने से गिम्हवाशले ( ग्रीष्मवासर ) होता है ।

( ५ ) द्विरुक्त ट ( ट्ट ) और षकार से आक्रान्त ( युक् ) ठकार के स्थान में मागधी में त्त् आदेश होता है । ट्ट में जैसे — पस्टे ( पट्ट ), भस्टालिका ( भट्टारिका ) भम्बूणी ( भट्टिनी ), ष्ट में जैसे :—शुस्टु क्त् ( सुट्टु कृतम् ) करटागाल ( कोष्ठागारम् ) ।

( ६ ) स्थ और र्थ इन दोनों के स्थान में मागधी में सकार से सयुक्त त्त्कार होता है । स्थ में जैसे :—उवस्तित्ते ( उपरिथित ), सुस्तिदं ( सुस्थित ), र्थ में जैसे :—अस्तवव ( अर्थवती ), शग्गवाहे ( साथवाह ) ।

( ७ ) मागधी में ज, घ और य के स्थान में य आदेश होता है । ज का जैसे —याप्ते ( जनपद ), अय्युणे ( अर्जुन ), दुय्यणे ( दुर्जन ), गय्यदि ( गर्जति ), घ का जैसे :—मय्य ( मद्यम् ), अय्य किल विग्याहने आगते ( अद्य किल विद्याह् आगत । ), य का जैसे :—यात्ति ( याति ) ।

**विशेष—**इसी पुस्तक के दूसरे अध्याय के चौदहवें नियम के बाधनार्थ य के स्थान में पुन य का विधान किया जाता है ।

( ८ ) मागधी में न्य, ण्य झ और ङ्ग इन मयुक्ताक्षरो के

स्थान में द्विरुक्त व्यंज्य होता है। न्य का जैसे :—अहिमञ्जु-  
कुमाले, ( अभिमन्युकुमार ) कञ्जकापलग ( कन्यकापरणम् )  
ण्य का जैसे —अबम्हञ्ज ( अब्रह्मण्यम् ), पुञ्जाह ( पुण्या-  
ह ) झ का जैसे —अञ्जाविशाले ( प्रज्ञाविशाल ) शव्यञ्जे  
( सर्ज ) अवञ्जा ( अपञ्जा ), झ का जैसे —अञ्जली  
( अञ्जलि ), वणञ्जए ( धनञ्जय ), पञ्जने ( पञ्जर )।

( ६ ) मागधी में ब्रज धातु के जकार का ङ्ज आदेश होता है। जैसे —वञ्जदि ( ब्रजति )।

**विशेष**—उक्त नियम उन्नी अध्याय के मातृये नियम का अपवाद है। अन्यथा ग आदेश हो जाता है।

( १० ) मागधी में अनादि में वर्तमान छ के स्थान में शकार से सयुक्त चकार श्र होता है। जैसे —गश्च, गश्च ( गच्छ, गच्छ ), उश्चदि ( उच्छलति ), पिश्चिले ( पिच्छिल ), तिरिश्चि पेस्कदि ( तिरिच्छि पेन्द्रइ=तिर्यक् प्रेक्षते )।

( ११ ) मागधी में अनादि में वर्तमान क्ष के स्थान में जिह्वामूलीय ङ्क आदेश होता है। जैसे —यङ्के ( यक्ष ), लङ्कणे ( रक्षसे )।

( १२ ) मागधी में प्रेक्ष और आचक्ष के क्ष के स्थान में स्क आदेश होता है। जैसे —पेस्कदि ( प्रेक्षते ), आचस्कदि ( आचक्षते )।

**विशेष**—पूय नियम (ग्यागह्ये) का यह नियम अपवाद है

१ देखो—अगला नियम (१२)।

२ प्राकृत पकाश के अनुसार स्क आदेश होकर यस्के और लस्करी रूप होते हैं। द०—वर० ११ ८

( १३ ) मागधी में स्था वातु के तिष्ठ के स्थान में चिष्ट आदेश होता है। जैसे —चिष्टि ( तिष्ठति ) ।

**विशेष**—किसी-किसी पुस्तक के अनुसार चिष्ट आदेश होकर चिष्टि रूप भी होता है ।

( १४ ) मागधी में अवर्ण से पर में आनेवाले ङस् ( षष्ठी के एकवचन ) के स्थान में आह आदेश विकल्प से होता है । आह के पूर्ववर्ती टि का लोप होता है । जैसे —हगे न ईदिशाह कम्महाह काली ( अह न ईदशस्य कर्मण कारी ) पक्ष में—भीमशेणस्स पञ्चादे हिण्डीअत्ति ।

( १५ ) मागधी में अवर्ण में पर में विद्यमान आम के स्थान में आह आदेश विकल्प से होता है और पूर्व के टि का लोप हो जाता है । जैसे —जाह ( येषाम् ), पक्ष में—जाण ( येषाम् ) ।

( १६ ) मागधी में अहम् आर वयम् के स्थान में हगे आदेश होता है । जैसे —हगे शक्कावदालत्तिस्तणिवाशी वीवले ( अह शक्कावतारतीर्थनिवासी धीवर ) ।

**विशेष**—प्राकृतप्रकाश के अनुसार अह के स्थान पर हके और अहके भी होते हैं ।

प्राकृत-प्रकाश के अनुसार मागधी के विशेष शब्द ।

संस्कृत	मागधी	प्रा प्र अ	सूत्र
माष	माशे	११	३
विलास	विलाशे	११	३
जायते	यायदे	११	४
परिचय	पलिचये	११	५
गृहीतच्छल	गहिदच्छले	११	५



विजल	वियले	११	५
निर्भर	णिञ्भले	११	५
हृदये	हृडके	११	६
आदर	आलले		
कार्यम्	कर्ये	११	७
दुजन	दुय्यणे	११	७
राक्षस	लस्कशे	११	८
दक्ष	न्म्के	११	८
अहर्	हके अहके, हगे	११	९
एष राजा	एशि लाभा	११	१०
एष पुरुष	एशे पुलिशे	११	१०
हमित	हशिडु, हरित्ति, हशित्	११	११
पुरुषस्य	पुलिशाह, पु तशश	११	१२
तिष्ठति	चिप्रदि	११	१५
कृत	कडे	११	१६
मृत	मडे	११	१६
गत	गडे	११	१६
सोढ्वा	सहिदाणि	११	१६
कृत्वा	कारिदाणि		
श्याल	शिआले, शिआलके	११	१६



## दशम अध्याय

### ✓ [ पैशाची ]

( १ ) पैशाची की प्रकृति शौरसेनी है ।

( २ ) पैशाची में झ के स्थान में ङ्व होता है । जैसे — पङ्वा ( प्रज्ञा ) सङ्वा ( सज्ञा ), सव्वङ्गो ( वर्ग ), ङ्वान ( ज्ञानम् ), विङ्गान ( विज्ञानम् ) ।

✓ ( ३ ) राजन् शब्द के रूपों में जहाँ जहाँ ङ रहता है उस झ के स्थान में चिञ् अदेश विकल्प से होता है । जैसे — राचिञ्वा लपित, रङ्वा लपित ( राज्ञा लपितम् ), राचिञ्जो वन रङ्गो धन ( राज्ञो धनम् ) ।

✓ ( ४ ) पैशाची में न्य आर ण्य के स्थान में ङ्व आदेश होता है । जैसे — ङ्वनका अभिङ्ग ( कन्यका अभि-मन्युः ) । पुङ्गवस्मो पुङ्गवाह ( पुण्यकर्म पुण्याहम् ) ।

✓ ( ५ ) पैशाची में णकार का नकार हो जाता है । जैसे — गुनगनयुत्तो ( गुणगणयुक्त ), गुनेन ( गुणेन ) ।

✓ ( ६ ) पैशाची में तकार और दकार के स्थान में तकार हो जाता है । जैसे — भगवती, पव्वती ( भगवती, पार्वती ) । मतनपरवसो ( मदनपरवश ), सतन ( सदनम् ), तामोतरो ( दामोदर ), होतु ( होदु शौ० ) ।

✓ ( ७ ) पैशाची में लकार के स्थान में लकार हो जाता है । जैसे — सळिळ, कमळ ( सलिल कमलम् ) ।

✓(८) पेशाची मे श ओर ष के स्थान मे न होता है । जैसे —सोभाति, सोभन, ससी ( शोभते, शोभन शशी ) । विसमो, विसानो ( विषम , विषाण ) ।

✓(९) पेशाची मे हृदय शब्द के यकार के स्थान मे फकार हो जाता है । जैसे —हितपक ( हृदयकम् ) ।

✓(१०) पेशाची मे टु के स्थान तु आदेश विकल्प स होता नैसे —कुतुम्बक, कुदुम्बक ( कुदुम्बकम् ) ।

✓(११) पैशाची मे त्वा प्रत्यय के स्थान मे नून आदेश होता है । जैसे —गन्तून, पठितून, पठित्वा ( गवा, पठित्वा, पठित्वा ) ।

(१२) पेशाची मे घ्रा के स्थान मे दून और नून आदेश होते है । जैसे —नदून नयून, तदून, तथून ( नद्घ्रा घ्रा )

✓(१३) पेशाची मे कनी कही र्य, क्ल और छ के स्थानो मे क्रमश रिय, ऐन और सट आदेश होते हैं । जैसे - गरिया, सिनात, कसट ( भार्या, स्नातम्, कष्टम् ) ।

**विशेष—**(क) प्राकृतप्रकाश ( १० ) के अनुसार क्ल के स्थान मे सन आदेश होता है । जैसे —सनान, सनेहो ( रनानम्, स्नेह ) ।

(ख) नियम १३ मे 'कनी-कनी' कहने से मुजो ( मूय ), सुनुसा और तिट्टो ( दिष्ट ) मे उक्त नियम नहीं लगा

(१४) पैशाची मे भाव कमवाने यक् के स्थान मे उच्य आदेश होता है । जैसे —रमिच्यते, पठिच्यते ( रम्यते, पठ्यते ) ।

(१५) पेशाची मे क धातु से पर मे आये हुए भाव कर्मवाने यक् के स्थान मे ईर आदेश होता है और धातु के टि ( ऋ ) का लोप हो जाता है । जैसे —कीरते ( क्चिच्यते ) ।

(१६) पेशाची मे याद्दश, ताद्दश आदि के द्द के स्थान मे

ति आदेश होता है। जैसे —यातिसो, तातिसो, भवगतिसो, अञ्जातिसो, युम्हातिसो, अम्हातिसो ( यादृश, तादृश, भवा-दृश, अन्यादृश, युष्मादृश, अस्मादृश )।

( १७ ) पैशाची में इच् और एच् ( देखो छठे अध्याय में वर्तमान काल के प्रत्यय ) के स्थान में ति आदेश होता है। जैसे —वसुआति, भोति, नेति, तेति।

( १८ ) पैशाची में अकार से पर में आनेवाले इच् और एच् के स्थान में ते और ति दोनों आदेश होते हैं। जैसे —लपते, लपति, अच्छते, अच्छति, गच्छते, गच्छति, रमते, रमति।

( १९ ) पैशाची में इच् और एच् के स्थान में, भविष्यत् काल में स्सि न होकर एय्य आदेश ही होता है। जैसे —हुवेय्य<sup>१</sup> ( भविष्यति )।

( २० ) पैशाची में अकार से पर में आनेवाले ङसि के स्थान में आतो और आतु ये दो आदेश होते हैं। जैसे —तुमातो, तुमातु, ममातो ममातु।

( २१ ) पैशाची में टा के साथ तद् और इद्म् शब्दों के स्थान में नेन और ङीलिङ्ग में नाए आदेश होते हैं। जैसे —नेन कनसिनानेन ( तेन कृत्स्नानेन अथवा अनेन इत्यादि ), पूजितो च नाए ( पूजितश्चानया )।

प्राकृत प्रकाश के अनुसार पैशाची के विशेष शब्द—

संस्कृत	पैशाची	प्रा	प्र	अ	सूत्र
मेघ	मेखो			१०	२
गगनम्	गकन			१०	२
राजा	राचा			१०	२

१ त तद्धून चिञ्चित रञ्जा का एसा हुवेय्य ( ता दृष्ट्वा चिन्तित राज्ञा का एषा भविष्यति !

निर्भर	णिन्छरो	१०	२
वडिशम्	वटिश	१०	०
दशप्रदन	दसवत्तनो		
मावव	माथवो	१०	५
गोविन्द	गोविन्तो	१०	२
केशव	केसरो	१०	०
सरभरा	सरफम	१०	२
शलभ	सलफो	१	०
सप्राम	सगामो	१०	१
इव	पिव	१०	५
तरुणी	तलुनी	१०	५
कष्टम्	कसठ	१०	३
स्नानम्	सनान	१०	
स्नेह	सनेहो	१०	०
भार्या	भारिआ	१०	५
विज्ञात	विज्ञाते	१०	०
सवज्ञ	सव्वञ्जो	१०	६
कन्या	कञ्जा	१०	३
कार्यम्	कच्च	१०	११
राज्ञा	राचिना रञ्जा	१०	१०
राज्ञ	राचिनो, रञ्जो	१०	१०
दत्त्वा	दातून	१०	१३
गृहीत्वा	घेतून	१०	१३
हृदयकम्	हितअक	१०	१४



## एकादश अध्याय

[ अपभ्रश ]

( १ ) अपभ्रश में किसी एक स्वर के स्थान में कोई एक दूसरा स्वर प्राय हो जाता है। जैसे — कञ्चित् के लिए अपभ्रश में कञ्च और काञ्च, वेणी के लिए वेण और वीण, बाहु के लिए बाह और बाहा, प्रपुत्र के लिए पट्टि पिट्टि और पुट्टि, तृण के लिए तणु, निगु और तृणु, सुकृतम् के लिए सुकिटु, सुकिउ और कृटु, क्लिन्न के लिए किन्नउ, किलिन्नउ, लेखा के लिए लिह लीह और तेह तथा गोरी के लिए गउरी और गोरी य रूप विभिन्न स्वरो के आने से होते हैं।

( २ ) अपभ्रश में रवादि विभक्तियों के आने पर प्राय कभी नों प्रातिपदिक के अन्य स्वर का दीर्घ आर कभी ह्रस्व हो जाता है। सु विभक्ति में जैसे :—ढोह्ला, सामला ( विट श्यामला, इरत्र स्वर का दीर्घ ), ण, सुण्णरेह ( वण संस्कृत का धन्या है। कुछ लोग प्रिया शब्द के स्थान में धण आदेश मानते हैं। सुण्णरेखा। इनमें दीर्घ स्वर का

१-१ ढाल्ला सामला वण चम्पावण्णा ।

णाइ सुण्णरेह असददइ दिण्णी ॥

( विट श्यामल धन्या चम्पकवर्णा ।

इव सुण्णरेखा रुषपहके दत्ता ॥ )

हस्य हुआ है । ) स्त्रीलिङ्ग मे जैसे '—विट्टीए ( पुत्रि ।  
यहाँ हस्य का दीर्घ हुआ ह ), पइट्टि ( प्रगिष्टा । यहाँ दीर्घ  
का हस्य हुआ है । ), निसिआ खग्ग ( निशिता खड्गा ।  
यहाँ दीर्घ का हस्य हुआ है । ), घोडा ' अश्वा । यहाँ हस्य  
स्यर्ग का दीर्घ हो गया है । )

( ३ अपभ्रंश मे सु ( प्रथमा मे एकप्रचुन ) और अय  
विभक्तियों के आने पर शब्द के अन्तिम अ के स्थान मे उ न  
जाता है । जैसे —दहमुहु<sup>३</sup>, तोसिअ-सकरु चउमुहु छमुहु  
( दशमुख , तोषित शकर चतुर्मुख षण्मुखम् ) ।

( ४ ) अपभ्रंश मे पुल्लिङ्ग मे वर्तमान शब्द ( प्रातिपदिक  
के अन्त्य अ के स्थान मे अ विकल्प से होता है, जब कि उन

१ विट्टीए मइ भणिय तुहुँ मा करु वड्ढा दिट्ठि ।

पुत्ति सकण्णी भल्लि जिव मारइ दिअइ पइट्टि ॥

( पुत्रि मया भणिता त्व मा कुरु वक्रा दृष्टिम् ।

पुत्रि सकर्णा भल्लिर्यथा मारयति हृदय प्रविष्टा ॥ )

२ एइ ति घोडा एह थलि एइ ति निगसआ खग्ग ।

एत्थु मुणीसम जाणिअइ जो न वि वालड वगा ॥

( एते ते अश्वा एषा स्थली एते ते निशिता खड्गा ।

अत्र मनुष्यत्व ज्ञायते य नापि बालयति बन्गाम् ॥ )

३ दहमुहु भुवण-भयकर तोसिअ सकरु णिग्गउरहवरि चडियउ ।

चउमुहु छमुहु माइवि एकहिं लाइवि णावइ दइवें घडिअउ ।

( दशमुख भुवनभयकर तोषितशङ्कर निर्गत रथवरे आरूढ

चतुर्मुख षण्मुख ध्यात्वा एकस्मिन् लगित्वा इव देवेन घाटत ) ।

अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों से पर मे सु विभक्ति आई हुई हो ।  
जैसे —जो<sup>१</sup>, सो ( य , स ) ।

विशेष—पुल्लिङ्ग मे कहने से 'अङ्गहि अङ्गु न मिलउ हलि' ( अङ्गै अङ्गु न मिलिन सखि ) मे नपुसक अङ्गु और मिलिउ मे ओ नहीं हुआ ।

( ५ ) अपभ्रश मे टा विभक्ति के आने पर शब्द के अन्तिम अ के स्थान मे ए हो जाता है । जैसे —प्रवसन्तेण<sup>२</sup> ( प्रवसता ), नहेण ( नखेन ) ।

( ६ ) अपभ्रश मे शब्द के अन्त्य अकार और डि ( सप्तमी एकवचन ) के स्थान मे इकार और एकार होते हैं । जैसे —तलि घल्लइ<sup>३</sup>, तते घल्लइ ( तले क्षिपति ) ।

( ७ ) अपभ्रश मे शब्द के अन्त्य अ के स्थान मे, भिसु ( तृतीया के बहुवचन ) के पर मे रहने पर, एकार आदेश विकल्प

१ अगल्लिअ नेह-निवट्टाह जोअण-ल्क्खु वि जाउ ।  
वरिम सएण वि जो मिल" सहि सोक्खह सो ठाउ ॥  
( अगलितस्नेहनिर्वृत्ताना योजनलक्षमपि जायताम् ।  
वर्षशतेनापि य मिलति सखि सौख्याना स स्थानम् ॥ )

२ जेमहु दिण्णा दिश्रहवा दइए पवसन्तेण ।  
ताण गणन्तिँ अङ्गुलिउ जज्जरिआउ नहेण ॥  
( ये मम दत्ता दिवसा दयितेन प्रवसता ।  
तान गणयन्त्या अङ्गुल्य जज्जरिता नखेन ॥ )

३ सागरु उप्परि तणु धरइ तलि घल्लइ रयणाइ ।  
मामि सुभिन्नु वि परिहरइ समारोइ खलाइ ॥  
( सागर उपरि तृणानि धरति तले भिपति रत्नानि ।  
स्वामी सुभत्यमपि परिहरति समानयति खलान् ॥ )



से होता है। जैसे —लक्खेहि<sup>१</sup> (लक्ष्मै), पथ मे गुणहि<sup>२</sup> (गुण)।

( ८ ) अपभ्रश मे अकारान्त शब्द से पर मे आने वाले डसि विभक्ति के स्थान मे हे और हु आदेश हाते है। जैसे — वच्छहे<sup>३</sup> गृहहइ, वच्छहु गृहहइ ( वृक्षात् गृहणाति )।

( ९ ) अपभ्रश मे अन्त शब्द से पर मे आने वाले +यस् ( पञ्चमी बहुवचन ) के स्थान मे हु आदेश होता है। जैसे — गिरि सिङ्गहु<sup>३</sup>, ( गिरिशृङ्गेभ्य )।

( १० ) अपभ्रश मे अन्त शब्द से पर मे आने वाले डस् ( षष्ठी एकवचन ) के स्थान मे सु, हो और स्सु ये तीन आदेश होते है। जैसे —तसु<sup>४</sup> (तरय), दुल्लहो ( दुर्लभस्य ) सुभणस्सु ( सुजनस्य )।

- १ गुणाहि न मपइ। कति पर फउ लिहिआ भुज्जाति ।  
केसरि न लन् लोडिडिअ विगय लक्खोहि धेप्पति ॥  
( गुण न मपत्त कीर्ति पर फअनि लिखितानि भुज्जन्ति ।  
केसरी न लभते ऋपर्दिकामपि गजा ल १ गृह्यन्ते ॥ )
- २ वच्छहे गृहहइ फलइ जणु कडु पल्लव बज्जेइ ।  
तो वि महद्दुसु सुअणु जिव ते उच्छङ्गि वरेइ ॥  
( त्थान् गृह्णाति फलानि जन कट्टपल्लवान् वर्जयात् ।  
तथापि महाह्म सुजन इव तान उ मङ्गे धरति ॥ )
- ३ दूस्झाणे पटिउ खलु अ पणु जणु मारेइ ।  
निह गिरिसिङ्गहु पडिअ सिल अन्नु विचरु करेइ ॥  
( दूरोद्धारणेन पतित खल आत्मान जन मारयति ।  
यथा गिरिशृङ्गेभ्य पतिता शिला अन्यदपि चूर्णीकरोति ॥ )
- ४ जो गुण गोबइ अप्पणा पयडा करइ परस्सु ।  
तसु हउ कल्लिजुगि दुल्लहो वलि किन्नुउ सुअणस्सु ॥

( ११ ) अपभ्रंश मे अदन्त शब्द से पर मे आने वाले आम् के स्थान मे ह आदेश होता है । जैसे —तणह<sup>१</sup> ( तृणानाम् ) ।

( १२ ) इदन्त और उदन्त शब्दो से पर मे आने वाले आम् के स्थान मे, अपभ्रंश मे हु और ह दोनो आदेश होते है । जैसे —सउणिह<sup>२</sup> ( शकुनीनाम् ) इत्यादि ।

**विशेष**—उक्त नियम मुष् सप्तमी बहुवचन ) मे भी लागू होता है । जैसे —दुहुँ<sup>३</sup> ( द्वयो ) ।

( १३ ) अयभ्रंश मे इदन्त, उदन्त शब्दो से पर मे आने वाले डसि, भ्यस् और डि के स्थान मे रुमश हे, हु और हि आदेश होते ह । जैसे —गिरिहे<sup>४</sup>, तरुहे ( गिरे, तरो ) भ्यस् का

( य गुणान् गोपयति आत्मायान् प्रकटान् करोति परस्य ।

तस्य अह कलियुगे दुर्लभस्य बलि करोमि सुजनस्य ॥ )

१ तणह तइज्जा भङ्गि न वि तें अबड यडि वसन्ति ।

अह जणु लङ्गि वि उत्तरइ अह सह सइ मज्जन्ति ॥

( तृणाना तृतीया भङ्गी नापि तानि अबटतटे वसन्ति ।

अथ जन लङ्गित्वा उत्तरति अथ सह स्वय मज्जन्ति ॥ )

२ दइलु घडावइ वणि तरुहुँ सउणिहँ पक्क फलाइ ।

सो वरि सुक्खु पइट्ठण वि कण्णहि खलवयणहि ॥

( देव घटयति वने तरुण शकुनीना (कृते) पक्कफलानि ।

तद् वर सौरय प्रविष्टानि नापि कर्णयो खलवचनानि ॥ )

३ धवलु विसुरइ सामिअहो, गरुआ भरु पिक्खेवि ।

हउ कि न जुत्तउ दुहुँ दिमिहि, खण्डइ दोग्णि करेवि ॥

( धवल खिद्यति स्वामिन गुरु भार प्रेक्ष्य ।

अह किं न युक्त द्वयोर्दिशो खण्डे द्वे कृत्वा ॥ )

४ गिरिहे सिलायलु तरुहुँ फलु धेप्पइ नोसावन्नु ।

चरु मेल्लेप्पिणु माणुसहँ तो वि न रुच्चइ रन्नु ॥

का दुः—तरुहु ( तरुभ्य ) डि का हि जेमे :--  
मालहिरे ( कलौ ) ।

( १४ ) अपभ्रश मे अदन्न शब्द मे पर मे आने वाले टा के स्थान मे ण और अनुस्वार आदेश होते हैं ! जैसे —दइए ( नयितेन ) पत्रन्तेण ( प्रवन्त ) । देखो—इसी अध्याय मे नियम ५ की पाठ टिप्पणी ।

( १५ ) अपभ्रश मे इकारान्त, उकारान्त शब्दों से पर मे आने वाले टा के स्थान मे ए ण और अनुराज आदेश होते हैं ।  
जेमे :—अग्निण ( अग्निना ) अग्निण ( अग्निना ) अग्नि ( अग्निना ) ।

( गिरे शिलात्ल नरा फल गृह्यते नि सामायम् ।

गृह मुक्त्वा मनुष्याणा तथापि न रोचते अरण्यम् ॥ )

१ तरुहु वि वक्कलु फनु मुणिवि परिहणु असणु लहन्ति ।

सामिहे एत्तिउ अगलउ आयरु भिच्चु गृहन्ति ॥

( तरुभ्य अपि वक्कल फल मुनय अपि परिधानम् अशन लभ त स्वामिभ्य, इयद् अविकादर मृत्या गृहन्ति । )

२ अह विरल पहाउ जि कलिहि धम्मु ।

( अथ विरलप्रभाव एव कलौ धम । )

अग्निण उण्हउ होइ जु वाए सीअलु तेव ।

जो पुणु अग्नि सीअला तसु उण्हत्तणु केव ॥

( अग्निना उष्ण भवति जगन् वातेन शीतल तथा ।

ग पुन अग्निना शातल तस्य उष्णत्व कथम् ? )

विप्पिअ-आरउ इइ वि पिउ तो वि त आणहि अज्जु ।

अग्निण दड्ढा जइ वि घर तो ते अग्नि कज्जु ॥

( विप्रियकारक यद्यपि प्रिय तदपि तमानय अथ ।

अग्निना दग्ध यद्यपि गृह तदपि तेन अग्निना कार्यम् ॥ )

( १६ ) अपभ्रश मे सु, अम् , जस् और शस् विभक्तियों का लोप हो जाता है। देखो इसी अध्याय के नियम २ की पादटिप्पणी ३ मे 'एइ ति घोडा' इत्यादि मे सु, अम् , जस् का लोप ।

( १७ ) अपभ्रश मे षष्ठी विभक्ति का प्राय लुक् हो जाता है । जैसे — गय<sup>१</sup> ( गजानाम् ) ।

( १८ ) अपभ्रश मे यदि किसी शब्द से संबोधन मे जस् विभक्ति आई हो तो उसके स्थान मे हो आदेश होता है। जैसे — तरुणहो, तरुणिहो<sup>२</sup> ( हे तरुणा हे तरुण्य ) ।

**विशेष** — यह नियम पूर्वोक्त सोलहप्रे नियम का अपवाद है ।

( १९ ) अपभ्रश मे भिस् ओर सुप् के स्थान मे हि आदेश होता है । जैसे — गुणहि ( गुणै ), मग्गेहि<sup>३</sup> तिहि ( माग्गेषु त्रिषु ) ।

( २० ) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आनेवाले जस् और शस् ( प्रत्येक ) के स्थान मे उ और ओ आदेश होते हैं । जैसे — अङ्गुलिउ ( अङ्गुल्य । जस् = उ ), सव्व

१ सगर—सएहि जु वण्णिअइ देक्खु अम्हारा कन्तु ।

अइमत्तह चत्तङ्कुसह गय कुम्भइ दारन्तु ॥

( मगरशतेषु यो वर्ण्यते पश्य अस्माक कान्तम् ।

अतिमत्ताना त्यक्काङ्कुशाना गजाना कुम्भान् दारयन्तम् ॥ )

२ तरुणहो तरुणिहो मुण्डि मइ करहु म अप्पहो घाउ ।

( हे तरुणा, हे तरुण्य (च) ज्ञात मया आत्मन धात मा कुरुत । )

३ भाईरहि जिव भारइ मग्गेहि तिहि वि पयइइ ।

( भागीरथी यथा भारते माग्गेषु त्रिषु प्रवर्तते । )

ज्ञाउ<sup>१</sup> ( सर्वाङ्गी । शस्=उ ), विलासिणीओ<sup>२</sup> ( विलासिनो । शस्=ओ ) ।

( २१ ) अपभ्रश मे खोलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आनेवाले टा ( तृतीया एकवचन ) के स्थान मे ए आदेश होता है । जैसे —ससिमण्डल चन्दिमए<sup>३</sup> ( शशिमण्डलचन्द्रिकया ) ।

( २२ ) अपभ्रश मे खोलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आने वाले डस ( षष्ठी एकवचन ) और डसि ( पञ्चमी एकवचन ) के स्थान मे हे आदेश होता है । जैसे —मड्भहे,<sup>४</sup> तहे,<sup>५</sup> धणहे<sup>६</sup> इत्यादि ( मध्याया , तस्या , धन्याया इत्यादि ), बालहे<sup>७</sup> ( बालाया ) ।

१-२, सुन्दर-सव्वज्ञाउ विलासिणीओ पेन्छन्तरण ।

( सुन्दरसर्वाङ्गी विलासिनी प्रेक्षमाणानाम् ॥ )

३ निअ-मुह-करहि वि मुद्ध कर अन्वारइ पडिपेक्खइ ।

ससि-मण्डल चन्दिमए पुणु काई न दूरे देक्खइ ॥

( निजमुखकरै अपि मुग्धा करमन्धकारे प्रतिप्रेक्षते ।

शशिमण्डलचन्द्रिकया पुन किं न दूरे पश्यति ? )

४-७ फोडेन्ति जें हियडउ अप्पणउ ताह पराई कवण घृण ।

रक्खेज्जहु लोअहो अप्पणा बालहे जाया विसम थण ॥

( स्फोटयत यौ हृदयमात्मीय तयो परकीया का घृणा ?

रक्षत लोका आत्मान बालाया जातौ विषमौ स्तनौ ॥ )

तुच्छ मड्भहे तुच्छ-जम्पिरेहे ।

तुच्छच्छरोमावलिहे तुच्छरायतुच्छयरहास हे ।

पियवयणु अलहन्तिअहे तुच्छकाय-वम्मह-निवासहे ॥

अनुजु तुच्छउं तहे धणहे त अक्खणह न जाइ ।

कटरि थणतरु मुद्धडेहे जें मणु विच्चि ण माइ ॥

( तुच्छमध्याया तुच्छजल्पनशीलाया ।

( २३ ) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आनेवाले भ्यस् ( पञ्चमी बहुवचन ) और आम् ( षष्ठी बहुवचन ) के स्थान मे हु आदेश होता है । जैसे — वयसिअहु<sup>१</sup> ( वयस्याभ्य अथवा वयस्यानाम् ) ।

( २४ ) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आनेवाले छि ( सप्तमी एकवचन ) के स्थान मे हि आदेश होता है । जैसे — ग्रहिहि ( मह्याम् ) ।

( २५ ) अपभ्रश मे नपुंसक लिङ्ग मे वर्तमान शब्द से पर मे आनेवाले जस् ( प्रथमा बहुवचन ) और शस् ( द्वितीया बहुवचन ) के स्थान मे इ आदेश होता है । जैसे — कमलइ<sup>१</sup> अलि-उलइ ( कमलानि अलिकुलानि ) ।

तुच्छाच्छरोमावल्या तुच्छरागाया तुच्छतरहासाया ।

प्रियवचनमलभमानाया तुच्छकायमन्मथनिवासाया ॥

अन्यद् यत्तच्छ तस्या धन्याया तदाख्यातु न याति ।

आश्चर्य स्तनान्तर मुग्धाया येन मनो वर्त्मनि न माति ॥ )

१ भङ्गा हुआ जु मारिआ बहिणि महारा कन्तु ।

लज्जेबन्तु वयसिअहु जइ भग्गा घर एन्तु ॥

( भव्य भूत यत् मारित भगिनि अरमदीय कान्त ।

अलाज्जयत वयस्याभ्य ( नाम् ) यदि भग्न गृह ऐष्यत ॥ )

२ वायसु उड्ढावन्तिअए पिउ दिट्ठउ सहस ति ।

अद्धा वलया महिहि गम अद्धा फुट्ट तडत्ति ॥

( वायस उड्ढापयन्त्या प्रियो दृष्ट सहसेति ।

अर्द्धानि वलयानि मह्या गतानि अर्द्धानि स्फुटितानि तटिति ॥ )

१ कमलइ मेह्णवि अलिउलइ करि गण्डाइ महन्ति ।

असुलह मेच्छण जाह मलि ते ण वि दूर गणयन्ति ॥

२६) अपभ्रश मे नपुमक लिङ्ग मे वर्तमान कान्त (जिसके अन्त मे अमहित क हा ) शब्द से पर मे आनवाले सु ( प्रथमा-एकवचन ) और अम् ( द्वितीया एकवचन , के स्थान उ आदेश होता हे । जैसे —इसी अध्याय के नियम २० को पाठ टिप्पणी २ मे तुच्छउ (तुच्छम्) है । आर भग्गउ<sup>१</sup> ( भग्गम् ) इत्यादि को भी तेरपना चाहिए ।

( २७ ) अपभ्रश मे अकारान्त सर्वादि से पर मे आनेवाले डसि ( पञ्चमी एकवचन ) के स्थान मे हाँ आदेश होता हे । जैसे —जहाँ होन्तउ आगदो, तहाँ होन्तउ आगदो ( यस्नात् भवान् आगत तस्मात् भवान् आगत ) एव कहाँ ( कस्मात् ) ।

( २८ ) अपभ्रश मे अकारान्त किम् ( क ) से पर मे आनेवाले डसि क स्थान मे इहे आदेश ओर क के अकार का लोप विकल्प से होता है । जैसे —किहे<sup>२</sup> ( कस्मात् ), कहाँ ( कस्मात् ) ।

( २९ ) अपभ्रश मे अकारान्त सर्वादि शब्दो से पर मे आने वाले सप्तमी के एकवचन डि के स्थान मे हि आदेश होता है ।

( कमलानि मुक्त्वा अलिकुलानि करिगण्डान् काक्षन्ति ।

असुलभम् एष्टु येषा निर्बन्ध ते नापि दूर गणयन्ति ॥ )

१ भग्गउ देखिखवि निअय बलु, बलु पसरिअउ परस्सु ।

उम्मिल्लइ ससिरेह जिव करि करवालु पियस्सु ॥

( भग्गउ दृढा निजक बल बल प्रसृतक परस्य ।

उन्मीलति शशिलेखा यथा करे करवाल प्रियस्य ॥ )

२ जइ तह तुट्टउ नेहडा मइ सहँ न वि तिल तार ।

त किहँ वड्ढेहिँ लोअणँहिँ जोइज्जँ सय वार ॥

( यदि तस्या शुच्यतु स्नेह मया सह नापि तिलतार ।

तत् कस्मात् वक्रान्या लोचनाभ्या दृश्ये ( अह ) शतवारम् ॥ )

जैमे —जहि , तहि, एक्कहि ( यस्मिन् , तस्मिन् , एकस्मिन् )

( ३० ) अपभ्रश मे अकारान्त यद्, तद् और किम् ( य, त क ) से पर मे आनेवाले षष्ठी के एकवचन डस् के स्थान मे आसु आदेश विकल्प से होता है । और शब्द के टि ( अ ) का लोप भी होता है । जैसे —जासु, तासु, वासु<sup>२</sup> ( यस्य, तस्य, कस्य ) ।

( ३१ ) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान यद्, तद्, किम् ( या, ता, का ) से पर मे आनेवाले षष्ठी के एकवचन डस् के स्थान मे विकल्प से अहे आदेश और टि ( आ ) का लोप भी होता है । जैसे —जहे केरउ, तहे केरउ, कहे केरउ ( यस्या कृते, तस्या कृते कस्या कृते ) ।

( ३२ ) अपभ्रश मे सु और अम् ( प्रथमा-द्वितीया के एकवचन ) के पर मे रहने पर यद् और तद् शब्दो के स्थान मे

१ जहि कप्पिज्जइ सरिण सरु छिज्जइ खग्गिण खग्गु ।  
तहि तेहइ भड घड निवहि कन्तु पयासइ मग्गु ॥  
( यस्मिन् कल्प्यते शरेण शर छिद्यते खड्गेन खड्ग ।  
तस्मिन् तादृशे भट घटा निवहे कान्त प्रकाशयति मार्गम् ॥ )

२ कन्तु महारउ हलि सहिए निच्छइ रूसइ जासु ।  
अत्थिहि, सत्थिहि हत्थिहि वि ठाउ फेडइ तासु ॥  
( कान्त अस्मदीय हला सखिके निश्चयेन रुष्यति यस्य ।  
अत्रै शत्रु हस्तैरपि स्थानमपि स्फोटयति तस्य ॥ )  
जीविउ कास न वल्लहउ धणु पुणु कासु न इट्ठु ।  
दोण्णि वि अवसर निवड्डिअइ, तिण सम गणइ विसिट्ठु ॥  
जीवित कस्यै न वल्लभक धन पुन कस्य नेष्टम् ।  
द्वे अपि अवसर—निपतित तुणसमे गणयति विशिष्ट ॥



क्रमशः ध्रु और त्र आदेश विकल्प में होते हैं। जैसे — प्रङ्गणि चिद्वि नाहु ध्रु त्र रणि वरदि न भ्रन्ति ( प्राङ्गणे तिघ्रात नाथ यत् यद् रणे करोति न भ्रान्तिम् ), पक्ष में त बोल्लिअइ जु निव्वहइ ( तत् जल्प्यते यन्निर्ग्रहति ) ।

( ३३ ) अपभ्रश में नपुसक लिङ्ग में वर्तमान इदम् शब्द के स्थान में सु और अम् के पर में रहने पर इपु आदेश होता है। जैसे — इमु कुलु तुह तणउं, इमु कुलु देक्खु ( इद् कुल इत्यादि ) ।

( ३४ ) अपभ्रश में प्रथमा और द्वितीया के एकवचनो में एतत् शब्द के स्त्रीलिङ्ग में एह, पुल्लिङ्ग में एहो और नपुसक में एहु रूप होते हैं। जैसे — एह कुमारी एहो नरु एहु मणोरह ठाणु ( एषा कुमारी, एष नर एतन्मनोरथस्थानम् ) ।

( ३५ ) अपभ्रश जस्-शस् के आने पर एतद् शब्द के स्थान में एइ आदेश होता है। देखो—इसी अध्याय के नियम २ तथा ३ की पादाट्ठप्पणी एइ पेच्छ ( एतान् प्रेक्षस्व ) ।

( ३६ ) अपभ्रश में जस्-शस् के आने पर अत्स् शब्द के स्थान में ओइ आदेश होता है। जैसे — ओइ<sup>१</sup> ।

( ३७ ) अपभ्रश में इदम् शब्द के स्थान में आय आदेश स्वादि विभक्तियों के पर में रहने पर होता है। जैसे — आयइ ( इमानि ), आयेण ( एतेन ), आयहो ( अस्य ) इत्यादि ।

( ३८ ) अपभ्रश में सर्व शब्द के स्थान में साह आदेश विकल्प से होता है। जैसे — साहु वि लोउ, सव्वु विलोउ ( सर्वोऽपि लोक ) ।

१ जइ पुच्छह घर वड्डाइ तो वड्डाइ घर ओइ ।

विहलित्थ जण-अब्भुद्धरण कन्तु कुडीरइ जोइ ॥

( यदि पृच्छथ गृहाणि महान्ति तद् महान्ति गृहाणि अमूनि ।

विहलित्तजनाब्भुद्धरण कान्त कुडीरके पश्य ॥ )

( ३६ अपभ्रंश में क्रिम् शब्द के स्थान में काइ और ऋण आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे —इसी अध्याय के नियम २१ की पादटिप्पणी एक में देखो—‘काइ न दूरे देखखइ’ ( कि न दूरे पश्यति ? ) और नियम २२ की पादटिप्पणी दो में ‘ताहँ पराई कवण घृण’ ( तयो परकीया का घृणा ? ), ‘कि गजहि रल मेह’ ( कि गजसि रल मेघ )।

( ४० ) अपभ्रंश में युष्मद्, अस्मद् विषयक नियमों को न लिख कर यहाँ हम उनके रूप ही लिख रहे हैं। ये रूप टाचन्द्र के अनुसार हैं। नियमों के लिए उन्हीं के ४ ३६८ से ४ ३८१ तक सूत्रों को देखना चाहिए।

अपभ्रंश में युष्मद् शब्द के रूप —

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुह	तुम्हे तुम्हः
द्वितीया	पइ, तइ	तुम्हे तुम्हइ
तृतीया	पइ, तइ	तुम्हेहि
पञ्चमी	तउ, तुज्झ, तुध्र ( तुहु )	तुम्हह
षष्ठी	” ” ” ”	तुम्हह
सप्तमी	पइ, तइ	तुम्हासु

अपभ्रंश में अस्मद् शब्द के रूप —

प्रथमा	हउ	अम्हे, अम्हइ
द्वितीया	मइ	अम्हे, अम्हइ
तृतीया	मइ	अम्हेहि
पञ्चमी	महु, मज्झु	अम्हह
षष्ठी	महु, मज्झु	अम्हह
सप्तमी	मइ	अम्हासु

( ४१ ) अपभ्रंश मे धातु से वर्तमान काल के प्रथम पुरुष के बहुवचन मे तिङ् का आदेश 'हि' विकल्प न होता है । जैसे — धरहि, करहि, महहि ( धरत, कुन्त शोभन्ते )

( ४२ ) अपभ्रंश मे धातु से, वर्तमान काल के मध्यम पुरुष के एकवचन मे, तिङ् के स्थान मे 'हि' आदेश विकल्प से जाता है । जैसे — रुअहि ( रोदिषि ), लभहि ( लभसे, पक्ष मे रुअसि इत्यादि ।

( ४३ ) अपभ्रंश मे धातु से, वर्तमान काल के मध्यम पुरुष के बहुवचन मे, आनेवाले तिङ् के स्थान मे हु अन्तःश विकल्प से होता है । जैसे — इच्छहु ( इच्छथ ), पक्ष मे — उच्छहः ।

- १ मह क्वरि बन्ध तह मोह वरहि ।  
 न मल्ल जुज्झु ममिराह करहि ।  
 ( मुखकवरीबन्धौ तस्या शोभा धरत ।  
 ननु मल्ल युद्ध शशिराह कुरुत ॥ )  
 तह सहहि कुरल भमर उल तुलिअ ।  
 न तिमिर डिम्भ खेलन्ति मिलिअ ॥  
 ( तस्या शोभन्ते कुरला भ्रमरकुलतुल्लिता ।  
 ननु भ्रमरडिम्भा व्रीडन्ति मिलिता ॥ )
- २ वप्पीहा पिउ पिउ भणवि कित्तिउ रुअहि हयास ।  
 तुह जलि महु पुणु वल्लहइ विहुँ वि न पूरिअ आस ।  
 चातक ( पपीहा ) पिबामि पिबामि ( प्रिय पिय )  
 भणि वा कियत् रोदिषि हताश  
 तव जले मम पुनर्वल्लभे द्यौरपि न पूरिता आशा ॥ )
- ३ बलि-अब्भत्थणि महु महणु लहुँद्वुआ सोइ ।  
 जइ इच्छु वडत्तणउ देहु म मग्गाहु कोइ ॥

( ४४ ) अपभ्रश मे धातु से पर मे आनेवाले वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष के एकवचन तिङ के स्थान मे उ आदेश विकल्प से होता है । जैसे —कड्ढउ (कर्षामि), पक्ष मे कड्ढामि (कर्षामि)

( ४५ ) अपभ्रश मे धातु से पर मे आनेवाले वर्तमानकालिक उत्तम पुरुष के बहुवचन तिङ के स्थान मे हु आदेश विकल्प से होता है । जैसे —लहहु<sup>३</sup>, लभामहे ), जाहु ( याम ), वलाहु ( वलामहे ) ।

( ४६ ) अर्धभ्रश मे हि और स्व के स्थान मे इ, उ और ए ये तीनों आदेश विकल्प से होते हैं । इ जैसे —सुमरि<sup>३</sup>, मेल्लि ( स्मर, मुञ्च ), विलम्बु<sup>२</sup> ( विलम्बस्व ), करे<sup>३</sup> ( कुरु ) पक्ष मे—सुमरहि इत्यादि ।

( बले अन्वर्थने मधुमयनो लघुकीभूत , सीऽपि ।

यदि इच्छथ महत्त्व दत्त मा मार्गयत कमपि ॥ )

२ विहि विणडउ पीडन्तु गह म धणि करहि विसाउ ।

सपइ कड्ढुँ वेस जिव छुडु अग्घइ ववसाउ ॥

( विधिर्विनाटयतु ग्रहा पीडयन्तु मा धन्ये कुरु विषादम् ।

सपद कर्षामि वेषमिव यदि अर्घति व्यवसाय ॥ )

३ खग्ग विसाहिउ जहि लहहु पिय तहि देसहि जाहु ।

रण दुन्निमवखे भग्गाइ विणु जुज्झे न वलाहुँ ॥

( खड्ग-विसाधित यत्र लभामहे तत्र देशे याम ।

रणदुर्भिक्षेण भग्ना विना युद्धेन न वलामहे ॥ )

१ २ ३ कुञ्जर सुमरि म सल्लइउ सरला सास म मेल्लि ।

कवल जि पाविय विहि वसिण ते चरि माणु म मेल्लि ॥

भमरा एत्थु वि लिम्बडइ के वि दियहडा विलम्बु ।

घण पत्तलु छाया बहुलु फुल्लइ जाम कयमु ॥

( ४७ ) अपभ्रंश मे भविष्यत्कालिन् तिङ् सबन्धी 'स्य' के स्थान मे स आदेश विकल्प से होता है। जैसे —होसइ, पक्ष मे—होहिइ ( भविष्यति ) ।

( ४८ ) सस्कृत के 'क्रिये' इस क्रियापद के स्थान मे अपभ्रंश मे कीसु यह आदेश विकल्प से होता है। जैसे —'तसु कन्तहो बलि कीसु ( तस्य कान्तस्य बलि क्रिये ) ।

सस्कृत धातुओ के अपभ्रंश मे आदेश —

धातु	आदेश	उदाहरण
भू (पर्याप्ति मे)	हुच्च	अहरि पट्टुच्चइ <sup>२</sup> नाहु (अधरे प्रभवति नाय )
व्रू	व्रुव	व्रुवह <sup>३</sup> सुहामिउ किपि ( व्रूत सुभा- पित किञ्चिन् )
”	ब्रोप्प	त्रोप्पिणु <sup>४</sup> ( उक्त्वा )

- प्रिय एम्बहि करेँ स्नेह करि छडुहि तुहँ करवालु ।  
ज कावालिय बप्पुडा लेहिँ अभग्गु क्वालु ॥  
( कुञ्जर स्मर मा सल्लकी सरलान श्वासान् मा सुञ्च ।  
कवला ये प्राप्ता विधिवशन ताश्चर मान मा सुञ्च ॥  
भ्रमर अत्रापि निम्बके कति दिवसान् विलम्बस्व ।  
घनपत्रवान् छायाबहुल फुल्लति यावत्कदम्ब ॥  
प्रिय एवमेव कुरु भल्ल करे त्यज तत्र करवालम् ।  
येन कापालिका वराका लान्ति अभन्न कपालम् ॥ )
- १ दिअद्दहा जन्ति ऋडप्पडहिँ षडहिँ मनोरह पच्छि ।  
ज अच्चइ त माणिअइ होसइ करतु म अच्चि ॥  
( दिवसा यान्ति वैगै पतन्ति मनोरथा पश्चात् ।  
यदस्ति तन्मान्यते भविष्यति कुर्वन् मा आस्व ॥ )
- २ हेम० ४ ३९०    ३ हेम० ८ २९१    ४ हेम० ४ २९१

इच	वुच	वुचइ, वुचेपि, वुचेपिणु <sup>१</sup>
इश	प्रस्स	प्रस्सदि <sup>२</sup>
ग्रह	गृण्ह	पढ, गुण्हेपिणु, व्रतु (पठगृहीत्वा व्रनम्)
तक्ष	छोल्ल	चसि छोल्लिज्जन्नु <sup>३</sup> ( शशी अतश्चिष्यन )
तापि	भलक	मासानलजाल भनक्किअउ <sup>४</sup> ( श्वासा नलज्वालासन्तापितम् । )
शल्लाय	खुडुक	हिअइ खुडुकइ <sup>५</sup> ( हृदये शल्लायते )
गर्ज	वुडुक	वुडुकइ <sup>६</sup> मेहु ( गर्जति मेघ )

( ४६ ) अपभ्रश मे पढ के आदि मे अवर्तमान किन्तु स्वर से पर मे आनेवाले और असयुक्त क, ख, त, थ, प, फ, वर्णों के स्थान मे प्राय ग, घ, द, व, ब और भ क्रम से ही होते है । जैसे —पिअमाणुसविच्छोह गरु (प्रियमनुष्यविद्वोभकरम् ), सुधि चिन्तिज्जइ माणु ( सुख चिन्त्यते मान ), कधिदु ( कथितम् ), सबवु ( शपथम् ), सभलउ ( सफलम् ) ।

( ५० ) अपभ्रश मे पढ के आदि मे अवर्तमान असयुक्त मकार के स्थान मे अनुनासिक वकार विकल्प से होता है । जैसे —कवेलु, भवरु ( कमलम्, भ्रमर ), जिब, तिव ( जिम, तिम ) ।

( ५१ ) अपभ्रश मे सयोग के बाद मे आनेवाले रेफ का लुक् विकल्प से होता है । जैसे —जइ केवइ पावीसु पिउ ( यदि

१ हेम० ४ ३९०

२ हेम० ४ ३९३

३ हेम० ४ ३९३

४ हेम० ४ ३९५

५ तुलना कीजिए—भोजपुरी के 'भरकना' से । हेम० ४ ३९५

६ कौटे जैमा आचरण करना' इस अर्थ में । हेम० ४ ३९५

७ तुलना कीजिए—हिन्दी के 'घुडकना' से । हेम० ४ ३९५

कथञ्चित् प्राप्स्यामि प्रियम्), पक्ष मे—जइ भग्गा पारकडा तो सहि मञ्जु प्रियेण ( यदि भग्गा परकीयास्तत्सखि मम प्रियेण । )

( ५२ ) अपभ्रंश मे कहीं कहीं सर्वथा अविद्यमान रेफ भी होता देखा जाता है। जैसे —ब्रासु महारिसि एउ भणइ ( व्याम महषि एतद् भणति , 'कहीं कहीं' ऐसा कहने से 'वासेण पि भारहरम्भि बद्ध ( व्यासेनापि भारतस्तम्भे बद्धम् । ) मे नियम लागू नहीं हुआ ।

( ५३ ) अपभ्रंश मे आपद्, विपद्, ओर सपद् के अन्त्य डू के स्थान मे कहीं कहीं इ हो जाता है। जैसे —अणउ करन्तहा पुरिसहो जाणइ आवइ ( अनय उरुत्त पुम्परय जापद् आयाति ), विवइ विपद् ), सपइ ( सपद् ), 'कहीं कहीं' कहने से 'गुणहि' न मपय कित्ति पर' ( उपरुत्त नियम ७ की पादटिप्पणी ४ ) मे सपइ न होकर सपय हुआ ।

( ५४ ) अपभ्रंश मे कथ, यथा ओर तथा के थादि अवयवों के स्थान मे हर एक के एम, इम, इह और इध ये चार आदेश होते हैं और पूर्व के टि का लोप होता है। जैसे —'केम<sup>१</sup> (केव<sup>२</sup>) समापउ दुहु दिणु किध रयणी हूडु होय' ( कथ समापयता दुष्ट दिन कथ रात्रि शीघ्र भवति ? ) एव किह, जेम ( वं ), जिम ( वं ), जिह, जिध, तेम ( वं ), तिम ( वं ), तिह तिध होते हैं ।

( ५५ ) अपभ्रंश मे यादृश्, तादृश्, कीदृश् और ईदृश् शब्द क्रमश जैहु, तेहु, केहु और एहु रूप प्राप्त करते हैं। जैसे — जैहु, तेहु, केहु, एहु<sup>३</sup> ( यादृक्, तादृक्, कीदृक्, ईदृक् )

१ तुलना कीजिए—गुजराती के केम, जेम और तेम से ।

२ तुलना कीजिए—हिन्दी के क्यौं, ज्यौ और त्यौ से ।

३ मह भणिअउ बलिराय तुहु केहुड मग्गण एहु ।

( ५६ ) अकारान्त यादृश, तादृश, कीदृश और ईदृश के स्थान में जइस, तइस, कइस और अइस रूप होते हैं । जैसे — जइसो, तइसो, कइसो ओर अइसो ( यादृश , तादृश इत्यादि )

( ५७ ) अपभ्रश में यत्र के रूप जेत्थु और जत्तु तथा तत्र के रूप में तेत्थु और तत्तु होते हैं । जैसे —जेत्थु, जत्तु ( यत्र ), तेत्थु, तत्तु ( तत्र ) ।

( ५८ ) अपभ्रश में यावत् के रूप जाम ( जावँ ), जाउ, जामहि और तावत् के रूप ताम ( तावँ ), ताउ, तामहि ( तावत् ) ।

जेहु तेहु न वि होइ वढ सइ नारायण एहु ॥

( मया भणित बलिराज त्व कीदृग् मार्गण एष ।

यादृक्, तादृक् नापि भवति मूर्ख स्वय नारायण इदृक् ॥ )

१ जइ सो बढदि प्रयावदा केत्थु वि लेप्पिणु सिक्खु ।

जेत्थु वि तेत्थु वि एत्थु जगि भण तो तहि सारिक्खु ॥

( यदि स घटयति प्रजापति कुत्रापि लात्वा शिक्षाम् ।

यत्रापि तत्रापि अत्र जगति भण तदा तस्या सदृक्षीम् ॥ )

२ जाम न निवडइ कुम्भ-यडि सीह चवेड चडक्क ।

ताम समतहँ मयगलह पइ पइ वज्जइ ढक्क ॥

( यावन्न निपतति कुम्भ तटे सिंहचपेटाचटात्कार ।

तावत्पमस्ताना मदकलानां पदे पदे वाद्यते ढक्का ॥ )

तिलह तिलत्तण ताउँ पर जाउँ न नेह गलन्ति ।

जामहिँ विसमा कज्ज-गइ जीवहँ मज्जे एइ ॥

( तिलाना तिलत्व तावत् पर यावत् न स्नेहा गलन्ति ।

यावत् विषमा कार्यगति जीवाना मध्ये आयाति ॥ )

तामहि अचछउ इयर जणु सुअणु वि अन्तर देइ ।

( तावत् आस्तामितर जन सुज्जनोऽप्यन्तर ददाति ॥ )



( ५६ ) अपभ्रंश मे कुत्र के स्थान मे केत्थु आर अत्र के स्थान मे एत्थु रूप होते है । जैसे —केत्थु ( कुत्र ), एत्थु<sup>१</sup> ( अत्र )

( ६० ) अपभ्रंश मे ( परिमाणार्थक ) यावद् और तावद् के स्थान मे जेवड और तेवड रूप विकल्प से होते है । इमी प्रकार ( परिमाणार्थक ) इयत् और कियत् के स्थान मे एवड और केवड रूप विकल्प से होते है । जैसे —जेवडु अन्तरु रावण रामहँ तेवडु अन्तरु पट्टण-गामहँ ( यावदन्तर रावणरामयो तावदन्तर पत्तन ( पट्टण ) ग्रामयो ) एव एवडु अन्तरु ( इयत् अन्तरम् ), केवडु अन्तरु ( कियत् अन्तरम् ) ।

( ६१ ) अपभ्रंश मे परस्पर के स्थान मे 'अपरोप्पर' रूप होता है । जैसे —अवरोप्पर जोअन्ताह सामिउ गञ्जिउ जाह ( परस्पर युद्धघमानाना स्वामी पीडित येषाम् ) ।

( ६२ ) अपभ्रंश मे ऋदि ( क + आदि ) व्यञ्जनो मे स्थित ए ओर ओ एव पदान्त मे वर्तमान उ, हु, हिँ ओर ह का लघु उच्चारण किया जाता है । जैसे —अन्नु जु तुन्द्धँ तहे घणहे, बलि किज्जँ सुअणस्सु, ढइउ घडावइ वणि तरुहु, तरुहु वि वक्कनु, खग विसाहिउ जहि लहहु, तणहँ तइज्जी भङ्गि न वि ।

( ६३ ) प्राकृत के नियमानुसार जहाँ म्ह हुआ हो उसका ( म्ह का ) अपभ्रंश मे म्भ होता है । जैसे :—सस्कृत में ग्रीष्म , प्राकृत मे गिम्हो और अपभ्रंश मे गिम्भो रूप होते हैं ।

( ६४ ) अपभ्रंश मे अन्यादृश शब्द के स्थान मे अन्नाइस और अवराइस ये आदेश होते है । जैसे —अन्नाइसो, अवराइसो ( अन्यादृश ) ।

१ इन उदाहरणों के लिए इसी अध्याय के नियम ५७ की पाद टिप्पणी २ देखो ।

नीचे कुछ अन्य मस्कृत शब्दों के अपभ्रंश रूप मात्र ही दिये जा रहे हैं। विशेष जानकारी के लिए हेमचन्द्र के व्याकरण का अवलोकन करना चाहिए।

संस्कृत	अपभ्रंश	हम० सूत्र संख्या
प्राय	प्राड, प्राइव, प्राइम्प, पग्गिम्ब	५ ४१४
अन्यथ	अनु अन्नट्	४ ४१२
कुत	कउ कहन्तिहु	४ ४१५
तत, तदा	तो	५ ४१७
एव	एम्प	५ ४१८
परम्	पर	" "
ममम्	समागु	" "
ध्रुवम्	डुव	" "
मा	म	" "
मन्, न्	मणउ	" "
किल	किर	४ ४१६
अथवा	अह्वइ	" "
दिवा	दिवे	" "
सह	सहु	" "
नाहि	नाहि	" "
पश्चात्	पच्छइ	६ ४२०
एवमेव	एम्बइ	" "
एव	जि	" "
इदानीम्	एम्बहि, एम्बहि	" "
प्रत्युत	पच्चलिउ	" "
इत	एत्तहे	" "
विवर्णण	वुन्नउ	५ ४२१
उक्तम्	उत्तउ	" "

वर्त्मनि	विच्चि	४ ४२१, ३५०
शोघ्रम्	वहिल्लउ	४ ४२२
कलहकारी	घड्डल	" "
अस्पृश्यससर्ग	विट्टाल	" "
भय	द्रवक्क	" "
आत्मीयम्	अप्पण	" "
दृष्टि	द्रेहि	" "
गाढ	निच्चड्डु	" "
साधारण	सड्डल	" "
कौतुक	कोडु	" "
क्रीडा	खेडु	" "
रम्य	खण्ण	" "
अद्भुत	ढक्करि	" "
हे सखि	हेल्लि	" "
पृथक् पृथक्	जुअ जुअ	" "
मूढ	नाल्लिउ, वढ	" "
नव	नवल्ल	" "
अवस्कन्द	दडवट	" "
यदि	छुडु	" "
सबन्धी	केर, तण	" "
मा भैषी	मन्धीसा	" "
यद् यद् दृष्टम्	जाइडिआ	" "
	हुहु <sup>१</sup>	४ ४२३
	घुगघ <sup>२</sup>	" "

१ शब्दानुकरण अर्थ में ।

२ चेष्टानुकरण अर्थ में ।

	घइ <sup>१</sup>	४ ४२४
	खाइ <sup>२</sup>	" "
	केहि <sup>३</sup>	४ ४२५
	तेहि <sup>४</sup>	" "
	रेसि <sup>५</sup>	" "
	रेसि <sup>६</sup>	" "
	तयोण <sup>७</sup>	" "
पुन	पुणु	४ ४२६
विना	विणु	" "
अवश्यम्	अवसे अवस	४ ४२७
एकश	एकसि	५ ४२८

( ६५ ) अपभ्रश मे नाम ( प्रातिपदिक ) के आगे स्वार्थ मे अ, अड, और उल्ल प्रत्यय होते हैं। और स्वार्थिक क प्रत्यय का लुक् भी होता है। जैसे —बे दोसडा (द्वौ दोषौ) कुडुल्ली (कुटी)।

**विशेषः**—जहाँ अड और उल्ल प्रत्यय होते है, वहाँ पूर्व के टि का लोप भी हो जाता है।

( ६६ ) पूर्वोक्त नियमानुसार जो प्रत्यय किये जाते है तदन्त नाम से स्त्रीत्व अर्थ के द्योतन मे ई प्रत्यय हो जाता है और टि का लोप भी हाता है। जैसे —गोरड + ई = गोरडी।

( ६७ ) अपभ्रश मे स्त्रीलिङ्ग के द्योतन करने वाले अ प्रत्ययान्त से पर मे आने वाले प्रत्यय से पुन आ प्रत्यय होता है। जैसे —धूलि = धूल = धूलड = धूलडिआ ( धूलि )।

**विशेषः**—स्त्रीलिङ्ग मे वर्तमान नहीं रहने पर यह नियम लागू नहीं होता। जैसे —कन्नडइ ( कर्णे )।

( ६८ ) अपभ्रंश मे युष्मदादि शब्दो से पर मे आने वाले ईय प्रत्यय का आर आदेश होता है । और उसके पूर्व के टि का लोप भी होता है । जैसे —तुहारेण ( युष्मदीयेन ), अम्हारा ( अस्मदीयम् ), महारा ( अस्मदीय ) ।

( ६९ ) अपभ्रंश मे इदम्, किम्, यद्, तद् और एतद् शब्दो से पर मे आने वाले अतु प्रत्यय के स्थान मे एत्तुल आदेश होता है और पूर्व के टि का लोप होता है । जैसे —एत्तुलो, केत्तुलो, जेत्तुलो, तेत्तुलो ।

( ७० ) अपभ्रंश मे सप्तम्यन्त सर्वादि से पर मे आने वाले त्र प्रत्यय के स्थान मे एत्तहे आदेश होता है । पूर्व के टि का लोप होता है । जैसे —एत्तहे, तेत्तहे ( अत्र, तत्र ) ।

( ७१ ) अपभ्रंश मे त्व और तल प्रत्ययो के स्थान में प्राय एपण आदेश होता है । जैसे —बडुपणु ( महत्त्वम् ), पक्ष मे—वडुत्तणहो ( महत्त्वस्य ) ।

( ७२ ) अपभ्रंश मे तव्य प्रत्यय के स्थान मे इएवउ, एवउ और एवा ये तीन आदेश होते हैं । जैसे —करिएवउ, मरिएवउ ( कर्तव्यम्, मर्तव्यम् ), सहेवउ ( सोढव्यम् ), सोएवा, जग्गेवा ( स्वपितव्यम्, जागरितव्यम् ) ।

( ७३ ) अपभ्रंश मे त्त्वा प्रत्यय के स्थान मे इ, इउ, इवि, अवि, एपि, एपिणु, एवि और एविणु आदेश होते हैं ।  
इ जैसे:—मारि ( मारयित्वा ), इड जैसे:—भज्जिउ ( भङ्क्त्वा ),  
इवि जैसे:—चुम्बिवि ( चुम्बित्वा ), अवि जैसे:—विद्धोडावि ( विच्छोद्य ), एपि जैसे:—जेपि ( जित्वा ), एपिणु जैसे:—चएपिणु ( त्यक्त्या ), एवि जैसे:—पालेवि ( पालयित्वा ), एविणु जैसे:—लेविणु ( लात्वा ) ।

( ७४ ) अपभ्रश मे 'नुम्' प्रत्यय के स्थान मे एण, अण, अणह, अणहि, एण्पि, एण्पिणु, एवि और एविणु ये आठ आदेश होते हैं । एव जैसे:—देण ( दातुम् ), अण जैसे:—रुण ( कर्तुम् ), अणह और अणहि जैसे:—मुञ्जणह, मुञ्जणहि ( भोक्तुम् ), एण्पि, एण्पिणु, एवि और एविणु जैसे:—जेण्पि, चण्पिणु, पालेवि और लेविणु ( जेतु, त्यक्तु, पालयितु और लातुम् ) ।

**विशेष:**—गम वातु से एण्पिणु आने पर गण्पिणु और गमेण्पिणु रूप होते हैं । उसी तरह एण्पि के रहने पर गण्पि और गमेण्पि रूप होते हैं ।

( ७५ ) अपभ्रश मे तुन् प्रत्यय के स्थान मे अणअ आदेश होता है । जैसे —मारणअ ( ओ ), बोहणअ ( मारयिता, कथयिता ) ।

( ७६ ) अपभ्रश मे इव ( उत्प्रेक्षा मे ) के अर्थ मे न, नउ, नाइ, नाइव, जणि, जणु ये छ रूप होते हैं ।

**न जैसे:**—न मल्ल जुञ्जु ससिराहु करहि ( ननु मल्लयुद्ध शशिराहु कुरुत ) **नउ जैसे:**—नउ जीवगालु दिणु । ( ननु जीवार्गलो दत्त ) **नाइ जैसे:**—थाह गवेसइ नाइ । ( स्तोघ गवेषयतीव ) **नावइ जैसे:**—नावइ गुरु-मच्छर भरिउ । ( ननु गुरु-मत्सर-भरितम् ) **जणि जैसे:**—सोहइ इन्द्रनीलु जणि कणइ बइट्टउ ( शोभते इन्द्रनील ननु कनके उपवेशित ) **जणु जैसे:**—निरुधम रसु पिण पिणवि जणु । ( निरुधमरस प्रियेण पीत्वेव ) ।

( ७७ ) अपभ्रंश मे लिङ्ग प्राय बदलते रहते हैं । जैसे —  
गय कुम्भइ ( गजकुम्भानि । कुम्भ शब्द पुल्लिङ्ग है, किन्तु नपुंसक  
के रूप मे व्यग्रहृत हुआ है ) ।

( ७८ ) अपभ्रंश के शेष कार्य सौरसेनी के अनुसार किये  
जाते है ।

इति शुभम् ।







# परिशिष्ट

## अक्षरानुक्रम शब्दसूची

अअ हक्खो शौ ८ ४४  
 अइसुतथ १ ३३  
 अइसरिअ १ ८९  
 अइसो अप ११ ५६  
 अउ व शौ ८ ४४, पा २ ९  
 अक्खवल १ २  
 अक्खो ( वि ) २ १, ३ ३  
 अक्खवइ ( वि ) २ ३  
 अगणी ७ अ  
 अगरू ( वि ) पा २ १  
 अगिम्मि शौ ८ ४४  
 अगुरू ( वि ) २ १  
 अगगओ १ ४६  
 अगिगए अप ११ १५  
 अगिगण अप ११ १५  
 अगिगणी १ २  
 अगिग अप ११ १५  
 अगगी ७ अ  
 अगघो ३ ७ ( वि ) २ १  
 अङ्को १ ३  
 अकोल्ल तेल्ल ( वि ) ३ ४०  
 अकोल्लो ७ अ  
 अङ्गण १ ३७  
 अगण १ ३७  
 अङ्गारो शौ ८ ४४ ७ अ  
 अङ्गु अप ( वि ) ११ ४

अङ्गुलिउ अप ११ २०  
 अच्चरिअ शौ ८ ४३, ७ अ  
 अच्चअर ७ अ, पा १ ५७  
 अच्चइ ६ ६  
 अच्चति प १० १८  
 अच्चते प १० १८  
 अच्चदि शौ ८ १६  
 अच्चदे शौ ८ १६  
 अच्चन्ति शौ ८ ३७  
 अच्चति ६ ६  
 अच्चरसा ( वि ) १ २०, १ २५  
 अच्चरा ३ २२ १ २५, १, २०  
 अच्चरा चावार० पा १ २०  
 अच्चरिअ पा १ ५७, ७ अ  
 अच्चरिज्ज ७ अ, पा १ ५७  
 अच्चरीअ पा १ ५७ ७ अ  
 अच्चरेहिं पा १ २५  
 अच्च १ ४२  
 अच्चसि ६ ६  
 अच्चह ६ ६  
 अच्चामि ६ ६  
 अच्चामि ६ ६  
 अच्चिथा ६ ६  
 अच्चो ३ १४, पा १ ४१, १ ४२  
 अच्चोइ १ ४१, पा० १ ४१  
 अच्चेर ७ अ, ३ २२, १ ५७ पा  
 १ ५७

अजमो ( वि ) २ १  
 अजिज्जइ ६ २६  
 अजोगो ( वि ) २ १४  
 अज उत्त शौ ( वि ) ८ २  
 अजा १ ६५ ३ ५  
 अजो ७ अ, शौ ८ ८  
 अज्जाओ ३ २४  
 अज्जलीइ पा १ ४४  
 अज्जली मा ९ ८  
 अज्जातिसो पै १० १६  
 अटइ ( वि ) २ ४  
 अट्टरह ७ अ  
 अट्टाए दण्डो अर्द्ध पा १ ६  
 अट्टी ७ अ  
 अडो ७ अ  
 अड्ड ७ अ  
 अण ७ अ  
 अणित्तय ७ अ  
 अणित्तय ७ अ  
 अणित्तय १ ३३  
 अणुरुचिज्जइ ६ २६  
 अणुधा शौ पा २ ३  
 अणुणा पा ३ ५  
 अणुणारिसो १ १७  
 अणुणरुवइ ६ २६  
 अणुणावअणुक्कण्ठो पा १ १५  
 अणुल ( वि ) २ १  
 अत्ता ७ अ  
 अत्थि ६ ६, शौ ( वि ) ८ ३७  
 अदीहाउसमाणी पा १ २५  
 अदो कारणादो शौ ८ ४४

अह ७ अ  
 अहो ३ ३  
 अह् ७ अ  
 अधणो ( वि ) २ ३  
 अधम्माय कुज्जइ अह पा १ ६  
 अधीरो ( वि ) २ ३  
 अनु अप ११ ६४  
 अनुत्तेन्तो ( वि ) पा १ १९  
 अनुवत्तन्तो ( वि ) पा १ १९  
 अन्तर १ ३७  
 अन्तरप्पा १ १९  
 अन्तरिदा १ १९  
 अन्ते आरी ७ अ  
 अन्ते उर ७ अ  
 अतर १ ३७  
 अतावेइ १ ७  
 अन्दे उर शौ ८ ३  
 अधलो स्वा प्र ३ ४५  
 अन्नल ७ अ  
 अन्नह अप ११ ६४  
 अन्नाइसो अप ११ ६४  
 अन्नु ७ अ  
 अपारो ( वि ) २ १  
 अपुरव शौ ८ १२  
 अपुरवागद शौ ८ १२  
 अपुव शौ ८ १२  
 अपुव्वागद शौ ८ १२  
 अपपज्जो ३ ५  
 अपपणइआ ( वि ) ४ ४१  
 अपपणा ४ ४१  
 अपपणिआ ( वि ) ४ ४१

अप्पणो ४ ४१  
 अप्पण अप ११ ६४  
 अप्पण्णू ३ ५  
 अप्पमत्तो ( वि ) २ ९  
 अप्प ४ ४१  
 अप्पा ४ ४१, ७ अ  
 अप्पाओ ४ ४१  
 अप्पाणम्मि ४ ४१  
 अप्पाणा ४ ४१  
 अप्पाणाओ ४ ४१  
 अप्पाणाण ४ ४१  
 अप्पाणाहितो ४ ४१  
 अप्पाणे ४ ४१  
 अप्पाणेण ४ ४१  
 अप्पाणेषु ४ ४१  
 अप्पाणेहिं ४ ४१  
 अप्पाणो ४ ४१  
 अप्पाण ४ ४१  
 अप्पाणस्स ४ ४१  
 अप्पादो ४ ४१  
 अप्पाहितो ४ ४१  
 अप्पिअ १ ५८  
 अप्पुल्ल ( वि ) ३ ४४  
 अप्पे ४ ४१  
 अप्पेइ १ ५८  
 अप्पेसु ४ ४१  
 अप्पेहिं ४ ४१  
 अफुण्णो ६ ३९  
 अब्बह्वज्ज मा ९ ८  
 अभिमञ्जू पै १० ४  
 असुगो ( वि ) २ १

असुज्जणो शौ ८ ४४  
 असुणा ४ ४७  
 असुणो ४ ४७  
 असुम्मि ४ ४७  
 असु वण शौ ८ ४४  
 असु वहु शौ ८ ४४  
 असुस्स ४ ४७  
 असु ४ ४७  
 अमू ४ ४७  
 अमूउ ४ ४७  
 अमूओ ४ ४७  
 अमूणे ४ ४७  
 अमूणो ४ ४७  
 अमूण ४ ४७  
 अमूसु ४ ४७  
 अमूहि ४ ४७  
 अमूहितो ४ ४७  
 अम्ब ७ अ  
 अब १ ६७  
 अम्महे शौ ८ २६  
 अम्मि हेरू, पा ४ ४७ ४ ४७  
 अम्ह हेरू, पा ४ ४७ शौ ४ ४७  
 अम्ह हेरू, पा ४ ४७ शौ ४ ४७  
 अम्हइ अप ४ ४८  
 अम्हइ अप ११ ४०  
 अम्हकेर ३ १२  
 अम्हकेरो ३ ३७  
 अम्हकेर ३ १२  
 अम्हत्तो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 अम्हम्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७

अम्हसु ४ ४७ हेरू, पा ४ २७  
 अम्हह अप ११ ४०  
 अम्हहे अप ४ ४८  
 अम्हा ४ ४७  
 अम्हाण हेरू, पा ४ ४७  
 अम्हाण ४ ४७, शौ ४ ४७, ८ ४४  
 हेरू पा ४ ४७  
 अम्हातिसोपै १० १६  
 अम्हारा अप ११ ६८  
 अम्हारिसो १ ८७, ३ २९  
 अम्हारो अप ( वि ) ३ ३८  
 अम्हासु अप ११ ४०, हेरू, पा  
 ४ ४७  
 अम्हासुतो हेरू पा ४ ४७  
 अम्हाहि हेरू पा ४ ४७  
 अम्हाहि ४ ४७  
 अम्हाहितो हेरू पा ४ ४७  
 अम्हि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 अम्हे ४ ४७, शौ ८ ४४, ८ ४०  
 ४ ४७ अप ११ ४०, ४ ४८,  
 हेरू पा ४ ४७  
 अम्हेपञ्च १ ४८  
 अम्हेष्य ३ ३८  
 अम्हेव १ ४८  
 अम्हेसु हेरू पा ४ ४७, शौ ४ ४७  
 अम्हेसुतो हेरू पा ४ ४७  
 अम्हेहि अप ११ ४०, ४ ४७  
 शौ ४ ४७  
 अम्हेहि अप ४ ४८, हेरू पा  
 ४ ४७  
 अम्हेहितो अप ४ ४८, शौ ४ ४७

अम्हो ४ ४७ हेरू पा ४ ४७  
 अयम्मि ४ ४७, ( वि ) ४ ४७  
 अया ( वि ) ४ २९  
 अय्य मा ९ ७  
 अय्यउत्त शौ ८ ८  
 अय्युणे मा ९ ७  
 अरहतो ७ अ  
 अरहो ७ अ  
 अरिहता ७ म  
 अरिहो ७ अ  
 अरुहतो ७ अ  
 अरुहो ७ अ  
 अलचपुर ७ अ  
 अलसी ७ अ  
 अलिअ १ ७३  
 अलिउलइ अप ११ २५  
 अलीअ ( वि ) १ ७३  
 अलाउ ७ अ  
 अलाऊ २ १२, ७ अ  
 अलावू २ १२  
 अल्ल ७ अ  
 अवभवो ( वि ) २ १४  
 अवभासो १ ९४  
 अवगअ ( पि ) १ ९४  
 अवजसो ( वि ) २ १४  
 अवज्ज ३ २३  
 अवञ्जा मा ९ ८  
 अवडो ७ अ  
 अवरण्हो ३ २८  
 अवराइसो अप ११ ६४  
 अवरिञ्चो स्वा प्र ३ ४५

अवरुव शौ पा २ ९  
 अवरोप्परु अप ११ ६१  
 अवस अप ११ ६४  
 अवसदो ( वि ) १ ९४  
 अवसरइ १ ९४  
 अवसँ अप ११ ६४  
 अवहड ७ अ  
 अवह्यज्ज शौ ८ ४४  
 अवह्यण्ण शौ ८ ४४  
 अवह्यज्ज शौ ८ ४४  
 अस्तवदी मा ९ ६  
 अस्मासु अप ४ ४८  
 अस्त ४ ४७  
 अस्सि ४ ४७  
 अस्तो १ ५२  
 अस्त १ ६७  
 अह ( वि ) ४ ४७  
 अहअ ४ ४७  
 अहके मा प्रा प्र ९ १६, मा ( वि )  
 ९ १६  
 अहम्मि ४ ४७  
 अहय हेरू, पा ४ ४७  
 अहरट्ट १ ६७  
 अहव १ ६१  
 अहवइ अप ११ ६४  
 अहवा १ ६१  
 अह ४ ४७, हेरू, पा ४ ४७, शौ  
 ४ ४७, ८ ४४  
 अहाजाअ ( वि ) २ १४  
 अहिअ २ ३  
 अहिआई १ ५२

अहिआई पा १ ५२  
 अहिजो ३ ५, ( वि ) १ ५२  
 अहिण्णू १ ५६ ३ ५  
 अहिमज्जू ७ अ  
 अहिमज्ज ७ अ  
 अहिमज्जुकुमाले मा ९ ८  
 अहिमण्णू शौ ८ ४४  
 अहिमन्नु ७ अ  
 अहिसुको १ ३३ •  
 अहेसि ( वि ) ६ ८  
 असु १ ३३  
 असो १ ३२

आ

आअओ ७ आ  
 आअदो २ ६  
 आअरिओ ७ आ  
 आइदी २ ६  
 आहरिओ ७ आ  
 आउण्ण आ ( वि ) २ १  
 आउदी २ ६  
 आप्ण अप ११ ३७  
 आओ ७ आ  
 आओज्ज ७ आ  
 आगमण्णू १ ५६  
 आगरिसा ( वि ) २ १  
 आगारो ( वि ) २ १  
 आचरकदि मा ९ १२  
 आढत्तो ७ आ  
 आढप्पइ ६ २६

आढवीअह ६ २६  
 आढिओ ७ आ  
 आणा ३ ५  
 आणाल ७ आ  
 आणिअ १ ७३  
 आत्तमाणो ७ आ  
 आदरो ( वि ) २ १  
 आफसो ७ आ  
 आमेळो ७ आ  
 आयइ अप ११ ३७  
 आयहो अप ११ ३७  
 आयास ( वि ) १ ६७  
 आरद्धो ७ आ  
 आरम्भो १ ३७  
 आरभो १ ३७  
 आलले मा , प्राप्र ९ १६  
 आलिट्ट ७ आ  
 आलिद्ध ७ आ  
 आलिहिदा २ ३  
 आली ७ आ  
 आवइ अप ११ ५३  
 आवत्तओ ( वि ) ३ २  
 आवत्तण ( वि ) ३ २१  
 आवत्तमाणो ७ आ  
 आसि ( वि ) ६ ८  
 आसीसा ७ आ  
 आसीसय ७ आ  
 आसो १ ५१ , १ ५२  
 आस्स शौ ( वि ) ८ ३७  
 आहरण २ ३  
 आहिआई १ ५२

आहिजाई पा १ ५२  
 इ  
 इ हेरू , पा ४ ४७  
 इअ ( वि ) १ ५०  
 इअ उअह० १ ६९  
 इअ ज० १ ६९  
 इअम्मि ४ ४७  
 इअ ( वि ) ४ ४७  
 इअ वाला शौ ८ ४४  
 इआणि १ ३६  
 इआणि १ ३६  
 इआणी ७ इ  
 इङ्गालो १ ३ , ७ इ  
 इङ्गिअजो २ ५ , शौ ८ ४४  
 इङ्गिअजो शौ ८ ४४  
 इङ्गिअणू २ ५  
 इङ्गिअणो शौ ८ ३१  
 इङ्गुअ ७ इ  
 इङ्गुदी पृल्ल ३ ४०  
 इच्छह अप ११ ४३  
 इच्छहु अप ११ ४३  
 इट्टाखुण्ण स्व ( वि ) ३ १८  
 इड्ढी १ ८१ , ७ ई  
 इणो ४ ४७  
 इण ( वि ) ४ ४७  
 इण धण शौ ८ ४४  
 इत्तिअ ३ ४१ , ७ इ  
 इत्तो ४ ४७  
 इत्थी शौ ८ ३८ , प्रास ८ ४५  
 इदरसिवा शौ ८ ४१

इदहण २ ३  
 इदो ४ ४७, शौ ८ ४४  
 इद ( वि ) ८ ४७  
 इद वण ८ ४४  
 इध शौ ८ १०  
 इन्ध ( वि ) २ १  
 इमस्स ४ ४७  
 इमस्सि ४ ४७  
 इम ४ ४७  
 इमादो ४ ४७  
 इमाण ( वि ) ४ ४७ ४ २९  
 इमाए ४ २९  
 इमिभा ( वि ) ४ ४७  
 इमिणा ४ ४७  
 इमिए ४ २९  
 इमीण ४ २९  
 इसु अप ११ ३३  
 इमे ४ ४७  
 इमेण ४ ४७  
 इमेहि ४ ४७  
 इमेहितो ४ ४७  
 इमो ४ ४७  
 इसि १ ५४, पा १ ५४  
 इसी १ ८१, १ ८६  
 इह ४ ४७  
 इह १ ३१  
 ईक्खू ७ ई  
 ईदिशाह मा ९ १४  
 ईदिस शौ ८ ४४  
 ईयम्मि ( वि ) ४ ४७  
 ईसरो ३ ८, ( वि ) १ ६७

ईसि ७ इ  
 ईसालू २ ४४

उ

उइद २ १  
 उऊ ७ उ, ( वि ) २ ६  
 उक्कत्तिओ ( वि ) ३ २१  
 उक्करो पा १ ५७, ७ उ  
 उक्कण्ठा ( वि ) ३ १९, १ ३७  
 उक्कठा १ २, १ ३७, १ ३२  
 उक्का ३ ३, १  
 उक्किट्ट ८ ८१  
 उक्करो ५ ५७, ७ उ, पा १ ५७  
 उक्को पा ३ ६  
 उक्कोस ६ ३९  
 उक्खअ १ ६१  
 उक्खाअ १ ६१  
 उच्चअ ७ उ  
 उच्चणो ( वि ) १ ७७  
 उच्चवो ७ उ  
 उक्काहो ३ २२ ( वि ) १ ७७ ७ उ  
 उक्खुओ ७ उ  
 उक्खू ३ १४, ७ उ  
 उजू १ ८३  
 उज्जू १ ८६, ७, उ, ३ ११  
 उज्ज हेरू, पा ४ ४७  
 उज्जेहि ४ ४७ हेरू पा ४ ४७  
 उट्टो ( वि ) ३ १८  
 उट्टम्बरो ७ उ  
 उण्णय १ १७  
 उण्णीस ३ २८

उत्तिमो १ ५४  
 उत्थारो ७ उ  
 उत्थेदो शौ ८ ४४  
 उत्थेदि शौ , प्रास ८ ४५  
 उदू ७ उ १ ८३, १ ८६, २ ६  
 उद्ध ७ उ  
 उपसगो २ ८  
 उप्पल ३ १,  
 उप्पाओ ( वि ) पा १ १९, ३ १  
 उबरुधिज्जह ६ २६  
 उबरुह्छह ६ २६  
 उरुम हेरू पा ४ ४७  
 उरुम ७ उ  
 उरुबर १ ३  
 उरुबरो ७ उ  
 उरुह हेरू पा ४ ४७  
 उरुहत्तो हेरू पा ४ ४७  
 उरुहाण हेरू पा० ४ ४७  
 उरुहाण हेरू पा० ४ ४७  
 उरुहे ४ ४७  
 उरुहेहिं ४, ४७, हेरू पा ४ ४७  
 उरुह ३ २९  
 उरुह हेरू पा ४ ४७  
 उरुहत्तो हेरू पा ४ ४७  
 उरुहे हेरू पा ४ ४७  
 उरुहेहिं हेरू पा ४ ४७  
 उरुल्लल ७ ३  
 उरुल्लहलो शौ ८ ४४  
 उरुल्लेह ७ उ  
 उरुल्ल ७ उ  
 उरुज्जाओ ३ २४

उवणिअ १ ७३  
 उवणीओ १ ७३  
 उवमा २ ९  
 उवर ( वि ) पा १ १९  
 उवरि शौ ८ ४४  
 उवरिं १ ३३, ७ उ  
 उवस्तिदे मा ९ ६  
 उवहसमाणि ६ १३  
 उव्विगो ( वि ) ३ ३  
 उव्वीह ७ उ  
 उव्वूह ७ उ  
 उश्चलदि मा ९ १०  
 उसहो १ ८३, ७ उ, १८६  
 उरुमा मा ९ ४  
 ऊभासो १ ९५  
 ऊरुल्लुओ १ ७७  
 ऊजा १ ६५  
 ऊमओ १ ७७  
 ऊसवो ( वि ) १ ६७, ७ उ  
 ऊससिरो ३ ३५  
 ऊसारो ७ उ  
 ऊसारिओ ( वि ) ३ २२  
 ऊसित्तो १ ७७  
 ऊसुओ १ ७७, ७ उ  
 ऊसो १ ५१  
 ऊहसिअ १ ९५  
 ऋ  
 ऋण १ ८६  
 ए  
 ए हेरू पा ४ ४७  
 एअ ( वि ) पा १ १९



एअग्नि ( वि ) ४ ४७  
 एअस्स ४ ४७  
 एअस्सि ४ ४७  
 एअ ( वि ) पा १ १९, वि २ ६  
 एआ ( वि ) ४ ४७  
 एआउ ( वि ) ४ ४७  
 एआप् ४ २९  
 एआओ ४ ४७, ( वि ) ४ ४७  
 एआण ४ २९  
 एआरह ७ ए  
 एआरिसो १ ८७  
 एआहि ( वि ) ४ ४७  
 एआहितो ( वि ) ४ ४७  
 एह पेच्छ अप ११ ३५  
 एईप् ४ २९  
 एईण ४ २९  
 एएसि ४ ४७  
 एएसु ४ ४७  
 एएहि ४ ४७  
 एओ ३ १२  
 एओ एथ १ १२  
 एकसि ७ ए  
 एकल्लो स्वाप् ३ ४५  
 एकईआ ७ ए  
 एकल्लो स्वाप् ३ ४५  
 एकसिअ ७ ए  
 एकसि अप ११ ६४  
 एकहि अप १ २९  
 एकारो ७ ए  
 एको ३ १२  
 एगआ ७ ए

एगत्तण ( वि ) २ ६  
 एगो ( वि ) २ १  
 एण ४ ४७  
 एण्हि ७ ए  
 एते ४ ४७  
 एतेहि ४ ४७  
 एतेहितो ४ ४७  
 एत ४ ४७  
 एत्तहे अप ११ ७०, ११ ६४  
 एत्ताहे ७ ए ( वि ) ४ ४७  
 एत्ताहो ४ ४७  
 एत्तिअमत्त १ ६६  
 एत्तिअमेत्त १ ६६  
 एत्तिअ ३ ४२  
 एत्तिक शौ, प्रास ८ ४५  
 एत्तिल ३ ४२  
 एत्तुलो अप ११ ६९  
 सत्तो ४ ४७ ( वि ) ४ ४७  
 एत्थ पा १ ५७, ४ ४७  
 एत्थु अप ११ ५९  
 एदस्स ४ ४७  
 एदाओ शौ ८ २  
 एदाण ४ ४७  
 एदाहि शौ ८ २  
 एदिणा ४ ४७  
 एदे ४ ४७  
 एदेण ४ ४७  
 एदेस् ४ ४७  
 एदेहि ४ ४७  
 एहह ३ ४२  
 एग्व अप ११ ६४

कहमे ७ क  
 कहूरव १ ९०  
 कह्लासो १ ९०  
 कहवाह ७ क  
 कहसो अप ११ ५६  
 कई २ १  
 कउ अप ११ ६४  
 कउक्खेअओ १ ९३  
 कउरओ १ ९३  
 कउला १ ९३  
 कउह ७ क  
 कउहा० पा १ २६, १ २६  
 ककुध ७ क  
 ककुहा ७ क  
 ककोडो १ ३३  
 कच्च पै प्राप्र १० २१  
 कच्चु अप ११ १  
 कज्जभा शौ ८ ४४  
 कज्जपरवसो शौ ८ ८  
 कज्ज ३ २३  
 कञ्चुओ १ १  
 कञ्चुइभा शौ ८ ४  
 कञ्चुओ १ ३७  
 कञ्चुओ १ ३२, १ ३७  
 कञ्जभा शौ ८ ४४  
 कञ्जा पै प्राप्र १ २१, शौ ८ ३०  
 कञ्जका पै १० ४  
 कञ्जकावलण मा ९ ८  
 कट्ट ३ १८  
 कडण ७ क  
 कडुअ शौ ८ १४

कडे मा प्राप्र ९ १६  
 कड्डउ अप ११ ४४  
 कड्डामि अप ११ ४४  
 कणअ २ ८  
 कणवीरो ७ क  
 कणेरू ७ क  
 कण्टओ १ ३७  
 कटओ १ ३७  
 कण्ड १ ३७  
 कण्डुअण ७ क  
 कड १ ३७  
 कणभा शौ ८ ४४  
 कण उर ( वि ) १ २  
 कण्णा शौ ८ ३०  
 कणिभारो ७ क  
 कण्णोरो ७ क  
 कण्हो ७ क, ३ २८, ( वि ) १ ८१  
 कत्तरी ( वि ) ३ २१  
 कत्तिओ ( वि० ) ३ २१  
 कत्तो ४ ४७  
 कत्थ शौ ८ ४४, ४ ४७  
 कदो शौ ( वि ) ४ ४७, ४ ४७  
 कध शौ ८ ४४, ८ ९  
 कधिदु अप ११ ४९  
 कधेदि शौ प्रास ८ ४५  
 कथा ( वि ) २ ३  
 कन्दो ७ क  
 कच्चडइ अप ( वि ) ११ ६७  
 कबधो शौ ८ ४४  
 कमदो २ ४  
 कमधो ७ क  
 कमलइ अप ११ २५

कमल पै १० ७  
 कमो ( वि ) ३ ३२  
 कम्पह् ( वि ) १ ९, १ ३७  
 कपह् १ ३७  
 कम्मस ( वि ) ३ ३  
 कम्माह मा ९ १४  
 कम्मि ४ ४७  
 कम्मो १ ३९  
 कम्हा ४ ४७  
 कम्हारो ३ २९, ७ क  
 कयग्गहो पा २ १  
 कय्ये मा प्राप्र ९ १६  
 कर ६ २८  
 करण अप ११ ७४  
 करणिज्ज २ १५  
 करला ७ क  
 कररुहो १ ४३  
 कररुह १ ४३  
 करहि अप ११ ४१  
 कराविअह् ६ १९  
 कराविज्जह् ६ १९  
 कराविअ ६ १९  
 करिण्ववउ अप ११ ७२  
 करिणी ( वि ) ४ २९  
 करिज्जह् ६ २६  
 करिट्ठण शौ ८ १४  
 करिय शौ ८ १४  
 करिस ( वि ) ६ २८  
 करिसो १ ७३  
 करिसिदि शौ ८ १७  
 करीसो ( वि ) १ ७३

करे अप ११ ४६  
 करेमि शौ ८ ३५  
 कलओ १ ६१  
 कलम्बो १ ३७, ७ क  
 कलबो १ ३७  
 कलाओ २ ९  
 कलिहि अप ११ १३  
 कले मा ९ ३  
 कल्हार ३ ३१  
 कवण अप ( वि ) ४ ४७ ११ ३  
 कवेल्लु अप ११ ५०  
 कवट्टिअ ७ क  
 कवोलो २ ९  
 कव्व ( वि ) ३ ३  
 कसट पे १० १३, प्राप्र १० २१  
 कसणो ७ क  
 कस ७ क  
 कसिणो ७ क, पा ३ ६  
 कसिण ७ क  
 कस्ट मा ९ ४  
 कस्स ४ ४७  
 कस्सि ४ ४७  
 कस्सि शौ ८ ४४  
 कह १ ३६  
 कहन्तिहु अप ११ ६४  
 कहमवि १ ४९  
 कह २ ३ शौ ८ ९, १ ३६, अप  
 ( वि ) ४ ४७  
 कह पि १ ४९  
 कहावणो ३ ९, ७ क  
 कहां अप ११ २७, ११ २८

कहा अप ( वि ) ४ ४७  
 कहि शौ ८ ४४  
 कहिं ४ ४७  
 कहे अप ११ ३१  
 कहेहि २ ३  
 क ४ ४७  
 कस १ ६३, १ ३६  
 कसो १ ३२  
 कसिओ १ ६३  
 कसुअ ७ क  
 का ( वि ) ४ ४७  
 काइ अप ( वि ) ४ ४७  
 काइमो ६ ८  
 काइ अप ११ ३९  
 काउण १ ३४  
 काउणो ७ क  
 काऊण ३ ३६, ( वि ) ६ १६,  
 १ ३४  
 काए ४ ३२  
 काओ ४ ३२  
 काख अप ११ १  
 काण ४ ४७  
 कामीअदि शौ ८ ४२  
 कारिदाणि मा प्राप्र ९ १६  
 कारिअ ६ १९  
 कारिजइ ६ १९  
 कालओ १ ६१  
 काला ४ २०, ४ ४७  
 कालाअस ७ क ( वि ) पा १ १९  
 कालास ( वि ) पा १, १९, ७ क  
 काली ४ २९

कालो ( वि ) २ १  
 कास ४ ४७  
 कासइ १ ५१  
 कासओ १ ५१  
 कासवो १ ५१, २ ९  
 कासी ६ ७  
 कासु अप ( वि ) ४ ४७, अप  
 ११ ३०, ४ ३२  
 कास १ ३६  
 काह ६ ८, ६ ९  
 काहावणो ७ क  
 काहिइ ६ ८  
 काहिथ्या ६ ८  
 काहिमि ६ ८, ६ ९  
 काहिसि ६ ८  
 काहिति ६ ८  
 काही ( वि ) १ ९, ६ ७  
 काहीअ ६ ७  
 काहे ४ ४७  
 कि १ ३६  
 किअ ( वि ) ४ ४७  
 किअ २ १  
 किई १ ८१  
 किख १ ८१  
 किन्ची ७ क, पा ३ ६  
 किच्छ १ ८१  
 किज्जदि ८ १६  
 किज्जदे शौ ८ १६  
 किणा ४ ४७  
 किण्हो ( वि ) १ ८१  
 किन्ती ( वि ) ३ २१

किध अप ११ ५४  
 किन्नड अप ११ १  
 किति १ ५०  
 किमवि १ ४९  
 किमेद् शौ ८ २१  
 किर अप ११ ६४  
 किरातो शौ ८ ४४  
 किरिभा ७ क  
 किलिट्ट ३ ३२  
 किलिण्ण ३ ३२, ७ क  
 किलिन्नड अप ११ १  
 किलिस्सह ३ ३२  
 किलेसो ३ ३२  
 किवणो १ ८१  
 किवा १ ८१  
 किवाण १ ८१  
 किविणो १ ५४  
 किवो १ ८१  
 किसर ७ क  
 किसरो १ ८१  
 किसलअ ७ क  
 किसल ७ क  
 किसानू १ ८१  
 किसिओ १ ८१  
 किसो १ ८१  
 किस ७ क  
 किसुअ ७ क  
 किह अप ११ ५४  
 किहे अप ११ २८  
 किं अप ११ ३९, ( वि ) ४ ४७,  
 १ ३६

कि णेद् शौ ८ २१  
 किंपि १ ४९  
 किंसुअ १ ३६, ७ क  
 किंसुओ शौ ८ ४४, ( वि ) १ ३७  
 किस्सा ( वि ) ४ ४७  
 कीष् ( वि ) ४ ४७, ४ ३२  
 कीभा ( वि ) ४ ४७  
 कीई ( वि ) ४ ४७  
 कीओ ४ ३२  
 कीदिस शौ ८ ४४  
 कीणो ४ ४७  
 कीरह ६ २६  
 कीरते पै १० १५  
 कीलह २ ४  
 कीस ४ ४७  
 कीसु अप ११ ४८, ४ ३२  
 कीसे ( वि ) ४ ४७  
 कुञ्जहल ७ क  
 कुवखेअओ १ ९२  
 कुच्छेअअ ७ क  
 कुटुम्बक पै १० १०  
 कुडुल्ली अप ११ ६५  
 कुदारो २ ४  
 कुतुम्बक पै १० १०  
 कुदो ( वि ) १ ४६, शौ ८ ४४  
 कुप्प ६ ३८  
 कुप्पल ३ १६  
 कुञ्ज ७ क  
 कुमरो १ ६१  
 कुमारो १ ६१  
 कुमारी शौ ८ ४४, ( वि ) ४ २९

कुम्हण्डो शौ ८ ४४  
 कुरुचरा ४ २८  
 कुरुचरी ४ २८  
 कुलज ( वि ) पा १ १९  
 कुल १ ४१, ४ ४१  
 कुलाई ४ २९, ४ ४१  
 कुलाइ ४ ३९  
 कुलाणि ४ ४१, ४ ३९  
 कुलदाहिपो १ ११  
 कुलो १ ४१  
 कुल्ला ( वि ) ३ ३  
 कुवलज ( वि ) पा १ १९  
 कुसुम पयरो ३ १०  
 कुसुम प्पयरो ३ १०  
 कुसो २ १९  
 कुपल १ ३३  
 के ४ ४७  
 केढवो ७ क, १ ८८  
 केण ४ ४७  
 केणवि १ ४९  
 केणावि १ ४९  
 केत्तिज ३ ४२  
 केत्तिल ३ ४२  
 केत्तुलो अप ११ ६९  
 केत्थु अप ११ ५९  
 केद्दह ३ ४२  
 केम अप ११ ५४  
 केर अप ११ ६४  
 केरव १ ९०  
 केरिसो १ ८७, ७ क  
 केल ७ क

केलासो १ ८८, १ ९०  
 केली ७ क  
 केवट्टो ३ २१  
 केवडु अप ११ ६०  
 केव अप ११ ५४  
 केसर ७ ६  
 केसवो पै प्राप् १० २१  
 केसिं ४ ४७  
 केसु ४ ४७  
 केसुअ १ ३६, ७ क  
 केसुओ शौ ८ ४४  
 केहिं अप ११ ६४, ४ ४७  
 केहितो ४ ४७  
 केहु अप ११ ५५  
 केअव पा १ १, १ ८९  
 को ४ ४७  
 कोउहल ३ १२  
 कोउहल्ल ७ क, ३ १२  
 कोऊहल ७ क  
 कोट्टिम १ ७९  
 कोड ( वि ) २ ४  
 कोत्थुहो १ ९१  
 कोदूहल शौ ८ ४४  
 कोन्तलो १ ७९  
 कोच्चा १ ९१  
 कोडु अप ११ ६४  
 कोप्पर ७ क  
 कोसुर्ह १ ९१  
 कोसलो ( वि ) १ ९३  
 कोसबी १ ८१  
 कोसिओ १ ९१

कोस्टागाल मा ९ ५  
 कोहडी ७ ६  
 कोहणडी ७ क  
 कोहल ७ क  
 कोहली ७ क  
 कौच्छेअअ ७ ६  
 कौरवा पा १ १  
 क्खु शौ ८ ४५  
 र  
 खइअ १ ६१  
 खइओ ७ ख  
 खओ ३ १३  
 खग १ ४३  
 खगो १ २, ३ १, १ ४३  
 खन्दो ७ ख  
 खधावारो ३ १७  
 खधो ३ १७  
 खट्टा ( वि ) २ ४  
 खडगो ( वि ) २ ४  
 खणौ ३ १५, ७ ख शौ ८ ४४  
 खण्डिओ ७ ख  
 खण्ण अप ११ ६४  
 खण्णू ३ १२  
 खप्पर ७ ख  
 खमा ७ ख  
 खम्भो पा ३ ६  
 खभो ७ ख  
 खलिअ पा ३ ६, ३ १, पा ३ १  
 खल्लीडो ७ ख  
 खसिओ ७ ख  
 खाअइ ६ ३६

खाइ ६ ३६  
 खाइअ १ ६१  
 खाइ अप ११ ६४  
 खाणू ३ १२, ७ ख  
 खासिअ ७ ख  
 खित्त ७ ख  
 खिद्यति ३ १३  
 खीण ३ १३  
 खीर शौ ८ ४४  
 खीलओ ७ ख  
 खु शौ ८ ४५  
 खुज्जो ७ ख  
 खुडिओ ७ ख  
 खुडुक्कइ अप ११ ४८  
 खेडओ ७ ख  
 खेडिओ ७ ख  
 खेडु अप ११ ६४  
 ग  
 गभा २ १  
 गडभा ७ ग  
 गडओ ७ ग  
 गडडो १ ९३  
 गडरव ७ ग  
 गडरी अप ११ १  
 गओ २ १, ( वि ) २ ६  
 गकन पै प्राप्र १० २१  
 गगर ७ ग  
 गच्छति पै १० १८  
 गच्छते पै १० १८  
 गच्छदि शौ ८ १६

गच्छदे शौ ८ १६  
 गच्छ ६ ९  
 गच्छद्रूप शौ ८ १७  
 गच्छिय शौ ८ १४  
 गच्छस्सिद्धि शौ ८ १७  
 गज्जह ( वि ) २ ३  
 गज्जतो ( वि ) २ ३  
 गहुअ शौ ८ १४  
 गडे मा प्राप् ९ १६  
 गडुहो ७ ग  
 गड्डो ७ ग  
 गटां ५ ४४  
 गग्निज्जह ६ २६  
 गहहो शौ ८ ४४, ७ ग  
 गन्धून पै १० ११  
 गन्ध उडि १ १३  
 गन्धो ( वि ) २ १  
 गन्धिण शो ( वि ) पा २ १,  
 ७ ग  
 गमिज्जह ६ २६  
 गमेप्पि अप ( वि ) ११ ७४  
 गमेप्पिणु अप ( वि ) ११ ७४  
 गम्पि अप ( वि ) ११ ७४  
 गम्पिणु अप ( वि ) ११ ७४  
 गभिरीअ ७ ग  
 गम्मह ६ २६  
 गय अप ११ १७  
 गयकुम्भह अप ११ ७७  
 गया पा २ १  
 गय्यदि मा ९ ७  
 गरुआअह ६ १

गरुआह ६ १  
 गरुई १ ७५  
 गरुओ १ ७६  
 गरुलो २ ४  
 गलोई १ ७५, ७ ग  
 गश्च मा ९ १०  
 गहवई ७ ग  
 गहिअ १ ७३  
 गहिदच्छले मा प्राप् ९ १६  
 गहिर १ ७३  
 गहो ३ ३  
 गाई ४ ३७  
 गाढजोव्वणा ( वि ) २ १४  
 गारव ७ ग  
 गावी ४ ३७, ७ ग  
 गावीआ ७ ग  
 गावो ७ ग  
 गाहा २ ३  
 गिट्टो १ ८१  
 गिट्ठी १ ८१  
 गिंठी १ ३३  
 गिद्धो शो ८ २९  
 गिग्हो ३ २९  
 गिरउ हेरू ४ १९  
 गिरोअ हेरू ४ १९  
 गिरवो हेरू ४ १९  
 गिरा १ २१, पा १ २१  
 गिरि ४ १९, हेरू ४ १९  
 गिरि ४ १९, हेरू ४ १९, १ २८  
 गिरिण ४ १९  
 गिरिण ४ १९



गिरिणा ४ १९, हेरू ४ १९  
 गिरिणो ४ १९, हेरू ४ १९  
 गिरित्तो ४ १९ हेरू ४ १९  
 गिरिम्मि ४ १९ हेरू ४ १९  
 गिरि सिङ्गहु अप ११ ९  
 गिरि सुतो ४ १९  
 गिरि हितो ४ १९  
 गिरिस्स ४ १९, हेरू ४ १९  
 गिरिहे अप ११ १३  
 गिरी ४ १९ हेरू ४ १९  
 गिरीउ हेरू ४ १९  
 गिरीओ हेरू ४ १९  
 गिरीओ ४ १९  
 गिरीग हेरू ४ १९  
 गिरीण हेरू ४ १९  
 गिरीस ४ १९, हेरू ४ १९  
 गिरीसु ४ १९ हेरू ४ १९  
 गिरीसुतो हेरू ४ १९  
 गिरीहिं ४ १९  
 गिरीहि ४ १९, हेरू ४ १९  
 गिरीहितो हेरू ४ १९, हेरू ४ १४  
 गिम्भो अप ११ ६३  
 गिम्ह वाशले मा ( वि ) ९ ४  
 गुञ्ज ३ ३०  
 गुडो ( वि ) २ ४  
 गुणहिं अप ११ ७  
 गुणहिं अप ११ १९  
 गुणाइ पा १ ४३  
 गुणो १ ४३  
 गुण १ ४३  
 गुण्ठी १ ३३

गुत्तो ३ १  
 गुनगनयुत्तो पै १० ५  
 गुनेन पै १० ५  
 गुम्फइ ( वि ) २ ११  
 गुरउ हेरू ४ १९  
 गुरओ हेरू ४ १९  
 गुरवो हेरू ४ १९  
 गुरु ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुई ३ ३३  
 गुरुउ हेरू ४ १९  
 गुरुओ १ ७६, हेरू ४ १९  
 गुरुण ४ १९  
 गुरुण ४ १९  
 गुरुणा ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुणो ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुत्तो ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुम्मि ४ १९ हेरू ४ १९  
 गुरुल्लावा १ ६७  
 गुरुवो ३ ३३  
 गुरुस्स ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुहितो ४ १९  
 गुरु ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुञ्ज १ ३३  
 गुरु ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुउ हेरू ४ १९  
 गुरुओ हेरू ४ १९  
 गुरुण हेरू ४ १९  
 गुरुण हेरू ४ १९  
 गुरुसु ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुसु ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुसुतो हेरू ४ १९.

गुरुहिँ ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुहिँ ४ १९, हेरू ४ १९  
 गुरुहितो हेरू ४ १९  
 गुलो ( वि ) २ ४  
 गृहेपिणु अप ११ ४८  
 गेऽद्दि शौ, प्रास ८ ४५  
 गेण्डदि शौ, प्रास ८ ४५  
 गेंडुअ ( वि ) १ ५७  
 गेर्हीअ ६ ८  
 गेन्दुअ पा १ ५७, ७ ग  
 गेह्य ७ ग  
 गोआचरी ७ ग  
 गोट्टी ३ १  
 गोणो ७ ग  
 गोदमो १ ९१  
 गोरडी अप ११ ६६  
 गोरी ( वि ) ४ २९, अप ११ १  
 गोला ७ ग  
 गोविन्तो पै, प्राप्र १० २१  
 गोवेइ २ ९  
 घ  
 घअ १ ८०  
 घइ अप ११ ६४  
 घङ्गल अप ११ ६४  
 घडइ २ ४  
 घडो २ ४  
 घटा ( वि ) २ ४  
 घर ७ घ  
 घिणा १ ८१  
 घुगअ अप ११ ६४

घुडुक्कइ अप ११ ४८  
 घुम्मदि शौ, प्रास ८ ४५  
 घुसिण १ ८१  
 घेत्तण ३ ३६  
 घेत्तू पै, प्राप्र १० २१  
 वेप्पह ६ २६  
 वेप्पदि शौ, प्रास ८ ४५  
 घोडा अप ११ २  
 च -  
 चइत्त ( वि ) ३ १९, ७ च  
 चइत्तो १ ९०  
 चउगुणो ७ च  
 चउट्टो ७ च, शौ ८ ४४  
 चउट्टो ७ च  
 चउण्ह ४ ४८  
 चउत्थो ७ च  
 चउत्थो ७ च  
 चउइसी ७ च  
 चउइह ७ च  
 चउइही शौ ८ ४४  
 चउमुहु अप ११ ३  
 चउरो ४ ४८  
 चउव्वार ७ च  
 चउसु ४ ४८  
 चऊहि ४ ४८  
 चऊहितो ४ ४८  
 चएपिणु अप ११ ७४, अप ११ ७३  
 चक्क ३ ३  
 चक्काओ ( वि ) १ १३  
 चक्खिअ ६ ३९  
 चक्खू १ ४१

चक्खुइ १ ४१	चिहुर ७ च
चक्कर ७ च	चिल्ल ७ च
चहु पा १ ६१	चुअइ ३ १, पा ३ १
चत्तारि ४ ४८	चुच्छ ७ च
चत्तारो ४ ४८	चुणइ ६ ३१
चन्दो १ ३७	चुणो १ ६७
चन्दो ( वि ) ३ ३	चुम्बि वि अप ११ ७३
चन्दिमा ७ च	चेणह १ ६८
चन्दो १ ३७, ( क्रि. ) ३ ३	चेत्तो १ ९०
चमर १ ६१	चोगुणो ७ च
चम्म ( वि ) १ ४०, ( वि )	चोट्टी ७ च
पा १ ४०	चोट्टो ७ च
चविडा ७ च	चोस्थी ७ च
चविडो ७ च	चोस्थो ७ च
चविलो ७ च	चोहसी ७ च
चवेडा ७ च	चोहह ७ च
चव्वदि शौ, प्रास ८ ४५	चोरिअ ७ च
चाउण्डा ७ च	चोरिआ १ ४४
चाहु पा १ ६१	चोरिओ १ ४८
चामर १ ६१	चोरो ( वि ) २ १
चिट्टइ ( वि ) २ ४	चोव्वार ७ च
चिट्टदि मा०, ( वि ) ९ १३, शौ	छ
८ ३६	छइअ ( वि ) ३ १४
चिणइ ६ २२, ६ ३१	छउम ७ छ
चिणिज्जइ ६ २३	छट्टी ७ छ
चिणह १ ६८, शौ ८ ४४	छट्टो ७ छ
चिन्ध ७ च	छट्टिओ ७ छ
चिम्मइ ६ २४	छणा ३ १५, ७ छ
चिल्लओ ७ च	छत्तवणो ७ छ
चिक्कइ ६ २३	छत्तिवणो ७ छ
चिष्ठदि मा, प्रास ९ १६, मा ९ १३	छमा ७ छ

छमो ७ छ  
 छम्म ७ छ  
 छाभा ७ छ  
 छाली ७ छ  
 छालो ७ छ  
 छाहा, २ १७, ७ छ, ४ ३०  
 छाही ४ ३०  
 छिक्क ७ छ  
 छित्त ६ ३९  
 छिप्पह ६ २६  
 छिरा ७ छ  
 छिहा ७ छ  
 छीअ ७ छ  
 छीण ३ १३  
 छुच्छ ७ छ  
 छुहु अप ११ ६४  
 छुत्त ७ छ  
 छुहा १ २२, ७ छ  
 छूढ ७ छ  
 छूढो पा ३ ८  
 छेच्छ ६ ९  
 छोल्लिज्जन्तु अप ११ ४८  
 छमुहु अप ११ ३  
 छमुहो ७ छ  
 ज  
 जअह ६ ९, ६ १४  
 जह अह १ ४८  
 जह १ ६४, २ १  
 जह्वा अप ( वि ) १ ८७  
 जह्वा अप ११ ५६

जइह १ ४८  
 जउणा ७ ज  
 जओ ( वि ) २ ६  
 जक्खो पा ३ ६  
 जग्गेवा अप ११ ७२  
 जज्जो ३ २३  
 जज्जो शौ ८ ३०  
 जडालो ३ ४४  
 जडिलो ७ ज  
 जढ ६ ३९  
 जणि अप ११ ७६  
 जणु अप ११ ७६  
 जणवक्केण १ २  
 जणसेणो शौ ८ ४४  
 जण्हू ३ २८  
 जत्तु अप ११ ५७  
 जत्तो ४ ५५  
 जत्थ ४ ४५  
 जत्थल्लिणा पा १ ४४  
 जदो ४ ४५  
 जघा शौ, पा २ ३, शौ पा  
 ६१, शौ ८ ४४  
 जमल स्वाग्र ३ ४५  
 जमो २ १४  
 जम्परो ३ ३५  
 जम्मण ७ ज  
 जम्मो ३ २६, ७ ज, १ ३९, प  
 १ ३९  
 जम्मि ४ ४५  
 जग्हा ४ ४५

जरिज्जह् ६ २६  
 जलभरो ( वि ) २ १  
 जलचरो ( वि ) २ १  
 जल १ २८  
 जसो १ ३९, पा १ ३९, १ १४,  
 १ १६  
 जस्स ४ ४५  
 जरिस्स ४ ४५  
 जह् १ ६१, ७ ज -  
 जहट्टिभ १ ७  
 जहण २ ३  
 जहा १ ६१, ७ ज  
 जहाँ अप ११ २७  
 जहिट्टिलो १ ७५, ७ ज  
 जहि अप ११ २९, ४ ४४  
 जहुट्टिलो १ ७५, ७ ज  
 जहे अप ११ ३१, अप पा ४ ४५  
 जा ( वि ) पा १ १९, ७ ज  
 जाह् २ १४  
 जा हट्टिभा अप ११ ६४  
 जाउ अप ११ ५८  
 जाओ ४ ३२, ४ ४५  
 जाण शौ, पा ४ ४५  
 जाण मा ९ १५, ३ ५, ४ ४५  
 जाणिज्जह् ६ २६  
 जातिस पै ( वि ) १ ८७  
 जादिस शौ ( वि ) १ ८७, शौ  
 ८ ४४  
 जाम अप ११ ५८  
 जामहि अप ११ ५८  
 जामाढओ १ ८३

जामाढओ १ ८३  
 जारो ( वि ) २ १  
 जाला पा ४ ४५  
 जाव ( वि ) पा १ १९, ७ ज, १  
 १६  
 जावँ अप ११ ५८  
 जास ४ ४५  
 जासु अप पा ४ ४५, अप ११ ३०  
 जासुतो ४ ४५  
 जाहितो ४ ४५  
 जाहँ मा ९ १५  
 जाह ट पा ४ ४५  
 जाहु अप ११ ४५  
 जाहे पा ४ ४५  
 जि अप ११ ६३  
 जिभह् १ ७३  
 जिभउ १ ७३  
 जिग्घदि शौ प्रास ८ ४५  
 जिण ४ ४५  
 जिणइ ६ २२  
 जिणधम्मो ( वि ) २ ३  
 जिण्ण ७ ज  
 जित्तिभ ३ ४१, ७ ज  
 जिध अप ११ ५४  
 जिब्भा ७ ज  
 जिम अप ११ ५४  
 जिँवँ अप ११ ५४, ११ ५०  
 जिह् अप ११ ५४  
 जी ४ ४६  
 जीभह् ( वि ) १ ७३  
 जीभ ( वि ) पा १ १९, ७ ज

जीभा ७ ज  
 जीओ २ १, ४ ३२  
 जीया ४ ४६  
 जीरइ ६ २६  
 जीविअ ( वि ) पा १ १९, ७ ज  
 जीहा ७ ज  
 जु अप ११ ३२  
 जुगुच्छइ ३ २२  
 जुग ३ २  
 जुण ७ ज  
 जुत्तणिम शौ ८ २१  
 जुत्तमिम शौ ८ २१  
 जुवइ अणो ( वि ) १ ८  
 जुहुट्टिरो शौ ८ ४४  
 जे ४ ४५  
 जेण ४ ४५  
 जेत्तिअ ३ ४२  
 जेत्तिक शौ प्रास ८ ४५  
 जेत्तिल ३ ४२  
 जेत्तुलो अप ११ ६९  
 जेत्थु अप ११ ५७  
 जेदु शौ पा ६ ९  
 जेदह ३ ४२  
 जेप्पि अप ११ ७३, ११ ७४  
 जेम अप ११ ५४  
 जेव शौ ८ ४५  
 जेवहु अप ११ ६०  
 जेवँ अप ११ ५४  
 जेसि ४ ४५  
 जेसु ४ ४५  
 जेहु अप ११ ५५

जेहिं ४ ४५  
 जो ४ ४५, अप ११ ४  
 जोगो १ २  
 जोणहा ३ २८  
 जोणहालो ३ ४४  
 जोववण १ ९१, ३ १  
 ज्जेव शौ ८ ४५  
 ज १ ३१, ४ ४५

झ

झओ ७ झ  
 झड्डिलो ७ झ  
 झलक्किअउ अप ११ ४८  
 झाण ३ २४  
 झिज्जइ ३ १३  
 झुणि ७ झ  
 झे ४ ४७

ञ

ञ्जान पै १० २

ट

टगर ७ ट  
 टक ( वि ) २ ४  
 टसरो ७ ट

ठ

ठहो ७ ठ  
 ठभो ७ ठ  
 ठविअ १ १६, पा १ ६१  
 ठाई ( वि ) २ ४  
 ठाविअ १ ६१  
 ठासी ६ ७  
 ठाही ६ ७

टीण ७ ७

ड

डङ्गमाणो शौ ८ ४४

डट्टो ७ ड

डढ्दो ७ ड

डढ्ढ ७ ड

डडो ७ ड

डभो ७ ड

डरो ७ ड

डसइ २ ७

डसन ७ ड

डहइ २ ७

डहिङ्गइ ६ २६

डछाइ ६ २६

डाहो ७ ड

डिभो ( वि ) २ ४

डोलो ७ ड

डोहलो ७ ड

ढ

ढकरि अप ११ ६४

ढोह्ना अप ११ २

ण

णअण १ ४१, २ १

णअणो १ ४१

णअर २ १

णह सोत्त १ ८

णई २ ८

णईभो शौ ८ ४४

णई सोत्त २ ८

णउण १ ६०

णउणा १ ६०

णउणाह १ ६०

णउला ४ ६

णउलेसु ४ ९

णउलेहि ४ ९, ४ १०

णउलेहि ४ १०

णउलेहि ४ १०

णउलो २ १

णउल ४ ७

णउले ४ १४

णउलेमि ४ १४

णउलस्स ४ १३

णओ २ १

णकचरो ( वि ) २ १, १ २

णच्चइ ६ २६

णच्चा ३ २०

णउजइ ६ २६

णट्टइ ३ २१

णट्टओ ३ २१

णडाल ७ ण

णढो २ ४

णड ( वि ) २ ४

णस्थि ( वि ) १ १५

णराओ १ ६१

णरो २ ८

णलाउ ७ ण

णल ( वि ) २ ४

णह पा १ ४०, १ १६, २ ३

णा हेरू पा ४ ४६

णाह्जइ ६ २६

णाण ३ ५, ३ २४

गाधो शौ ८ ९  
 गाराधो १ ६१  
 गाली ( वि ) २ ४  
 गाहो शौ ८ ९  
 गिभक्त ७ ण  
 गिउअ १ ८३  
 गिउक्कण्ठ ( वि ) १ १९  
 गिउत्त ७ ण  
 गिच्चलो ७ ण  
 गिच्चलो ( वि ) ३ २२  
 गिच्छुरो पे प्राप्र १० २१  
 गिज्झिले मा प्राप्र ९ १६  
 गिडाल ७ ण  
 गिहा १ ६८, शौ ( वि ) १ ६८  
 गिहाल्ल ३ ४४  
 गिरभो ( वि ) १ ७०  
 गिराबाध १ १९  
 गिरुत्तर १ १९  
 गिवडह १ ७१  
 गिवुत्त ७ ण  
 गिव्वुअ १ ८३  
 गिव्वुई १ ८३  
 गिव्वुदी २ ६  
 गिसण्णो ७ १  
 गिसिअरो १ ६४  
 गिसीढो ७ ण  
 गिसीहो ७ ण  
 गिस्सहो ( वि ) १ ७०  
 गिहुअ १ ८३  
 गिहुद १ ८३  
 गीसहो १ ७०

गीसासो १ ७०  
 गीड ( वि ) २ ४  
 गुमज्जह १ ७१  
 गुमण्णो १ ७१, ७ ण  
 गूण शौ ८ ४४  
 गे ४ ४७, हेरू पा ४ ४६, हेरू  
 पा ४ ४७  
 गेहा १ ६८  
 गेण ४ ४६ हेरू पूा ४ ४६, ४ ४७  
 गेण ४ ४७  
 गेसु हेरू पा ४ ४६  
 गेसु हेरू पा ४ ४६  
 गेहि ४ ४६, ४ ४७  
 गेहो ३ १, पा ३ १  
 गो ४ ४७  
 गोआ २ १  
 ग हेरू पा ४ ४६, ४ ४७  
 ग ४ ४६ शौ ८ २५ ( वि ) ८ २५  
 शौ ८ ४५  
 गहव ६ २७  
 गहाऊ ३ २८  
 गहाण ३ २८  
 त  
 तह १ ६४ ४ ४७, हेरू, पा ४  
 ४७, शौ ४ ४७  
 तहअ १ ७३  
 तहआ हेरू पा ४ ४६  
 तहत्तो हेरू पा ४ ४७, ४ ४७  
 तहश अप ( वि ) १ ८७  
 तहसो अप ११ ५६  
 तह अप ४ ४७, अप ११ ४०



तड अप ११ ४०  
 तडहोत अप ४ ४७  
 तप् शौ ४ ४७, हेरू पा ४ ४७,  
 शौ ८ ४४  
 तओ ( वि ) २ ६  
 तञ्ज आ ( वि ) ३ २२  
 तण अप ११ ६४  
 तणह अप ११ ११  
 तणु अप ११ १  
 तणुई ३ ३३  
 तणेण अप ११ ६४  
 तण १ ८०  
 तत्त अप ११ ५७  
 तत्तो ४ ४६, ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 तत्त ७ त  
 तत्थ शौ ८ ४४, ४ ४६  
 तत्थून पै १० १२  
 तत्थ आ ( वि ) ३ २२  
 तदो ४ ४६, ४ ४७  
 तदधून पै १० १२  
 तधा शौ ( वि ) ८ २, शौ पा  
 २ ३०, शौ ८ ४४, शौ पा  
 १ ६१  
 तध्रुहोत अप ४ ४७  
 तमवि १ ४९  
 तमे ४ ४७  
 तमेण पा १ ३९  
 तमो १ ३९  
 तपि १ ४९  
 तम्बोल ७ त  
 तम्ब ७ त

तव १ ६७  
 तवो ( वि ) ३ २५, ७ त  
 तम्मि ४ ४६  
 तग्हा ४ ४६, हेरू पा ४ ४६  
 तयाणि १ ७३  
 तरणी १ ३८, पा १ ३८  
 तरिज्जइ ६ २६  
 तरुणहो अप ११ १८  
 तरुणिहो अप ११ १८  
 तरुहु अप ११ १३  
 तरुहे अप ११ १३  
 तरू ( वि ) २ १  
 तलवेण्ट १ ६१  
 तलावो २ ४  
 तलि अप ११ ६  
 तलुनी पै प्राप्र १० २१  
 तवइ २ ९  
 तवसि शौ ८ ५  
 तविअ ७ त  
 तवो ७ त  
 तसु अप ११ १०  
 तस्स शौ ( वि ) ८ २, ४ ४६  
 हेरू पा ४ ४६  
 तस्मि शौ ८ ४४  
 तस्सि ४ ४६, हेरू पा ४ ४६  
 तह १ ६१, शौ ४ ४७, अप पा  
 ४ ४६  
 तहत्ति १ ५०  
 तहाँ अप ११ २७  
 तहि शौ ८ ४४  
 तहिं अप ११ २९, ४ ४६

तर्हितो हेरू, पा ४ ४७  
 तहे अप ११ २२, अप ११ ३१  
 ता ( वि ) पा १ १९ शौ ८ २०,  
 ४ ४६, हेरू पा ४ ४६, ७ त  
 ताउ अप ११ ५८  
 ताओ ( वि ) २ ६, ४ ३२ ४ ४६  
 ताण ४ ४६, शौ पा ढ पा ४  
 ४६ ४ ४६  
 तातिस पै ( वि ) १ ८७  
 तातिसो पै १० १६  
 तान्मि शौ ८ ४४, शौ ( वि )  
 १ ८७  
 ताम अप ११ ५८  
 तामहिं अप ११ ५८  
 तामोतरो प १० ६  
 तारिसो १ ८७  
 तालवेण्ट १ ३  
 तालवेण्ट १ ६१  
 ताला हेरू पा ४ ४६  
 ताव १ १६, ( वि ) पा १ १९,  
 शौ ८ ४, ७ त  
 तावँ अप ११ ५८  
 तास हेरू पा ४ ४६  
 तासु अप ११ ३०, अप, पा ४ ४६  
 ताहितो ४ ४६  
 ताहे हेरू पा ४ ४६  
 ताह ट पा ४ ४६  
 तिअस-इसो १ १५  
 तिअसीसो १ १५  
 तिअख ७ त  
 तिटो पै ( वि ) १० १३

तिणा हेरू पा ४ ४६  
 तिणु अप ११ १  
 तिणुबी ३ ३३  
 तिण्णि ४ ४८  
 तिण्ण ४ ४८  
 तिण्ह ३ २८  
 तित्तिअ ३ ४१, ७ त  
 नित्तिरो ७ त  
 तित्थ १ ७४, ७ ५५, १ ६७  
 तिघ अप ११ ५४  
 तिप्प १ ८१  
 तिम अप ११ ५४  
 तिरिच्छी ७ त  
 तिरिश्चि मा ९ १०  
 तिवँ अप ११ ५०, अप ११ ५४  
 तिह अप ११ ५४  
 तिहिं अप ११ १९  
 तिह्ण ७ त  
 ती ४ ४७  
 तीआ ४ ४७  
 तीओ ४ ३२  
 तीरइ ६ २६  
 तीमा १ ३५, ७ त  
 तीसु ४ ४८  
 तीहिं ४ ४८  
 ताहितो ४ ४८  
 तु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 तुइ ४ ४७  
 तुपु ४ ४७  
 तुच्छुअ अप ११ २६  
 तुज्ज ४ ४७, हेरू पा ४ ४७,  
 अप ११ ४०

तुज्जत्तो ४ ४७ हेरू पा ४ ४७	तुम ४ ४७, शौ ४ ४७, ८ ४४
तुज्जग्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	तुमर्हितो ४ ४७
तुज्ज हेरू पा ४ ४७	तुमग्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
तुज्जसु हेरू पा ४ ४७	तुमसु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
तुज्जाण हेरू पा ४ ४७	तुमाइ ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
तुज्जाण हेरू पा ४ ४७	तुमाण ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
तुज्जासु हेरू पा ४ ४७	तुमाण हेरू पा ४ २७
तुज्जाहितो ४ ४७	तुमातु पै १० २०
तुज्जोसु हेरू पा ४ ४७	तुमातो पै १० २०
तुज्जोहि हेरू पा ४ ४७, ४ ४७	तुमापो शौ ८ ४४
तुज्जो शौ ४ ४७	तुमे ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
तुण्ड शौ ८ ४४	तुमेसु हेरू पा ४ ४७
तुण्हओ ३ १२	तुमो हेरू पा ४ ४७
तुण्हओ ३ १२	तुम्म ४ ४७
तुध अप ११ ४७	तुग्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
तुब्भ हेरू पा ४ ४७	तुग्इ अप ११ ४०
तुब्भत्तो हेरू पा ४ ४७	तुग् ४ ४७, शौ ४ ४७, शौ ८ ४४ हेरू पा ७ ४७
तुब्भग्मि हेरू पा ४ ४७	तुग्केरो ३ ३७
तुब्भसु हेरू ४ ४७	तुग्त्तो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
तुब्भाण हेरू पा ४ ४७	तुग्ग्मि हेरू पा ४ ४७
तुब्भाण हेरू पा ४ ४७	तुग्गसु हेरू पा ४ ४७
तुब्भासु हेरू पा ४ ४७	तुग्गह अप ४ ४७ अप ११ ४०
तुब्भे हेरू पा ४ ४७	तुग्गह अप ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
तुब्भेसु हेरू पा ४ ४७	तुग्गह अप ४ ४७
तुब्भेहि हेरू पा ४ ४७	तुग्गहाण ४ ४७, हेरू पा ४ ४७
तुब्भ हेरू पा ४ ४७	तुग्गहाण शौ ४ ४७, शौ ८ ४४
तुम ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	हेरू पा ४ ४७
तुम हेरू पा ४ ४७	तुग्गहादो शौ ४ ४७
तुमइ ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	तुग्गहारिसो १ ८७, २ १६
तुमए ४ ४७, हेरू पा ४७	तुग्गहासु अप ११ ४०, अप ४ ४७
तुमत्तो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	हेरू पा ४ ४७

तुम्हाहितो शौ ४ ४७, ४ ४७  
 तुम्हे शौ ४ ४७, शौ ८ ४४, अप  
 ४ ४७, अप ११ ४०  
 तुम्हेच्य ३ ३८  
 तुम्हेसु ४ ४७, शौ ८ ४४, हेरू  
 पा ४ ४७  
 तुम्हेसु शौ ४ ४७  
 तुम्हेहि अप ११ ४० ४ ४७, शौ  
 ४ ४७, ८ ४४  
 तुम्हेहिन्तो शौ ८ ४४  
 तुम्हत्तो हेरू पा ४ ४७  
 तुम्ह हेरू पा ४ ४७  
 तुम्हे हेरू पा ४ ४७  
 तुम्हेहि हेरू पा ४ ४७  
 तुम् ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 तुम्त्तो हेरू पा ४ ४७, ४ ४७  
 तुम्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 तुम्रए ६ ४  
 तुम्रसे ६ ४  
 तुम्सु हेरू पा ४ ४७  
 तुम्वाण हेरू पा ४ ४७, ४ ४७  
 तुम्वाण हेरू पा ४ ४७  
 तुम्वे ४ ४७  
 तुम्वेसु हेरू पा ४ ४७  
 तुम् ४ ४७  
 तुम्सु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 तुम्ह ४ ४७ अप ४ ४७, हेरू पा  
 ४ ४७  
 तुम्हत्तो हेरू पा ४ ४७, ४ ४७  
 तुम्हम्मि ४ ४७ हेरू पा ४ ४७  
 तुम्हसु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७

तुम्हाण ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 तुम्हाण हेरू पा ४ ४७  
 तुम्हारेण अप ११ ६८  
 तुम्हु अप ११ ४०  
 तुम्हु अप ११ ४०  
 तुम्हेसु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 तुम्ह ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 तुम्हेहि ४ ४७  
 तुम्ह ४ ४७  
 तुम्हत्तो ४ ४७  
 तुम्हाण ४ ४७  
 तुम्हूर्होत अप ४ ४७  
 तुम्ह ४ ४७  
 तुम्होसु ४ ४७  
 तुम् ४ ४७  
 तुम् ७ त  
 तुम् ७ त  
 तुम्ह ६ ३०  
 तुम्ह ७ त, १ ७४  
 तुम्णु अप ११ १  
 ते ४ ४६ शौ ८ ४४, हेरू पा ४  
 ४६, ४ ४७ शौ ४ ४७  
 तेअस्स पा १ ३९, पा १ ३१  
 तेओ १ ३९  
 तेति पै १० १७  
 तेत्तहे अप ११ ७०  
 तेत्तिअ ३ ४२  
 तेत्तिक शौ प्रास ८ ४४  
 तेत्तिल ३ ४२  
 तेत्तीसा ७ त

तेत्तुलो अप ११ ६९  
 तेत्थु अप ११ ५७  
 तेद्दह ३ ४२  
 तेण ४ ४६, हेरू पा ४ ४६  
 तेम अप ११ ५४  
 तेरह ७ त  
 तेरहो १ ५७  
 तेळोक्क ( वि ) ३ १०  
 तेळ्ळ ३ ११  
 तेळ्ळुक १ ८८  
 तेळ्ळोक्क ( वि ) ३ १०  
 तेवहु अप ११ ६०  
 तव अप ११ ५४  
 तेवण्ण ७ त  
 तेवीसा ७ त  
 तेसि ४ ४६, हेरू पा ४ ४६  
 तेसु ४ ४६, हेरू पा ४ ४६  
 तेसु हेरू पा ४ ४६  
 तेह ७ त  
 तेहि ४ ४६, हेरू पा ४ ४६, अप  
 ११ ६४  
 तेहितो ४ ४७  
 तेहु अप ११ ५५  
 त ४ ४६, ४ ४७, हेरू पा ४ ४६  
 १ ३१, अप ११ ३२  
 तस १ ३३, पा ३ ८  
 तो ४ ४७, अप ११ ६४  
 तोण ७ त  
 तोणीर ७ त  
 तोण्ड १ ७९  
 तोसविअ ६ १९

तोसिअ सकरु अप ११ ३  
 तोसिअ ६ १९  
 त्र अप ११ ३२

थ

थवो ७ थ  
 थभो ७ थ  
 थाणू ७ थ  
 थिण्ण ३ १२  
 थो ७ थ  
 थोण ३ १२, ७ थ  
 थुई ३ २५  
 थुणदि शौ प्रास ८ ४५  
 थुञ्जो ७ थ, ३ १२  
 थूणा ७ थ  
 थूणो ७ थ  
 थूल शौ ८ ४४, ७ थ  
 थेगो ७ थ  
 थेरिअ ७ थ  
 थेरो पा ३ ६, ७ थ  
 थोअ ३ २५  
 थोणा ७ थ  
 थोत्त ३ २५  
 थोरो ३ १२  
 थोर ७ थ

द

दभालू २ १  
 ददप् अप ११ १४  
 दद्वअ १ ८९  
 दद्वच्च १ ८९

दहवज्रो ३ ५  
 दहषण १ ८९  
 दहवण्ण ३ ५  
 दहव ७ द, ३ १२  
 दहव्व ३ १२, ७ द  
 दह्वस्स शौ ८ ३४  
 दउत्ति शौ ८ ४५  
 दक्खिणो ( वि ) १ ७३, ७ द  
 दट्ठो ७ द  
 दडवड अप ११ ६४  
 दड्ढ ७ द  
 दणुअ व्हो ७ द  
 दणु इन्दरुहिर० १ १०  
 दणुवहो ७ द  
 दडो ७ द  
 दत्त ( वि ) १ ५४  
 दद्ध ३ ३६  
 दमदमाअह् ६ १  
 दमदमाह् ६ १  
 दभो ७ द  
 दयालू प २ १  
 दरिओ ७ द  
 दरो ७ द  
 दलिहो २ १८  
 दवग्गी पा १ ६१  
 दवो ( वि ) २ १  
 दस ७ द, शौ ८ ४४  
 दसण ७ द  
 दसरहो शौ ८ ४४  
 दसवत्तो पै प्राप्र १० २१  
 दसमुहो ७ द

दस्के मा प्राप्र ९ १६  
 दह शौ ८ ४४, ७ द  
 दहसुह् अप ११ ३  
 दहसुहो ७ द  
 दहि ४ ४१  
 दहि ईसरो १ ९  
 दहिं ४ ४१  
 दहीई ४ ४१  
 दहीइ ४ ४१  
 दहीणि ४ ४१  
 दहीसरो १ ९  
 दहो ३ ४, पा ३ ४  
 दाव शौ ८ ४  
 दावग्गी पा १ ६१  
 दाघो ( वि ) २ २०, ७ द  
 दातून पै प्राप्र १० २१  
 दाडिम ( वि ) २ ४  
 दाढा ७ द  
 दाणवो ( वि ) २ १  
 दाणिं शौ ८ १९  
 दाण ४ ४६  
 दाम १ ४०  
 दार ७ द, ( वि ) ३ ३  
 दालिम ( वि ) २ ४  
 दाहिणो १ ५३  
 दाहिणो ७ द  
 दाहिमि ६ ९  
 दाहो ७ द  
 दाह ६ ९  
 दि हेरू पा ४ ४७  
 दिअरो ७ द

दिअहो २ १  
 दिउओ १ ७१  
 दिउणो १ ७१  
 दिओ १ ७१, ( वि ) ३ ३  
 दिओ ७ ६  
 दिट्टो ३ ६ १ ८१, ३ १८  
 दिट्ट १ ८१  
 दिट्ट ति १ ५०  
 दिण्ण ७ ६, १, ५४  
 दिण्णह २ ७  
 दिवसो ७ ६  
 दिवहो ७ ६  
 दिवे अप ११ ६४  
 दिसा० पा २ २४  
 दिसा १ २४  
 दिहा गय ( वि ) १ ७२  
 दिही ७ ६  
 दीओ २ १५  
 दीजो २ १५  
 दीसह ( नि ) ६ १५  
 दीहर स्वाप्र ३ ४५  
 दीहाउसो १ २५  
 दीहाऊ १ २५, पा १ २५  
 दीहो ७ ६  
 दुअल्ल ७ ६  
 दुभाई ( वि ) ३ ३  
 दुभार ७ ६  
 दुइअ १ ७३  
 दुइओ १ ७१  
 दुउणो १ ७१  
 दुऊल ७ ६

दुऊड ७ ६  
 दुऊर ( वि ) ३ १७  
 दुऊख ७ ६  
 दुगुल्ल ७ ६  
 दुग्गा एवी ७ ६  
 दुग्गावी ७ ६  
 दुइ ३ १  
 दुणि ४ ४८  
 दुइअह ६ २५  
 दुय्यणे मा ९ ७, मा प्राप्र ९ १६  
 दुरागद १ १९  
 दुहत्तर १ १९  
 दुल्लहहो अप ११ १०  
 दुल्लहो २ ३  
 दुवअण १ ७१  
 दुवरो ७ ६  
 दुवाई १ ७१  
 दुवारिओ १ ९२  
 दुवार ७ ६  
 दुवे १ ७१, ४ ४८  
 दुसहो १ ७८  
 दुस्सहो १ १८  
 दुस्सहो विरहो ( वि ) १ ७८,  
 दुहओ १ ७८, ७ ६  
 दुहा हअ १ ७२  
 दुहा किज्जदि १ ७२  
 दुहा वि० ( वि ) १ ७२  
 दुहि ४ ४७  
 दुहिआ ४ ३१, ७ ६  
 दहिज्जह ६ २५  
 दुहिदिआ शौ प्रास ८ ४५

दुहितो ४ ४७  
 दुहांभदि शौ प्रास ८ ४५ ७  
 दुहूँ अप ( वि ) ११ १२  
 दुह ७ द  
 दूरादु शौ ८ १८  
 दूरादो शौ ८ १८  
 दूसह ६ ३०  
 दूसहो १ १८, १ ७८  
 दूमासणो १ ५१  
 दूहओ १ ७८  
 दूहवो ७ द  
 दे ४ ४६, ४ ४७, हेरू पा ४  
 ४७, शौ ४ ४७, शौ ८ ४४  
 देअरो ७ द, शौ ८ ४४  
 देह ( वि ) ६ ३१  
 देउल ७ द  
 देउल्ल ६ ९  
 देदि शौ ८ १५  
 देमि शौ ८ ३४  
 देर ७ द  
 देव ४ १४  
 देव उल ७ द  
 देवत्तो ४ १४ ४ ११, ४ १२  
 देव थुई ३ १०  
 देव थुई ३ ११  
 देवदत्त ( वि ) १ ५४  
 देवस्स ४ १३, ४ १४  
 देवा ४ १४, १ ४३, ४ ६, पा  
 ४ ११  
 देवाउ ४ ११, ४ १४, ४ १२  
 देवाओ ४ ११, ४ १२, ४ १४

देवाण ४ ८, ४ १४  
 देवाणि १ ४३  
 देवाण ४ १४, ४ ८  
 देवासुतो ४ १४  
 देवाहि ४ ११, ४ १२, ४ १४  
 देवाहित्तो ४ १४, ४ ११  
 देवाहित्तो ४ १२, ४ १४  
 देवीए प्थ १ १२  
 देवे ४ १४  
 देवेण ४ ८, ४ १४  
 देवेण ४ १४  
 देवेम्मि ४ १४  
 देवेसु ४ ९, ४ १४  
 देवेसु ४ १४  
 देवेसुतो ४ १२  
 देवेहि ४ १०, ४ १२, ४ १४  
 देवेहिं ८ ९ ४ १४, ४ १०  
 देवेहिं ४ १४, ४ १०  
 देवेहित्तो ४ १४  
 देवो ( वि ) २ १, ४ १४, ४ ५  
 देव ४ १४, ४ ७, अप ११ ७४  
 देव्व ७ द, शौ ८ ४४  
 दो ४ ४८  
 दोगि ४ ४८  
 दोग्ण ४ ४८  
 दोग्ह ४ ४८  
 दोदुहिसुतो हेरू पा ४ ४७  
 दोदुहिति हेरू पा ४ ४७  
 दोला ७ द  
 दोवअण १ ७१  
 दोसढा अप ११ ६५.



दोसु ४ ४८  
 दोहगा १ ९१  
 दोहलो ७ द  
 दोहा इभ १ ७२  
 दोहा किर्जाद १ ७२  
 दोहि ४ ४८  
 दोहि ४ ४८  
 देहितो ४ ४८  
 दोहो ३ ४  
 दसण १ ३३  
 द्रवक्क अप ११ ६४  
 द्रहो ३ ४, पा ३ ४,  
 द्रेहि अप ११ ६४  
 द्रोहो ३ ४  
 द्विरओ १ ७१  
 ध  
 धट्टजणो ७ ध  
 धट्टो ७ ध  
 धण अप ११ २  
 धणवन्तो ३ ४४  
 धणहे अप ११ २२  
 धणाणि नौ ८ ३२  
 धगिरो ( वि ) ३ ४४  
 धणुहधरो पा १ २७  
 धणुह ७ ध, १ २७  
 °धणू पा १ २७  
 धणू १ २७, ७ ध  
 धणजओ ( वि ) २ १  
 धणज्जपू मा ९ ८  
 वत्ती ७ ध  
 धत्थ ३ ३

धनुस्खण्ड मा ९ ४  
 वम्मिल्ल १ ६८, शौ ( वि ) १ ६८  
 धम्मेल्ल १ ६८  
 धरहि अप ११ ४१  
 धाअह ६ ३६  
 धाह ६ ३६  
 धाई ७ ध  
 धारी ७ ध  
 धावह ६ ३१  
 धिह ७ ध  
 धिई ७ ध  
 धिई १ ८१  
 धिज्ज ७ ध  
 धिट्टो ७ ध  
 धिप्पह २ ७  
 धिरत्थु ७ ध  
 धीर ३ ९, ७ ध  
 धुत्तो ( वि ) ३ २१  
 धुरा १ २१  
 धुरा पा १ २१  
 धुवह ६ ३१  
 धूआ ७ ध  
 धूदा शौ प्रास ८ ४१  
 धूलहिआ अप ११ ६७  
 धेणु ४ ३७  
 धेणु ४ ३७  
 धेणू ४ ३३, ४ ३७  
 धेणूअ ४ ३७  
 धेणूआ ४ ३७  
 धेणूह ४ ३७  
 धेणूउ ४ ३३, ४ ३७

धेणूष ४ ३७  
 धेणूओ ४ ३२, ४ ३६  
 धेणूण ४ ३७  
 धेणूण ४ ३७  
 धेणूदो ४ ३७  
 धेणूसु ४ ३७  
 धेणूसु ४ ३७  
 धेणूसुतो ४ ३७  
 धेणूहि ४ ३७  
 धेणूहि ४ ३७  
 धेणूहितो ४ ३७  
 ध्रुवु अप ११ ६४  
 ध्रु अप ११ ३२

न

नह ४ ३७  
 नह गामो ३ १०  
 नह गामो ३ १०  
 नह ४ ३७  
 नई २ १, २ ८, ४ ३७  
 नईअ ४ ३७  
 नईआ ४ ३७  
 नईवू ४ ३७  
 नईषु ४ ३७, शौ ८ ४४  
 नईओ ४ ३७  
 नइण ४ ३७  
 नईण ४ ३७  
 नहदो ४ ३७  
 नइसु ४ ३७  
 नईसु ४ ३७  
 नईसुतो ४ ३७

नईहि ४ ३७  
 नईहि ४ ३७  
 नईहि ४ ३७  
 नईहितो ४ ३७  
 नउ अप ११ ७६  
 नओ पा २ १  
 नकर पै ( वि ) पा २ १  
 नक्कचरो ( वि ) पा २ १  
 नकखा ३ १२  
 नगो ३ २  
 न जुत्त ति १ ५०  
 नणन्दा ४ ३१  
 नत्तिओ ७ न  
 नत्तुओ ७ न  
 नत्तचरो ( वि ) पा २ १  
 नत्थून पै १० १२  
 नदून पै १० १२  
 नमोकारो ७ न  
 नम्म० पा १ ३९  
 नम्मो १ ३९  
 नयणा पा १ ४१  
 नयणाइ पा १ ४१  
 नयण पा २ १  
 नयर पा २ १  
 नरिन्दो १ ६७  
 नरो २ ८  
 नले मा ९ ३  
 नवख अप ११ ६४  
 नवञ्जो स्वाप्र ३ ४५  
 नस्स ६ ३८  
 नहा ३ १२

नहुस्त्रिहणे आवन्धत्तीर्ण १ १२  
 नहेण अप ११ ५  
 नह १ ४०  
 नह्य ४ ४७  
 नाइ अप ११ ७६  
 नाए पै, पा ४ ४६, पै १० २१  
 नाडी ( वि ) २ ४  
 नापिओ ७ न  
 नारह्यो ७ न  
 नालिउ अप ११ ६४  
 नावह अप ११ ७६  
 नावा ७ न  
 नासह ( वि ) ६ ३१  
 नाहि अप ११ ६४  
 नाहो २ ३  
 निउर ७ न  
 निक्काम्म ( वि ) ३ १७  
 निक्ख ३ १७  
 निक्खट्ट अप ११ ६४  
 निक्खलो ३ १  
 निक्खिन्दो शौ ८ ३  
 निक्ख ३ १९  
 निउररो ७ न  
 निउरु ३ १  
 निण ३ २४  
 निप्फेसो ३ २७  
 निमिअ ६ ३२  
 निम्बो ७ न  
 निम्मल्ल १ ४७  
 निरुत्तर १ १९  
 निवत्तओ ३ २१

निवत्तण ( वि ) ३ २१  
 निविड ( वि ) २ ४  
 निवो १ ८१  
 निसढो ७ न  
 निसाअरो १ १३  
 निसिआ अप ११ २  
 निस्फल मा ९ ४  
 निस्सह १ १८  
 निहसो ७ न  
 निहिओ ३ १२  
 निहित्तो ३ १२  
 निही १ ४४  
 निही पा १ ४४  
 नीच्चअ ७ न  
 नीड ३ १२, ७ न  
 नीमी ७ न  
 नीमो ७ न  
 नीला ४ २९  
 नीली ४ २९  
 नीलुप्पल १ ६७  
 नीवी ७ न  
 नीवो ७ न  
 नीसहो १ ५१  
 नीसह १ १८  
 नीसासो पा ३ ८  
 नीसो १ ५१  
 नूउर ७ न  
 नूण १ ३६  
 नूण १ ३६  
 नेह ६ २९  
 नेउर ७ न

नेह ३ १२  
 नेहु ३ १२, ७ न  
 नेति पै १० १७  
 नेदि शौ ८ १  
 नेन पै, पा ४ ४६, पै १० २१  
 नेरहुओ ७ न  
 नोहलिआ ७ न  
 न अप ११ ७६  
 न्याय ( वि ) २ ८  
 प  
 पअ पा १ ३९  
 पअट्ट ७ प  
 पअड १ ५२  
 पअरो १ ६२  
 पअरो १ ६२  
 पभावई २ १  
 पइटा १ ४७, ७ प, ( वि ) २ ५  
 पइटाण ( वि ) २ ५  
 पइट्टि अप ११ २  
 पइट्टिअ १ ४७  
 पइण्णा ( वि ) २ ५, ७ ५  
 पइव ( वि ) २ ५  
 पइ अप ४ ४७, अप ११ ४०  
 पई ( वि ) १ ९  
 पईवो २ ९  
 पईव ७ प  
 पडअ १ ६१  
 पडट्टो ७ प  
 पडत्त ७ प  
 पडत्ती १ ८३

पडम ७ प  
 पडरिस १ ९३, ७ प  
 पओ १ ३९  
 पओट्टो शौ ८ ४४  
 पक्क ७ प  
 पखलो ( वि ) २ ३  
 परिगभव अप ११ ६४  
 पङ्को १ १, १ ३७  
 पको १ ३७  
 पत्ती १ ३२  
 पच्चओ ३ १९  
 पच्चच्छ ३ १९  
 पच्चलिउ अप ११ ६४  
 पच्चुसो ७ प  
 पच्चुहो ७ प  
 पच्चहु अप ११ ६४  
 पच्छा ३ २२  
 पच्छिम ३ २२  
 पच्छ ३ २२  
 पज्जन्तो पा १ ५७  
 पज्जत्त ३ १  
 पज्जन्तो ७ प  
 पउजन्त ३ २३  
 पउजा ३ ५  
 पउजाठलो शौ ८ ८  
 पउजाओ ३ २३  
 पउज्जणो ३ २४  
 पञ्चा ४ ५०  
 पञ्चावण्णा ७ प  
 पञ्चाहि ४ ५०  
 पञ्जले मा ९ ८

पञ्जा पै १० २  
 पञ्जाविशाले मा ९ ८  
 पट्टण ७ प  
 पट्टि अप ११ १  
 पट्ट १ ८२  
 पठिअ ६ १७  
 पठिनून पै १० ११  
 पठिउयते पै १० १४  
 पडाआ शौ ( वि ) पा २ १  
 पडाया ७ प  
 पडायाण ७ प  
 पडिफ्फद्दी ३ २७  
 पडिफ्फद्दी १ ५२  
 पडिमा २ ५  
 पडिवआ १ ५२  
 पडिवण २ ५  
 पडिवही २ ६  
 पडिसरो २ ५  
 पडिसिद्दी १ ५२  
 पडिसुआ १ ३३  
 पडिसुद १ ३३  
 पडसुआ ७ प  
 पढई ( वि ) २ ९  
 पडित्ता शौ ८ १३  
 पडिदूण शौ ८ १३  
 पढन्तो ६ १२  
 पढमाणो ६ १२  
 पढम ७ प  
 पडिय शौ ८ १३  
 पढुम पा २ ३  
 पढुम ७ प

पण्णरह ७ प  
 पण्णा ३ ५, ३ २४  
 पण्णावण्णा ७ प  
 पण्णासा ७ प  
 पण्णो ( वि ) १ ५६  
 पण्हा १ ४२  
 पण्हो १ ४२, ३ २८  
 पत्तल स्वाप्र ३ ४५  
 पस्थरो पा १ ६१, ३ २५  
 पस्थारो पा १ ६१  
 पन्थो १ ३७  
 पथो १ ३७  
 पसुहेण २ ३  
 पसुक्क ( वि ) ३ १०  
 पम्मुक ( वि ) ३ १०  
 पम्म ७ प  
 पम्ह ७ प  
 पम्हट्टो ६ ३९  
 पयावई पा २ १  
 पय्याकुलीकदग्धि शौ ८ ८  
 पर अप ११ ६४  
 परहुओ १ ८३  
 परामुट्टो १ ८३  
 परिट्टा १ ४७  
 परिट्टिअ १ ४७  
 परिठविअ १ ६१  
 परिठाविअ १ ६१  
 परित्तायध शौ ८ १०  
 परोप्पर ७ प  
 परोहो १ ५२  
 परसुहो १ ३२

पलकखो ७ प  
 पलबघणो ( वि ) २ ३  
 पलिअको ७ प  
 पलिअ ७ प  
 पलिचये मा प्राप्र ९ १६  
 पलित्तो २ ७  
 पलिल ७ प  
 पलिविअ १ ७३  
 पलीबेइ २ ७  
 पल्लङ्को ७ प  
 पल्लस्थ ७ प  
 पल्लट्ट ७ प  
 पल्लाण ७ प  
 पवहाओ ३ ३१  
 पवट्टो ७ प  
 पवत्तओ ( वि ) ३ २१  
 पवत्तण ( वि ) ३ २१  
 पवसन्तेण अण ११५, अण ११ १४  
 पवहो १६२, पा १ ६१  
 पव्वतीं पै १० ६  
 पवासू १ ५२  
 पवाहो १ ६२, पा १ ६१  
 पवो ( वि ) ३ ३२  
 पसडिल ७ प  
 पसदि शौ प्राप् ८ ४५  
 पसिअ १ ७३  
 पसिडिल ७ प  
 पसिङ्की १ ५२  
 पसुत्त १ ५२  
 पस्ते मा ९ ५  
 पहरो पा १ ६१

पहारो पा १ ६१  
 पहिहो ७ प  
 पडुच्चइ अण ११ ४८  
 पडुदि १ ८३  
 पडुवी पा २ ३  
 पहो ७ प  
 पाअइ ६ २१  
 पाअउ १ ५२  
 पाअवढण ७ प  
 पाअवीड ७ प  
 पाआई ७ प  
 पाभारो ७ प  
 पाइ ६ २१  
 पाइक्को ७ प  
 पाउअ १ ६१, १ ८३  
 पाउरण ७ प  
 पाउस पा १ २४  
 पाउसो १ २४, १ ३८, १ ८३,  
 पा १ ३८  
 पाओ ( वि ) १ ९  
 पांगुरण ७ प  
 पाडिप्फङ्की १ ५२  
 पाडिविआ १ ५२  
 पाडिवया ( वि ) १ २०  
 पाडिसिङ्की १ ५२  
 पाणिअ १ ७३  
 पाणिणीआ ( वि ) ३ ३७  
 पाणीअ ( वि ) १ ७३  
 पारओ ७ प  
 पारकेर ७ प  
 पारक्क ( वि ) ३ ३७, ७ प  
 पारङ्की ७ प

पाराओ ( वि ) पा. १ १९  
 पाराकेर ७ प  
 पारावओ ( वि ) पा १ १९, ७ प  
 पारिक्क ७ प  
 पारेवओ ७ प  
 पारो ७ प  
 पारोहो १ ५२  
 पालेवि अप ११ ७३, अप ११ ७४  
 पावडण ७ प  
 पावरण ७ प  
 पावारओ ७ प  
 पावासू ७ प, १ ५२  
 पावीड ७ प  
 पावीसु अप ११ ५१  
 पावो शौ ८ ४४  
 पाव ( वि ) २ १, २ ९  
 पासह १ ५१  
 पासाणो शौ ८ ४४, ७ प  
 पासिद्धी १ ५२  
 पासुत्त १ ५२  
 पासू १ ३६  
 पास पा ३ ८  
 पाहाणो ७ प  
 पाहुड ७ प  
 पाहुद १ ८३  
 पिअ हेरू ४ २३  
 पिअउ हेरू ४ २३  
 पिअओ हेरू ४ २३  
 पिअरम्मि ४ २३  
 पिअरस्स ४ २३  
 पिअरहितो ४ २३

पिअरा हेरू ४ २३, ४ २३  
 पिअराण ४ २३  
 पिअरादो ४ २३  
 पिअरे हेरू ४ २३, ४ २३  
 पिअरेण ४ ३, हेरू ४ २३  
 पिअरेण हेरू ४ २३  
 पिअरेसु ४ २३  
 पिअरेहि हेरू ४ २३  
 पिअरेहि हेरू ४ २३  
 पिअरेहिं ४ २३  
 पिअरो ४ २३, हेरू ४ २३  
 पिअर ४ २३, हेरू ४ २३  
 पिअवो हेरू ४ २३  
 पिआ ४ २३, हेरू ४ २३  
 पिआपिअ १ ८  
 पिउ अप ११ ५३  
 पिउओ १ ८३  
 पिउड्डा ७ प  
 पिउणा हेरू ४ २३  
 पिउणो हेरू ४ २३  
 पिउ वण १ ८४  
 पिउ सिभा ७ प  
 पिऊ हेरू ४ २३  
 पिऊहि हेरू ४ २३  
 पिऊहि हेरू ४ २३  
 पिऊहि हेरू ४ २३  
 पिओत्ति १ ५०, ( वि ) १ ६९  
 पिक्क पा १ ५४, १ २, ३ ३,  
 ७ प  
 पिच्छी ३ २०  
 पिट्ट १ ६८, १ ८२

विट्टि अप ११ १  
 पिहरो ७ प  
 पिण्ड १ ६८, शौ ८ ४४, शौ  
 ( वि ) १ ६८  
 पिरथी १ ८१  
 पिदणा शौ ८ ४४, ४ २३  
 पिदुणो ४ २३  
 पिदुण ४ २३  
 पिदुग्मि ४ २३  
 पिदुसु ४ २३  
 पिदुहितो ४ २३  
 पिध ७ प  
 पियगमण ( वि ) २ १  
 पिल्ल ३ ३२  
 पिव पै प्राप १० २१  
 पिश्चिले मा ९ १०  
 पिसल्लो ७ प  
 पिसाओ ७ प  
 पिसाजी ( वि ) २ १  
 पिहढो ७ प  
 पिह १ ३१, ७ प  
 पीअल स्वा प्र ३ ४७, ७ प  
 पीअ ७ प  
 पीआपीअ १ ८  
 पीडिअ ( वि ) २ ४  
 पीढ ७ प  
 पीणआ ( पा ) ( वि ) ३ ३९  
 पीणत्तण ३ ३९  
 पीणिमा ३ ३९  
 पीवल स्वाप्र ३ ४५, ७ प  
 पुछ १ ३३

पुञ्जकम्मो पै १० ४  
 पुञ्जाह मा ९ ८, पै १० ४  
 पुट्टि अप ११ १  
 पुट्टो १ ४२  
 पुट्टो ३ १८  
 पुट्ट १ ४२, १ ८३  
 पुढो शौ ८ २८  
 पुढम ७ प  
 पुढवी ७ प  
 पुढुम ७ प  
 पुणु अप ११ ६४  
 पुण्णमतो ( वि ) ३ ४४  
 पुण्णामो ७ प  
 पुत्तो शौ ८ २८  
 पुध ७ प  
 पुप्फ ( वि ) २ ११, ३ २७  
 पुरओ १ ४६  
 पुरदरो ( वि ) २ १  
 पुरा १ २१  
 पुरिम ७ प  
 पुरिल्ल ( वि ) ३ ४४  
 पुरिसो ७ प  
 पुरिसो त्ति ( वि ) १ ६९, १ ५०  
 पुरुषो शौ ८ ४४  
 पुलिशरश भा प्राप्र १९ १६  
 पुलिशाह मा प्राप्र ९ १६  
 पुलिशो मा ९ ३  
 पुलोमी १ ९२  
 पुव्वण्हो १ ६१, ३ २८  
 पुव्वाण्हो १ ६१  
 पुव्व ७ प



पुहइ १ ८३  
 पुहई ७ प  
 पुहवी ७ प  
 पुहवीसो १ ११  
 पुहुवी १ १३, ३ ३३  
 पुह ७ प  
 पूसइ ६ ३०  
 पूसो १ ५१  
 पेअ २ १२  
 पेउस ७ प  
 पेकखदि शौ ८ ३७  
 पेच्छदि शौ प्रास ८ ४५  
 पेज्ज २ १५  
 पेट्ट १ ६८  
 पेह ७ प  
 पेण्ह १ ६८  
 पेम्म ३ ११  
 पेरन्तो पा १ ५७, ७ प  
 पेरन्त १ ५७  
 पेस्कदि मा ९ १२  
 पोक्खरणी शौ ८ ४४  
 पोक्खरिणी ३ १७  
 पोक्खर शौ ८ ४४, ३ १७, १ ७९  
 पोत्थअ १ ७९  
 पोप्पली ७ प  
 पोप्पल ७ प  
 पोम्म ७ प  
 पोरो ७ प  
 पसनो १ ६३  
 पसुर पा १ ६१  
 पसू १ ३६, १ ६३

प्रयाग जल ( वि ) २ १

प्रस्सदि अप ११ ४८

प्राइम्ब अप ११ ६४

प्राइव अप ११ ६४

प्राउ अप ११ ६४

प्रियेण अप ११ ५

फ

फकवती पै ( वि ) पा २ १

फणसो ७ ५

फणी ( वि ) २ ११

फन्दन १ ३

फन्दण ३ २७

फरुसो ७ फ

फलमवहरइ १ ३०

फलिहो ७ फ

फलिह ७ फ

फलिहा ७ फ

फल १ २८

फल अवहरइ १ ३०

फाडेइ ( वि ) २ ८, २ २०

फालिहहो ७ फ

फालेइ ( वि ) २ ४, २ १०

फासो पा ३ ८

फुड ६ ३९

फुसदि शौ प्रास ८ ४५

फोडओ शौ ८ ४४

फंसो १ ३३, ३ २७

ब

बइको ७ ब

बडुत्तणहो अप ११ ७१

बडुप्पणु अप ११ ७१

वधवो १ ३७  
 व-ववो १ ३७  
 वनिधज्जह ६ २६  
 वग्मचर ( वि ) ३ २९  
 वग्मचर ३ २९  
 दग्मणो १ ६१, ३ २९  
 बग्महा ३ २९  
 वहिणा ७ ब  
 ग्मणो शौ ८ ३०  
 बग्मणो १ ६१  
 वग्मह ७ ब  
 बालहे अप ११ २२  
 बालाए शौ ८ ४४  
 बाह अप ११ १  
 बाहा अप ११ १  
 बाहाए पा १ ४५  
 बाहूसु पा १ ४३  
 बीआ ( वि ) १ ९  
 बुग्महा ३ २०  
 बुग्मदि शौ प्रास ७ ४५  
 बुग्मदी १ ८३  
 बुग्मि हेरु ४ ३७  
 बुग्मिष ४ ३७  
 बुग्मित्तो हेरु ४ ३७  
 बुग्मि ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 बुग्मी ४ ३७, हेरु ४ ३७, ४ ३३  
 बुग्मीष ४ ३४ हेरु ४ ३७  
 बुग्मीषा ४ ३७ हेरु ४ ३७, ४ ३४  
 बुग्मीह ४ ३७, हेरु ४ ३७, ४ ३४  
 बुग्मीउ ४ ३३, ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 बुग्मीए ४ ३४, ४ ३७, हेरु ४ ३७

बुग्मीषो ४ ३३, ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 बुग्मीण ४ ७ हेरु ४ ३७  
 बुग्मीण ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 बुग्मीसु ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 बुग्मीसु ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 बुग्मीसुनो हेरु ४ ३७  
 बुग्मीहितो हेरु ४ ३७  
 बुग्मो १ ३३  
 बुग्मस्पदी म. ९ ४  
 बुग्मणठ अप ११ ७५  
 बुग्मजो शौ ८ ३०  
 बुग्मह अप ११ ४८  
 बुग्मिणु अप ११ ४८,

भ

भअव ४ ४२  
 भइणी ७ भ  
 भइरवो १ ८९  
 भगवती पे १० ६  
 भगव शौ ८ ७  
 भगउ अप ११ २६  
 भग्गो ३ २  
 भग्जा ३ २३  
 भग्जिउ अप ११ ७३  
 भग्हा शौ प्रास ८ ४५  
 भडो २ ४  
 भणइ ६ ६  
 भणए ६ ६  
 भणह ६ ६  
 भणन्ति ६ ६  
 भणन्ते ६ ६

भणमि द द  
 भणसि द द  
 भणसे द द  
 भणित्था द द  
 भणिमो द द  
 भणिरे द द  
 भणेमो द द  
 भणामो द द  
 भणामि द द  
 भत्त हेल्लु ४ २३  
 भत्तभो हेल्लु ४ २३  
 भत्तारम्भि ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तारस्स ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तारहितौ ४ २३  
 भत्तारा ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्ताराउ हेल्लु ४ २३  
 भत्ताराओ हेल्लु ४ २३  
 भत्ताराण हेल्लु ४ २३  
 भत्ताराण ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तारादो ४ २३  
 भत्तारासुतो हेल्लु ४ २३  
 भत्ताराहि हेल्लु ४ २३  
 भत्ताराहितो हेल्लु ४ २३  
 भत्तारे ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तारेण ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तारेसु ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तारेसुतो हेल्लु ४ २३  
 भत्तारेहि ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तारेहि हेल्लु ४ २३  
 भत्तारेहितो हेल्लु ४ २३  
 खत्तार ४ २३, हेल्लु ४ २३

भत्तारो ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तिव ता ३ ४  
 भत्तुणा ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तुणो ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तुण ४ २३  
 भत्तुम्मि ४ २३, हेल्लु ४ २३  
 भत्तुसु ४ २३  
 भत्तुस्स हेल्लु ४ २३  
 भत्तुहि ४ २३  
 भत्तुहितो ४ २३  
 भत्तु हेल्लु ४ २३  
 भत्तुओ हेल्लु ४ २३  
 भत्तुण हेल्लु ४ २३  
 भत्तुण हेल्लु ४ २३  
 भत्तुसु हेल्लु ४ २३  
 भत्तुसुतो हेल्लु ४ २३  
 भत्तुहि हेल्लु ४ २३  
 भत्तुहि हेल्लु ४ २३  
 भत्तुहितो हेल्लु ४ २३  
 भत्त ३ १  
 भद्व ३ ४  
 भद्र ३ ४  
 भन्ते मा १ २  
 भण्ण ७ भ  
 भमया स्वाप्र ३ ४५  
 भमाडह ६ १९  
 भमाडेह ६ १९  
 भमावह ६ १९  
 भमिअ ३ ३६  
 भमिरो ३ ३५  
 भयफकह ७ भ

नयव शौ ८ ६  
 नयव शौ ८ ७  
 नयस्सई ७ अ  
 भरधो शौ ( वि ) पा २ १  
 भरहो ७ अ  
 भवओ ( वि ) १ ४६  
 भवन्तो ( वि ) १ ४६, ७ अ  
 भवँरू अप ११ ५०  
 भवातिसो पै १० १६  
 भविअ ७ अ  
 भविय शौ ८ १३  
 भविस्सिदि शौ ८ १७ शौ ( वि )  
 ८ ३३  
 भव ४ ४२ शौ ८ ७  
 भसरो ७ अ  
 भसलो ७ अ  
 भस्टालिका मा ९ ५  
 भस्टिणी मा ९ ५  
 भस्स ७ अ ( वि ) पा १ १९  
 भाअदि शौ प्रास ८ ४५  
 भाइरही २ १  
 भाठओ १ ८३  
 भाणओ शौ ८ ४४  
 भाणुओ शौ ८ ४४  
 भाण ( वि ) पा १ १९, ७ अ  
 भादा शौ प्रास ८ ४५  
 भादि शौ प्रास ८ ४५  
 भाहुओ शौ प्रास ८ ४५  
 भामिणी ७ अ  
 भामेई ६ १९  
 भारिआ पै प्राप्र १० २१ पै ७ अ

भारिया पै १० १३  
 भिठडी ७ अ  
 भिऊ १ ८१  
 भिंगारो १ ८१  
 भिंगो १ ८१  
 भिण्डवालो ७ अ शौ ८ ४४  
 भिन्द्यालो शौ ८ ४४  
 भिण्फो ७ अ शौ प्रास ८ ४३  
 मि मलो ७ अ  
 भिसअ १ २३  
 भिसिणी २ १३  
 भीमशेणस्म मा ९ १४  
 भुई १ ८३  
 भुअणह अप ११ ७४  
 भुअणहि अप ११ ७४  
 भुए ३१  
 भुमया स्वाप्र ३ ४५  
 भुक्तया ७ अ  
 भूद शौ प्रास ८ ४५  
 भे हेरू पा ४ ४७ हेरू ४ ४७  
 भेच्छ ६ ९  
 भेडो ७ अ  
 भेतुआण पा ३ ३६  
 भाअणमेम ( वि ) १ ६६  
 भोज्जा ३ २०  
 भोज्ज ६ ९  
 भोति पै १० १७  
 भोत्तव्व ६ ३३  
 भोत्ता शौ ८ १३  
 भोत्तुआण ३ ३६  
 भोत्तु ६ ३३

भोत्तूण ६ ३३	मऊहो ७ म
भोद्दि शौ ८ १, शौ ८ १५	मद् ४ ४७ शौ ८ ४२, शौ ४७, हेरू पा ४ ४७
शौ प्रास ८ ४५	मद्सु ४ ५७
भोटी ४ ४३	मओ ८०, २ १
भोदूण शौ ८ १२	मगओ १ ६
भोमि शौ ८ ३३	मग्गू १ १
म	मगोहि अप ११ ०९
मअगलो ७ म	मगो ( वि ) ०
मअङ्को २ १	मओणो ७ म
मअको ( वि ) १ ८३	मच्चू, ७ म
मअणो २ १	मच्छुरो ३ २२
मआ ४ ४७	मजारो पा १ ६१, ७ म
मइ शौ ८ ४४, ४ ४७ शौ ४ ४७ हेरू पा ४ ४७, अप ४ ४८	मज्ज ३ २३
मइत्तो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	मज्झ हेरू पा ४ ४७
मइदु हेरू पा ४ ४७	मज्झत्तो हेरू पा ४ ४७
मइदो ४ ४७ हेरू पा ४ ४७	मज्झग्मि हेरू पा ४ ४७,
महल ७ म	मज्झसु हेरू पा ४ ४७
मइ जप ११ ४०	मज्झहे अप ११ १२
मईअ पक्खे ( वि ) ३ ३७	मज्झहो ७ म
मउअ ७ म	मज्झाण हेरू पा ४ ४७
मउड १ ७५	मज्झाण हेरू पा ४ ४७
मउण १ ९३	मज्झिमो ७ म
मउत्तण ७ म	मज्झु अप ११ ४०
मउली १ ९३	मण्णसु हेरू पा ४ ४७
मउलो २ १	मज्झ हेरू पा ४ ४७, ३ २४
मउल १ ७५	मझ ३ ३०
मऊरो शौ ८ ४४	मऊरो ७ म
मऊरो ७ म	मट्टिआ ७ म
	मडअ ७ म
	मडे मा प्राप्र ९ १६

मङ्गिअ ७ म  
 मढा २ ४  
 मणअ स्वा प्र ३ ४५  
 मणस्सि शौ ८ ५  
 मणहर ७ म  
 मणाउ अण ११, ६४  
 मणासिला १ ५१  
 मणिअ स्वाप्र ३ ४५  
 मणोज्ज ३ ५  
 मणोण्ण ३ ५  
 मणोरहो २ ३, ७ म  
 मणसिणी १ ३३ १ ५२  
 मणमिला १ ३३  
 मणसी १ ५२  
 मण्डलग्ग १ ४३  
 मण्डलग्गो १ ४३  
 महुक्को ३ ११  
 मण्णू ७ म  
 मतन परवसो पै १० ६  
 मत् शौ ८ ४४  
 मतौ हेरू पा ४ ४७, ४ ४७,  
 शौ ४ ४७ शौ ८ ४४  
 मधुरीअ पा १ ६१  
 मनूसो १ ५१  
 मन्तिदो शौ ८ २  
 मन्तू ७ म  
 मन्धीसा अण ११ ६४  
 मम ४ ४७ शौ ८ ४४  
 हेरू पा ४ ४७ शौ ४ ४७  
 ममप् ४ ४७  
 हेरू पा ४ ४७

ममत्तो ४ ४७  
 हेरू पा ४ ४७  
 ममदुहि ४ ४७  
 ममम्मि ४ ४७  
 हेरू पा ४ ४७  
 ममसु हेरू पा ४ ४७ ४ ४७  
 ममाइ ४ ४७ हेरू पा ४ ४७  
 ममाण हेरू पा ४ ४७  
 ममाण हेरू पा ४ ४७  
 ममातु पै १० २०  
 ममातो पै १० २०  
 ममादो शौ ८ ४४ शौ ४ ४७  
 ममासुतो ४ ४७ हेरू पा ४ ४७  
 ममार्हितो हेरू पा ४ ४७, ४ ४७  
 ममेसु ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 ममेसुतो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 मम ४ ४७  
 मम्महो ३ २६  
 मयङ्को पा २ १  
 मयणो पा २ १  
 मयन्दो ७ म  
 मयि अण ४ ४८  
 मयुरो ७ म  
 मय्य मा ९ ७  
 मरगअ ७ म  
 मरलो पा १ ६१  
 मरहद् ७ म  
 मराला पा १ ६१  
 मरिण्वउ अण ११ ७२  
 मलिण ७, म  
 मरल्लू ७ म

मल्लू ( वि ) ३ ३	महूणि ४ ४१
मसण ७ म	महेसु हेरू पा ४ ४७, ४ ४७
मसाण ७ म	महो २ ३
मसिण ७ म	मह हेरू पा ४ ४७, ४ ४७
मस्कली मा ९ ४	मह्य ४ ४७, अप ४ ४८
मह हेरू पा ४ ४७, शौ ४ ४७, ४ ४७, शौ ८ ४४	मह्यत्तो ४ ४७
महत्तो ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	मह्याण ४ ४७
महन्तो ७ म	मह्य अप ४ ४८
महन्दो शौ ८ ३	मह्यलो ७ म
महम्मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	माअ ४ ३७
महसु हेरू पा ४ ४७, ४ ४७	माअ ४ ३७
महाण हेरू पा ४ ४७	माआ ७ ३७
महाण ४ ४७, हेरू पा ४ ४७	माआअ ४ ३७
महारा अप ११ ६८	माआइ ४ ३७
महिमा पा १ ४४	माआण ४ ३७
महिवालो २ ९	माआदे ४ ३७
महिविट्ट ( वि ) १ ८२	माआसु ४ ३७
महिहि अप ११ २४	माआसु ४ २७
महु ४ ४१, अप ११ ४० अप ४ ४८	माआसुतो ४ ३७
महु ४ ४१	माआहितो ४ ४७
महुअरो २ ३	माइणो ( वि ) १ ८५
महुअ ७ म	माइ मण्डल १ ८५
महुई १ १०	माउअ ३ १२ ७ म
महुरिअ ७ म	माउआ १ ८३
महुव ३ ४५	माउक्क ३ १२, ७ म
महुअ ७ म	माउच्चा ७ म
महुई ४ ४१	माउत्तण ७ म
महुई ४ ४१	माउ मण्डल १ ८५, १ ८४
महुओ ८ ४४	माउ सिआ ७ म
	माउहर १ ८५, १ ८४

माऊ १ ८३  
 माए ४ ३७  
 माएहि ४ ३७  
 माएहि ४ ३७  
 माएहि ४ ३७  
 माज्जारो पा १ ६१  
 माणुसो २ ८  
 माणसिणी १ ५२  
 माणसी १ ५२  
 माथत्रो पै प्राप्र १० २१  
 मादु १ ८३  
 मादर शौ ८ ४४  
 मादुहर १ ८५, १ ८४  
 मादुमण्डल १ ८४, १ ८५  
 मारणउ अप ११ ७५  
 मारणओ अप ११ ७५  
 मारि अप १ ७३  
 मारुदिणा शौ ८ २  
 माला ४ ३३  
 मालाउ ४ ३३  
 मालओ शौ ८ २४  
 मालाओ ४ ३३  
 माशे मा प्रा ९ १६  
 मामल १ ३६  
 मास १ ३६  
 माहवीलदा २ ३  
 माहण्पो १ ४१  
 माहण्प १ ४१  
 माहो २ ३  
 मि ४ ४७, हेरू पा ४ ४७  
 मिअको ७ म

मिअगो ७ म  
 मिआअदि शौ प्रास ८ ४१  
 मिइङ्गो पा १ ५४  
 मिओ शौ ८ ४७  
 मिचू ७ म  
 मिच्छा ३ २२  
 मिट्ट १ ८१  
 मिमे ४ ४७  
 मिम हेरू पा ४ ४७  
 मिरिअ १ ५४  
 मिलाण ३ ३२  
 मि लउ अप ( वि ) ११ ४  
 मिलिच्छो १ ६७  
 मिसालिअ स्वाप्र ३ ४५  
 मिहुण २ ३  
 मी ४ ४७  
 मुअको ( वि ) १ ८३  
 मुइगो १ ५४, ७ म  
 मुक्को ३ १२  
 मुक्क ७ म  
 मुक्खो ७ म  
 मुग्गरो ३ १  
 मुग्गो ३ १  
 मुज्जाय ( अ ) गो १ ९२  
 मुट्टो ३ १८  
 मुडाल १ ८३  
 मडढा ७ म  
 मुडे १ ३३  
 मुढा १ ३३  
 मुत्ताहल २ ११  
 मुत्ती ( वि ) ३ २१



सुत्तो ( वि ) ३ २१  
 सुत्त ३ १, ७ म  
 सुद्धा ७ म  
 सुद्धाअ ४ ३४  
 सुद्धाह ४ ३४  
 सुद्धाए ४ ३४ ( वि ) १ ९  
 सुद्ध ३ १  
 सुनिदो १ ६७  
 सुखो ७ म  
 सुसल ७ म  
 सुसा ७ म  
 सुसावाभा ७ म  
 सुहत्तो ( वि ) ३ २१  
 सुह २ ३  
 मूओ ३ १२  
 मूमओ ७ म  
 मूसल ७ म  
 मूसा ७ म  
 मे शौ ८ ४४ ४ ४७, हेरू पा  
 ४७ शौ ४ ४७  
 मेखो पै प्राप्र २ २१  
 मेही ७ म  
 मेरा ७ म  
 मेह्लि अप ११ ४६  
 मेहला २ ३  
 मेहो २ ३  
 मेशे मा ( वि ) ४ ५  
 मा ८ २  
 मो हेरू पा ४ ४७  
 मोच्छ ६ ९  
 मोण्ड १ ७९

मोड ( वि ) २ ४  
 मोत्तव्व ६ ३३  
 मोत्ता १ ७९  
 मोत्ती शो ८ ४४  
 मोत्तुण ६ २९  
 मोत्तु ३ ३६, ६ ३३  
 मोत्तूण ६ ३३  
 मोरो ७ म  
 मोत्तल ७ म  
 मोसा ७ म  
 मोहो ७ म  
 म हेरू पा ४ ४७, ४ ४७  
 शौ ४ ४७, अप ११ ६४  
 मजारो १ ३३  
 मसल १ ३६  
 मसुहो ३ ४४  
 मस १ ६३, शौ ८ ४४, १ ३६  
 मस्सू ७ म  
 मिम हेरू पा ४ ४७  
 ४ ४७  
 म्हा ६ ६  
 मिह ६ ६  
 म्हो ६ ६  
 य  
 यणवदे मा ९ ७  
 यदि मा ९ ७  
 यति १ ५०  
 यस्के मा पा ९ ११  
 यस्के मा ९ ११  
 यातिसो पै १० १६  
 यादि मा ९ ७

आयदे मा प्राप् ९ १६  
युग्हात्तियो पै १० १६  
अयेव शौ ८ २२

र

रञ्ज ( वि ) २ ६  
रञ्जो २ १  
रञ्ज २ १, २ ६  
रञ्जण ७ २ १  
रञ्जो पा ३ ६  
रञ्ज्या ३ २२  
रञ्जा पै प्राप् १० २१  
रञ्जो पै प्राप् १० २१  
रञ्जा पै १० ३  
रञ्जो पै १० ३  
रण ७ २  
रण्णा हेरू ४ ४१, ४ ४१  
रणो ४ ४१  
रणो हेरू ४ ४१  
रण ७ २  
रन्ती ७, २, ३ ३  
रन्त ७ २  
रन्ता शौ ८ १३  
रन्दूण शौ ८ १३  
रमणिज्ज २ १५  
रमणीअ २ १५  
रमति पै १० १८  
रमते पै १० १८  
रमदि शौ ८ १६  
रमदे शौ ८ १६  
रमिअ ३ ३६

रमिय शौ ८ १८  
रमियते पा १० १  
रयणीअर! १ १३  
रसा-अल १ १  
रसा थल पा २ १  
रसानो ३ ४४  
रस्सी ३ २ ( वि ) २०  
राअ उल १ १५, ७ -  
राअफेर ७ २  
राअम्मि ४ ३१ २  
राअस्म ४ ४१  
राअ ४ ४१  
राआ ४ ४१  
राआणो ४ ४१  
राआण ४ ४१  
राआण्ण ४ ४१  
राआद् ४ ४१  
राआद्दो ४ ४१  
राआहितो ४ ४१  
राइक्क ( वि ) ३ ३७, -  
राइणा हेरू ४ ४१, ४ ४१  
राइणो ४ ४१ हेरू ५ ४१  
राइण ४ ४१ हेरू ४ ४१  
राइत्तो हेरू ४ ४१  
राइम्मि हेरू ४ ४१, २ ४१  
राइहितो ४ ४१  
राई ७ २  
राईण हेरू ४ ४१  
राईण हेरू २ ४१  
राईसु हेरू ४ ४१  
राईसु हेरू ४ ४१

राईहि हेरु ४ ४१  
 राईहि हेरु २ ४१  
 राईहि हेरु ४ ४१  
 राउल १ १५ ७ र  
 रापु ४ २१  
 रापुण हेरु ४ ४१  
 रापुण हेरु ४ २१  
 रापसु हर ४ ४१, ४ ४१  
 रापसु हेरु २ ४१, ४ ४०  
 रापुहि हेरु ४ ४१  
 रापुहि हेरु ४ ४१  
 रापुहि हेरु ४ ४१, २ ४१  
 राओ (  $\frac{1}{2}$  ) १ ६२  
 राचा पै प्राप्र १० २१  
 राचिजा ऐ १० ३  
 राचिनो प १० ६  
 राचिना प प्राप्र १० २१  
 राचिनो पे प्राप्र १० २१  
 राजपधो जो ८ ९  
 राजपहा शौ ८ ९  
 राय हेरु ४ ४१  
 रायक ७ र  
 रायत्तो हेरु ४ ४१  
 रायग्मि हेरु ४ ४१  
 रायस्स हेरु ४ ४१  
 राया हेरु ४ ४१  
 रायाण हेरु ४ ४१  
 रायाणो हेरु ४ ४१  
 रायाण हेरु २ ४१  
 राये हेरु ४ ४१  
 राय हेरु ४ ४१, शौ ८ ६

राहा २ ३  
 रिऊ २ १, १ ८६, ( वि ) २ ९  
 ७ र  
 रिक्खो ७ र  
 रिच्छो ७ र  
 रिउजू १ ८६, ७ र  
 रिडुडी ७ र  
 रिण १ ८६, ७ र  
 रिद्धी १ ८६, ७ र  
 रिसहो १ ८६, ७ र  
 रिसी १ ८६, ७ र  
 रुअसि अप ११ ४२  
 रुअहि अप ११ ४२  
 रुक्खा १ ४३  
 रुक्खाइ १ ४३  
 रुक्खो शौ ८ ४४ ७ र  
 रुक्खे मा ( वि ) ४ ५  
 रुक्मी ( वि ) ३ १६  
 रुद्धो ३ ४  
 रुद्रो ३ ४  
 रुण ७ र  
 रुप्पिणी ३ १६  
 रुप्पी पा ३ ६  
 रुप्प ३ १६  
 रुवह ६ ३१  
 रुसह ६ ३०  
 रेभो २ ११  
 रेसि अप ११ ६४  
 रेसि अप ११ ६४  
 रोअदि २ १  
 रोचिरो ३ ३५

रोच्छु ६ ९  
 रोत्तम्ब ६ ३३  
 रोत्तु ६ ३३  
 रोत्तण ६ ३३  
 रोददि शौ प्रास ८ ४५  
 रोवइ ६ ३१  
 रोवति शौ प्रास ८ ४५  
 ल  
 लक्षण ७ ल  
 लक्ष्मेहि भग ११ ७  
 लक्षण ३ १३  
 लग्गा ६ ३८  
 लग्गा ३ २  
 लङ्गण १ ३७  
 लघण १ ३७  
 लज्जिरो ३ ३५  
 लम्बुण १ ३७  
 लट्टी ३ १८, ७ ल  
 लदत्तो हेरु ४ ३७  
 लदारहितो ४ ३७  
 लदा ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदाऊ ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदाह ७ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदाउ ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदाए ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदाभः ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदाण ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदाण ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदादो ४ ३७  
 लदासु ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदासु ४ ३७, हेरु ४ ३७

लदासुनो हेरु ४ ३७  
 लदाहि ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदाहि ४ ७, हेरु ४ ३७  
 लदाहि ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 लदानिनो हेरु ४ ३७  
 लद ४ २७ हेरु ४ ३७  
 लपति प १० १८  
 लपते पे १० १८  
 लवण शौ ८ ४२  
 लस्कशे मा पा ९ १६  
 मा प्रास ९ १६  
 लक्ष्मी मा ९ ११  
 लहति अप ११ ७२  
 लहहु अप ११ ४५  
 लङ्ग २ ५  
 लहुअ ८ ७  
 लहुइ ३ १३  
 लहुवो ३ ३२  
 लाअण २ ५  
 लाऊ ७ ल  
 लावला ७ ७  
 लागलो ७ ६  
 लायण १ २ १  
 लानपद को ८ ४३  
 लास ९ ८  
 लास २ ३  
 लाहलो ७ ल  
 लिच्छुह ३ २२  
 लिमा ७ ७  
 लिह अप ११ १  
 लिहह २ ५

लिही ७ लौ प्राप् ८ २	वइसालो ० ८९
लं ह अप ११ १	वइसाहो १ ८९
लुक्का ७ ल	वइसिओ १ ९०
लुगो ७ ल, ६ ३९	वइसगाओणो १ ९०
लुणह ६ २२	वइस्साणरो १ ८९
लुपह ( वि ) २ ३	वक्कल ६ ३
लह ( वि ) ६ ३१	वक्खाण ३ ७
लेविणु अप ११ ७३, अण ११ ७४	वग्गा १ २
लेह अप ११ १	वग्गो ३ ३ ( वि ) २ १
लोअणो १ ४१, पा १ ४१	वक १ ३३
लोअणो पा १ ४१	वक्खुहु अप ११ ८
लोअण १ ४१	वक्खुहे ११ ८
लोओ २ १	वक्खाओ ( वि ) १ ९
लोण ७ ल	वक्खा चलन्ति १ ६
लोद्धओ १ ७९	वक्खेण १ ३४
लोहिन्नाअह ६ १	वक्खेण १ ३४
लोहिन्नाह ६ १	वक्खेसु १ ३४
व	वक्खेसु १ ३४
वअणो १ ४१	वक्ख १ २८
वअण २ १, २ ८, १ ४१,	वक्खो ३ २२, ७ व
वअर शौ ८ ४४	वज्ज ३ २३, ७ व
वअ शौ ८ ४४, ४ ४७ शौ ८ ४०	वज्जणीय १ ३
वइअव्भो १ ८९	वचण १ ३२
वइआलिओ १ ९०	वअिअ १ ३७
वइआलीओ १ ९०	वजिअ १ ३७
वइएसा १ ८९	वज्जदि सा ९ ९
वइएहो १ ८९	वटिअपै प्राप् १० ३१
वइर ७ व	वट्टी ३ २१
वइर १ ९०	वट्टो ७ व
वइसवणो १ ९०	वट्ट ७ व
	वडभागलो २ १

वडि- ( वि ) २ ४  
 वड्डय्यर ७ व  
 वड्डी १ ८०  
 वड अप ११ ६४  
 वणम्मि १ २९  
 वण ४ ३८  
 वणमि १ २९  
 वणस्सई ७ व  
 वणाणि शौ ८ ३२  
 वणिदा ७ व  
 वण्ही ३ २८  
 वत्ता ३ २१  
 वत्तिआ ( वि ) ३ २१  
 वत्तिओ ( वि ) ३ २१  
 वण्ण शौ ( वि ) पा २ १  
 वनप्फई ७ व  
 वन्दामि शौ ८ ४२  
 वन्दित्ता ( वि ) ३ ३६  
 वन्दित्त ( वि ) ३ ३६  
 वन्द ७ व  
 वण्णो शौ ८ ४४  
 वण्णह १ ३७  
 वण्ण १ ३७  
 वम्मचैर ७ व  
 वम्महो ७ व  
 वम्मिओ १ ७३  
 वम्मो १ ३९  
 वम्महचैर ३ ९, ७ व  
 वयणा पा १ ४१  
 वयणाइ पा १ ४१  
 वय शौ ४ ४७, हेरू पा ४ ४७,  
 ( वि ) १ ४०

वयसिअहु अप ११ २३  
 वयसो १ ३३  
 वरिअ ७ व  
 वरिस ( वि ) ६ २८  
 वलआ १ ६१  
 वलयाणलो पा २ १  
 वलवासुह २ ४  
 वलही २ ४  
 वलाआ १ ६१  
 वलाहु अप ११ ४५  
 वलिस ( वि ) २ ४  
 वल्ला पा १ ५७, ७ व  
 वसही ७ व  
 वसहो १ ८०, ७ व  
 वसुआत्ति पे १० १७  
 वसो ( वि ) १ ८१  
 वहप्फई ७ व  
 वहस्सई ७ व  
 वहिरो २ ३  
 वहिल्लउ अप ११ ६४  
 वहीअदि शौ प्रास ८ ४५  
 वहु ४ ३७  
 वहुप शौ ८ ४४  
 वहुसुह १ ८  
 वहुत्त ३ ४३  
 वहु ४ ३७  
 वहु ४ ३३, ४ ३७  
 वहुअ ४ ३७  
 वहुआ ४ ३७  
 वहुई ४ ३७  
 वहुअ ४ ३३

वहृण् २ ३७	वासेसी १ ९
वहृओ ४ ३३, ४ ३७, शौ ८ ४४	वाहइ २ ३
वहृण २ ३७	वाहरिजइ ६ २६
वहृण ४ ३७	वाहिओ ३ १२
वहृदो ४ ३७	वाहितो ३ १२
वहृमुह १ ८	वाहित १ ८१
वहृसु ४ ३७	वाहिप्पह ६ २६
वहृसु २ ३७	वाहिर ७ व
वहृसुनो ४ ३७	वाहि ७ व
वहृहि ४ ३७	वाहो २ ३, ७ व
वहृहि ४ ३७	विअ शौ ३९, १ १०
वहृहि २ ३७	विअहल्ल ७ व
वहृहितो ४ ३७	विअडु ७ व
वहेळअडो ७ व	विअड्हो ७ व
वह्लचरिअ ७ व	विअणा ७ व
वाअरण ७ व	विअणो पा १ ५४
वाआ १ २०	विअण १ ५४,
वाआच्छल पा १ २०	विअय वग्म शौ ८ ६
वाआ विहवो पा १ २०	विअयासो १ १०
वाउणा २ १	विअण २ १
वाउग्मि शौ ८ ४४	विआरिह्लो ३ ४४
वाउलो ३ १२, ७ व	विआरुह्लो ३ ४४
वाउह्लो ३ १२	विउणो ( वि ) ३ ३
वाणारसी ७ व	विउद २ ६
वाप्पो ७ व	विउल २ १
वारण ७ व	विउस्सग्गो ७ व
वार ( वि० ) ३ ३, ७ व	विओओ २ १
वावडो शौ ८ २८, ७ व	विओहो २ १
वास इसी १ ९	विकासरो १ ५१
वासा १ ५१	विक्रओ १ २
वासेण अप ११ ५२	विक्रवो ३ ३

विच्छि अप ११ ६४  
 विच्छुडो ७ व  
 विच्छुओ ७ व  
 विच्छोह गरु अप ११ ४०  
 विच्छोडि अप ११ ७३  
 विज्जण ( वि ) २ १  
 विज्जला स्वाप्र ३ ४२  
 विज्जा ३ २३  
 विज्जू ( वि ) १ २०  
 विज्ज ३ २०  
 विञ्जुलो १ ८१  
 विञ्जिओ ७ व  
 विञ्जुओ ७ व  
 विज्ञातो प प्राप्र १० २१  
 विज्ञो शौ ८ ३०  
 विज्ञान पै १० २  
 विट्ठाल अप ११ ६४  
 विट्ठी ७ व  
 विट्ठीए अप ११ २  
 विट्ठ ७ व  
 विडवो ३ ४  
 विड्डा ३ ११  
 विड्ढी १ ८१  
 विटत्तच्छुरस पा १ २५  
 विटत्त ६ ३९  
 विटप्पह् ६ २६  
 विटविज्जह् ६ २६  
 विणि ४ ४८  
 विणु अप ११ ६४  
 विण्ठ ७ व  
 विण्णाण ( वि ) ३ ५, ३२४

विण्णे शौ ८ ३०  
 विण्हू १ ६८, ३ २  
 विण्णिहा ८१  
 वित्ती १ ८१  
 वित्त १ ८१  
 विदुरो ( वि ) २ १  
 विद्वाओ ( वि ) १ ७२  
 विण्णस्स देहि १ ६  
 विण्णलो ७ व ०  
 विमृओ ३ २९  
 वियले मा प्राप्र ९ १६  
 विरथाहले मा ९ ७  
 विरसमालक्खिमोणण्हि १ १०  
 विरहग्गी १ ६७  
 विलम्बु अप ११ ४६  
 विलया ७ व  
 विलाशे मा प्राप्र ९ १६  
 विलामणीओ अप ११ २१  
 विलिअ १ ७३ १ ५४  
 विल्ल १ ६८  
 वित्ठक्को ६ ३९  
 विवह् अप ११ ५३  
 विसढो ७ व  
 विसमह्ओ १ ५५  
 विसमओ १ ५५  
 विसमा ७ व पै १० ८  
 विमानो पै १० ८  
 विसी १ ८१  
 विसो ( वि ) १ ८१  
 विस ( वि ) २ १३  
 विसट्ठुक ७ व



विस्तु म ९ ४	वुजेपि अप ११ ४८
विस्मये सा ९ ४	वुजेपिणु अप ११ ४८
विहफ्फट् ७ व	वुद् ७ व
विहफ्फट् ७ व	वुट्टो ७ व
विहलो ७ व, ३ ९	वुड्ढी ७ व
विहम्भि ६ २	वुड्ढो १ ८३, ७ व
विहा १ ८१	वुत्त अव ११ ६४
विहि ४ ४८	वुत्तान्नो १ ८३
विहिओ ३ १२	वुन्दारभा ७ व
विहित्तो ३ १२	वुदावण १ ८३
विहा १ ४४	वुद् १ ८३
विहीणो ७ व	वुन्द ७ व
विहूणो ५ व	वुन्न अव ११ ६४
विहेह् ( वि ) ६ ३१	वुहफ्फट् ७ व
विज्जा ३ २४	वुहस्सई ७ व
विज्ञा पा ३ ८	वेअणा ७ व शौ ८ ४४
विहिओ १ ८१	वेआलिओ १ ९०
वीण अप ११ १	वेहल्ल ७ व
वीरिअ ७ व	वेच्छ ६ ९
वीसथो ७ व	वेज्ज ३ २३
वीलहो ६ ३९	वेडिसो १ ५४, ७ व, पा १ ५४
वीसभो ७ व	वेण अप ११ १
वीसा १ ३५ ७ व	वेणि ४ ४८
वीसामो १ ५१	वेण्ट ७ व
वीसमइ १ ५१	वेण्ण ४ ४८
वीससइ १ ५१	वेण्हू १ ६८
वीसालो १ ५१	वेदसो शौ ८ ४४
वीसु १ ३१, १ ५१, ७ व	वेरुलिअ ७ व
वुच्चइ ( वि ) ६ १५	वेर १ ९०
वुच्चदि शौ प्रास ८ ४५	वेल् ७ व
वुजइ अप ११ ४८	वेल्ल १ ६८

वेङ्गो पा १ ५७, ७ व, १ ५७

वेविरो ३ ३५

वेसिओ १ ९०

वेसवणो १ ९० वेसु ४ ४८

वेसु ४ ४८

वेसपाभणो १ ९०

वेह व १ ८

वेहितो ४ ४८

वेकुओ ( वि ) २ ४

वो हरू पा ४ ४७, शो ८ ४४

वोकरुन्त १ ७९

वोण्ट ७ व

वोगी ७ व

वोर ७ व

वोलीणो ६ ३०

वोसट्टो ६ ३९

वोसिरण ७ व

वसिओ १ ६३

वद्यद् ६ २६

वासु० अप ११ ५२

व्व शौ ८ ४५

व्वादडो शौ ( वि ) पा २ १

श

शब्दवञ्जे मा ९ ८

शस्तवाहे मा ९ ६

शालसे मा ९ ३

शिआलके मा प्राप्र ९ १६

शिआले मा प्राप्र ९ १६

शुस्क दालु मा ९ ४

शुस्टु कद मा ९ ५

शुस्तिदे मा ९ ६ हरू पा ४ ४६

स

सअड ७ स

सअड २ १

सअण २ ८

सइ १ ६४, १ १

सई २ १

सउण ( वि ) २ १

सउणिह अप ११ १२

सउत्तले शौ ( वि ) ८ २

सउरा १ ९३

सउह १ ९३

सक ६ ३८

सकअ १ ३५

सकदि ( ि ) शौ प्रास ८ २१

सकारा १ ३५

सकुणादि शौ, प्रास ८ ४१

सको १ २, ७ स

सक्खिणो ७ स

सकख १ ३१

सङ्का १ १

सङ्को १ १, १ ३७

सकतो ३ ८

सकरो ( वि ) २ १

सखो १ ३७, ( वि ) २ ३

सगच्छ ६ ९

सगमो ( वि ) २ १

सगामो पे प्राप्र १० २१

सग ७ स

सघो ( वि ) २ ३

सचाव ( वि ) २ १

सच्च ३ १९

सज्जणो ( वि ) १ ०६  
 सज्जो ३ १  
 सज्जस ७ स  
 सज्जाओ ३ २४  
 सक्षो ३ ३०  
 सन्धा १ ३७  
 मञ्जला पै १० २  
 सङ्कल अ ११ ६४  
 सढा ७ स  
 सढिल ७ स  
 सढो २ ४  
 सणिअरो ७ स  
 सणिअ स्वाप्र ३ ४५  
 सणिङ्ग ७ स  
 सण्हो १ ३७  
 सढो १ ३७  
 सण्णा ३ ५  
 सण्ह ३ ३, ३ ३८, ७ स  
 सतन पै १० ६  
 सत्तरह ७ स  
 सत्तरी ७ स  
 सत्तावीसा ( वि ) १ २, १ ७  
 सत्तअ १ ३५  
 सत्तघो शौ प्रास ८ ४५  
 सत्तो ७ स  
 सहहण ६ ३५  
 सहहाण ६ ३१  
 सहो ३ ३  
 सद्धा १ १७  
 सनान पै, प्राप्र १० २१  
 पै ( वि ) १० १३  
 सनेहो पै, प्राप्र १० २१, पै  
 ( वि ) १० १३

सन्तो ( वि ) १ ४६  
 सप्पओ ३ १  
 सप्फ ३ २७  
 सबधु ११ ४९  
 सभरी २ ११  
 सभलउ अप ११ ४९  
 सभिव्खू ( वि ) १ १६  
 समत्त ७ स, ( वि ) ३ २५  
 समत्थो ७ स  
 समरो ७ स  
 समाणु अप ११ ६४  
 समिद्धी १ ५२, १ ८१  
 समुद्धो ३ ४  
 समुद्रो ३ ४  
 समुह १ ३६  
 सम्म पा १ ४० ( वि ) १ ४०,  
 १ ३१  
 सम्महो शौ ८ ४४  
 सम्हो ३ २९  
 सयढ पा २ १  
 सयणो ( वि ) ३ ३४  
 सरअ १ २३  
 सरओ १ ३८, पा १ ३८, पा  
 १ २३  
 सरदो पा १ २३  
 सरफस पै, प्राप्र १० २१  
 सररुह ७ स  
 सरिआ १ २०  
 सरिक्ख शौ ८ ४४  
 सरिच्छो १ ८७, १ ५२  
 सरिया ( वि ) १ २०

सरिसमिम शौ ८ २१

सरिसो १ ८७

सरिसणिम शौ ८ २१

सरेण पा १ ३९

सरो १ ३९, ३ २, पा ३ २,  
( वि ) ३ २९

सरोरूह ७ स

सर्वे ( वि ) ४ ४४

सलफो प, प्राप्र २१

सलाहा ७ स

सलिल पै १० ७

सवलो २ १२

सवहुमान ( वि ) २ १

सवहा २ ३, २ ९ २ २

सवओ १ ४६

सवङ्गाउ अप ११ २०

सवजो ( वि ) १ ५६, ३ ५

सवजो पै प्राप्र १० २१,  
पै पा १५६

सववजो पै १० २

सववणू १ ५६, ३ ५

सववणो शौ पा १ ५६,  
शौ ३१

सववत्तो ४ ४५

सववत्थ ४ ४५

सववदो ४ ४५

सववग्मि ४ ४५

स वशित्वा शौ ८ ४१

सववस्स ४ ४५

सववस्सि ४ ४५

सववहि ४ ४५

सववाण ४ ४५

सव्वु अप ११ ३८

सव्व ४ ४५

सव्वेण ४ ४५

सव्वेसि ४ ४५.

सव्वेसु ४ ४५

सव्वेसु ४ ४५

सव्वेहिता ४ ४५

स वो ४ ४५

सव्व ४ ४५, ( वि ) ३ ३

सव्वगिओ ७ स

ससा ४ ३१

ससिमण्डलचन्दिमए अप ११ २१

ससी पै १० ८

सहआरो ( वि ) २ १

सहकारो ( वि ) २ १

सहचर ( वि ) २ १

सहरी २ ११

सहल शौ ८ ४४

सहहि अप ११ ४१

सलिलसेअ सभमुग्गादो ४ ड, पा  
१ १५

सहा २ ३

सहावो २ ३

सहिदाणि भा प्राप्र ९ १६

सही २ ३, ४ ३३

सहीउ ४ ३३

सहीओ ४ ३३

सहु अप ११ ६४

सहुउ अप ११ ७२

सा ४ ४७, ७ स

साअरो २ १

साणो ७ स

सामभा ७ स  
 सामच्छु ७ स  
 सामथ ७ स  
 सामल अप ११ २  
 सामिद्धी १ ५२  
 सारग ७ स  
 सारिच्छो १ ५२  
 सालवाहनो ७ स  
 सालाहणो ( वि ) १ १३  
 साओ २ २, २ ९  
 सासाअमि शौ ८ ४२  
 साम १ ५१  
 साहणा ४ २२  
 साहणा ४ २८  
 साहु अप ११ ३८  
 साहू २ ३  
 सि ६ ६  
 सिभा ७ स  
 सिगारो १ ८१  
 सिग ७ स  
 सिघो १ ३६, २ २० ७ स  
 सिद्धी १ ८१, ३ १८  
 सिद्ध १ ८१  
 सिटिल ७ स  
 सिणिद्धो ३ १  
 सिणिद्ध ७ स  
 सिण्ण ७ स  
 सिथ ३ १  
 सिनात्त पै १० १३  
 सिदूर १ ६८  
 सिंधव ७ स  
 सिण्णह ६ २६

सिग्पी ७ स  
 सिभा २ ११  
 सिमिणो ७ स  
 सिघालो १ ८१  
 सिरइ ६ ३७  
 सिर विअणा ७ स  
 सिरिमता ( वि ) ३ ४४  
 सिरिसो १ ७३  
 सिरिवेअणा ७ स  
 सिर १ १६, १ ४० पा १ ४०  
 सिटिह ३ ३२  
 सिलोओ ३ ३२  
 सिविणो १ ५४, पा १ ५४ ७ स  
 सि ४ ४६ ४ ४७  
 सिहदत्तो ७ स  
 सिहुराओ ७ स  
 सीभरो ७ स  
 सीआण ७ स  
 सीउआण ३ ३६  
 सीभरो ७ स  
 सासइ ६ ३०  
 सीसो १ ५१  
 सीस पा ३ ८  
 सीहरो ७ स  
 सीहो १ ३६, २ २०, ७ स  
 सुअणस्सु अप ११ १०  
 सुअदि शौ प्रास ८ ४५  
 सुआदि शौ प्रास ८ ४५  
 सुइदी २ ६  
 सुउमालो ७ स  
 सुउरिसो ( वि ) १ १३, २ १  
 सुकडभा ७ स

सुकित अप ११ १  
 सुक्किदु अप ११ १  
 सुक्कमालो ७ स  
 सुकुसुम ( वि ) २ १  
 सुक्कदु अप ११ १  
 सुक्ककपक्खो ( वि ) ३ ३२  
 सुक्क ७ स  
 सुगदो ( वि ) २ १  
 सुगन्धत्तण १ ९२  
 सुधि अप ११ ४९  
 सुद्ध ७ स  
 सुज्जो पै ( वि ) १० १३  
 सुणाउ ६ १४  
 सुडो १ ९२  
 सुण्हा ७ स  
 सुण्ह ७ स  
 सुतर ( वि ) २ १  
 सुतार ( वि ) पा २ १  
 सुत्त १  
 सुनुया पै ( वि ) १० १३  
 सुन्हरिअ १ ९२  
 सुन्देर पा १ ५७, १ ९२, १ ५७  
 सुदेर ३ ९  
 सुप्पणहा ४ २९  
 सुप्पणही ४ २९  
 सुमणाण ( वि ) पा १ ४०  
 सुमण ( वि ) १ ४०  
 सुमरदि शौ ८ ३७  
 सुमरहि अप ११ ४६  
 सुमरि अप ११ ४६  
 सुमिणो आ पा १ ५४

सुटयो शौ ८ ८  
 सुरग्घो ( वि ) ३ ३३  
 सुवह १ ५९  
 सुवओ ७ स  
 सुवण्ण रेह अप ११ २  
 सुवण्णिओ १ ९२  
 सुवे कज ३ ३४  
 सुवे जना ३ ३४  
 सुसा ७ स  
 सुमाण ७ स •  
 सुहवो ७ स  
 सुहम आ ७ स  
 सुहिआ शौ ८ ५  
 सुट्टम आ ( वि ) ३ ३३  
 सूअअ २ १  
 सूआसो ७ स  
 सूई २ १  
 सुरिओ ७ स  
 सुरिसो ( वि ) १ १३  
 सूहवो ७ स  
 से ४ ४६, ४ ४७, शौ पा ४ ४६  
 सेच्च १ ८८  
 सेज्जा १ ५७, पा १ ५७, ३ २२  
 सेण्ण ७ स  
 सेत्त १ ८८  
 सेदूर १ ६८  
 सभालिआ २ ११  
 सेलो १ ८८  
 सेलिफा ७ स  
 सेलिम्हो ७ स  
 सेवा ३ १२  
 सेन्वा ३ १२

सेञ्ज ( वि ) ४ ४४

सेसो २ १९

सेहालिआ २ ११

सो अप ११ ४, ४ ४६, हेरू पा  
४ ४६

सो ज ( वि ) २ १

सोअमल्ल १ ७५

सोडआण ( वि ) ३ ३६

सोपुवा अप ११ ७२

सोच्चा ३ २०

सोच्छिह् ६ ९

सोच्छिथा ६ ९

सोच्छिन्ति ६ ९

सोच्छिमि ६ ९

सोच्छिमो ६ ९

सोच्छिसि ६ ९

सोच्छिस्स ६ ९

सोच्छिहिह् ६ ९

सोच्छिहिन्नि ६ ९

सोच्छिहिमो ६ ९

सोच्छिहिसि ६ ९

सोच्छ ६ ९

सोडोर ७ स

सोत्त ३ ११

सोभति प १० ८

सोभन प १० ८

सोमालो ७ स

सोम्भो ३ २

सोरिअ ७ स

सोवह् १ ५९

सोसविअ ६ १९

सोसिअ ६ १९

सोहइ २ ३

सोहग्ग १ ९१

सोहण २ ३

सोहिल्लो ३ ४४

सौदामिणी शौ ( वि ) पा २ १

सौअरिअ पा १ १

सघारो २ २०

सजत्तिओ १ ६३

सजदो २ ६

सजमो ( वि ) २ १४

सजा ३ ५

सजादो २ ६

सजोओ ( वि ) २ १४

सझा १ ३७, ३ ८, पा ३ ८

सठविअ १ ६१

सठाविअ १ ६१

सणा ३ २४

सदद्दो ( वि ) ३ १८

सपह् अप ११ ५३

सपई ( वि ) २ ५

सपअ ( वि ) २ ६

सपआ १ २०

सपदि २ ६

सपथ अप ११ ५३

सपया ( वि ) १ २०

सफासो १ ५१

समड्डो ७ स

समुहो १ ३

समुह् १ ३६

सरुधिजह् ६ २६

सरुवहू ६ २६	हरो ७ ह
सवट्टिअ ३ २१	हलहा ४ ३०, २ १८ ७ ७
सवत्तओ ( वि ) ३ २१	हलही ७ ह ४ ३०
सैवत्तण ( वि ) ३ २१	हलिआरो ७ ह
सवरो ( वि ) २ १	हलिओ १ ६१
सयुदी २ ६	हलिही ७ ह
सयुद १ ८३	हवहू ६ ३१
समारापु सुख अद्ध पा १ ६	हवहिहू पा ६ ८
ससिद्धिओ १ ६३	हविय शौ ८ १३०
सहरहू ( वि ) १ ३७	हविहिहू पा ६ ८
सहारो २ २०	हशिद मा प्राप्र ९ १
स्स शो ( वि ) ८ ३७	हशिदि मा प्राप्र ९ १
ह	हशिदु मा प्राप्र ९ १
हआमो ( वि ) २ ६	हस ६ ९
हउ अप ४ ५८	हमहू ६ १४ ६ २०
हउ अप ११ ४०	हसउ ६ ९ ६ १४
हके मा ४ ४८ मा ( वि ) ९ १६,	हसन्नु ६ ९
मा० प्राप्र ९ १६	हसन्तो ६ १२
हगे मा ४ ४८, मा ८ १६ मा	हसतो ६ १४
प्राप्र ९ १६	हसमाणा ४ २९
हजे शौ ८ २३	हसमाणो ० १२
हडक्के मा प्राप्र ९ १६	हसमाणी ४ २९
हडडई ७ ह	हसमि ६ ५
हणुमन्तो ७ ह	हससु ६ ९
हथो ३ ६, ३ २५	हससु ६ ९
हदो २ ६, ४ ५	हसह ६ ९
हम्महू ६ २४	हसहि ६ ९
हरडई ७ ह	हसामि ६ ९
हरिअदो ७ ह, ४ ५	हसामो ६ ६ ६ ९
हरिआल।	हसिअहू ६ १५
हरिज्जर ६ २६	हसिअव्व ६ १६



हसिअ द १७  
 हसिउ द १६  
 हसिऊग द १६  
 हसिज्ज द १५, ६, ६ २६  
 हसितून पै १० ११  
 हसिसु ८ ८  
 हसिमो द ६  
 हसिरो ३ ३५  
 हसिस्सामो द / ८  
 हसिस्स द ८  
 हसिद्दामो द ८  
 हसिहिद्द द १६  
 हसिहित्था द ८  
 हसेअव्व द १६  
 हसिहि द /  
 हसिहिन्नि द ८  
 हसिहिम्भि द ८  
 हसेड द १४  
 हसेउ द १४  
 हसद्द द १०  
 हसेउ द १६  
 हसेऊग द १२  
 हसेउज द १०  
 हसेउज्जसु द ९  
 हसेउज्जि द ९  
 हसेउजा द १०  
 हसेउजे द ९  
 हसेन्तु द ९  
 हसेतो द १०  
 हसेसु द ६  
 हसेमो द ६

हसेहिद्द द १६  
 हसना मा ९ ४  
 हस्सद्द द २६  
 हाळिओ १ ६१  
 हिअ १ ८, ७ ह, शो ( ८ )  
 पा २ १  
 हिअ ७ ह, १ ८१  
 हितअक प प्राप १० २१  
 हितक पै १० ९  
 हितय मा ( वि ) पा २ १  
 हिवद्द द ३१  
 ही शौ ४ ४७  
 हीणो ७ ह  
 हीमाणहे शौ / २४  
 हीरद्द द २६  
 हीरो ७ ह  
 हीही शौ ८ २७  
 हुणह द २२  
 हुत्त ३ १२  
 हुविस्था पा द ८  
 हुविहिनित प द ८  
 हुविहिस्सि पा द /  
 हुविहिहि पा द /  
 हुवेय्य पै १० १९  
 हुदुरु अप ११ ६४  
 हुअ ३ १२  
 हुणो ७ ह  
 हे कत्तार ( वि ) ४ २२  
 हे कुळ ४ ४१  
 हे पिअ ४ २२, ४ २३  
 हे पिअर ४ २२, ४ २३,

हे पिबारा ४ २२  
 हे भतार ४ २२, हेरु ४ २३  
 हे भतारा ४ २२, हेरु ४ २२  
 हे भभव ४ ४२  
 हे भव ४ ४२  
 हे लदाओ ४ ३७  
 हे लदे ४ ३७, हेरु ४ ३७  
 हलि अप १० ६२  
 हे सव्व ४ ४२  
 होइ इह १ १४  
 होज पा ६ ८  
 होजह ६ ११  
 होजा पा १ ८  
 होजाह ६ ११  
 होजहिह पा ६ ८  
 होजाहिह पा ६ ८  
 होतु पै १ ६  
 होत्ता शौ ८ १३  
 होदि शो ८ ११ शौ ग्राम ८ ४३  
 शो ८ १५  
 होदूण शौ ८ १३  
 होध शौ ८ १३  
 होसइ पा १ ८, अप १८ ४७  
 होस्स पा ६ ८  
 होस्साम ६ ८  
 होस्साम पा ६ ८  
 होस्सामि ६ ८, पा ६ ८

होस्म सु पा १ ८, ६ ८  
 होस्सामो १ ८ पा १ ८  
 होहाम ६ ८  
 होहामि ६ पा १ ८  
 होहासु ६ ८  
 होहामा ६ ८ पा ६ ८  
 होहिह ६ ८ पा ६ ८, पाद १ ४५  
 होहिअ ६ ८  
 हाहिथ ६ ८  
 हादि पा पा ६ ८  
 होर्हा त ६ ८ पा ६ ८  
 होह त ६ ८  
 हाहिम ६ ८ पा ६ ८  
 हाहिमि पा ६ ८  
 होहिसु ६ ८ पा ६ ८  
 होहिमो ग ६ ८  
 होहिरे ६ ८  
 होहिमि ६ ८  
 होहिस्स ६ ८ पा १ ८  
 हाहिह ६ ८  
 होहिदि पा ६ ८  
 हाहिहिसि पा ६ ८  
 होहिह पा १ ८  
 होही पा ६ ८  
 ह ४ ४७, हेरु पा ४ ४७  
 हशे मा १ ३  
 ह्यामिअ ६ ३९

## सहायक ग्रन्थ-सूची

- ( १ ) सिद्धहेमशब्दानुशालन, अष्टम अध्याय ( हेमचन्द्रकृत )
- ( २ ) प्राकृतसर्वस्व
- ( ३ ) प्राकृत प्रकाश
- ( ४ ) प्राकृतमञ्जरी
- ( ५ ) कुमारपालचरित ( प्राकृतद्वयाश्रय काव्य )
- ( ६ ) रावणवहो ( सेतुबन्ध काव्य )
- ( ७ ) प्राकृत व्याकरण ( हृषीकेश भट्टाचार्य विरचित ) सस्कृत एव  
अंग्रेजी
- ( ८ ) अभिज्ञानशाकुन्तल ( कालिदास विरचित )
- ( ९ ) विक्रमोर्वशीय ( कालिदास विरचित )
- ( १० ) मुद्राराक्षस ( विशाखदत्त विरचित )
- ( ११ ) पाणिनीयाष्टक ( अष्टाध्यायीसूत्रपाठ )
- ( १२ ) गण्डवहो

# संस्कृत साहित्य का इतिहास

( बृहन् संस्करण )

श्री वाचस्पति गैरोला

इस ग्रन्थ को लिखते समय यह ध्यान रखा गया है कि पाठक परम्पर, और पूर्वग्रह क मोह से न पडकर प्रत्येक विवादग्रस्त प्रश्न का समाधान स्वयं कर सके। पाठक पर अपने विचार लादने का अपेक्षा उपयुक्त यह समझा गया है कि विभिन्न मतवादों की समीक्षा करके वह स्वयं ही विषय की सही ध्येय को ग्रहण कर सके। भारतीयता या विदेशीपन का पक्षपात त्याग कर किसी भी विद्वान् के स्वस्थ और सही विचारों को उधार लेने में मन्डोच नहीं किया गया है। पुस्तक का विषय सामग्री और उसकी रूप रेखा का गठन भी ऐसे ढङ्ग से किया गया है, जिससे संस्कृत भाषा की आधारभूत भावभूमि का परिचय प्राप्त होने के साथ साथ सम सामयिक परिस्थितियों का भी अध्ययन हो सके। आर्यों के आदि देश एवं आर्य भाषाओं के उद्भव म लँकर उन्नीसवीं सदी तक की सहस्राब्दियों में संस्कृत साहित्य की जिन विभिन्न विचार वीथियों का निर्माण हुआ और भारत के प्राचीन राजवंशों के प्रश्रय से संस्कृत भाषा को जो गति मिली, उसका भी समावेश पुस्तक में देखने को मिलेगा।

मूल्य २०-००

# संस्कृत साहित्य का संक्षिप्त इतिहास

( परीक्षोपयोगी संस्करण )

श्री वाचस्पति गैरोला

संस्कृत साहित्य के इतिहास का यह संक्षिप्त संस्करण इस उद्देश्य से लिखा गया है कि विभिन्न विश्वविद्यालयों की उच्च कक्षाओं के पाठ्यक्रम में निर्धारित इतिहासविषयक ज्ञान के सवधनार्थ विद्यार्थीवर्ग का इससे लाभ हो सके। पाठ्यक्रम की दृष्टि से संस्कृत साहित्य के इतिहास पर राष्ट्रभाषा हिन्दी में जो अनेक अन्य पुस्तकें लिखी गई हैं वे या तो सर्वांगीण नहीं हैं अथवा उनमें छात्रों के उपयोगी इतिहास के प्रज्ञानिक अध्ययन की क्रमबद्ध रूपरेखा का अभाव है।

यह इतिहास पाठ्यक्रम की दृष्टि से तैयार किया गया है, किंतु संस्कृत के बृहद् वाङ्मय का आमूल ऐतिहासिक अध्ययन प्रस्तुत करने का भाग इसमें उद्योग किया गया है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि संस्कृत के छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टि से संस्कृत साहित्य के इतिहास का अध्ययन कराया जाय, जिससे कि उनकी मेधाशक्ति का स्वतंत्र रूप से विकास हो सके और प्रस्तुत विषय पर उनके भाव विचारों को नई दिशा में अग्रसर होने का अवकाश मिल सके।

मूल्य ८-००